नवंबर (प्रथम)
1983
अंक : 685

सरिता
दीवाली विशेषांक

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका



कथा साहित्य

कविताएं



लेख

स्तंभ

संपादक व प्रकाशक • विश्वनाथ

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस म... प्रा.लि., गाजियाबाद में मुद्रित.

संपादन, प्रकाशन, एजेंसी व ग्राहक विभाग : 3–ई, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.
व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एन-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
बंबई कार्यालय : 79 ए, मित्तल चैंबर, नरीमन प्वाइंट, बंबई. फोन नं. 232409.
मद्रास कार्यालय : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008.
कलकत्ता कार्यालय : पोद्दार प्वाइंट, तीसरी मंजिल, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-16.
बंगलौर कार्यालय : नं. 302- 'बी', 'ए' विंग-तीसरी मंजिल, क्वींस कार्नर अपार्टमेंट, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001.
अहमदाबाद कार्यालय : 503, नारायण चैंबर्स, नेहरू पुल के समीप, आश्रम मार्ग, अहमदाबाद-380009.

यह अंक 4.00 रु
सामान्य प्रति 3.50
वार्षिक : 84 रु
विदेशों में (समुद्री डाक से) 170 रुपए यूरोप में (हवाई डाक से) : 400 रु. अमरीका में (हवाई डाक से) : 475 रु.




शरीर की सहेली !
हर रूप और रंग में अलबेली !
वाइकिंग
बनियन तथा चड्ढी
अंगों के आकार के अनुरूप !
भारत की एक मात्र
'वेल्विराइज्ड' बनियन–रिब ६०
चड्ढी । बारह आकर्षक रंग
और अनेक नमूने !
IS 4964
ISI
Viking
VESTS
BRIEFS
वाइकिंग बनियन – चड्ढी
जैसी त्वचा वैसा आवरण
Mfrs: वाइकिंग निटस ६३८६०३ Mktrs: रेंगा होजअरीज ६१२००१
HIN 204

आप के पत्र

आकाओं को कोसने की हिम्मत

रूस द्वारा दक्षिण कोरिया के यात्री हवाई जहाज को मार गिराने के नृशंस कृत्य पर भारत द्वारा किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त न किए जाने पर संपादकीय (अक्तूबर/प्रथम) में नाहक ही इंदिरा सरकार को कोसा गया है. वर्तमान सरकार की रूस के चरण चुंबन और साष्टांग दंडवत करने की नीति तो शुरू से ही चली आ रही है. शायद इसी कारण आकाओं को कोसने की हिम्मत हमारी सरकार नहीं जुटा सकी. आखिरकार रूस से भी हम यदाकदा सहायता या भीख मांगते ही रहते हैं. इंदिरा सरकार को इस बात का खयाल तो रखना ही था. —उमेश ज्ञानचंदानी 'उम्मी'

*

हथकड़ी लगाना कहां तक उचित है?

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संविधान के अनुच्छेद 21 के संबंध में दिए निर्णय के बारे में संपादकीय (सितंबर/द्वितीय) में आप ने पुलिस द्वारा हथकड़ी लगाए जाने के खिलाफ कारवाई किए जाने की आशा की है.

मेरे साथ एक ऐसा हादसा 18 मई, 1982 को हो चुका है. मेरे साथसाथ 18-20 अन्य व्यक्तियों को भी हथकड़ी तथा रस्सी में बांध कर ले जाया गया था.

हम लोगों में कुछ व्यापारी, कुछ अध्यापक व कुछ विद्यार्थी थे. हम ने बारबार पुलिस को यह आश्वासन दिया कि हम भागेंगे नहीं तथा किसी भी तरह की उद्दंडता नहीं करेंगे, किंतु वे मुसकराते हुए हथकड़ियां लगाते रहे. —दिलीपकुमार गुप्त

*

हक रिश्वत का

सरित प्रवाह (सितंबर/द्वितीय) में कहा गया है कि 'जितना आप जनता के निकट होंगे, उतनी ही अधिक रिश्वत आप का हक है.' यह कथन पूरी तरह ठीक नहीं है. इस के स्थान पर 'जितने ज्यादा लोगों की चाबियां आप के हाथ में होंगी, उतनी ही अधिक रिश्वत आप का हक है' होता तो ज्यादा उपयुक्त रहता. गांवों में अध्यापक और चौकीदार जनता के अत्यंत निकट होते हैं, पर रिश्वत की बात तो दूर, इन्हें पानी तक को नहीं पूछा जाता.

'डाक्टरी बनाम अमानवीयता' लेख में कही गई इस बात से मैं सहमत नहीं हूं कि डाक्टरों की निजी प्रैक्टिस पर रोक लगा देनी चाहिए. मुख्य बात यह है कि डाक्टर अपनी ड्यूटी के घंटों के दौरान हस्पताल में अपना कर्तव्य ईमानदारी से निभाएं. शेष समय में चाहे वह पिक्चर देखें, सोएं या निजी प्रैक्टिस करें, इस से कोई फर्क नहीं पड़ता.

यदि डाक्टर सुबह आठ बजे से रात के आठ बजे तक भी बैठा रहे व मरीजों की कतार खत्म न हो तो क्या डाक्टर दिनरात हस्पताल में ही पिसता रहे? हां, किसी रोगी की हालत गंभीर होने पर डाक्टर की सेवा बिना फीस के हर समय आवश्यक रखी जा सकती है. हर व्यक्ति अपनी आय बढ़ा कर अपना जीवनस्तर ऊंचा रखना चाहता है. इस दृष्टि से डाक्टरों पर बंधन लगाना उचित नहीं कहा जा सकता. —डालचंद पोरवाल

*

वास्तव में डाक्टर जिस तरह का पक्षपातपूर्ण व्यवहार करते हैं, उसे मैं ने अपनी आंखों से देखा है. उत्तर प्रदेश के जिला पीलीभीत में एक ही महिला हस्पताल है. एक बार मैं अपनी परिचित महिला के साथ वहां गई. डाक्टर उस महिला से परिचित थी. अतः उस ने उस महिला से कहा, "पांच मिनट बैठ जाइए, मैंने ग्लव्स (दस्ताने) अभी बदले हैं. दोचार और मरीजों को देखने के बाद नए ग्लव्स पहन कर आप को देखूंगी." —प्रीति अग्रवाल

*

भारत विरोधी लेख

लेख 'स्वदेश से कितना अच्छा यह विदेश' (सितंबर/द्वितीय) आम भारतीयों को भ्रम में डालने वाला है.

यह सही है कि भारत की अपेक्षा अन्य कई देशों में सुख व ऐश्वर्य के साधन अधिक हैं जो उन देशवासियों ने कठोर श्रम द्वारा अर्जित किए हैं, न कि विदेशों में भाग कर. उस चमकदमक से प्रभावित हो कर लेखिका अपने देश को ही बुराभला कहने से नहीं चूकी. लेकिन शिक्षित व्यक्तियों का कर्तव्य है कि वे अपने देश को संपन्न बनाने का प्रयास करें. अवसर मिलते ही देश से विदेश की ओर पलायन करना उचित नहीं है.

मैं स्वयं कई वर्षों तक विश्व के कई देशों में रहा हूं. इस आधार पर मैं कह सकता हूं कि अधिकतर भारतीय धन के लालच में अपमान और लांछन सहते हुए भी स्वदेश नहीं आना चाहते और अपने देश की बुराई करने से भी नहीं चूकते.

लेखिका शायद सन 1979 में भारतीय महिलाओं के यौन परीक्षण व सन 1981 में श्वेतों द्वारा अश्वेतों पर आक्रमण जैसी शर्मनाक घटनाओं को भुला बैठी है.

सरिता जैसी लोकप्रिय पत्रिका को भारत विरोधी लेख नहीं छापना चाहिए. —डा. विद्यासागर

*

'स्वदेश से कितना अच्छा यह विदेश' लेख पढ़ कर लगा कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम भारतीय 'गुलाम मानसिकता' के शिकार हैं. अकारण

ही हम अपने देश व देशवासियों के प्रति हीन भावना रखते हैं तथा इस का प्रचार भी करते हैं. हम भारतीयों में देशप्रेम की भावना का अभाव ही देश की प्रगति में सब से बड़ी रुकावट है.

पिछले वर्ष मैं भी अपने पति के साथ लंदन में रही थी, किंतु मेरे अधिकांश अनुभव लेखिका से भिन्न हैं. मेरे विचार से किसी देश का प्रतिनिधित्व वहां के नागरिक करते हैं, न कि वहां की संपदा. यह तो सर्वविदित है कि पराधीन देशों की संपत्ति से ही ब्रिटेन संपन्न हुआ है. साथ ही इस के पीछे कुछ प्राकृतिक और भौगोलिक कारण भी हैं. संक्रामक बीमारियां, सूखा, बाढ़, बढ़ती हुई आबादी, पड़ोसी राष्ट्रों के साथ सीमा विवाद आदि अनेक जटिल समस्याएं ब्रिटेन व अन्य पश्चिमी देशों में नहीं हैं.

ब्रिटेन प्रवास के दौरान मुझे एक भी ऐसा अंगरेज नागरिक नहीं मिला जिसे विशेष रूप से भारत एवं भारतीयों में रुचि हो. आज का ब्रिटेन महंगाई, बेरोजगारी, हड़तालों तथा आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा है. ऐसे वातावरण में विदेशियों के प्रति सद्भाव रखने वाले अंगरेज नागरिक बिरले ही होंगे. कम पढ़ेलिखे भारतीय स्वदेश इसलिए नहीं लौटना चाहते, क्योंकि यहां आर्थिक साधनों के अभाव में उन का भविष्य अनिश्चित है. वैसे 20-25 वर्षों से ब्रिटेन में रह रहे भारतीय भी अनेक आशंकाओं से घिरे रहते हैं.

ब्रिटेन में रहने वाले बुद्धिजीवी भारतीयों की समस्याएं और भी जटिल हैं. भारतीय डाक्टरों और वैज्ञानिकों के सामने यह स्पष्ट है कि लगातार लगन व मेहनत से काम कर के भी वे वहां एक खास स्थिति से आगे तरक्की नहीं कर सकते. वैसे ज्यादातर अंगरेज भी यह मानते हैं कि भारतीय डाक्टर या वैज्ञानिक काफी लगन व मेहनत से काम करते हैं.

उपर्युक्त कारणों से अब अधिकतर भारतीय स्वदेश लौटने के इच्छुक दिखाई पड़ते हैं. कुछ भारतीय ऐसे भी हैं जो अपने बच्चों के बड़े होने से पहले ही भारत लौट आना चाहते हैं, क्योंकि वे नहीं चाहते कि उन के बच्चे बड़े हो कर भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को भूल जाएं तथा अपने मातापिता की भांति द्वितीय श्रेणी के नागरिक के रूप में जीवनयापन करें.

—रचना सिन्हा

*

लेख 'स्वदेश से कितना अच्छा यह विदेश' मन को अंदर तक कचोट गया. ऐसा लगता है कि लेखिका का ब्रिटेन के प्रति कोई पूर्वाग्रह रहा है. उस का दृष्टिकोण एकपक्षीय है. ऐसे लोग देश के गद्दार हैं जो अपने देश की छवि को धूमिल कर के विदेश की छवि को अपने मनमस्तिष्क में उतारना चाहते हैं. —प्रदीप 'सावन'

*

निरर्थक कहानी

कहानी 'गरीबखाना सजाया हम ने' (सितंबर/द्वितीय) बिलकुल निरर्थक व निरुद्देश्य लगी. रचना मनोरंजक होने के साथसाथ सोद्देश्य व बोधगम्य भी होनी चाहिए. इस कहानी में ऐसी कोई भी बात देखने को नहीं मिली. —शिवदासआर्य

*

सरिता से प्रेरणा

लेख 'पश्चिम में टिका पूरब' (सितंबर/प्रथम) में लेखक ने अपने अनुभव के आधार पर पश्चिम का जो चित्र खींचा है, वह शत प्रतिशत वास्तविकता लिए हुए है.

हमारे पैरों में बचपन से पड़ी धार्मिक अंधविश्वासों की जंजीरों को तोड़ने का सरिता का प्रयास प्रशंसनीय है. सरिता से मुझे जो शिक्षा व प्रेरणा मिली है वह शायद स्कूल या कालिज में भी नहीं मिल सकी. —सुनीलकुमार बहर, मारबर्ग, प. जरमनी

*

नारी द्वारा नारी का शोषण

लेख 'परित्यक्ताएं और विधवाएं सिर्फ समस्या नहीं हैं, (सितंबर/प्रथम) विचारोत्तेजक है.

आजकल महिलाओं के प्रति हो रहे दुर्व्यवहार व अत्याचार को ले कर महिलाओं और पुरुषों दोनों के द्वारा आवाज उठाई जा रही है. यदि निष्पक्ष रूप से देखा जाए तो नारी पर अत्याचार पुरुष नहीं, नारी ही करती है.

ससुराल में परित्यक्ता को उस की सास, ननद, जेठानी तथा पासपड़ोस की औरतें ही प्रताड़ित करती हैं. इसी तरह मायके में मां, भाभी, ताई, चाची आदि ही उस की विपन्नता में उस से विमुख हो जाती हैं. पिता, भाई या ससुर आदि सहानुभूति रखते हुए भी कुछ नहीं कर पाते.

पुरुषों पर दोषारोपण करने वाले महिला संगठन अपने भीतर झांक कर देखें. और इन दुखियारी महिलाओं की हालत सुधारने के लिए कुछ ठोस कदम उठाए. —लक्ष्मीचंद आर्य

*

प्रेम विवाह का विरोध

सरिता का प्रेम विवाह विशेषांक (अगस्त/प्रथम) पढ़ कर मुझे यह पत्र लिखने को मजबूर होना पड़ा है. मैंने संभ्रांत परिवार के एक एडवोकेट से प्रेम विवाह किया था. शुरू के दिन कुछ ठीक बीते, परंतु मेरे पति के परिवार के सदस्य सदा से इस विवाह के विरोधी रहे. उन की रूढ़िवादिता इस सीमा तक पहुंच गई कि उन्होंने मेरे पति का अपहरण करवा लिया. आज दो माह बीत जाने पर भी उन का कुछ पता नहीं चल सका है, न ही दोषी व्यक्ति पकड़े गए हैं.

जरा सोचिए, यदि मातापिता इस सीमा तक प्रेम विवाह का विरोध करते रहे तो देश के युवकयुवतियां प्रेम विवाह करने के लिए कहां से साहस जुटा पाएंगे? किस नारी में इतना साहस होगा कि वह परंपरा एवं रूढ़ियों को तोड़ कर इतना बड़ा कदम उठाए.

—निशा ●

व्यक्तिगत विज्ञापन
वैवाहिक विज्ञापन
वर चाहिए

23 वर्षीया, अग्रवाल, बी.एमसी., सुंदर, गृहकार्य दक्ष, सुसंपन्न परिवार की विधवा कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत, हिंदू वर चाहिए. अति उत्तम विवाह. संपूर्ण विवरण प्रथम बार में लिखें : वि.नं. 544, सरिता, नई दिल्ली - 110055.

सिंधी सिख, 26, आकर्षक, स्लिम, लंबी 162 सें.मी., गौरवर्ण, एम.ए. अंगरेजी, बी.एड., गृहकार्य में दक्ष, केंद्रीय विद्यालय शिक्षिका हेतु वर चाहिए. पंजाबी सिख भी स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 548, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 148 सें.मी., एम.ए., सुंदर, सुशील, स्लिम, गृहकार्य दक्ष, प्रतिष्ठित संपन्न अग्रवाल (झिंदल) परिवार की कन्या हेतु व्यवसायी, डाक्टर, उच्च अधिकारी, सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 640, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीया, 150 सें.मी., स्मार्ट, गोरी, शासकीय महाविद्यालय में व्याख्याता, अविवाहित कायस्थ कन्या के लिए म.प्र. में शासकीय सेवारत 35-37 आयु का अविवाहित, हिंदू, सुंदर, स्मार्ट, डाक्टर या इंजीनियर की आवश्यकता है. जातिबंधन नहीं. शीघ्र उत्तम विवाह. कृपया पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 641, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, एम.बी.बी.एस., राठौड़ राजपूत, राजस्थानी कन्या हेतु सजातीय, एम.बी.बी.एस. वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 649, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 146 सें.मी., बी.एच.एससी., एम.ए., सुंदर, गृहकार्य दक्ष, सुशील, म.प्र. संपन्न परिवार की कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 652, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, बीसा अग्रवाल, बी.ए., ब्यूटिशियन डिप्लोमा प्राप्त, 150 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, आवाज में मामूली तुतलाहट कन्या के लिए सजातीय, सुशिक्षित, उत्तर प्रदेश निवासी, राजपत्रित अधिकारी या उच्च श्रेणी व्यवसायी वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 658, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, मांगलिक, सारस्वत ब्राह्मण, उत्तर प्रदेश निवासी, बी.ए. प्रथम श्रेणी, मेधावी, गृहकार्य में दक्ष, कद 152 सें.मी., सुंदर, गौरवर्ण कन्या हेतु सारस्वत या गौड़ ब्राह्मण मांगलिक वर चाहिए. बैंक में सेवारत या जूनियर इंजीनियर को प्राथमिकता. उत्तम विवाह. प्रथम बार में जन्मपत्री सहित पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 687, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, बी.ए., बी.एड., सुंदर, निस्संतान, तलाकशुदा लड़की हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 688, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, एम.बी.बी.एस., 165 सें.मी., गौड़ ब्राह्मण, गौरवर्ण कन्या हेतु सजातीय डाक्टर कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 689, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, एम.बी.बी.एस., स्लिम, स्मार्ट, गेहुआं, मध्य प्रदेश सरकारी हस्पताल में असिस्टेंट सर्जन, अविवाहित कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. पहले पत्र में ही लड़के की पूर्ण जानकारी भेजें. लिखें : वि.नं. 690, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, एम.ए. फाइनल, अग्रवाल मित्तल, 147 सें.मी., गेहुआं रंग, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, अधिकारी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 691, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, वार्ष्णेय वैश्य, 158 सें.मी., बी.ए. आनर्स होम साइंस प्रथम स्थान, एम.एड. अध्ययनरत, सुंदर, सुशील, व्यावहारिक, आकर्षक व्यक्तित्व, संभ्रांत परिवार, कन्या हेतु सुस्थापित वर चाहिए. अग्रवाल आदि स्वीकार्य. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 692, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, कुमारी, 152 सें.मी., सुन्नी मुसलमान, एम.ए., बी.एड., गृहकार्य दक्ष, म.प्र. अशासकीय संस्था में कार्यरत, वेतन 1,000 मासिक, आकर्षक इकहरी कन्या हेतु सुयोग्य आधुनिक व धार्मिक विचारों वाला वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 693, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 160 सें.मी., सुंदर, स्लिम, गेहुआं रंग, एम.एससी., अग्रवाल (सिंघल), अतिसंपन्न, प्रतिष्ठित व्यापारिक परिवार, मध्य प्रदेश निवासी कन्या हेतु अधिकारी, सी.ए., डाक्टर, इंजीनियर या उच्च शिक्षित निजी व्यवसाय में संलग्न, स्वस्थ, सजातीय वर चाहिए. शीघ्र विवाह. विज्ञापन उतम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 694, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेश निवासी, सनाढ्य ब्राह्मण गोत्र भारद्वाज, एम.ए., बी.एड., उम्र 21 वर्ष, आकर्षक, सुंदर कन्या हेतु वर की आवश्यकता है. लिखें : वि.नं. 695, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर कायस्थ, 22 वर्षीया, 153 सें.मी., एम.ए., डी.एच.बी. (होमियोपैथिक चिकित्सक), सुंदर, गोरी, गृहकार्य दक्ष कन्या के लिए सजातीय, सुस्थापित वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 696, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31, 160 सें.मी., आकर्षक, सुशील, गेहुआं रंग, प्रशिक्षित स्नातकोत्तर, अग्रवाल, शाकाहारी कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 697, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गोयल गोत्रीय, 23 वर्षीया, 152 सें.मी., ग्रेजुएट, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 698, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, श्वेतांबर जैन, एम.ए., 160 सें.मी., स्लिम, सुंदर, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर, सी.ए., प्रोबेशनरी अफसर, उच्च पदस्थ पदाधिकारी, जैन वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 699, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, बी.ए. (आर.एम.पी.), सैनी कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. पहली बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 700, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, विधवा, अल्पशिक्षित, बेसहारा, सुंदर हेतु अति संपन्न जीवनसाथी चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि.नं.701, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 153 सें.मी., बी.एससी., जैन गर्ग, सुंदर, स्मार्ट, गृहकार्य निपुण कन्या हेतु वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 702, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, बंगाली, मैट्रिक पास, गोरी, सुंदर, गृहकार्य में निपुण, कुमारी कन्या हेतु बंगाली सुयोग्य वर चाहिए. दहेज विरोधी, जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 703, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित अग्रवाल गर्ग गोत्र परिवार की 28 वर्षीया, सुशील, गृहकार्य दक्ष, बी.ए., पैर पर छोटा लिकोडर्मा के दाग, कन्या हेतु सुस्थापित वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. शीघ्र मध्यम विवाह. लिखें : वि.नं. 704, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, यादव, एम.ए., बी.एड., 163 सें.मी. लंबी, सांवली अध्यापिका हेतु सुयोग्य, सजातीय, दिल्ली निवासी वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 705, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, निगम कायस्थ, व्यवहारकुशल, स्लिम, एम.एससी., एम.ए., सुंदर, गौरवर्ण, 162 सें.मी., सभ्य परिवार की सुशील कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 706, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, सिख, सुंदर, एम.ए., बी.एड., 162 सें.मी. कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 707, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, दिगंबर जैन, स्नातक, सुशील, प्रतिष्ठित परिवार की विधवा हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 709, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण (सांडील), 23 वर्षीया, कद 153 सें.मी., एम.ए. (अंतिम वर्ष), स्वस्थ, सुंदर, गोरी, गृहकार्य दक्ष कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 710, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुशिक्षित संपन्न परिवार की 21 वर्षीया, सुंदर, सुशील, गृहकार्य दक्ष, स्नातक, कश्यप (कहार धुरिया) कन्या हेतु सुशिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 711, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, सुंदर, सुशील, पंजाबी ब्राह्मण, 156 सें.मी., बी.ए., बी.एड. (इंटरमीडिएट सेंट्रल स्कूल) कन्या हेतु सजातीय स्वावलंबी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 712, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हायर सेकंडरी, अग्रवाल कन्या, 28, 140 सें.मी., 42 कि.ग्रा. के लिए उत्तम वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 713, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, गोरा रंग, स्वस्थ, 155 सें.मी., बी.ए., गृहकार्य में दक्ष, सुशील, जाट (मलिक) कन्या हेतु सुयोग्य, जाट डाक्टर, इंजीनियर, उच्च अधिकारी एवं उच्च श्रेणी के व्यावसायिक वर लिखें : वि.नं. 740, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अरोड़ा, 19 वर्षीया, बंगलौर में बी.ए. कर रही कन्या हेतु बिजनेसमैन अथवा सुस्थापित नौकरीशुदा वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 741, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, बीसा अग्रवाल, ग्रेजुएट कन्या हेतु वर चाहिए. विवाह सादा. लिखें : वि.नं. 742, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, विधवा, संतान लड़की 7 वर्षीया, लड़का 5 वर्षीय, गृहकार्य दक्ष, 160 सें.मी., स्वस्थ, प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जो संतान सहित जीवनसाथी बना सके. अल्प आयु विधुर संतान सहित भी मान्य. लड़की के बड़े होने पर शादी की अलग व्यवस्था. लिखें : वि.नं. 747, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 29, 157 सें.मी., सुंदर, स्मार्ट, एम.ए., बी.एड. सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 748, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, ग्रेजुएट, लंबी, स्लिम, गृहकार्य दक्ष, साफ रंग कन्या हेतु कायस्थ वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 749, सरिता, नई दिल्ली-110055.

केंद्रीय सेवारत, 24 वर्षीया, 160 सें.मी., 60 किलोग्राम, वेतन 825/-, सुंदर, स्मार्ट, आकर्षक, एम.ए., संभ्रांत ब्राह्मण, निस्संतान तलाकशुदा (नाममात्र ससुराल रही) कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर प्रोफेसर, अधिकारी वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 750, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, यू.के. में बसे डाक्टर की 26, बी.एससी. आनर्स, टेक्सटाइल टेक्नालाजी, चार अंकों में प्राप्त वेतन में सेवारत, 163 सें.मी., 22 वर्षीया, ग्रेजुएट, 160 सें.मी., 20 वर्षीया, ग्रेजुएट, ब्यूटिशियन कोर्स, 160 सें.मी., सुंदर, स्वस्थ, घर के काम में निपुण कन्याओं के लिए सजातीय योग्य वर चाहिए. विदेश जाने के उत्सुक को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण. लिखें : वि.नं. 751, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, अग्रवाल सिंघल गोत्रीय (बी.एससी.

1), अंगरेजी शार्टहैंड में डिप्लोमा प्राप्त, गेहुआं रंग, 157 सें.मी. ऊंचाई, कन्या के लिए सजातीय स्वावलंबी वर चाहिए. संतान रहित विधुर भी विचारणीय.लिखें : वि.नं. 757, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, सनाढ्य ब्राह्मण, बी.ए., मांगलिक, सुंदर कन्या के लिए सुयोग्य कार्यरत वर चाहिए. पूर्ण विवरण जन्मपत्री सहित. लिखें : वि.नं. 758, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 152 सें.मी., एम.ए., बी.एड., वैश्य कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 759, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, बी.ए., जिंदल गोत्र, गृहकार्य में दक्ष, केंद्रीय सरकारी नौकरी, तनख्वाह 800 रु.; विधवा लड़की हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 760, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, वैश्य, एम.ए., बी.एड., 158 सें.मी., गोरी, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर अथवा पीएच.डी. (साइंस) वर चाहिए. बड़ी बहन को अमरीकन नागरिकता मिलने वाली है. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : 69 MARY WOOD COURT NEW ORLEANS, LOUISIANA 70128.

सुंदर, सुशील, गृहकार्य में निपुण, एम.ए., बी.एससी., बी.एड., 35 वर्षीया, यू.पी. सेवा में रत गौड़ ब्राह्मण, शिक्षिका, 156 सें.मी. कद, मासिक आय चार अंकों में के लिए योग्य ब्राह्मण वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 761, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, एम.ए. अध्ययनरत, चौहान ठाकुर मांगलिक, सुंदर कन्या हेतु सजातीय अच्छी स्थिति का मांगलिक वर चाहिए. पूर्ण विवरण कुंडली सहित लिखें : वि.नं. 762, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भटनागर, एम.ए., 24, 152 स.मी., सुंदर नक्श, गेहुआं रंग, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु सजातीय कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 763, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव कायस्थ, 22 वर्षीया, 145 स.मी., बी.ए., गेहुआं रंग, सुंदर, स्वस्थ, मंगली कन्या हेतु सुयोग्य, श्रीवास्तव वर चाहिए. अधिकारी/इंजीनियर/सी.ए./ उच्च सेवारत को प्राथमिकता दी जाएगी. पिता आबूधाबी में सेवारत. पूर्ण विवरण के साथ लिखें : MOHAN SHRIVASTAVA, C/O PARIKH, POST BOX 450, ABU DHABI (UAE).

26 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., गढ़वाली ब्राह्मण कन्या हेतु वर चाहिए. वि.नं. 765, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 158 सें.मी., स्नातक हेतु दहेज विरोधी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 766, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, सुंदर, 160 सें.मी., (जिंदल) अग्रवाल, एम.ए., (ड्राइंग एवं पेंटिंग), बी.एड., हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 767, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, बी.एससी. पास, रंग गेहुआं के लिए मेडिको, एम.बी.बी.एस. वर चाहिए. सनाढ्य ब्राह्मण को वरीयता. लिखें : वि.नं. 768, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.ए., बी.एड., 29 वर्षीया, आकर्षक नाकनक्श, कन्या के लिए, प्रतिष्ठित प्रगतिशील परिवार का उच्चपदस्थ वर चाहिए. पिता अवकाश प्राप्त अधिकारी, बहन एस.डी.एस., भाई प्रथम श्रेणी इंजीनियर. लिखें : वि.नं. 769, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, राजपूत, ग्रेजुएट, कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 773, सरिता, नई दिल्ली-110055.

टाटानगर निवासी, कुर्मि (अवधिया), 21 वर्षीया बी.काम., आकर्षक, स्लिम, स्मार्ट, संपन्न परिवार की इकलौती कन्या हेतु सजातीय (शहर निवासी), उच्च सेवारत वर चाहिए. उपजाति स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 774, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 158 सें.मी., यादव कन्या, एम.ए., गौरवर्ण, गृहकार्य दक्ष हेतु सजातीय, सरकारी सेवारत, योग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 775, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

कंप्यूटर ग्रेजुएट, न्यूयार्क का स्थायी निवासी, 23, 178 सें.मी., अंबाला, दिल्ली में निजी विशाल जायदाद, हिंदू युवक हेतु सुंदर, मेडिको/प्रशिक्षित, स्लिम कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 570, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38 वर्षीय, 172 सें.मी., गुप्ता (दिल्ली) विधुर, चार बच्चे, दो लड़के, दो लड़की, 1 से 7 वर्ष, लघु उद्योग, स्वस्थ, स्मार्ट युवक हेतु सुशील, सुंदर, पढ़ीलिखी, गृहकार्य में दक्ष, संतानोत्पत्ति में असमर्थ या संतान न चाहने वाली को प्राथमिकता. विधवा स्वीकार्य. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 587, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेश में बसे क्षत्रिय राजपूत सम्मानित परिवार निजी संपत्ति व व्यापार से अच्छी आय के 31, 173 सें.मी., एम.ए., एलएल.बी., स्वस्थ, सुंदर, निर्व्यसनी युवक के लिए सुंदर, योग्य वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 592, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौरवर्ण, आकर्षक आकृति, पूर्ण शाकाहारी, स्लिम, स्मार्ट, सुशील, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, शांडिल्य गोत्र रहित कन्या चाहिए. वर 29 वर्षीय, स्वस्थ, स्वरूपवान, ग्रेजुएट, 168 सें.मी., अमरीकन व्यापारी, संपन्न उत्तरप्रदेशीय मिश्र परिवार लिखें : वि.नं. 614, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 169 सें.मी., ग्रेजुएट, निजी व्यापाररत, आय पांच अंकीय, अग्रवाल गर्ग गोत्रीय हेतु अति सुंदर,

शिक्षित, सुशील, गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए. दहेज व जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 667, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, 172 सें.मी., मांगलिक, श्रीवास्तव कायस्थ, वाराणसी निवासी, पावर हाउस में इलेक्ट्रीशियन के लिए सुंदर, सुशील, श्रीवास्तव मांगलिक वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 680, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, सिख, बी.ए., 165 सें.मी., तलाकशुदा निस्संतान, व्यापार चार अंकीय हेतु कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 708, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, भारत सरकार की सेवा में कार्यरत युवक के लिए जनजाति की पढ़ीलिखी, सुंदर कन्या चाहिए. दहेज, सामाजिक बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 714, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37 वर्षीय, 170 सें.मी., पहली पत्नी से संबंधविच्छेद (पांच वर्ष का एक पुत्र), स्वस्थ, गेहुआं रंग, एम.ए., बी.एड., एक हिंदी माध्यम हाई स्कूल (प. बंगाल) में शिक्षक, वेतन 1,200/-, हेतु सुयोग्य, सुशिक्षित, उच्च विचार वाली जीवनसाथी चाहिए. जातिबंधन नहीं, निस्संतान विधवा, सहायक, सामाजिक संस्था में पत्नी स्वीकार्य. लिखें : वि नं. 715, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 167 सें.मी., डिप्लोमा इंजीनियर, रु. 1,350/-, जाटव युवक हेतु सुशिक्षित, सुंदर, अध्यापिका कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 716, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीय, भटनागर, बी.एससी., बी.एड., 170 सें.मी., आय 800/- रु., युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 717, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैथिल ब्राह्मण, 30, 168 सें.मी., एम.ए. (द्वितीय), व्यवसायी राजस्थान, आय चार अंकीय युवक हेतु सुंदर, गोरी, स्नातिका, 25 आयु तक ब्राह्मण कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 718, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25 वर्षीय, 167 सें.मी., ग्रेजुएट, कार्यरत, मासिक आय 1,000/-, हेतु सुंदर, शिक्षित, नम्र स्वभाव वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 719, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, गर्ग, 158 सें.मी., रंग साफ, सुंदर, इकहरा बदन, लि. कंपनी में सीनियर एक्सपोर्ट असिस्टेंट, आय 800/-, हेतु गृहकार्य में दक्ष, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 720, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, व्याहत (कलवार), बैंक सेवारत हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 721, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, 170 सें.मी., ब्राह्मण, पोस्ट ग्रेजुएट, कार्यरत, आय चार अंकों में, हेतु घरेलू वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 722, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, अग्रवाल, गोरे, स्वस्थ, स्मार्ट, संपन्न, बी.एससी., कपड़ा व्यवसायी, अविवाहित हेतु सुयोग्य, गौरवर्ण, सुंदर, ग्रेजुएट वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 723, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, बी.एससी., बी. फार्मा. 24, 166 सें.मी., व्यापाररत, माहवार आमदनी 5,000/- निजी (राजस्थान में जमीन, जायदाद) हेतु गौरवर्ण, गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए. दहेज नहीं. लिखें : वि.नं. 724, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, बंसल बीसा अग्रवाल, एम.एससी., निजी व्यवसायरत, सुसंपन्न, सुंदर युवक हेतु सुंदर वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 725, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, अग्रवाल गोयल, बी.ए., ज्वेलरी एक्सपोर्ट के प्रतिष्ठित राजस्थानी व्यापारी के लिए गौरवर्ण वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 726, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 168 सें.मी., 5,000 रु. मासिक आय, बिजनेसमैन हिंदू के लिए 18 से 22 वर्षीया, स्लिम, गोरी, शिक्षित, अति सुंदर, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. दहेज व जातिबंधन नहीं. कोर्ट मैरिज, शादी अति शीघ्र. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 727, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, गर्ग बीसा अग्रवाल, 168 सें.मी., ग्रेजुएट, सुंदर, स्वस्थ, स्मार्ट, निजी कोल्डस्टोर वाहन, पिता बैंकर्स ज्वेलर्स, कोठी, कृषि फार्म, जायदाद आदि से संपन्न प्रतिष्ठित संभ्रांत परिवार को सजातीय प्रतिष्ठित परिवार की सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 728, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, गर्ग, 170 सें.मी., आकर्षक व्यक्तित्व, एम.ए., बी.एससी., निजी व्यवसायी, मासिक आय चार अंकों में हेतु कुलीन परिवार की सुंदर, ग्रेजुएट वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 729, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 28, 165 सें.मी., 1,200/-, पोस्ट ग्रेजुएट, अंतरराष्ट्रीय एअरलाइंस सेवारत, अहमदाबाद स्थित, सुंदर युवक के लिए, पतली गोरी, सुंदर और कार्यरत वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 730, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली (राजपूत), 28, 1,100/-, स्नातकोत्तर, सरकारी सेवारत हेतु सुशिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 731, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 23 वर्षीय, 169 सें.मी., बी.ए., प्रतिष्ठित परिवार, निजी व्यवसायरत, ब्रिक फील्डस, मकान, गोरखपुर निवासी, स्वस्थ, सुंदर, स्मार्ट युवक हेतु अति सुंदर, स्मार्ट, सुशिक्षित, सुशील, सजातीय, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. शीघ्र विवाह के लिए प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 743, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खंडेलवाल वेश्य, 23, एकाउंटेंट, आय 2,000/-, स्नातक, स्वस्थ युवक हेतु मधुर स्वभाव, सुशिक्षित, रसोई एक्सपर्ट, सुंदर वधू चाहिए. शीघ्र लिखें : वि.नं. 752, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 170 सें.मी., मृदुभाषी, आकर्षक, अग्रवाल लड़का, मूलनिवासी उत्तर प्रदेश, वर्तमान स्थायी जोधपुर, जूनियर इंजीनियर (पी.डबल्यू.डी.), मातापिता दोनों प्रतिष्ठित सरकारी पदाधिकारी, सभी भाईबहन विवाहित के लिए सजातीय, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्य दक्ष, सुसंपन्न, सम्माननीय परिवार की कन्या चाहिए. विज्ञापन मनपसंद चुनाव के लिए है. विस्तृत विवरण के साथ लिखें : वि.नं. 753, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, श्वेतांबर जैन, गौरवर्ण, 170 सें.मी., 51 कि.ग्रा., विदेश शिक्षित, टेक्सटाइल मिल मैनेजर, आय 4,000 मासिक, युवक हेतु सुंदर, सुसंस्कृत, गौरवर्ण, गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए. जाति व दहेजबंधन नहीं. पूर्ण विवरण प्रथम बार में लिखें : वि.नं. 754, सरिता, नई दिल्ली-110055

34 वर्षीय, विधुर, पंजाबी, तीन बच्चे, दो गुरुकुल में रहते हैं, एक घर पर, निजी व्यवसाय आय चार अंकों में हेतु विधवा, तलाकशुदा जीवनसंगिनी चाहिए. एक बच्चे वाली भी अनिवार्य. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 755, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली स्थित, उत्तम माहेश्वरी परिवारीय 25-¾, 160 सें.मी., निजी प्रैक्टिसरत, आकर्षक, सुसंपन्न डाक्टर के लिए अनुरूप वैश्य जीवनसंगिनी चाहिए. एम.बी.बी.एस. वरीयता. लिखें : वि.नं. 756, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 175 सें.मी., राजपूत युवक, मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव, आय चार अंकीय हेतु सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 776, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, सनाढ्य ब्राह्मण, 179 सें.मी., निजी व्यवसायरत, एम.ए., एलएल.बी., मासिक आय पांच हजार, सुंदर युवक हेतु सुंदर, सजातीय, ग्रेजुएट वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 777, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राष्ट्रीयकृत बैंक आफिसर, 30, 168 सें.मी., 68 कि.ग्रा., स्मार्ट, एम.काम., एम.ए., एलएलबी., बी.एड., नाई युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सुशील, स्मार्ट वधू चाहिए. शीघ्र लिखें : वि.नं. 778, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 160 सें.मी., गर्ग, एम.ए., व्यवसायी युवक के लिए सुंदर वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 779, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, सिविल सहायक अभियंता, लंबे, इकहरे बदन हेतु सुंदर, सुशिक्षित, शाकाहारी वधू चाहिए. विज्ञापन केवल उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 780, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, ठेकेदार, खत्री, युवक हेतु वधू चाहिए. बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 781, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वाराणसी निवासी, आय 28 वर्षीय, एक्सपोर्ट

व्यक्तिगत विज्ञापन उत्तरदाताओं के लिए सूचना

सरिता में वैवाहिक विज्ञापन पाठकों की सेवा के लिए प्रकाशित किए जाते हैं. इन विज्ञापनों से आप अपने सीमित क्षेत्र में ही नहीं, पूरे देश में वैवाहिक संबंध स्थापित कर सकते हैं.

वैवाहिक विज्ञापनों का उत्तर देते हुए यदि आप निम्न बातों का ध्यान रखेंगे तो आप को, हमें और विज्ञापनदाताओं को काफी सुविधा रहेगी :

1. वैवाहिक पत्रव्यवहार बंद लिफाफे में करें.

2. पहली बार में ही लड़की व लड़के की आयु, शिक्षा, रंग, ऊंचाई, वजन, व्यवसाय, आय आदि पूरा विवरण लिखें.

3. विज्ञापनदाताओं के पास भेजे जाने वाले लिफाफे पर "विज्ञापन विभाग" "संपादक, सरिता" आदि न लिखें. केवल "वि.नं.— सरिता, नई दिल्ली-110055." पते के रूप में लिख देने पर पत्र हम तक पहुंच जाएंगे.

4. यदि आप कई विज्ञापनदाताओं से पत्रव्यवहार करना चाहते हैं तो सब विज्ञापनदाताओं के लिए विज्ञापन नं. लिखे लिफाफे एक ही बड़े लिफाफे में रख कर "वैवाहिक विज्ञापन विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055" के पते पर भेज दीजिए. विज्ञापन विभाग द्वारा आप के पत्र संबंधित विज्ञापनदाताओं को अलगअलग भेज दिए जाएंगे. इस से आप को सब लिफाफों पर टिकट नहीं लगाने पड़ेंगे और पत्र भेजने में सुविधा भी रहेगी.

5. वैवाहिक विज्ञापन केवल पत्रव्यवहार के लिए संपर्क सूत्र का काम करते हैं. विवाह तय करने से पहले संबंधित व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त किए बिना और आवश्यक जांचपड़ताल किए बिना कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए.

व्यापार, शाखाएं बंबई, वाराणसी तथा मसूरी, वार्षिक आय पांच और छः अंकों के आसपास, बी.एससी., एलएल.बी., सिंघल गोत्र, बीसा अग्रवाल हेतु सजातीय, सुशिक्षित एवं बहुत सुंदर वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 782, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इंदौर निवासी, जैन ओसवाल, 25 वर्षीय, ग्रेजुएट, व्यवसायरत हेतु सजातीय वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 783, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इलाहाबाद अग्रवाल, 33, निस्संतान तलाकशुदा, निजी मकान, दुकान, सांस्कृतिक अभिरुचिय, एकाकी, प्रतिष्ठित व्यवसायी को सुसंस्कृत, हंसमुख, जीवनसंगिनी चाहिए. आदर्श विवाह. लिखें : वि.नं. 783, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, 160 सें.मी., वैश्य (वार्ष्णेय) विदेश में एजुकेशन आफिसर, 5,000/- मासिक, हेतु सुंदर, गोरी, गृहकार्य में कुशल, विज्ञान में स्नातकोत्तर वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 785, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42 वर्षीय, नर्सरी स्कूल संचालक तलाकशुदा हेतु ग्रेजुएट वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 787, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

20 वर्षीया, जाटव, स्नातकोत्तर हेतु डाक्टर, इंजीनियर, उच्चाधिकारी वर एवं 26, 24, डाक्टर (एम.बी.बी.एस.), व्यवसायरत भाइयों हेतु सुयोग्य वधुएं चाहिए. (मेडिको प्राथमिकता). लिखें : वि.नं. 732, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित उत्तरप्रदेशीय त्यागी परिवार की सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, एम.ए., बी.एड., 27, 154 सें.मी. कन्या तथा एम.काम., एलएल.बी. (अंतिम वर्ष), 25, 168 सें.मी., 750/-, शासकीय सेवारत पुत्र हेतु सुशिक्षित, सुस्थापित वरवधू चाहिए. प्रांतीयता, दहेज अविचारणीय. मध्य प्रदेश निवासी को प्राथमिकता. विस्तृत विवरण अपेक्षित. लिखें : वि.नं. 733, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, रेलवे सेवारत कन्या, 30 वर्षीय, एम.बी.बी.एस., प्रादेशिक सेवारत पुत्र हेतु श्रीवास्तव सजातीय वरवधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 734, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित राजपूत परिवारीय, 25 वर्षीया, सुंदर, सुशील, स्नातक (गृहविज्ञान), कन्या एवं उस के 30 वर्षीय, स्नातकोत्तर (विज्ञान), शासकीय सेवारत, मासिक आय 1,250/-, भाई हेतु योग्य सजातीय वरवधू चाहिए. उपजाति, दहेज बंधन नहीं. एक परिवार के भाईबहन को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 735, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, सुंदर, स्वस्थ, बी.ए., चौरसिया युवक तथा 23 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., कन्या हेतु वरवधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 746, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गोयल, 165 सें.मी., आई.एससी. (मैकेनिकल), 32 वर्षीय, मासिक आय चार अंकों में, कमर्शियल फर्म में कार्यरत के लिए सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए तथा बहन एम.एससी., 157 सें.मी., रंग गेहुआं, 30 वर्षीया के लिए उद्योगी, कर्मचारी, सजातीय वर चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें : वि.नं. 764, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, माथुर कायस्थ, 168 सें.मी., स्मार्ट, केंद्रीय सेवारत, 900/-, हेतु सुंदर वधू चाहिए तथा 22 वर्षीया, 155 सें.मी., गेहुआं वर्ण, एम.ए. एवं 20 वर्षीया, 157 सें.मी., गौरवर्ण, एम.एससी. अध्ययनरत, सुशील बहनों हेतु सजातीय वर चाहिए. एक घर के संबंध भी स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 770, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 158 सें.मी., एम.ए., एल.टी., कायस्थ कन्या हेतु वर तथा 26, 175 सें.मी., 1,200/-, मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव भाई हेतु सुंदर वधू चाहिए. एक परिवार को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 771, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत चौहान, डिप्लोमा, सिविल चीफ इंजीनियर, चीफ टेक्सटाइल मिल, राजस्थान, वेतन लगभग चार हजार रुपए, आयु 29 वर्ष को सजातीय कम से कम ग्रेजुएट वधू एवं एम.एससी., एलएल.बी., आयु 26 वर्ष, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्य दक्ष, ऊंचाई 152 सें.मी. को सजातीय वर चाहिए. बैंक अफसर, मजिस्ट्रेट, एडवोकेट को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 772, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अनुसूचित जाति (बाल्मीकि), 21 वर्षीया, एम.ए., सुशील कन्या एवं 23 वर्षीय, राजपत्रित अधिकारी पुत्र के लिए उपयुक्त वर एवं वधू वांछित. पिता केंद्रीय सरकार में राजपत्रित अधिकारी. लिखें : वि.नं. 786, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

प्रतिष्ठित परिवार के दंपती मानवीय संबंधों के आधार पर कन्या न होने से 16 वर्ष से कम आयु गोद लेना चाहते हैं. विधिपूर्वक लिखें : वि.नं. 736, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित पंजाबी निस्संतान दंपती को सुंदर, स्वस्थ, 4-6 माह तक का लड़का अथवा लड़की, सजातीय संभ्रांत परिवार का गोद चाहिए. लिखें : वि.नं. 737, सरिता, नई दिल्ली-110055.

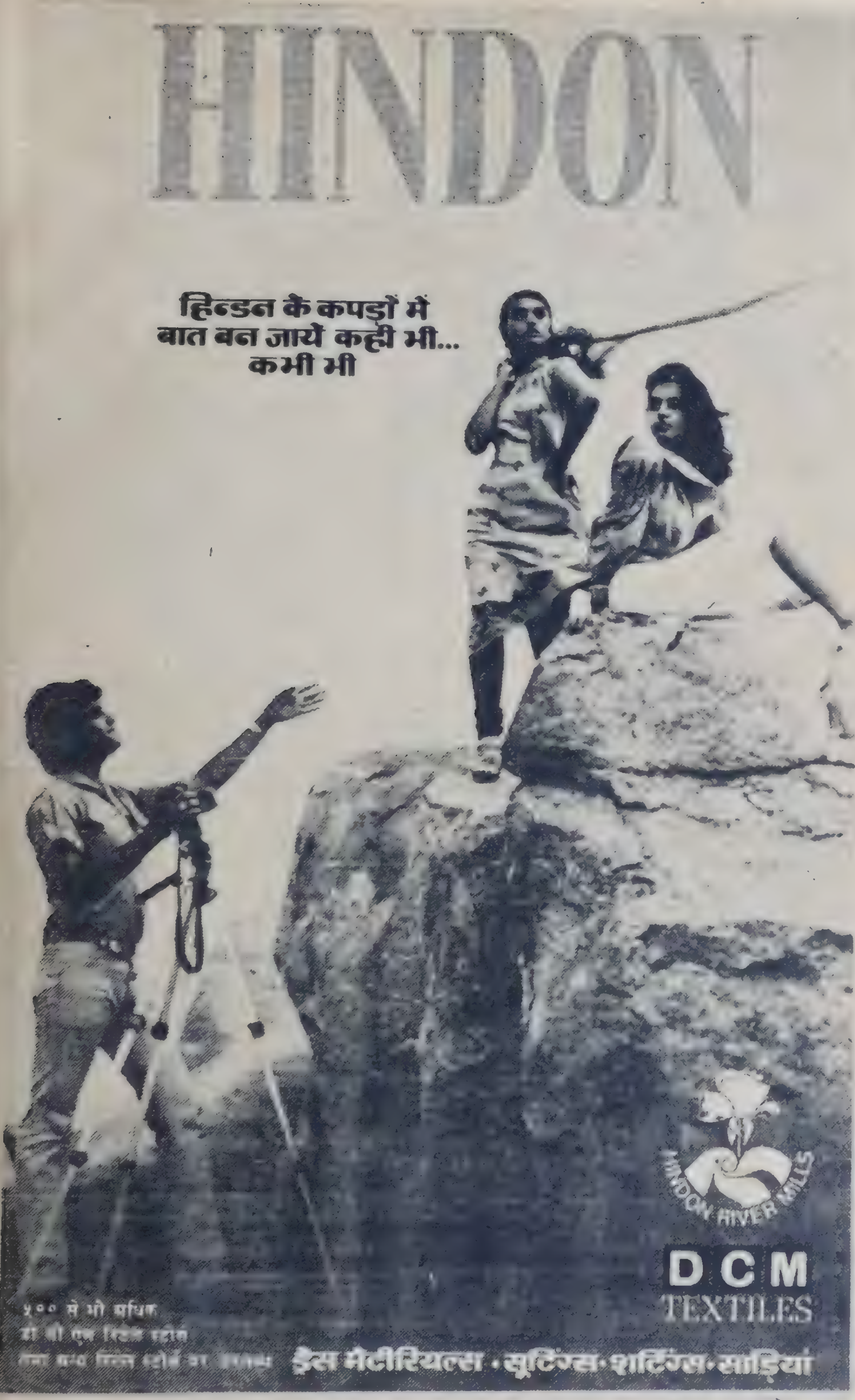
रिक्त स्थान

सहारनपुर में वृद्ध दंपती की देखभाल हेतु लगभग 50 वर्षीया महिला चाहिए. लिखें : वि.नं. 619, सरिता, नई दिल्ली-110055.

काटन एवं सिल्क लेबिल की सप्लाई के लिए एजेंट चाहिए. तोमर लेबिल कंपनी, पन्नी लाल चौक, सतना (म.प्र.).



everest/83/CBI/371-hn


HINDON
हिन्डन के कपड़ों में
बात बन जायें कहीं भी...
कभी भी
HINDON RIVER MILLS
DCM
TEXTILES
५०० से भी अधिक
ड्रेस मैटीरियल्स • सूटिंग्स • शर्टिंग्स • साड़ियां



नरेश बादला (जरी) कढ़ाई के लिए चार साइजों में उपलब्ध 10000, 1000, 500, 200 मीटर में.

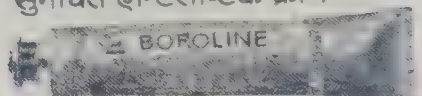
दस से पाँच तक कड़ी मेहनत । पूरे वर्ष भर धूप और गर्द-गुबार में चलना-फिरना । ऐसे में भी त्वचा को स्वस्थ और सतेज रखती है बोरोलीन ।

बोरोलीन की कोमल सुरक्षा—शुष्कता, हाथ-पैर फटने, रैश निकलने या धूप की झुलसन से त्वचा को हमेशा सुरक्षित रखती है । बोरोलीन की ऐन्टिसेप्टिक क्रिया रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में साधारण कटने-छिलने पर जादू-सा असर करती है ।

काम-काज में साथी

बोरोलीन

सुगंधित ऐन्टिसेप्टिक क्रीम



त्वचा की सुरक्षा के लिए एक कारगर क्रीम



HTC-GDP-5192

जी डी फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड आशा महल न्यू अलीपुर कलकत्ता ७०० ०८८

प्रकृति के सर्वोत्तम
तत्वों से बने

सेवाश्रम के आयुर्वेदिक उत्पादन

ब्राह्मी आँवला केश तेल

बालों की वृद्धि के लिये नियमित रूप से ब्राह्मी आँवला केश तेल इस्तमाल करें। यह जड़ों को मज़बूत और बालों को घने तथा लम्बे बनाने में सहायता देता है।

काला दंत मंजन

दाँतों की स्वच्छता का आयुर्वेदिक उपाय। माजूफल, लौंगतेल, नीलगिरि तेल, कपूर, फिटकरी, पुदीना और अजवाइन के फूल आदि लाभकारी तत्वों से बना यह दंत मंजन मुख-दुर्गन्ध दूर करता है तथा दंत-क्षय से बचाता है। इससे दाँत स्वच्छ और उज्ज्वल बने रहते हैं।



आयुर्वेद
सेवाश्रम लिमिटेड
उदयपुर • वाराणसी • हैदराबाद
रजि. ऑफिस : बजाज भवन,
२२६ नरिमन पाइन्ट बम्बई-४०० ०२१.



Heros'-AS-156C HN

हज़ारों गृहणियों ने जो माना, स्वस्तिक पॉप्युलर के बारे में अमिता ने भी वही जाना...



"मैं किफ़ायत ज़रूर चाहती थी लेकिन साथ में क्वॉलिटी भी. और स्वस्तिक पॉप्युलर ऐसा ही है. इसके दाम दूसरे बढ़िया डिटर्जेण्ट पाउडरों से कहीं कम लेकिन धुलाई वैसी ही बढ़िया!"

नीला स्वस्तिक पॉप्युलर ख़ूबियों से भरपूर एक बढ़िया डिटर्जेण्ट पाउडर है :

- यह स्प्रे ड्राइड है इसलिए पानी में फ़ौरन घुल जाता है.
- इसमें ऑप्टिकल व्हाइटनर मिला है इसलिए कपड़े ज़्यादा साफ़-सफ़ेद और चमकदार धुलते हैं.
- इसमें पानी को मीठा बनाने वाला एक विशेष पदार्थ मिला है इसलिए खारे पानी में भी धुलाई बहुत आसान!
- यह स्वस्तिक की रिसर्च द्वारा तैयार एक उत्पादन है इसीलिए दूसरे बढ़िया डिटर्जेण्ट पाउडरों से कहीं कम दाम में वैसी ही बढ़िया धुलाई!
- २.५ किलो, १ किलो और ५०० ग्राम के पॉलिपैक में उपलब्ध.

स्वस्तिक

पॉप्युलर

डिटर्जेण्ट पाउडर

सबसे कम दाम, भरोसे का काम

१ किलो
सिर्फ़ १० रुपये
स्थानीय कर अतिरिक्त

Shilpi DM 17/83 H

सरित प्रवाह

वर्षा समाप्त हो गई है, बाढ़, मच्छर, बीमारी को भुलाने का समय आ गया है. अगले छः महीने सुहावने मौसम के होंगे. नया अनाज मंडियों में आएगा. हर्षउल्लास का अवसर दीपावली का पर्व इसी सब का प्रतीक है.

इस वर्ष वर्षा अच्छी और व्यापक हुई है. इस के साथ उत्तर भारत में बाढ़ का प्रकोप भी आया, पर फिर भी लेदे कर भरपूर फसल होने की आशा है. अच्छी फसल हो तो किसान के पास पैसा आता है, शहर वालों की बिक्री बढ़ जाती है, बेरोजगारी कम होती है.

धनधान्य के इस त्योहार का हार्दिक स्वागत है. सरिता के पाठकों को दीपावली की शुभकामनाएं.

*

कशमीर की राजधानी श्रीनगर में भारत के कुछ विपक्षी दलों के नेताओं का सम्मेलन हुआ. इस में चरणसिंह के लोक दल और भारतीय जनता पार्टी के अलावा लगभग सभी गैर इंदिरा कांग्रेसी दलों के नेता उपस्थित थे. लोक दल व भारतीय जनता पार्टी को इसलिए नहीं बुलाया गया, क्योंकि भारतीय जनता पार्टी का संबंध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से है, और कशमीर सम्मेलन में दोनों कम्यूनिस्ट दल और बहुगुणा जैसे अर्ध कम्यूनिस्ट नेता भी थे जिन का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से पुराना वैर है और जो एकदूसरे को अछूत मानते हैं.

लोक दल और भारतीय जनता पार्टी का राष्ट्रीय जनतंत्रीय संघटन व चंद्रशेखर के नेतृत्व में बना कुछ विपक्षी दलों का गठबंधन दोनों अगले लोकसभा चुनावों की पेशबंदी हैं.

यह सर्वविदित है कि इंदिरा कांग्रेस आज तक कहीं भी पूर्ण बहुमत से नहीं जीती है. बहुमत हमेशा विभिन्न गैर कांग्रेसी दलों में बंट जाता है और कांग्रेस का घोड़ा दौड़ में आगे निकल जाता है और इस प्रकार कांग्रेस की सरकार सत्तारूढ़ हो जाती है. इस स्थिति को सुधारने के प्रयत्न तो पिछले बीसियों वर्षों से चल रहे हैं, पर सफलता नहीं मिली है. पर फिर भी कोशिश तो होनी ही चाहिए.

लोक दल व भारतीय जनता पार्टी के संघटन की पटरी चंद्रशेखर के संयुक्त मोर्चे से बैठना संभव नहीं है, क्योंकि हर कदम पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंध का प्रश्न उठेगा और बात बिगड़ जाएगी. पुरानी जनता पार्टी भी इसी प्रश्न को ले कर टूटी, यद्यपि वास्तव में कारण चाहे और थे–हर 'लीडर' की 'प्राइम मिनिस्टर' बनने की तीव्र आकांक्षा.

लगता है, भारतीय जनता पार्टी ने भीतर से यह समझौता कर लिया है कि

सरिता के पाठकों को दीपावली की शुभकामनाएं

अगर जीत हो जाए तो चरणसिंह को ही प्रधान मंत्री बनने दिया जाए. इस से यह संघटन तो शायद चल सकता है, पर चंद्रशेखर जमघट का एक साथ रहना कठिन है, क्योंकि वहां कोई ऐसी सहमति नहीं दिखाई देती. अब तो इस में ही संदेह होने लगा है कि चंद्रशेखर जनता पार्टी के अध्यक्ष बने रहेंगे या नहीं.

चंद्रशेखर के जनता पार्टी के अध्यक्ष पद से चिपके रहने के विरुद्ध आवाज उठने लगी है—वह पांच वर्ष से बराबर इस पद पर डटे हुए हैं जब कि हर जनतांत्रिक दल में चुनाव हर वर्ष होने चाहिए.

श्रीनगर सम्मेलन ने अधिकांश समय केंद्र व राज्यों के संबंधों पर अपने विचार प्रकट करने में लगाया. यह भी मांग की है कि केंद्र राज्यों को अधिक अधिकार और राजस्व के साधन दे. आजकल सारे राज्य केंद्र के अधीन हैं और उन की आय के स्रोत सीमित हैं.

जब तक इंदिरा कांग्रेस केंद्र में स्थापित है, यह मांग स्वीकार नहीं होगी, पर जिस रोज वह केंद्र में सत्ता खो बैठेगी और कुछ राज्यों में राज करेगी, वह भी यही मांग उठाएगी.

*

पंजाब में अकालियों के आंदोलन के अंतर्गत आतंकवादी सिखों ने कपूरथला के निकट एक बस को रोक कर छः हिंदू यात्रियों को बाकी अन्य धर्मावलंबियों से अलग कर के गोली मार दी. इन का कसूर : वे हिंदू थे.

इस नृशंस, योजनाबद्ध हत्या की प्रतिक्रिया सारे देश में हुई, पर बदले की हिंसा केवल हरियाणा के यमुनानगर जगाधरी क्षेत्र में की गई. यहां कुछ सिखों की दुकानें जला दी गईं, दोतीन व्यक्ति मारे गए.

केंद्र की इंदिरा सरकार को भी इस से बहुत बड़ा झटका लगा, क्योंकि ये हत्याएं सारे संसार में चर्चित हुईं. अब तक इंदिराजी पंजाब में चूहेबिल्ली का खेल खेल रही थीं. लगभग सभी वर्गों की इस मांग को कि दरबारासिंह सरकार को बरखास्त कर दिया जाए, वह अनमना कर रही थीं.

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह तो शुरू से ही दरबारासिंह के विरुद्ध थे, और कहा जाता है कि जब वह गृहमंत्री थे तो पंजाब में दरबारासिंह को हटवाने के पक्ष में किए जाने वाले आंदोलन को समर्थन देते थे. अकालियों की मांग तो थी ही कि दरबारासिंह को हटा दिया जाए.

पर इंदिराजी की आदत है कि वह कोई काम ऐसा नहीं करतीं जिस से प्रतीत हो कि उन की मरजी के खिलाफ हो रहा है. इसलिए यदि कोई काम करने के लिए जोरदार आवाज उठती हो तो उसे मानना वह अपनी मानहानि समझ कर कभी नहीं मानतीं जब तक कि अति ही न हो जाए.

कपूरथला की हत्याओं ने उन का भी आसन हिला दिया. दूसरे दिन दरबारासिंह सरकार बरखास्त कर दी गई और प्रधान मंत्री का शासन (इसे राष्ट्रपति का शासन कहते हैं, पर वास्तव में शासन प्रधान मंत्री ही करता है, राष्ट्रपति तो आजकल केवल रबड़ की मुहर है) लागू कर दिया गया. पंजाब के राज्यपाल अनंतप्रसाद शर्मा को पश्चिम बंगाल में फेंक दिया गया और वहां के राज्यपाल भैरवदत्त पांडे को पंजाब ले आया गया है.

हिंदुओं को छांटछांट कर मार डालने की इस घटना से लगता है अकाली दल को भी झकझोर दिया है. कुछ सिरफिरे, धर्मांध सिख हिंदुओं की इस प्रकार हत्या कर सकते हैं, पर अधिकांश सिखों को इस हत्याकांड ने काफी तिलमिला दिया होगा. कल तक और आज भी, रोटीबेटी का संबंध रखने वाले यकायक जानी दुश्मन कैसे हो गए? और क्या इस प्रकार की हत्याओं से, या किसी विशाल पैमाने की हत्याओं या नरसंहार से पंजाब की, सिखों की समस्या का समाधान हो सकता है?

अकाली अपने आंदोलन को 'धर्मयुद्ध' कहते हैं. यह ठीक ही है, क्योंकि धर्म ही तो है जो मनुष्य को मनुष्य का शत्रु बनाता

पोलैंड के मजदूर नेता लेक वालेसा को इस वर्ष का शांति नोबेल पुरस्कार दिया गया है. यह उन को पोलैंड के मजदूरों को अहिंसात्मक तरीकों से अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रेरित करने पर दिया गया है. पोलैंड में कम्यूनिस्ट सरकार है. पहले सरकार गैर फौजी थी. बाद में जब स्थिति गंभीर हो गई और मजदूरों ने शासन—जो रूस के इशारों पर चलता था—चलाना असंभव कर दिया तो रूस ने जबरदस्ती फौजी सरकार स्थापित करा दी.

यद्यपि पोलिश कम्यूनिस्ट भी इस के लिए राजी नहीं थे, पर रूस ने कहा, या तो यह मजदूर आंदोलन दबाओ, चाहे कानूनी तौर पर, चाहे फौजी हुकूमत द्वारा, नहीं तो रूसी फौज पोलैंड पर कब्जा कर के यह काम करेगी. तब जनरल जेरुजेलस्की को सरकार सौंप दी गई. आज वहां फौजी शासन है जिस की नकेल रूस के हाथ में है.

पोलैंड में मजदूर आंदोलन बढ़ती कीमतों, खाद्य व अन्य उपभोक्ता पदार्थों के अभाव के कारण और बोलने, लिखने, सभा करने की मनाही के विरोध में शुरू हुआ था. धीरेधीरे इस ने परोक्ष में रूस के चंगुल से छुटकारा पाने के आंदोलन का रूप धारण कर लिया.

गैर फौजी और फौजी सरकारों ने वालेसा को काफी समय जेल में बंद रखा परंतु अंतरराष्ट्रीय दबाव के कारण बाद में छोड़ना पड़ा. अब इस सब के आधार पर लेक वालेसा को यह पुरस्कार दिया गया है.

रूस का कहना है, यह पुरस्कार विश्व शांति पुरस्कार न हो कर राजनीतिक, रूस विरोधी पुरस्कार है. रूस की यह आलोचना सही है, क्योंकि वालेसा ने विश्व शांति के लिए कुछ नहीं किया. पर इतना तो है ही कि वह पोलैंड की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहा है. अपने देश को रूस की गुलामी से मुक्त कराना भी तो एक सराहनीय कार्य है. और क्योंकि यह काम अहिंसात्मक, शांतिपूर्ण तरीकों से हो रहा है, इसलिए शांति पुरस्कार बहुत गैर वाजिब नहीं है.

कलकत्ता में सरकारी हस्पतालों के डाक्टरों ने हड़ताल कर दी. मुद्दा वही पुराना, जानापहचाना : "हमारी मांगें पूरी करो—जो हम से टकराएगा चूरचूर हो जाएगा." पर वहां यह नारा नहीं लग सका—"सरमाएदारी का नाश हो" क्योंकि हस्पताल सरकारी थे, नौकरी सरकारी थी और सरकार मार्क्सवादी कम्यूनिस्टों की थी, जिन की मजदूर संस्था सेंटर फार ट्रेड यूनियंस—सीटू—अत्यंत उग्रवादी है, सारे देश में हड़ताल और तोड़फोड, मारपीट करनेकराने में अन्य सभी मजदूर संस्थाओं से आगे है.

अब पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री ज्योति बसु बड़े शशोपंज में थे — क्योंकि वह और उन की पार्टी हर हड़ताल को, चाहे किसी भी कारण या मुद्दे पर हो, मजदूरों का जन्मसिद्ध हथियार मानती है, उचित और सही मानती है और किसी भी प्रकार उसे समाप्त करने की कोशिशों की भर्त्सना करती है.

यहां पासा पलट गया था. मार्क्सवादी मालिक थे, डाक्टर शोषित, पददलित मजदूर.

अब जब अपने पर पड़ी तो मार्क्सवादी बसुजी सब मजदूरों के अधिकारों, शोषण, अत्याचार की बात भूल गए और वही सब कुछ करने पर उतारू हो गए जो अन्य मालिकों/प्रबंधकों को मजबूर हो कर करना पड़ता है. गिरफ्तारियां हुईं, पुलिस ने लाठियां चलाईं, इत्यादि.

मालिकों/प्रबंधकों का घेराव 1960 में श्री ज्योति बसु की पार्टी ने ही शुरू किया था. तब से अब तक उन की पार्टी इस ब्लैकमेल और जोरजबरदस्ती का समर्थन करती आ रही है, पर यहां जब डाक्टरों ने उन का ही प्रिय हथियार अपनाया तो उन की सिट्टीपिट्टी गुम हो गई. चीखचीख कर वह इस की भर्त्सना करने लगे, जनहित की दुहाई देने लगे.

इस संबध में यह भी जानना जरूरी है कि किसी भी कम्यूनिस्ट देश में मजदूरों को

हड़ताल करने का अधिकार नहीं है. जो हड़ताल करता है, उसे जेल की हवा खानी पड़ती है या गोली का शिकार बनना पड़ता है.

*

प्रधान मंत्री ने राज्य सभा में आश्वासन दिया कि महिलाओं पर ज्यादतियों के मुकदमे यथासंभव महिला न्यायाधीशों द्वारा निबटाए जाने का प्रबंध किया जाएगा, पर इस का मतलब पुरुष न्यायाधीशों पर कोई लांछन लगाने का नहीं है.

यद्यपि प्रधान मंत्री ने इस घोषणा के विरुद्ध आपत्ति को स्वयं व्यक्त कर के काटने की कोशिश की है, पर वास्तविक रूप में महिला न्यायाधीशों को नियुक्त करने का असली तात्पर्य तो पुरुष न्यायाधीशों में अविश्वास ही है.

यदि सरकार समझती है कि पुरुष न्यायाधीश महिलाओं के मामलों में भेदभाव करते हैं तो उसे ऐसे न्यायाधीशों को दंड दिलवाना चाहिए न कि महिलाओं के मुकदमों के लिए महिलाएं ही नियुक्त करना चाहिए.

यदि इस बात को पकड़ लिया गया तो कल मुसलमान कहेंगे कि उन के मुकदमों में केवल मुसलमान न्यायाधीश होने चाहिए, अकाली कहेंगे, सिखों के मुकदमों में केवल सिख जज/मजिस्ट्रेट हों, हरिजन कहेंगे, उन के विवाद हरिजन जज ही निबटाएं.

जहां तक महिलाओं के मामलों का सवाल है, आजकल तो ऐसा लगता है कि कुछ अदालतें इन मामलों में लोकप्रियता पाने के लिए महिलाओं के पक्ष में अधिक झुकती दिखाई देती हैं.

अदालतों के सामने तो सब बराबर ही होने चाहिए और इसलिए किसी विशेष समुदाय के मामलों में उसी समुदाय के न्यायाधीशों की मांग बहुत गलत है. इस में यदि निर्णय सही भी होगा तो भी विरोधी विपक्षी को पक्षपात नजर आएगा जो न्याय प्रणाली की छवि के लिए बहुत हानिकारक है.

भारीभरकम, निरंतर बढ़ते हुए टैक्स लगाने के पीछे वित्त मंत्री या अन्य मंत्रियों का हाथ प्रायः नहीं होता. ये बेचारे तो मंत्री बने रहने की जद्दोजहद में इतने तल्लीन रहते हैं कि कोई विशेष निर्णय ले ही नहीं सकते. आज एक मंत्रालय में हैं, कल सुबह अखबार में पढ़ते हैं कि उन्हें दूसरे मंत्रालय में पटक दिया गया है. या मंत्रिमंडल से निकाल कर 'मौत' की सजा दे दी गई है.

सरकारी कामकाज बहुत पेचीदा होता है. देश की समस्याएं ही पेचीदा हैं. उन्हें समझने और उन के हल ढूंढ़ने इस प्रकार के उठाऊचूल्हा राजनीतिबाजों के बस की बात नहीं है. यह सारा काम स्थायी स्टाफ – सचिव, संयुक्त सचिव, उपसचिव, आर्थिक सलाहकार, योजना आयोग इत्यादि की फौज करती है. जो ये 'कलम बहादुर' लोग फाइलों पर लिख देते हैं, वही होता है – मंत्री चाहें तो भी वे कुछ नहीं कर सकते, सिवा किसी को लाइसेंस, परमिट, कोटा देने के, वह भी कभीकभी. (हां, बड़े ठेकों में उन की पत्ती तो होती ही है, पर उसे भी ऊपर सर्वोच्च सत्ता को बांटना होता है.)

अब इन 'कलम बहादुरों' का एक ही उद्देश्य होता है – किसी तरह सरकारी अमला व सरकारी खर्च बढ़ाया जाए और जनता से जितना पैसा खींचा जा सके, खींचा जाए. इस के लिए समाजवाद का नारा इन के बड़े काम आया. इन्हें उद्योगपतियों व व्यापारियों को अमीर बनते देख कर बड़ी जलन होती है, क्योंकि अपने ही बंधनों द्वारा इन्होंने अपने वेतन सीमित करवा रखे हैं. इस जलन से ये लोग हर रोज नएनए तरीके ढूंढ़ते हैं, जिस से उद्योगपतियों, व्यापारियों के 'पर कट' सकें. इस के लिए नएनए कायदेकानून, लाइसेंस, परमिट ढूंढ़े जाते हैं. इस से काला धन खूब पनपता है. अंत में जा कर सारा बोझ गरीब, अधमरी, अधपे[ट] खाली जनता पर ही पड़ता है. उद्यो[ग] व्यापार चलता है तो उत्पादन का मूल्य ब[ढ़] जाता है. उद्योग नहीं चलते तो बेरोजगारी[,] भुखमरी बढ़ती है.



लद चुके हैं हाथियों के पूजने के दिन

लेख • कैलाश भारद्वाज

गणेश और गजलक्ष्मी की पौराणिक कथाएं शाब्दिक आडंबर के सिवा कुछ नहीं हैं जो हमें भ्रम और अंधविश्वासों में उलझाए रखती हैं. फिर भी हम इन पुराण कथाओं के जाल से क्यों नहीं निकल पा रहे हैं?

कभीकभी कोई (वास्तविक या अनुमानित) अपराध भावना मनुष्य को दिमागी तौर पर कैसे उलटपलट कर देती है, इस का कुछ अनुभव लेखक को पिछले साल हुआ था. मगर जैसा कि नियम है, उस अनुभव की प्रतिक्रिया में लेखक को कुछ और भी (उपयोगी) अनुभव हुए. उदाहरण के लिए, एक मित्र मिजाजपुरसी के लिए आए तो छूटते ही बोले, "आप की परेशानी का कारण मैं जानता हूं."

"क्या?" मैंने जिज्ञासा जाहिर की.

"आप पुराणों की कथाओं में विश्वास नहीं करते न," उन्होंने तड़ाक से उत्तर

दिया, "इसी लिए आप की यह हालत हुई है," फिर क्षणभर ठहर कर बोले, "मैं ने अभी हाल में ही पढ़ा था. पश्चिम के जानेमाने मनोविश्लेषक युंग ने कहा है कि जो लोग पौराणिक कथाओं में विश्वास नहीं करते, वे पागल हो जाते हैं. पश्चिम में इतने अधिक लोगों के पागल हो जाने का कारण ही यह है कि उन्होंने अपनी पुराण कथाएं खो दी हैं. आज उन के पास ऐसा कोई आधार नहीं है जिस पर वे संकट के क्षणों में अपनेआप को टिका सकें."

मैं वास्तव में पागल नहीं हो गया था—थोड़ा अवसादग्रस्त था, सो विनय के स्वर में मैं ने उन से पूछा कि क्या युंग के वे 'महान' विचार मुझे पढ़ने को मिल सकते हैं.

इस पर वह स्पष्ट टालमटोल की सी मुद्रा में बोले कि उन्हें याद नहीं है कि वे विचार उन्होंने कहां पढ़े थे.

जंगली जातियों की कल्पना

खैर, शिष्टाचारी दिलासा दे कर मित्र तो चले गए, किंतु उन की वह बात मेरे मन से नहीं गई. मैं सोचने लगा कि क्या आदिम काल और आदिम स्वभाव की पौराणिक कथाएं आज के आदमी को पागल बनाने के लिए जिम्मेदार हैं? क्या उन की जड़ में सचमुच ही कोई ऐसा सनातन सत्य होता है जो काल की गति का भी अतिक्रमण कर सकता है?

जहां तक मैं समझता हूं, पौराणिक कथाएं मूल रूप से उन इतिहास पूर्व की जंगली जातियों की अपनी परिस्थितियों पर आधारित कल्पनाएं हैं जो कृषि युग से भी पहले शिकार युग के दौर से गुजर रही थीं.

इस मामले में यह स्पष्ट करना जरूरी है कि पौराणिक कथाएं उस युग के मनुष्य की मजबूरी थी. उस का मानसिक धरातल था ही ऐसा. अपने चारों ओर यह जो कुछ भी होता हुआ देखता था, उसे किसी न किसी रूप में अपने जीवन से जोड़ने तथा उस की व्याख्या मानवीय संदर्भ में करने की कोशिश करता था. बस, एक पौराणिक कथा तैयार हो जाती थी. उस पौराणिक कथा का आधार आम तौर पर कोई अतिमानवीय कार्यकलाप होता था.

उदाहरण के लिए, हमारे देश में आज भी यह कथा प्रचलित है कि सांप की चर्चा नहीं करनी चाहिए, ऐसा जहां भी किया जाता है, वहां निश्चय ही सांप निकल आता है.

अब यह कथा निश्चय ही उस युग की देन है जब मनुष्य जंगलों में रहता था जहां सांपों की भरमार थी. वहां तो सांप का नाम न भी लिया जाए, तब भी वह निकल ही आता था. मगर आज बड़ेबड़े शहरों में पक्के मकानों में बैठ कर भी यदि इसी कथा की माला जपी जाए तो इस में क्या तुक होगा?

पुराण कथाएं बेशक पूरा पाषाण युग की देन हैं, किंतु इन के गढ़े जाने का सिलसिला आज भी खत्म नहीं हुआ है. हमारे समाज में प्रचलित अधिकांश कथाएं उस समय की गढ़ी हुई हैं जब हमारा देश विदेशी आक्रमणकारियों के लिए अपने दरवाजे खोल कर बैठ गया था तथा अंततः उस ने उन आततायियों को अपना आका ही कुबूल कर लिया था.

वैसे कुछ पुराण कथाएं सभ्य समाजों में भी रची जाती हैं. कुछ कल्पना और कुछ उपयोगिता के आधार पर ऐसी कल्पनाएं कर ली जाती हैं जो जब टूटती हैं तो बहुत निराश करती हैं. मार्क्सवादी विचारधारा को इन के उदाहरण के रूप में पेश किया जा सकता है. रूसी क्रांति के आरंभ में लोगों के मन में यह विश्वास घर कर गया था कि वर्ग संघर्ष के फलस्वरूप एक ऐसे समाज की रचना होगी जहां सभी दृष्टियों से समानता होगी, किंतु यह कल्पना स्वयं सोवियत रूस में झूठ साबित हो गई.

जहां तक हमारी पुराण कथाओं का प्रश्न है, उन में गणेश की कल्पना को उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है. यह एक तथ्य है कि गणेश का वर्णन हमारे ग्रंथों में छठी शताब्दी से पहले नहीं मिलता, हालांकि कुछ तीक्ष्ण बुद्धि वाले लोग उस को

संबंध व्यर्थ ही वैदिक गणपति से जोड़ कर उस पर प्राचीनता की मुहर लगाना चाहते हैं. इस का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि कालिदास के ग्रंथों में शिव का तो सपरिवार सांगोपांग वर्णन हुआ है, मगर गणेश का कहीं उल्लेख तक नहीं है. इस से स्पष्ट है कि गणेश की कल्पना कालिदास के बाद की है.

गणेश संबंधी कल्पना यों भी जानीपहचानी है. पार्वती स्नान करने गई तो जो उन के शरीर से मैल उतरा, उस का एक बालक बना कर उन्होंने उसे स्नानगृह के दरवाजे पर बैठा दिया तथा सख्त ताकीद कर दी कि वह किसी को भी अंदर न आने दे. जब शिवजी सुबह की सैर से लौटे तो उस (अपरिचित) बालक ने उन्हें रोकने की कोशिश की. इस पर क्रुद्ध हो कर शिवजी ने उस की गरदन काट दी और अंदर चले गए.

जब पार्वती को यह पता चला कि उन का पुत्र मार दिया गया है तो वह बड़ी क्षुब्ध व खिन्न हुईं. वह शिव से अपना जीवित पुत्र वापस मांगने लगीं. आखिर हार कर शिव ने अपने गणों को आदेश दिया कि जिस किसी का भी बच्चा तत्काल मरा हो, वे उस का सिर काट कर ले आएं. वे लोग एक हाथी के बच्चे का सिर ले आए जिसे गणेश के कंधों पर रख कर शिव ने पुनः जीवित कर दिया.

अब गणेश की यह पुराण कथा क्या कहती है? इस की रचना का उद्देश्य क्या है? निश्चय ही हाथी की पूजा को दूसरे ढंग से बढ़ावा देना.

जी हां, हाथी की पूजा हमारे यहां यों ही एक कल्पना का विषय रही है. वास्तव में किसी जमाने में जब प्रकृति के विभिन्न अंगों को देवीदेवताओं के रूप में मान्यता दी गई थी तो बादल को भी पूज्य मान लिया गया था. उस के बाद अनेक पुराण कथाओं द्वारा यह सिद्ध करने की कोशिश की गई कि हाथी भूमि पर बादलों के ही प्रतिनिधि हैं तथा जिन राज्यों में हाथियों का स्वागतसत्कार किया जाएगा और विशेष अवसरों पर उन की पूजा होगी, उन पर बादल प्रसन्न रहेंगे. वहां यथा अवसर पर्याप्त वर्षा होती रहेगी और वे राज्य धनधान्य से भरपूर रहेंगे. ऐसा संभवतः तत्कालीन रहनसहन में हाथी जैसे पशु की उपयोगिता को ध्यान में रख कर किया गया होगा.

परंतु हाथी की क्रमशः घटती हुई उपयोगिता के साथसाथ उस की पूजा की प्रवृत्ति भी ढीली पड़ती गई. तब शायद उसे एक और ढंग से पूज्य बनाने की युक्ति निकाली गई. गणेश की कथा गढ़ी गई और उसे कुछ दूसरी कथाओं की सहायता से इतना महत्त्वपूर्ण बना दिया गया कि किसी भी कार्य के आरंभ में अथवा किसी भी देवीदेवता की पूजा के लिए आरंभ में गणेश पूजा को अनिवार्य बना दिया गया. यह तथ्य इस बात से भी सिद्ध है कि सिर कटे (पार्वती पुत्र) गणेश के कंधों पर हाथी का ही सिर स्थापित किया गया—अन्य किसी पशुपक्षी (अथवा मनुष्य) का नहीं.

कहने की आवश्यकता नहीं है कि आम घरों में प्राप्त गजलक्ष्मी की तसवीर इसी कल्पना पर स्थापित एक अन्य कल्पना है.



"समझ में नहीं आया कि तुम्हारा मंगेतर ऐसी कौन सी सरकारी नौकरी करता है जिस में ऊपरी आमदनी कुछ भी नहीं है?"

उस के अनुसार लक्ष्मी वास्तव में भूमि है और गणेश बादल, आशय यह है कि बादलों द्वारा वर्षा बरसाने के फलस्वरूप ही भूमि अपने निवासियों को धनधान्य प्रदान करती है.

अपने देश की पुराण कथाओं पर विचार करते समय इस बात से इनकार करने की कोई जरूरत नहीं है कि हमारी असंख्य कथाओं में से कुछ कथाएं निश्चय ही पुरानी हैं, मौखिक हैं और उन में पुराने वक्तों में मनुष्य के आचारविचार के संकेत देने वाला अर्थ गांभीर्य भी है, लेकिन यह भी एक सचाई है कि हमारी अधिकांश कथाएं न केवल बहुत बाद की देन हैं, बल्कि वे एक उद्देश्य विशेष से गढ़ी गई हैं तथा उन की जड़ में कुछ भी ठोस नहीं है, कोरे स्वार्थ के सिवा.

और सब से मजेदार बात यह है कि हमारे यहां सारा जोर (चंद अर्थपूर्ण कथाओं सहित) उन के सतही अर्थों पर है–शाब्दिक अर्थों पर है. उदाहरण के लिए, हमारे दिमागों में सदा यह भरने की कोशिश की गई है कि गजलक्ष्मी की लक्ष्मी सचमुच ही एक अलौकिक देन है–विष्णु पत्नी है तथा वह इतनी पूज्य है कि न केवल मनुष्य, बल्कि दिग्गज अर्थात दिशाओं के हाथी भी उस पर अपनी श्रद्धा का जल चढ़ाते रहते हैं. हमें तो बस, उस देवी की पूजाअर्चना करते चले जाना चाहिए (और पुजापा उस के अधिकारियों को पहुंचाते रहना चाहिए). यह सोचनेविचारने की कोशिश नहीं करनी चाहिए कि लक्ष्मी और हाथी का बुनियादी मतलब क्या है तथा उन को पूजते रहने से धनधान्य की वृद्धि कैसे हो सकती है.

यहां यह बात विशेष रूप से ध्यान देने की है कि हजारों साल से आंख मूंद कर लक्ष्मी और गणेश को पूजते आ रहे हम लोग दुनिया के गरीब देशों की सूची में भी काफी नीचे हैं, जब कि पश्चिमी देश बिना इन देवीदेवताओं में आस्था रखे भी संपन्नता की सीढ़ी पर बहुत ऊंचे चढ़ रहे हैं. पश्चिमी देशों के अतिरिक्त स्वयं अरब देश भी इस बात के ज्वलंत उदाहरण हैं.

और मजे की बात यह है कि जब हम में से चंद लोग इन घिसीपिटी कथाओं को मानने से इनकार करते हैं तो आए दिन की स्वाभाविक क्रियाओंप्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप हमारी दिमागी परेशानियों को पुराण कथाओं के प्रति हमारी आस्था का परिणाम बतलाया जाता है.

पुराण कथाओं के विषय में एक बात और ध्यान देने योग्य है. पुराण कथाएं मूल रूप से अपने हालात के साथ पाषाण पुरुष के संवाद हैं. उन का संबंध एक काल (व स्थान) विशेष के साथ है. इसलिए उन का महत्त्व भी केवल ऐतिहासिक ही हो सकता है. अतः इस प्रकार की कथाएं या तो उन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं जो मानव विकास के इतिहास में अनुसंधान करना चाहते हैं या फिर उन के लिए जो आज बीसवीं सदी की समाप्ति पर भी एक प्रकार से पाषाण काल में ही जी रहे हैं. और या फिर उन लोगों के बहुत काम की हैं जो इन की मदद से समाज का शोषण कर रहे हैं. कम से कम आज के आदमी के लिए तो पुराण कथाओं का कोई महत्त्व है नहीं.

कहना न होगा कि मनुष्य को यथार्थ जीवन के यथार्थ अनुभवों से फायदा हुआ करता है–वक्र से पिटी हुई काल्पनिक पुराण कथाओं से नहीं.

बैक्टीरिया की खोज

सोवियत वैज्ञानिकों ने समुद्र की सतह पर पाए जाने वाले 40 प्रकार के बैक्टीरिया की खोज की है जिन से प्रदूषण को रोक सकने में सहायता मिलेगी.

समुद्री जल बैक्टीरिया की सहायता से अपनेआप अपनी सफाई कर लेता है. ये बैक्टीरिया दूषित तत्त्वों को सोख लेते हैं और उन्हें हानिरहित बना देते हैं. औद्योगिक प्रदूषण को भी ये आसानी से साफ कर देते हैं.

रोशनी का खत



चहचहाए,
दीप के पंछी

मुसकराए,
द्वार–देहरी

गुनगुनाए छत
पे शहर
लगने लगा है

रोशनी का खत
बज उठी है
रूप की वंशी

नेह की
भरते रंगोली
खनखनाते दिन,

फुलझड़ी होने लगी है
रात अहिवातिन

तन गुलाबी
मन सुआपंखी.

–हरीश निगम

डाबर च्यवनप्राश

यह सिद्ध करता है कि
प्राकृतिक टॉनिक आपके परिवार के लिए उत्तम है



डाबर च्यवनप्राश से आप के परिवार को विटामिन और खनिज पदार्थ प्राकृतिक रूप में मिलते हैं, जिन को आपका शरीर आसानी से ग्रहण कर लेता है। इस में किसी प्रकार के बनावटी रसायन नहीं होते, इसी कारण इसके सेवन से किसी हानि का भय नहीं। इसका प्रयोग लाभदायक और हर तरह से सुरक्षित है।

च्यवनप्राश—३००० वर्ष पुराना स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक

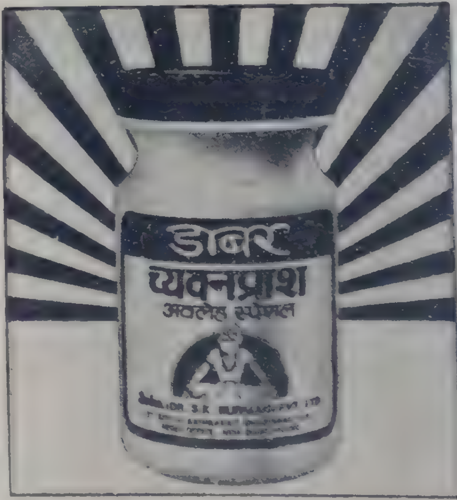
च्यवनप्राश के बारे में यह कहा जाता है कि ३००० वर्ष पहले देवताओं के वैद्यों ने च्यवन ऋषि के लिए यह शक्तिदायक अरोग्य आहार बनाया था।



इसके लाभ इतने आश्चर्यजनक थे कि ऋषियों ने च्यवनप्राश को "जीवन अमृत" का नाम दे दिया। उनको विश्वास था कि यह बीमारियों से बचाव की शक्ति को बढ़ाता है, शरीर के तन्तुओं को मजबूत रखता है, दिल और दिमाग की सक्रियता को उभारता है।

डाबर ने ऋषियों के रहस्यमय नुस्खे का पुनर्निर्माण किया

सैकड़ों वर्ष तक च्यवनप्राश ऋषियों का रहस्य बना रहा। यह जन-साधारण को तब उपलब्ध हुआ जब डाबर ने कई दशक पहले अपना आयुर्वेदिक कारखाना स्थापित किया।



आज डाबर च्यवनप्राश आधुनिक स्वचलित मशीनों द्वारा बनाया जाता है। इस में ४० से अधिक जड़ी-बूटियाँ पड़ती हैं। इसका सबसे महत्वपूर्ण अंश है—आंवला। इसमें दशमूल, अष्टवर्ग आदि भी शामिल हैं।

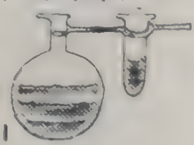
आंवले के रस में सन्तरे के रस से २० गुना अधिक विटामिन सी पाया जाता है।



आंवला जो डाबर च्यवनप्राश का मुख्य अंश है, विटामिन सी

का सर्वोत्तम ज्ञात स्रोत है।

डा० लाइनस पॉलिंग, जिन को दो बार नोबल पुरस्कार मिल चुका है, उनके शोध अनुसार यह सिद्ध हुआ कि विटामिन सी केवल सर्दी-ज़ुकाम से बचाव ही नहीं करता है बल्कि यह शरीर को नई शक्ति प्रदान करता है। बुढ़ापे की प्रक्रिया को धीमा करता है तथा खांसी ज़ुकाम जैसी बीमारियों का प्रतिरोध करने में मदद करता है।



डा० पॉलिंग का कहना है कि हमारा शरीर बीमारियों का मुकाबला तभी कर सकता है जब कि इसमें विटामिन सी का संचालन ठीक ढंग से होता रहे। विटामिन सी हमारे शरीर की रचना और सक्रियता को बनाये रखता है।

आप स्वस्थ हैं तो भी आपको प्राकृतिक टॉनिक की आवश्यकता है।

बहुत से लोग यह समझते हैं कि टॉनिक केवल बीमारों को दिया जाना चाहिए, परन्तु ऐसा सोचना उचित नहीं। आयुर्वेद ने सदा सूचित किया है कि समरक्षण इलाज से बेहतर है। इसी कारण आपका परिवार तन्दुरुस्त हो भी तो उसे डाबर च्यवनप्राश का सेवन करना चाहिए।



डाबर च्यवनप्राश आपके परिवार की तन्दुरुस्ती को बढ़ाता है और अनेक बीमारियों से बचाए रखता है।



डाबर

च्यवनप्राश

आपके परिवार का प्राकृतिक स्वास्थ्य टॉनिक

डाबर द्वारा सौ वर्ष के उपलक्ष में विशेष उपहार

100 YEARS OF CARING · 1884 DABUR 1983

डाबर के सौवें वर्ष के उपलक्ष में इसके कुछ विशेष उत्पादनों पर आपके लिए खूबसूरत योजना। जब भी आप डाबर के इन उत्पादनों में से कुछ भी खरीदें, इनके ढक्कनों को विशेष सुरक्षा में रखें। उन ढक्कनों पर आप एक नारा व एक चिह्न छपा हुआ पाएंगे जैसा कि साथ में दिखाया गया है। ढक्कनों पर यह चिह्न/नारे तीन रंगों में होंगे। काले रंग के ढक्कन ५० पैसे के मूल्य के बराबर हैं। नीले रंग के ढक्कनों का मान एक रुपए तथा लाल रंग के ढक्कनों का मान दो रुपए के समान है। डाबर च्यवनप्राश के लिए ढक्कन के अन्दर ही छपे हुए फॉइल सील दूसरे ढक्कनों के मूल्य के समान होंगे। याद रहे! चिह्नों के रंग ही आपको उसकी कीमत का ध्यान दिलाते रहेंगे। डाबर के सौ वर्ष के उपलक्ष में बने इस चिह्न व नारे छपे हुए ढक्कन/फॉइल सील ही इस योजना में उचित माने जाएंगे।

जब आपके पास पर्याप्त ढक्कन/फॉइल सील इकट्ठा हो जाएं तो आप किसी भी डाबर डीलर के यहां जाकर उन ढक्कनों के बदले उनकी ही कीमत के बराबर कीमत वाले डाबर का ही कोई उत्पादन मुफ़्त प्राप्त कर सकते हैं। तो लीजिए — अभी से सौ वर्ष के उपलक्ष में जारी किए गए ढक्कन व फॉइल सील इकट्ठे करना शुरू कीजिए और मुफ़्त उपहार पाइए। इस अद्भुत उपहार योजना के बारे में अधिक जानकारी के लिए अपने निकटतम डीलर से मिलिए।

जल्दी कीजिए! यह उपहार योजना ३१ दिसम्बर १९८३ तक ही मान्य है।

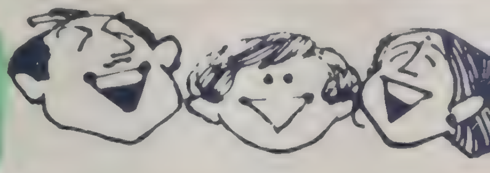
OBM 6410/B


पटाखे
देखो, हम कितने सारे पटाखे लाए हैं!
अरे! यह तो बहुत बड़े-बड़े और खतरनाक पटाखे हैं. कहीं इन से तुम्हारे हाथ पैर न जल जाएं.
मैं इन को वापिस कर के छोटे और सुरक्षित पटाखे लाती हूं.
धड़ाम


तभी
और...
धूम
बूम
धड़ाम
धड़ाम
ओह!
ठां
ठांय
ठांय
वाह श्रीमतीजी! तुम ने तो कमाल ही कर दिया!
यहां हमारी आतिशबाजी प्रतियोगिता हो रही थी और तुम्हारा प्रदर्शन सब से जोरदार रहा.
यह लो तुम्हारा इनाम... मिठाइयां और ढेर सारे छोटे और सुरक्षित पटाखे.
तालियां
पटाखे


सर्वोत्तम गैस उपकरण
सनफ्लेम डीलक्स
भारत का सबसे अधिक लोकप्रिय गैस स्टोव
एक बर्नर वाले मॉडल में भी उपलब्ध।
सनफ्लेम सुप्रीम
खाना पकाने की लाजवाब क्षमता और
कारीगरी की अद्‌भुत मिसाल।
सनफ्लेम
गैस एण्ड ग्रिल
कीमत १०००/-रु०* से भी कम
विभिन्न उपयोगों एवं बचत का संगम—
पकाएं, सेकें, भूनें एवं गरम करें।
सनफ्लेम स्टेनलेस स्टील
नई सुंदर बाडी वाला गैस-स्टोव जो
अच्छी क्षमता, अधिक टिकाऊ और किफ़ायती
होने के लिए खास तौर से डिजाइन किया गया है।
mpress:ons/SF/915
* भाड़ा और कर अतिरिक्त
सनफ्लेम
'गैस तकनीक के जाने-माने विशेषज्ञों द्वारा विकसित'

यह भी खूब रही



हमारी कक्षा में पांचछः लड़कों का समूह ऐसा था जो हरदम बेतुकी बातें करता रहता था. एक दिन कक्षा शुरू होने वाली थी, पर उन में जोरों से तूतू मैंमैं चल रही थी.

अचानक मैं उठ कर उन के पास गया और बोला, "क्यों, भई, रामलीला की रिहर्सल चल रही है क्या?"

मेरी बात का आशय समझ में आते ही सारी कक्षा ठहाकों से गूंज उठी. उस के बाद से वे लड़के कक्षा में ठीक से व्यवहार करने लगे. —राजेश अरोड़ा

*

मैं अपने पड़ोसी के घर गया और बहनों से मजाक करते हुए गाना गाने लगा, "दे दाता के नाम तुझ को अल्ला रखे."



इतना सुनते ही पास ही पलंग पर लेटे दादाजी, जिन्हें कम दिखाई देता था, गुस्से से चिल्ला उठे, "अभीअभी तीन भिखारियों को भगा चुका हूं, अब कौन आ गया?"

इतना सुनते ही बहनें हंसने लगीं और मेरी सूरत देखने लायक हो गई.

—शब्देशकुमार साव

*

एक बार मैं अपनी सहेली के साथ विश्वविद्यालय कैंटीन में नाश्ता कर रही थी. बाद में जब हम पैसे देने गए तो मैनेजर बोला, "आप लोगों के बिल का भुगतान हो गया है."

हमें बहुत आश्चर्य हुआ कि बिल किस ने चुकाया. हम मैनेजर से झगड़ने लगे, तभी एक लड़का आ कर बोला, "क्या हुआ अगर हम ने बिल का भुगतान कर दिया?"

मेरी सहेली सीमा बोली, "भाई साहब, रक्षाबंधन आने में तो अभी देर है. आप ने उपहार पहले ही कैसे दे दिया?"

यह सुनते ही वहां उपस्थित सभी लोग हंस पड़े और वह लड़का, जो मेरी सहेली को छेड़ता था, चुपचाप गरदन झुकाए चला गया. —रंजना जैन

*

मैं कालिज में अपने दोस्तों के साथ खड़ा था. मेरे साथ दोतीन नए लड़के थे. उसी समय मेरी बगल से एक लड़की गुजरी. हमारे साथ खड़े एक लड़के ने फिकरा कसा, "यार, कालिज परिस्तान बनता जा रहा है. देखो, एक परी यह जा रही है."

"लगता है, खुदा ने इसे फुरसत में बनाया है," मेरे मुंह से निकला.

उसी दिन मेरे मित्र ने एक नए लड़के से मेरा परिचय कराया. दो सप्ताह बाद उस ने मुझे अपने घर आमंत्रित किया.

हम बैठे बातें कर रहे थे कि एक लड़की चाय की ट्रे ले कर अंदर आई और बोली, "भैया, नमस्ते."

मैं अवाक रह गया, क्योंकि यह वही लड़की थी जिस पर मैं ने फिकरा कसा था.

—दिनेश गौतम दीप

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



दीवाली पर घर पर ही बनाएं

शकरपारे

सामग्री : 250 ग्राम मैदा, 250 ग्राम चीनी, दो छोटे चम्मच तिल, एक छोटा चम्मच पिसी हुई इलायची, चुटकी भर बेकिंग पाउडर, दोतीन बूंदें गुलाब एसेंस.

विधि : एक बरतन में चीनी तथा दो कप पानी मिला कर एक तार की चाशनी तैयार कर लें. फिर उसे आग से उतार कर एसेंस मिला दें.

मैदा, तिल, पिसी हुई इलायची तथा बेकिंग पाउडर मिला कर पानी मे कड़ा गूंध लें. इस मिश्रण की छोटीछोटी गोलियां बना कर प्रत्येक गोली की पतलीपतली चपाती बना लें. तेज चाकू से इसे पतले तथा लंबे टुकड़ों में काट कर गरम घी में सुनहरा होने तक तलें. घी से निकाल कर इन्हें तुरंत चाशनी में डाल दें. ठंडे होने पर इन पर चीनी की सफेद परत जम जाएगी. इन्हें प्लेट में डाल कर परोसें.

बिस्कुट चाकलेट पेड़े

सामग्री : चार बड़े चम्मच कंडेंस्ड मिल्क, 15-20 मैरी बिस्कुट, चार बड़े चम्मच कोको पाउडर, दोचार बूंदें वेनिला एसेंस.

विधि : मैरी बिस्कटों को दरदरा पीस लें. कंडेंस्ड मिल्क में कोको पाउडर और वेनिला एसेंस मिला लें. इस मिश्रण में बिस्कुट का चूरा मिला कर आटे की तरह गूंध लें. इस मिश्रण के छोटेछोटे पेड़े बना लें. देखा, आप ने मिनटों में स्वादिष्ट पेड़े तैयार हो गए.

—स्वतंत्र कटा[illegible]





बालूशाही

सामग्री : दो कप मैदा, ½ किलो चीनी, चुटकी भर बेकिंग पाउडर, एक छोटा चम्मच गुलाब एसेंस थोड़ी सी गुलाब की सूखी पंखड़ियां.

विधि : मैदे में बेकिंग पाउडर मिला कर छान लें. इस में पर्याप्त मात्रा में घी का मोयन डाल कर गूंध लें. घी इतना डालें जिस से हाथ में ले कर दबाने से मैदा आपस में चिपका रहे. इस में थोड़ा सा पानी डाल कर गूंध लें.

चीनी में एक गिलास पानी डाल कर गाढ़ी चाशनी बना लें. आग से उतार कर इस में एसेंस मिला दें. गूंधे हुए मैदे की गोलियां बना लें तथा दबा कर चपटा कर लें. बालूशाही के बीच में उंगली से छोटा सा गड्ढा बना लें. इन्हें गरम घी में सुनहरे रंग की होने तक तलें तथा घी से निकाल कर

क्या आप....
अच्छी क्वालिटी पाने के लिये ज़्यादा दाम देते हैं,
या कोई घटिया क्वालिटी ख़रीदते हैं?

बिज़-संतुलन

अपनाइये

दाम कीं

बिज़, क़ीमत में और क्वालिटी में एक अनोखा संतुलन बनाये रखता है. दरअसल बिज़ की क़ीमत में दोहरा फ़ायदा है, देखिये कैसे?—

सुपर बिज़ दूसरे मशहूर पाउडरों के मुक़ाबले २५% कम क़ीमत में मिलती है और इसे दूसरे सस्ते पाउडरों से कम इस्तेमाल करना पड़ता है— फिर भी वही चमक-दमक.



काम कीं

सुपर बिज़ हर चीज़ के दाग़
धब्बे और चिकनाई को
आसानी से हटाता है. वह
चाहे स्टील के बर्तन हों या
और चीनी का सामान. सु
बीज़ के भरपूर झाग के का
नाज़ुक और सख़्त दोनों त
की सतहें आसानी से अच्
तरह साफ़ होती हैं.

जब बहुउपयोगी सुपर बिज़
अलग-अलग क़ीमती पाउड
ख़रीदने की क्या ज़रूरत है
किफ़ायत और ऊँची क्वा
को अपने हाथ से मत जा
दीजिये. बिज़ के संतुलन
अपनाइये.



कम क़ीमत पर वही चमक-दमव



री पर
दीप



पहली दीवाली

कहानी • महेशचंद्र स्वदेशी

ससुराल में घर के काम
और नौकरी की व्य
स्तताओं में मेरे जीवन
सुखचैन घुट कर रह गया
पर मेरे वैवाहिक जीवन
पहली दीवाली के दिन
ऐसा हुआ कि मुझे
विवशता और पीड़ा से हमे
के लिए मुक्ति मिल गई

आज मेरे वैवाहिक जीवन की पहली दीवाली है. ससुराल के इस दो-मंजिली मकान में सफेदी और रंगरोगन किया जा चुका है. मकान दूर से ही दुलहन की तरह सजा हुआ लगता है. बैठक की शोभा देखते ही बनती है. एक ओर मूल्यवान सोफासेट, सुंदरसुंदर कुरसियां और सनमाइका की मेज लगी है. दूसरे कोने में कलात्मक शोकेस में टेलीविजन रखा है. बाईं ओर दीवान बिछा है जिस पर खूबसूरत चादर बिछी है. बड़े से शोकेस में कलात्मक मूर्तियां, खिलौने और अन्य वस्तुएं रखी हैं. दीवारों पर हाथ से बनी तसवीरें लगी हैं. छत में हाल ही में खरीदा गया झाड़फानूस बैठक की शोभा को द्विगुणित कर

मेरे विवाह के बाद की यह
दीवाली होने के साथ ही आज मे
रश्मि को भी लड़के वाले देखने आ

इस से घर में और भी अधिक चहलपहल और भागदौड़ हो रही है. नाश्तेपानी के साथसाथ मेहमानों के लिए शानदार खाने का भी प्रबंध किया जा रहा है.

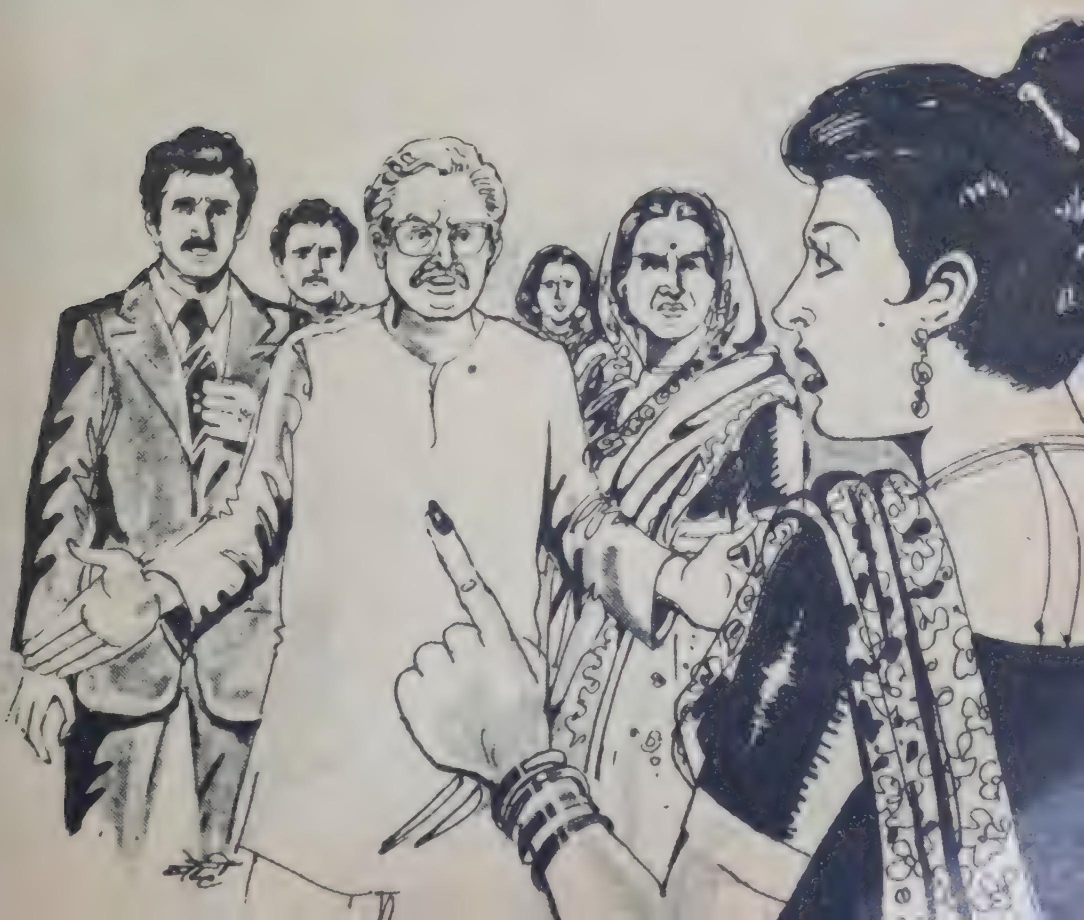
मेरे बड़े भैया सवेरे ही यहां पहुंच गए थे. पहली दीवाली थी अतः वह काफी ढेर सारी मिठाइयां, फल, मेवे तथा आतिशबाजियां लाए थे. उन के आने पर मेरा हृदय प्रसन्नता से भर उठा था. अकेले होने पर उन्होंने मेरी कुशलक्षेम पूछी थी. मैं ने मुसकराते हुए कहा था, ''भैया, मैं यहां बहुत खुश हूं. सभी मुझे बहुत प्यार करते हैं.'' भैया को मेरे उत्तर से बहुत संतोष हुआ था. उन्होंने कहा था, ''हमें तो तेरी खुशी चाहिए. तू सुखी रह, यही हम सब की कामना है.''

जलपान के बाद भैया तुरंत ही चले गए थे. अपनत्व की फुहार कुछ देर हो कर ही रह गई थी. मैं फिर रसोई के कामों में व्यस्त हो गई थी.

लड़के वाले एक बजे ही आ गए थे. लड़का, लड़के के मातापिता, बड़े भाई, चाचाचाची आदि कई व्यक्ति थे. श्वशुरजी और जेठजी ने उन का भावभीना स्वागत किया था तथा बड़े आदर से उन्हें बैठक में बिठाया था. दोनों की विनम्रता देखते ही बनती थी. वे हाथ जोड़ कर बातें कर रहे थे. कितना अंतर था इस समय उन के व्यवहार में. सदा ही फौजी अफसर की तरह आदेश देने वाले उस समय कैसे मृदुल और सहृदय लग रहे थे.

मैं एक दृष्टि डाल कर पुनः रसोईघर के कामों में जुट गई थी. तभी मांजी (सासजी) परेशान सी मेरे पास आ कर बोली थी, ''नीरजा, यहां का काम मैं देखती हूं,

''आप लोगों ने बहुओं को क्या समझ रखा है. बहुएं क्या पशु से भी गई गुजरी हैं. मुंह अंधेरे उठो और कोल्हू के बैल की तरह ससुराल के लोगों की सेवा में लग जाओ,'' रश्मि क्रोधित स्वर में बोली.



ननमुन

– पंकज गोस्वामी



पृष्ट 49 से आगे

तू ऊपर जा कर रश्मि को सजासंवार कर तैयार कर दे. वह तो अभी तक ऐसी ही बैठी है. बुरी तरह घबराई हुई है."

मांजी की बात सुन कर मैं फौरन ही रश्मि के पास पहुंची. मैं उसे देख कर हैरान रह गई. वह परेशान मुद्रा में बैठी थी. मैं ने जाते ही हंसते हुए कहा, "अरे ननदरानी, ऐसे कैसे बैठी हो? क्या अपने होने वाले उन को देखने के लिए तैयार नहीं होना है?"

रश्मि बोली, "भाभी, मुझे तो बड़ी घबराहट हो रही है. मुझ से नहीं जाया जा सकेगा."

मैं ने उस की ठोढ़ी को ऊपर उठाते हुए मुसकरा कर कहा, "घबराने की कोई बात नहीं. याद है, एक दिन किस ठाटबाट से तुम भी अपने घर के लोगों के साथ मुझे देखने आई थीं? यह तो होता ही है. एक दिन पसंद करने जाते हैं, फिर एक दिन स्वयं पसंद किए जाने के लिए तैयार होना पड़ता है. उठो, मेरी प्यारी ननदरानी, घबराओ मत. मैं तुम्हें अभी तैयार किए देती हूं."

मैं ने शीघ्र ही उसे सजासंवार दिया. वह सुंदर तो थी ही, मेरे सजानेसंवारने से वह और भी सुंदर लगने लगी. मैं ने चुटकी काटते हुए कहा, "सच, रश्मि, बड़ी सुंदर लग रही हो. अगर मैं लड़का होती तो या तो तुम से शादी करती या आजन्म कुंआरे रहने का फैसला कर लेती." यह सुन कर रश्मि अपनी हंसी न रोक सकी और बोली, "भाभी, तुम भी बड़ी वह हो, मैं तो शर्म से मरी जा रही हूं और तुम्हें हंसी सूझ रही है."

मैं ने फिर शरारत से उस के दोनों गालों को छूते हुए कहा, "मेरी रानी, ऐसे ही प्रियतम नहीं मिल जाते. जीवनसाथी को पाने के लिए यह रूपपरीक्षा तो देनी ही पड़ती है. लेकिन केवल पसंद ही नहीं होना है, पसंद भी करना है. लड़के को अच्छी तरह देखना. पसंद आए तो हां करना, नहीं तो साफ मना कर देना."

अनेक प्रकार की मिठाइयां, नमकीन और काजू आदि की प्लेटों से मेज भर गई थीं. लड़के वाले अनुग्रह सा करते हुए नाश्ता करने लगे थे. लड़का निस्संदेह स्वस्थ और सुंदर था. वह सोफे के मध्य में शरमाया सा बैठा था. रश्मि को साहस बंधाते हुए मैं बैठक के दरवाजे तक पहुंचा आई थी.

सभी की दृष्टियां रश्मि के चेहरे पर जम गई थीं. सभी के चेहरे रूपसौंदर्य की शिखा से झिलमिला उठे थे. लड़के की मां ने खड़े हो कर उसे बड़े प्यार से अपने पास की कुरसी पर बैठाया था. कुछ देर तक लड़के की मां और चाची उस से बातें करती रही थीं. फिर बातचीत की बागडोर लड़के के पिता ने संभाल ली थी. सब जानते हुए भी कि उस की शैक्षिक योग्यता बी.ए. तक है, उस ने किन विषयों में और किस कालेज से बी.ए. उत्तीर्ण किया है, उस से इसी बारे में प्रश्न किए जाने लगे थे. रश्मि धीमे स्वर में उत्तर देती रही थी.

लड़के के पिता ने अंत में उस से पूछा था, "बेटी, तुम तो नौकरी करती हो. शादी के बाद निश्चित रूप से दोहरा परिश्रम करना पड़ेगा. नौकरी के साथसाथ क्या तुम घर का सारा काम भी कर सकोगी?"

इस प्रश्न को सुन कर लाज से दोहरी रश्मि का सुंदर चेहरा एकदम कठोर हो गया था. उस ने माथे पर बल डाल कर धीरे से किंतु तिक्त स्वर में कहा था, "शादी के बाद किसी भी लड़की के लिए नौकरी के साथसाथ घर का सारा काम करना संभव नहीं है. मैं केवल एक ही काम करूंगी—या तो नौकरी या घर का काम."

लड़के के पिता एवं अन्य लोगों को इस उत्तर की आशा नहीं थी. वे बगलें झांकने लगे थे. इधर मेरी सास, श्वशुर और जेठजी के चेहरे भी फक पड़ गए थे. श्वशुरजी ने आंखों ही आंखों में रश्मि को डांटा और अपनी ओर से लड़के के पिता से कहा, "आप चिंता न करें, हमारी रश्मि बड़ी सुशील और मेहनती है. यह नौकरी के साथसाथ घर के सारे काम भी करेगी."



- दिमाग में खांसी के केन्द को काबू में करे
- गले की खराश से राहत दिलाये
- फेंफडों में जमा बलगम निकाले
- छाती में स्नायु का दर्द मिटाये

**ग्लायकोडिन
एक विश्वस
खांसी की द
जो ४ तरह
से असर करे**

जागिये-एक नये आराम के सा

evetest/82/ACW/465-hn

पिताजी के आंखें तरेरने और मुंह से मीठी बात कहने का रश्मि पर रंचमात्र भी असर नहीं हुआ. वह पुनः बिना झिझके स्पष्ट शब्दों में बोली, "यह मेरे वैवाहिक जीवन का सवाल है. मैं पहले ही स्पष्ट कर रही हूं, मैं घर का सारा काम करने की सूरत में नौकरी से त्यागपत्र दे दूंगी, कोई किसी तरह की गलतफहमी में न रहे." यह कह कर वह कुरसी से उठ खड़ी हुई थी.

रश्मि की इस स्पष्टोक्ति को सुन कर लड़के वालों के साथसाथ मेरी सास, श्वशुर और जेठ भी किंकर्तव्यविमूढ़ रह गए थे. आपस में सलाहमशवरा करने के बाद आखिर लड़के के पिता यह कह कर उठ खड़े हुए थे, "अच्छा, साहब, हम घर जा कर आप को उत्तर देंगे."

लड़के वालों के जाने के बाद सास, श्वशुर, जेठजेठानी और मेरे पति सभी रश्मि के पास गए. मांजी ने उस के पास आते ही कठोर शब्दों में कहा, "तू तो बड़ी मुंहजोर है, रश्मि. सारा बनाबनाया काम बिगाड़ दिया. क्यों मना कर दिया शादी के बाद काम करने को? ससुराल में काम नहीं करेगी तो और क्या करेगी?"

पिताजी भी चुप नहीं रह सके. कड़वा मुंह बना कर बोले, "रश्मि, आज तू ने बड़ी बेवकूफी दिखलाई. भला इस शर्त पर रिश्ता कौन करेगा कि नौकरी के साथसाथ काम नहीं करेगी? ऐसी कौन सी लड़की है जो नौकरी के साथसाथ घर का काम नहीं करती? अपने ही घर में देख, तेरी छोटी भाभी नौकरी करती है कि नहीं? कितनी भली है बेचारी. नौकरी के साथसाथ घर का सारा काम करती है. किसी को हाथ भी नहीं लगाने देती," यह कह कर उन्होंने प्रशंसा भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा.

किंतु रश्मि पर मातापिता के कहने की प्रतिकूल ही प्रतिक्रिया हुई. क्रोध से उस का मुख तमतमा उठा. वह क्रोधित स्वर में बोली, "आप लोगों ने बहुओं को क्या समझ रखा है? गाय पर भी बोझा नहीं लादा जाता. बहुएं क्या पशु से भी गईगुजरी हैं? मुंह

भलाई

दुर्जनों के साथ भलाई करना सज्जनों के साथ बुराई करने के समान है.
—सादी

अंधेरे उठो और कोल्हू के बैल की तरह ससुराल के लोगों की सेवा में लग जाओ. झाड़ूबुहारी लगाओ, रसोई में खटो, बरतन मांजो, कपड़े धोओ, जल्दीजल्दी नहाओधोओ और फिर बस में धक्के खाते हुए दफ्तर जाओ. वहां शाम तक काम में पिलो. शाम को थकेहारे आओ, आ कर घर के सदस्यों के लिए चाय बना कर दो. फिर रात का खाना बनाने में जुट जाओ. सब को खिलाने के बाद खुद खाओ, फिर बरतन मांज कर सब के बिस्तर बिछाओ. फिर सब को सोते समय दूध दो. क्या मजाक है! बहू न हो गई खरीदी हुई दासी हो गई."

मांजी बोलीं, "सभी के साथ ऐसा होता है. तू क्या न्यारी है? ससुराल में सब को काम करना पड़ता है. तू अपनी नीरजा भाभी को नहीं देखती? सब काम करती है. कभी कोई शिकायत नहीं करती बेचारी. उस के भी तो केवल दो हाथ और दो पैर हैं."

रश्मि यह सुन कर और भी उत्तेजित हो गई, बोली, "मां, कभी भाभी के दिल से भी पूछा है कि उन पर क्या गुजर रही है? शादी के वक्त फूल की तरह खिला कैसा चेहरा था उस का और कैसी अच्छी सेहत थी. अब जरा देखो तो कैसे मुरझा गई है. सवेरे उठ कर बेचारी काम में लग जाती है. जब से वह यहां आई है, तब से आप अपने पूजापाठ और भजनकीर्तन की मंडलियों में ही लगी रहती हैं. बड़ी भाभी को अपनी बेबी से ही फुरसत नहीं मिलती. आप घर का सारा काम करना केवल छोटी भाभी की जिम्मेदारी और कर्तव्य समझती हैं. घर के काम में अब न तो आप हाथ लगाती हैं, न बड़ी भाभी. वह बेचारी शाम को दफ्तर से हारीथकी आती है तो कोई उसे चाय तो क्या, पानी तक के लिए नहीं पूछता. क्या बहू


जीवन में आये मौका एक बार
यादगार !
शादी-ब्याह के लिए बेजोड़
जो आपके जीवन के सुनहरे
संवारें,आपकी शान बढ़ाये
मॉडेला सूटिंग्स— विविध
बेजोड़ ब्लेण्डों की
modella
मॉडेला सुटिंग्स
Concept-MTL

के लिए सास के कोई कर्तव्य नहीं हैं? उलटे देर से आने के कारण उलटेसीधे अवांछित प्रश्न किए जाते हैं. बताओ, इस घर में आप लोगों ने उसे क्या सुख दिया? बहू के रूप में आप को तो एक ऐसी नौकरानी मिल गई है जो घर का सारा काम करने के साथसाथ पहली तारीख को आप को वेतन के रूप में एक हजार रुपए पकड़ा देती है. यह अन्याय और शोषण नहीं है तो और क्या है? मैं शादी के बाद इस तरह का गुलामी से भी बदतर जीवन जीने के लिए तैयार नहीं हूं."

इसी बीच एकाएक मेरे पति बोल उठे, "मां, रश्मि ठीक कहती है. मैं नीरजा की शारीरिक और मानसिक व्यथाओं से अच्छी तरह परिचित हूं. बेचारी रात को सोते हुए हर करवट पर कराह उठती है. अपनी सुशीलता और सहनशीलता के कारण वह अपने चेहरे पर मुसकान बिखराए रहती है. सच पूछो तो मैं भी विवाहित स्त्रियों का नौकरी करना पसंद नहीं करता. भला घर और बाहर का बोझ एक साथ कैसे संभाला जा सकता है? इस से बड़ा अन्याय और शोषण क्या हो सकता है? इस प्रकार न घरपरिवार और बच्चों की उचित देखभाल हो पाती है और न दफ्तर में संतोषजनक काम. मैं तो आप और पिताजी के डर से कुछ नहीं कहता अन्यथा मेरा वश चले तो मैं आज ही नीरजा से नौकरी का इस्तीफा लिखवा दूं."

अपने पति की ये अप्रत्याशित बातें सुन कर प्रसन्नता से मेरा हृदय बांसों उछल पड़ा था. मैं चकित थी. सदा ही गंभीर रहने वाले कैसे निर्भीक हो कर बोल रहे हैं. मन ही मन मैं उन के प्रति अत्यधिक श्रद्धानत हो उठी थी. मेरे मन में उन के 'दब्बू' होने का भाव जाता रहा था. मुझे लगा था उन में अपनी बात कहने का साहस और बल है. मुझे उन पर गर्व हो गया था.

रश्मि अत्यंत गंभीर मुद्रा में वहां से चली गई थी. उस के जाने के बाद साससमुर और जेठजी भी बड़बड़ाते हुए चले गए थे.

उन के जाते ही मैं अपनी पति के पास पहुंची और मुसकराते हुए उन के गले में दोनों बाहें डाल कर बोली थी, "मुझे नहीं पता था कि आप इतने गहराई से सोचने वाले, स्पष्ट वक्ता हैं और मुझे इतना चाहते हैं. आप ने आज मेरे हृदय के तार ही झनझना दिए हैं. आज मुझे आप का सही व्यक्तित्व देखने को मिला है."

वह मुसकरा पड़े थे, बोले थे, "नीरू, मुझे शांत और गंभीर देख कर क्या तुम यह समझती हो मैं तुम्हें नहीं चाहता? तुम से मुझे सहानुभूति और प्रेम नहीं है? मैं प्रदर्शन या दिखावा नहीं करता. सहनशील और सहृदय हूं, किंतु आंखें मूंद कर चलने वाला नहीं हूं. घर में क्या हो रहा है, कौन क्या कर रहा है, किस की क्या मनोवृत्ति है, सब पर मेरी दृष्टि रहती है. मैं तुम्हारे दुख को समझता रहा हूं. मैं ने तुम्हारे हृदय की पीड़ाओं को सुना है, किंतु पारिवारिक अशांति के भय से चुप रहा हूं. और उचित अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हूं.

"आज रश्मि ने मुझे तुम्हारे प्रति किए जाने वाले अन्याय और शोषण के प्रति उठ खड़ा होने के लिए साहस और बल प्रदान किया है. अब मैं किसी की नहीं सुनूंगा. हम कम खा लेंगे, मोटा पहन लेंगे और सादा जीवन व्यतीत करेंगे, किंतु अब मैं तुम्हें नौकरी नहीं करने दूंगा. तुम्हारा स्थान घर में रह कर घर की देखभाल और सुव्यवस्था करना है."

मेरी आंखों से आंसू बहने लगे थे. वे आंसू अनिर्वचनीय प्रसन्नता के थे. एकाएक आंसुओं से हथेलियां गीली होने पर उन्होंने मेरा मुंह अपनी ओर उठा कर कहा, "अरे, तुम तो रो रही हो! आज तो दीवाली है, दीवाली के दिन कहीं रोते हैं?" उन के यह कहने पर मैं मुसकरा पड़ी थी.

मेरे बालों की लट को गाल से हटाते हुए उन्होंने पुनः मुसकरा कर कहा, "जाओ, अंधेरा घिर आया है. रश्मि को साथ ले कर खुशी के दीप जलाओ. खूब पटाखे और फुलझड़ियां छोड़ो और हंसोगाओ." ●



कहानी • कल्याणी

दीवाली का दिन

कई दिन से नन्हा अमित पटाखे लेने की जिद कर रहा था. सुरेश उसे यह कह कर बहलाने की कोशिश करता था कि पटाखे नहीं लेते, बेटा, उन से जल जाने का डर रहता है.

"सभी तो छुड़ाते हैं. अंकुर के पिताजी ने उसे ढेर सारे पटाखे दिलाए हैं. पिताजी, फिर आप ही हमें पटाखे क्यों नहीं दिलाते?"

सुरेश ने आव देखा न ताव, बच्चे के गाल पर एक तमाचा जड़ दिया, "हर वक्त

**दीवाली के दिन पता नह
क्या हो जाता कि मैं सा
नहीं रह पाती. लेकि
की दीवाली पर जब अ
पटाखे चलाने की जि
तो मैं खुद को रोक न
और अपना फैसला
लिया.**

दिनेश के बाद शेखर की दम तोड़ने की खबर ने मुझे पत्थर का बना दिया था. मैं सब कुछ सह गई.

जिद करता रहता है, मानता ही नहीं है."

अमित रोने लगा. मोनिका आखिर उस की मां है. वह यह सहन न कर सकी और बोल उठी, "आप कैसी बातें करते हैं? क्या बच्चा यह सब समझ सकता है? वैसे भी अगर कोई रोटी पकाते आग में जल जाए तो क्या घर में आग जलनी बंद हो जाती है? कोई पानी में डूब जाए तो क्या पानी पीना बंद हो जाता है?" उस की आवाज में थोड़ा आवेश था.

"तुम जो चाहो करो, मुझ से क्यों कह रही हो," सुरेश ने तल्खी से कहा.

"ठीक ही तो कहती है मोनिका, बेटे, किसी की विषाक्त भोजन से मृत्यु हो जाए तो खाना उस के बाद भी खाया जाता है. हर आदमी इस डर से खाना नहीं छोड़ देता कि कहीं वह भी न मर जाए," मैं ने सुरेश को समझाते हुए कहा.

मेरे यह कहने पर सुरेश रो पड़ा. वह बोला, "घर में पटाखे तुम सह सकोगी, मां?"

"हां, क्यों नहीं?" मैं ने बड़े विश्वास से कहा और अमित को छाती से लगा लिया, "मैं तुझे पटाखे दिला कर लाऊंगी, मेरे प्यारे बेटे, रोते नहीं हैं."

नन्हे अमित को यह समझ में आने का



तो प्रश्न ही नहीं था कि उसे तमाचा किस बात पर लगा है, परंतु बच्चों का मन बड़ा निर्मल और भोला होता है. वह सुरेश को रोते देख कर सहम कर उस के पास जा कर बोला, "अच्छा पिताजी, हम पटाखे नहीं लेंगे."

यह सुन कर सुरेश ने अमित को अपनी बांहों में भर लिया था. मेरी अपनी आंखों में भी आंसू छलछला आए थे. उन लोगों को कह कर कि तुम लोग आराम करो, मैं अपने कमरे में चली आई थी.

कमरे में आ कर मैं पलंग पर पड़ गई. यह मेरी कैसी कमजोरी है कि मैं सारे वर्ष सामान्य रहने पर भी दीवाली के दिन सामान्य नहीं रह पाती. इतना समय बीत गया, अब तो दर्द की चिनगारी राख में दब कर बुझ जानी चाहिए थी, परंतु पता नहीं कि दीवाली के दिन कैसा तूफान आता है जो राख में दबी सब चिनगारियों को फिर से प्रज्ज्वलित कर देता है.

दीवाली की ही तो बात है जब सब कुछ जलभुन कर नष्ट हो गया था. करीब दस बजे का समय था. एक रंगरोगन वाला आया कि रंगरोगन करवा लीजिए. मैं ने यह कह कर कि आज नहीं करवाना, उसे वापस कर दिया. सोचा था कि कौन दीवाली के दिन काम बढ़ाए. वैसे ही बहुत से काम हैं. पेंटर वापस चला गया, पर नीचे उसे शेखर मिल गए थे जो उसे वापस ले आए. वह अंदर आ कर मुझ से बोले थे, "हो सकता है कि तुम्हारा आज इसे वापस करना इस की दीवाली की खुशियां छीन ले. आज इसे कहीं और काम नहीं मिलेगा, इसलिए मैं इसे वापस बुला लाया हूं."

मैं कुछ न कह कर अंदर चली गई थी. थोड़ी देर बाद ही मैं ने चीखपुकार सुनी तो कुछ भी नहीं समझ पाई. बाहर आई तो भड़कती हुई आग ही देख पाई थी. देखते ही मैं कंबल लेने दौड़ गई. सामने जलता हुआ पेंटर आ गया था, "बाईजी, बचाओ," और मैं कंबल उस के ऊपर डाल कर भागती हुई भीतर चली गई.

दूसरा कंबल लाई तो शेखर
वह उन के ऊपर डाल दिया. परंत
"मां बचाओ...मां, बचाओ" की
कानों को चीर रही थीं. तीसरा कं
आई तो देखा कि दिनेश का एक
गया था. उस ने उसे नल के नीचे
था.

यह सब देख कर मैं एकदम
सी हो गई थी. कुछ समझ में नहीं अ
कि क्या करूं. परंतु आवाजों को
पड़ोस के लोग आ गए थे. उन्हीं लो
घायलों को हस्पताल पहुंचा दिया

डाक्टरों ने बताया था कि
अवश्य बच जाएगा, क्योंकि उस
पहली डिगरी के हैं. शेखर के जख
डिगरी के थे और उन के भी बचने
थी, परंतु दिनेश के जख्म तीसरी
थे, इसलिए उस के बचने की को
नहीं थी.

शेखर के अपने घर में कोई
उन के पिताजी बचपन में ही चल
को मरे सात वर्ष हो गए थे. मैं ने
वालों को फोन करा दिया था. मेरा
सुरेश भी इस हादसे के बाद एक
गया था. वह न रोता था और न बो
डाक्टरों ने कहा था कि उस की दे
सख्त जरूरत है.

मेरे घर से मां, पिताजी और भै
गए थे. मां, जो अपनी पांचों
विवाह कर के स्वयं को मुक्त म
रही थीं, अचानक यह हादसा देख
से लिपट कर रो पड़ीं. किसी तरह
पत्थर रख कर मैं ने ही उन्हें दिला
प्रयत्न किया था.

दिनेश की हालत बहुत
इसलिए मैं उस की सेवा में जुट प
परदा लगा कर पितापुत्र को अल
था. कितनी ही बार शेखर बुला
दिनेश को छोड़ कर नहीं जा
सोचती थी कि दिनेश की से



जितने समय भी है. शेखर की देखभाल बाद में कर लूंगी. डाक्टरों ने दिनेश के लिए 72 घंटे बहुत खतरे के बताए थे, परंतु वह तो उस से पहले ही चल बसा था.

दिनेश के मृतक शरीर को ले कर हम घर चले आए थे. जब उसे श्मशान ले गए तो लगता था कि दिल के दो टुकड़े हो जाएंगे. परंतु कहां हो पाए थे? अभी तो इसे बहुतकुछ झेलना बाकी था.

अभी लोग दिनेश का क्रियाकर्म कर के श्मशान से वापस भी न आए थे कि शेखर की दम तोड़ने की खबर आ गई. मेरा दिल तो पत्थर का बना था जो इस पर भी न टूटा और मैं सब कुछ सह गई थी.

शेखर की बाद में सेवा करने का अरमान धरा का धरा रह गया. पहले से यह पता होता तो मनप्राण से उन की सेवा तो कर लेती. शेखर भी तो कितना तड़पे होंगे. पर

"बस, मैं दूर से ही देख रही हूं." उन के बुलाने पर मैं कहती. पटाखों से अधिक तो मुझे पिता व पुत्रों के क्रियाकलापों को देख कर आत्मतृप्ति होती थी.

दुख के इन क्षणों में भी मैं अपने पति के काम नहीं आ सकी थी.

आग लगने का कारण शायद यह था कि शेखर जब पेंटर को स्प्रिट दे रहे थे तो बाहर से किसी पटाखे की चिनगारी स्प्रिट में गिर गई और आग भड़क उठी. यह सब इतनी जल्दी में हो गया कि कोई कुछ भी नहीं जान पाया कि क्या, कैसे हुआ. परंतु पटाखे की वह चिनगारी हमारे सर्वनाश का कारण बन गई थी.

शेखर के मृतक शरीर का भी दाहसंस्कार किया गया. फिर वही सब क्रियाकलाप, लोगों का आनाजाना, शोक व्यक्त करना और चले जाना. सब मशीन


अंजली
ओनीयन चोपर
व्हेक्यूम बेस व्हेजिटेबल कटर
ग्लास और स्पून्स स्टेंड
गीफ्ट पेक
कंटेनर्स
सर्व्हींग कम कटींग ट्रे
व्हेक्यूम बेस ज्यूसर
रिव्होल्व्हींग ग्लास केरीअर
व्हेक्यूम बेस कोकोनट स्क्रेपर
थ्री वे एग स्लाइसर
व्हेक्यूम बेस नट कटर
किचन हेल्पर (चार कॅसेट ब्लेड्स् के साथ)
ANJALI
THE LARGEST RANGE OF KITCHENWARE
MORE THAN 100 VARIETIES
सभी बर्तनोंकी दुकानोमें जनरल और डिपार्टमेंटल स्टोअर्समें उपलब्ध !

सी गति से हो गया. मुझे तो दुनियाजहान कोई होश ही नहीं था. समझ ही नहीं ा था कि मेरे सुखी परिवार में एकदम आग लग गई.

हम लोग तो रोते रहे, परंतु विजय ने एक भी दिन खराब नहीं किया. ार अणुशक्ति से संबंधित संस्थान में ा करते थे. वहां के सब अधिकारियों से ामिला कर उन्होंने शेखर की भविष्य ध, पेंशन व ग्रेच्युटी इत्यादि का सारा ाब कर लिया था. उन का कहना था कि तभी करनी चाहिए जब लोहा गरम अभी तो नईनई बात है, सब लोगों की ानुभूति है. समय के साथसाथ सब ठंडा जाएगा.

या ने उसी समय भागदौड़ कर के उसी फ्लैट में रहते रहने का आदेश भी वा लिया और मेरे लिए कंप्यूटर में एक री की व्यवस्था भी करा दी थी. एससी. तो मैं ने किया ही था, कंप्यूटर काम करने के लिए भैया मुझे ट्रेनिंग लेने लए कह रहे थे. मैं अपने में बिलकुल मबल नहीं पा रही थी कि कुछ कर सकूं. अपनी दिनचर्या ही भार लग रही थी. सब तो मेरे सोच के बाहर की बात थी. के कहने पर मैं रो पड़ी, ''मुझ से कुछ होगा, भैया, मैं यह सब नहीं कर गी.''

मां भी रो पड़ीं और रोतेरोते बोलीं, जो नहीं है, उसी के लिए रोती ही ी. जो है, उस की तरफ तो देख, बेटी,'' हुए उन्होंने सुरेश को मेरी ओर ढकेल था.

सुरेश को मैं ने देखा तो मेरे लिए अपने टे को पहचानना कठिन हो गया. इस वह कितना भयभीत हो गया था. पता के उस के चेहरे पर ऐसा क्या था जिस ऊपर से नीचे तक कंपा दिया. मैं ने कस कर बांहों में भर लिया था और आंसुओं से उस के बाल भिगोती रही

भैया दर्द से भीगी हुई आवाज में बोले, ''सुख के समय तो हर कोई मुसकराता है, किंतु सच्ची परीक्षा तो दुख में ही होती है. अब तो हम लोगों को बड़े धैर्य से काम लेना पड़ेगा. धैर्य खोने से कैसे काम चल पाएगा?''

''हां भैया, तुम ठीक कहते हो. मैं जहां तक भी होगा, धैर्य रखूंगी. अपने सुरेश के लिए जिऊंगी, कंप्यूटर का काम भी सीखूंगी,'' मैं ने रोते हुए कहा.

मैं दफ्तर जाने लगी. शुरूशुरू में तो कुछ भी समझ में नहीं आता था, परंतु मैं ने धैर्य का सहारा नहीं छोड़ा. धीरेधीरे सब समझ में आने लगा.

पति और बच्चे को खो कर बस एक ही सहारा बचा था, सुरेश. उस का उदास मुंह देखती तो रोने को मन होता था. तब भी मैं हंसने का प्रयत्न करती थी. उस ने भी तो इस कच्ची उम्र में सब कुछ गंवा दिया था. अपने पिताजी और दिनेश को, जो केवल उस का भाई ही नहीं, मित्र भी था. कैसी प्यारी सी जोड़ी थी मेरे बेटों की, परंतु सब तहसनहस हो गया था.

सुरेश स्कूल जाने लगा. धीरेधीरे उस के कुछ मित्र भी बन गए और वह पढ़ाई में मन लगाने लगा. वह स्वभाव और बुद्धिमत्ता में अपने पिता पर ही गया था. हर वर्ष अपनी कक्षा में प्रथम आता था. समय बीतता गया और वह डाक्टर बन गया. मेरे जीवन की गाड़ी भी अब पूरी तरह पटरी पर आ कर चल निकली थी.

मोनिका भी डाक्टर है और बहुत शांत स्वभाव की है. वह ठीक ही तो कहती है कि क्या आग लग जाने से आदमी आग का प्रयोग बंद कर देता है? पर मैं क्या करूं? दीवाली मुझे पता नहीं क्यों इतना कमजोर कर देती है.

कितने धीरगंभीर थे शेखर, न कभी अधिक हंसना, न ज्यादा बोलना. अपने काम से ही मतलब रखते थे. परंतु दीवाली की रात्रि को उन में एकदम बच्चों की सी चंचलता, चपलता आ जाती थी. कितने उत्साह से दीवाली मनाते थे. दीपों की कतारें

गाते उन का मन ही नहीं भरता था.

पटाखे और आतिशबाजी शुरू करते थकते ही नहीं थे. कभी फुलझड़ी जला र सुरेश को देते, कभी दिनेश को, कभी नार और कभी तरहतरह की शक्ल लेने ली फिरकनी चलाते. वह मुझे भी बुलाते, र मैं कहती थी, "बस, मैं दूर से ही देख रही ." पटाखों से अधिक तो मुझे पिता और त्रों के क्रियाकलापों को देख कर ात्मतृप्ति होती थी. पता नहीं कब तक यह ब चलता रहता और मैं उसी आत्मतृप्ति भरी हुई सो जाती थी.

क्या मैं अपनी नादानी के कारण अब ोनिका, सुरेश और अमित को इस सुख से चित नहीं कर रही हूं? जैसे भी हो, मुझे पनी इस कमजोरी पर विजय पानी ही है.

दूसरे दिन अमित को साथ ले जा कर ने खूब सारे पटाखे, दीपक, खिलौने और मठाइयां खरीदीं. जब हम लोग सामान से दिफदे घर आए तो सुरेश ने पता नहीं कैसी जरों से मुझे देखा. वह शायद मेरा मन टटोलने का प्रयत्न कर रहा था, परंतु मुझे आज अपनी कमजोरी पर काबू पाना था. शाम को दीपों की कतारें सजाईं. फिर पटाखों की बारी आई. मोनिका अमित को फुलझड़ी जलाजला कर दे रही थी. अमित बारबार सुरेश को कह रहा था, "पिताजी, आप भी छुड़ाओ."

सुरेश का मन कुछ भारी लग रहा था. मैं उठी और दो फुलझड़ी जला कर एक सुरेश के हाथ में दी, एक अमित को.

नन्हा अमित बोल उठा, "अम्मां, आप भी छुड़ाइए न."

"हां बेटा, मैं भी छुड़ाऊंगी," मैं ने भी फुलझड़ी जला कर हाथ में ले ली. इस के साथ ही मैं ने देखा कि सुरेश और मोनिका के चेहरे पर संतोष और प्रसन्नता की एक रेखा उभर आई है.

मुझे इस बात का संतोष था कि जिस कमजोरी ने मेरे मन में इतने वर्षों से घर किया हुआ था, उसे मैं एक निश्चय के साथ बिना विचलित हुए समूल नष्ट कर पाई.●

ानी • साधना श्रीवास्तव

दीवाली के दिन एक दुर्घटना में अमित को खो कर मैं दुख की अंधेरी घाटियों में भटक रही थी, पर विशाल ने अतीत के सायों को हटा कर मेरी जिंदगी को एक नई ज्योति दे दी.

नई ज्योति

सांझ पूरी तरह घिर आई थी, पर विशाल का अभी तक पता नहीं था. दोपहर से ही अपने एक मित्र साथ 'थोड़ी देर के लिए' कह कर चला था. मैं बेचैनी से उस की प्रतीक्षा कर थी. मांजी कितनी बार आ कर कह गई "बहू, वस्त्र बदल डालो." और मैं थी

पनी रोशनी तो भा है, क्यों विशाल!" जी की बात पर मैं गई और आगे बढ़ विशाल के हाथों सामान थाम लिया.



कि अपनी शंका को मन में ही पाले डरी जा रही थी. सच भी तो है, दीवाली के दिन विशाल का घर से बाहर जाना कितना दुखद भ्रम लगता है, कहीं...आगे मैं नहीं सोच पाती.

नीचे विशाल की हंसी गूंजी तो मेरी जान में जान आई. मैं ने शीघ्रता से वस्त्र बदले और नीचे चली आई. विशाल हाथों में ढेर सी मिठाई, पटाखे, फुलझड़ी ले कर खड़ा था. अम्मां एवं मांजी दोनों समीप ही बैठी दीप सजा रही थीं. मुझे देखते ही विशाल ने उलाहना दिया, "कमाल है, सांझ घिर आई और अपने घर में अभी रोशनी भी नहीं हुई."

"अपनी रोशनी तो शुभा है, क्यों, विशाल?"

मांजी की बात पर मैं झेंप गई और आगे बढ़ कर विशाल के हाथों से सामान थाम लिया.

दीप सजाने के बाद विशाल ने शहर में रोशनी देखने का प्रस्ताव रखा तो मैं टाल नहीं सकी. उस की किसी भी इच्छा को मैं टालना नहीं चाहती थी. वही तो था जिस ने मेरे मुर्दा होंठों पर जान डाल दी थी.

काम समाप्त कर के जब मैं कमरे में पहुंची, विशाल सो चुका था. बत्ती बंद कर के मैं खिड़की के समीप चली आई. दीवाली के दिन कितनी खुशी रहती हूं मैं. शायद प्रयास करती हूं. अम्मां से नजरें मिलाने में क्यों संकोच अनुभव करती हूं? मैं ने बाहर दृष्टि दौड़ाई, कुछ घरों में दीए अभी तक जल रहे थे. कुछ हवा से पराजित हो कर अपनी रोशनी गंवा बैठे थे. इसी दीवाली ने मुझ से एक बार मेरा सब कुछ ले लिया था और फिर बहुत कुछ दिया भी था. चार वर्ष पूर्व की घटना मेरे स्मृतिपटल पर तैर गई. जब मैं अमित की पत्नी थी.

मेरे विवाह की पहली दीवाली करीब थी. अचानक एक दिन मुझे पता चला कि इस घर में दीवाली नहीं मनाई जाती. अमित की मां ने बताया था कि उन के चचेरे ससुर के छोटे भाई के मझले पुत्र की मृत्यु इसी दिन हुई थी. इसी कारण इस घर में वर्षों से यह त्योहार नहीं मनाया जाता. हां, यदि इस दिन किसी की बहू के लड़का पैदा हो जाए तो फिर से यह त्योहार मनाया जा सकता है.

इस बात का ज्ञान होने से पूर्व ही मैं ने अमित से कह दिया था कि दीवाली का पर्व मुझे बहुत पसंद है. इस पर अमित ने घोषणा कर दी, "अब इस घर में भी दीवाली मनाई जाया करेगी. भला यह भी कोई बात हुई कि सारे लोग त्योहार मनाएं और हम अंधेरे में रहें? कोई कारण पूछे कि क्यों नहीं मनाते तो उसे रोक कर कहें, ठहरो उंगली पर जोड़ कर देख लें कि किस की मृत्यु हुई थी."

उस के कहने के ढंग पर अमित की मां हंस पड़ी थीं. थोड़ी नानुकुर के बाद एवं हम सब का ध्यान कर के मांजी तैयार हो गई थीं.

दस दिन पूर्व से ही हम ने दीवाली मनाने की तैयारियां शुरू कर दी थीं. मेरे लिए नीली साड़ी, मांजी के लिए क्रीम रंग की एवं अमित के लिए सफारी सूट बना. हमारे इस नवीन उत्साह से पड़ोसी भी प्रसन्न हुए.

दीवाली के दिन अमित ने अपने कुछ दक्षिण भारतीय एवं विदेशी मित्रों को आमंत्रित किया था. शाम को मैं और मांजी खाने की सारी तैयारी कर चुके थे कि तभी बिजलीघर से अमित के लिए फोन आ गया. एक जेनरेटर खराब था. इंजीनियर होने के कारण अमित को बुलाया गया था. मैं ने जाने का विरोध किया तो अमित ने हंस कर कहा था, "उन की बात सोचो शुभा जो इस त्योहार के दिन भी काम कर रहे हैं. बिजलीघर के अनिवार्य सेवाओं में होने के कारण मेरा जाना आवश्यक है."

दीप सजा कर हम अमित की प्रतीक्षा करने लगे थे. थोड़ी देर बाद फिर फोन की घंटी बजी थी. मेरा खयाल था कि अमित का फोन होगा, वह शायद यह बताना चाहता है कि उसे घर पहुंचने में अभी कुछ देर लगेगी. पर फोन मुख्य प्रबंधक का था.

स ने पूछा था, "अमित साहब हैं?"

"वह तो चले गए. क्या अभी तक हुंचे नहीं?" मैं ने घबरा कर पूछा था.

"नहीं, शायद रास्ते में होंगे."

दो घंटे बीत गए थे. इस मध्य जलीघर से तीन फोन आ चुके थे. मैं ाश्चर्य में थी कि अमित बिजलीघर न हुंच कर कहां चले गए. मांजी बेचैनी में दरबाहर चक्कर लगा रही थीं.

तभी अमित के मित्र आ गए, पर ोजन करने नहीं, यह बताने कि अमित बजलीघर जाते समय एक गोली का शकार हो गया. बाजार में हलवाई की कान के सामने जुआ चल रहा था. सभी राब के नशे में थे. किसी बात पर उन में झगड़ा हो गया. एक ने क्रोध में बंदूक चला दी और गोली संबद्ध व्यक्ति को न लग कर उधर से गुजर रहे अमित के सिर पर लगी और वह वहीं ढेर हो गया.

अमित की मृत्यु के बाद मांजी की निगाहों का सामना करने की सामर्थ्य मुझ में नहीं थी.

जो प्रथा वर्षों से बंद चली आ रही थी उसे शुरू करवा कर मैं अपनेआप को कैसी अपराधी सी महसूस कर रही थी.

"कितनी अच्छी लग रही हो, भाभी, सोनू को गोद में ले कर." सोनू रोने लगा तो मैं ने उसे उठा लिया तभी रीता आते ही बोल पड़ी.



मांजी अपने वैधव्य से इतना नहीं टूटी थीं, जितना कि अमित की मृत्यु ने उन्हें तोड़ कर रख दिया. अमित की आयु जब 10 वर्ष की थी तभी उन के पिता की मृत्यु हो गई थी. मांजी ने मकान किराए पर दे कर एवं जेवर बेच कर अमित को इंजीनियर बनाया था.

अमित की मृत्यु के बाद उस के दूरदराज के कई रिश्तेदार सहानुभूति जताने आए. बाबूजी ने कई बार चाहा कि मैं उन के साथ चलूं, पर मांजी को मैं अकेली कैसे छोड़ देती. मायके के भरोसे रहना न मुझे पसंद था, न मांजी को.

विवाह से पूर्व मैं ने इंटर किया था. पांच बेटों में मैं अकेली बेटी थी. इसी कारण मेरा विवाह जल्दी कर दिया गया था. पर बाबूजी के अरदली अख्तर चाचा के साथ शौक में ही मैं ने टाइपिंग सीख लिया था. दो माह का प्रशिक्षण ले कर मैं ने प्रमाणपत्र प्राप्त कर लिया और अमित की विधवा होने के नाते मुझे बिजलीघर में ही टाइपिस्ट की जगह मिल गई.

जिस बिजलीघर में अमित इंजीनियर के पद पर था, उसी में उस की पत्नी टाइपिस्ट बन गई थी. इसी बीच मैं ने प्राइवेट तौर पर बी.ए. कर लिया. कानपुर की एक प्रतिष्ठित फर्म में मुझे निजी सहायक की जगह मिल गई तो दुर्गापुर छोड़ कर हम कानपुर आ गए. कानपुर के एक महल्ले में हमें डेढ़ सौ रुपए किराए में मकान मिल गया. धीरेधीरे छः माह बीत गए.

एक दिन मैं दफ्तर से लौटी तो मांजी ने बताया कि सामने वाले फ्लैट में एक नया किराएदार आ गया है. मैं ने विशेष रुचि नहीं ली और वस्त्र बदल कर रसोईघर में आ गई. चाय का पानी रखते हुए मेरी दृष्टि रसोई में पड़े एक झूठे कप पर पड़ी. मुझे आश्चर्य सा हुआ क्योंकि मांजी चाय नहीं पीती थीं.

"कोई आया था क्या, मां ?"

अमित की मृत्यु के बाद न तो कभी मांजी ने मुझे बहू कहा था, न मैं ने उन्हें मांजी. इन शब्दों से परे हट कर हम उस रिश्ते को अनदेखा करना चाहते थे जो अमित के रहने से था.

"हां, बेटी, विशाल आया था. वही सामने वाला नया किराएदार."

मांजी पड़ोस में किसी से ज्यादा संबंध नहीं रखती थीं क्योंकि जब भी वह कहीं बैठतीं तो महिलाएं मेरी चर्चा शुरू कर देती थीं. पर विशाल का आते ही मांजी से परिचय हो जाना आश्चर्य की बात थी.

दूसरे दिन जीने से उतरते हुए मुझे विशाल दिख गया. वह अपने कमरे में ताला लगा रहा था. हम दोनों ही एकदूसरे को देख कर चौंक पड़े.

"विशाल तुम!"

"और शुभा, तुम यहां कैसे!" विशाल की आश्चर्यपूर्ण दृष्टि मेरी मांग पर पड़ी. "तुम्हारी तो शादी हो गई थी?"

"हां हुई तो थी." एक पीड़ा भरी मुसकान मेरे होंठों पर पसर गई.

"ओह, तो मांजी की वह बहू तुम ह हो जिस की कल वह प्रशंसा कर रही थीं."

"यहां कैसे?" मैं ने विषय बदल दे चाहा.

"डिगरी कालिज में प्रवक्ता बन क आया हूं."

बंद आंखें

मैं सो भी जाऊंगा तो क्या
मेरी बंद आंखों में,
तमाम रात कोई झांकता
लगे है मुझे.

—जांनिसार अख्तर



''ओह!'' कहते हुए मैं नीचे उतर आई. ने विशाल का स्कूटर खड़ा था. अचानक ने अमित की याद आ गई.

वि शाल अकसर हमारे यहां आने लगा. मैं ने कई बार प्रयास किया कि मांजी से ह दूं कि विशाल का आना ठीक नहीं है. हम हलाएं हैं, कोई भी उंगली उठा सकता है. र विशाल की अमित से मिलतीजुलती कई दतों ने हम दोनों को बांध लिया था. शाल अमित की तरह हंसता, वैसे ही तन र खड़ा होता. दाहिनी ओर मांग काढ़ता. जी अकसर उस से बातें करतेकरते कहीं जातीं. विशाल एक बजे घर आ जाता , इस कारण खाली समय में मांजी के पास ना आता.

विशाल मेरे दादाजी के संरक्षण में धकार्य करता था. वह मुझे पसंद करता . यह बात मेरे विवाह के बाद मेरी सहेली मुझे ज्ञात हुई थी.

एक शाम विशाल मेरे यहां खाने आमंत्रित था. हुआ यह कि उस दिन शाल की गैस खत्म हो गई थी. मांजी ने र रात के खाने पर आमंत्रित कर लिया .

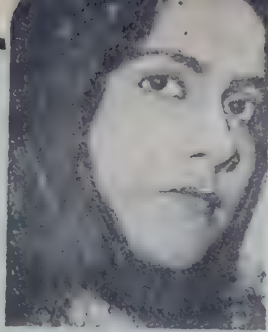
खाने की मेज पर विशाल बोले जा रहा , ''याद है, शुभा, एक दीवाली पर मैं हारे यहां खाने पर आमंत्रित था. किसी र्यवश मैं घर नहीं जा सका था. गुरुजी ने बुला लिया था. बड़ा स्वादिष्ट भोजन वाया था मां ने. इस बार भी मैं छोड़ूंगा .''

मैं ने मांजी को देखा, उन की आंखें डबा आई थीं. तभी विशाल को अपनी ती का एहसास हो आया था और वह नोश हो गया था.

एक दिन मैं दफ्तर से ज्यों ही निकली, ाल स्कूटर पर आता दिखाई दिया.

''शुभा, मैं तुम्हें ही बुलाने जा रहा था. बार फोन किया, पर लाइन ही खराब ''

''क्यों क्या हुआ?''



आंसू

वोह दिन गए 'अजीज' कि
हंसते थे रातदिन
मिलता है दिल को चैन
आंसू बहाने में.

—अजीज लखनवी

''मां की तबीयत...''

''क्या हुआ मां को?'' मैं हलके से चीख पड़ी.

''घबराओ मत. मैं डाक्टर को बुला चुका हूं. दवा लेने आया था.''

''मुझे परची दे दो.''

''तुम बस से आओगी और दवा तुरंत चाहिए,'' कहता हुआ विशाल चला गया. मैं ने सोचा, आटो कर लूं पर पर्स में सिर्फ बस का किराया था.

मे रे घर पहुंचने के पूर्व ही विशाल आ कर मां को दवा दे चुका था. मैं ने कृतज्ञता से विशाल को देखा, तभी मांजी बोल पड़ीं, ''आज विशाल न आता, बेटी, तो जाने क्या हो जाता. तेरा क्या होता?''

विशाल ने बताया कि वह कालिज से लौट कर मां के पास आया तो मां गुसलखाने में बेहोश पड़ी थीं.

मैं जानती थी, जवान बेटे की मौत ने मांजी को किस कदर तोड़ दिया है. अपना दुख किसी से कहें नहीं तो इस का अर्थ यह तो नहीं कि वह दुखी नहीं हैं. अमित और मेरा साथ तो कुछ माह का था, पर मांजी ने तो 25 वर्ष तक उसे पाला था.

उस रात 10 बजे तक विशाल हमारे



शेर दिल जवानों के लिए...
नई!
लिप्टन
टाइगर
चाय
इसके कड़क स्वाद के हमले से
आप बच नहीं सकते
कड़क चाय का भरपूर संतोष
LIPTON
TIGER
TEA
STRONG & SATISFYING
LIPTON
माने उत्तम चा

रहा. एकाध पड़ोसी आए और लौट . मुझे जिस का डर था वही हुआ. विशाल आता है, इस बारे में कानाफूसी शुरू हो

एक दिन अचानक ही बाबूजी आ गए. थ में भाभी भी थी. बरेली का कोई रिश्ता कर आए थे. जो बात बाबूजी कहने में कोच करते, उसी के लिए भाभी को लिवा ए थे. भाभी ने दबी जबान में कहा, अमितजी थे तो उन की मां से तुम्हारा ध था. अब कौन सा रिश्ता ढो रही हो?"

पर मैं ने स्पष्ट रूप से इनकार कर ा. अमित नहीं हैं, पर उन की मां की उन जो जिम्मेदारी थी, उसे पूरा करने का अब मेरा है.

रविवार का दिन था. विशाल दो दिन छुट्टी में अपने घर इलाहाबाद गया था. धूप में ऊनी कपड़े फैला रही थी. मांजी कुरसी डाले वहीं बैठी उधड़े हुए स्वेटरों ऊन उधेड़ रही थीं. इन में अमित का ई वस्त्र नहीं था.

"तुम्हें पता है, बेटी, विशाल घर क्यों ा है?" अचानक मांजी ने पूछ लिया.

"नहीं, मां."

"उस की मां का पत्र आया था. कोई की देखनी थी."

"तो क्या विशाल की अभी तक शादी हुई है?"

"अभी कहां. हां, एक दिन तुम्हारे घर बड़ी तारीफ कर रहा था," कहतेकहते कुछ सोचने लगीं.

दो दिन की बजाए विशाल चार दिन आया. उस दिन मैं कमरे में लगी अमित तसवीर के आगे अगरबत्ती लगा रही

"बहुत मुशकिल है, शुभा, शीशे की र भेद कर सुगंध का अंदर जाना."

मैं ने चौंक कर पीछे देखा, विशाल था.

"कब आए?"

"अभी."

"शादी का क्या हुआ?" मैं ने तसवीर को पल्लू से साफ करते हुए कहा.

"तुम इस तसवीर के आगे रोज धूप क्यों जलाती हो?" विशाल ने अमित की तसवीर को गौर से देखते हुए कहा.

"यह मेरा व्यक्तिगत मामला है."

मेरे कड़े स्वर पर बिना विचलित हुए विशाल कहता गया, "मांजी को भी कई बार देखा है और अपनी मां को भी. मैं ने पूछा भी था, पर उन के पास भी इस का उत्तर नहीं था. कितनी खूबसूरती से तुम औरतें अपने मन को धोखा देती हो."

"विशाल!"

"शुभा, मां एवं मांजी की बात छोड़ो, पर तुम खुद अपने को देखो. क्या सारा जीवन इस तसवीर की धूल साफ करते और अगरबत्ती जलाते हुए बिता लोगी? जरा जा कर उन महिलाओं से पूछो जो अपनी उम्र का यह हिस्सा तो जोश में बिता लेती हैं, पर उस वक्त पछताती हैं जब पूरे परिवार के लोग उन्हें तन्हा छोड़ जाते हैं."

विशाल के शब्दों में एक कड़वा सच था. उस रात मैं जितना रोई, उतना अमित की मृत्यु पर भी नहीं रोई थी. रहरह कर अमित एवं विशाल का चेहरा सामने आ जाता. एक जो अमित था और दूसरा जो यथार्थ था.

दूसरे दिन मांजी ने बताया कि विशाल ने अपनी मां की पसंद ठुकरा दी है. मुझे सुन कर आश्चर्य नहीं हुआ. मैं समझ गई, विशाल किसी भ्रम का शिकार है.

दीवाली का पर्व करीब आ रहा था. दफ्तर में लिपाईपुताई शुरू हो गई थी. दफ्तर के अधिकांश लोग अपनेअपने घर जाने के लिए छुट्टी ले रहे थे. मैं ने इस बीच ज्यादा से ज्यादा काम निबटाने का फैसला कर लिया था. जब भी यह त्योहार करीब आता, मैं विचलित हो उठती. अमित की मौत ऐसे दिन हुई थी जिस दिन को मैं भूलना भी चाहती तो यह त्योहार याद दिला जाता.

एक शाम मैं घर लौटी तो मांजी किसी महिला से बातें कर रही थीं. मुझे देखते


जल गया ?
फ़ौरन लगाइए बरनॉल–
जले के जख़्म का ख़ास इलाज
जले के जख्म में और दूसरे जख्मों में फ़र्क है. जलन की पीड़ा बहुत तेज़ होती है. जलने से फफोले पड़ जाते हैं. इसके लिए आपको चाहिए जले के जख्म का ख़ास इलाज बरनॉल ऐंटिसेप्टिक क्रीम. बरनॉल फ़ौरन ठंडक और आराम पहुँचाती है. फफोले नहीं पड़ने देती. जले के जख्म को जल्द अच्छा करनेवाले सभी जरूरी तत्त्व बरनॉल में हैं.
बरनॉल हमेशा घर में रखिए.
Burnol
Burnol
बरनॉल
जले के जख़्म का ख़ास इलाज
BC. 5641

मांजी ने कहा, "बेटी, यह विशाल की मां अभी आई हैं. विशाल तो कहीं गया है."

मैं ने महिला को हाथ जोड़ कर प्रणाम या. मांजी प्रसन्नता में बोले जा रही थीं, ुभा, विशाल की मां तो मेरी बहन कलीं. हम दोनों का मायका अयोध्या में है. तो इन्हें देखते ही पहचान गई. मुझे क्या ा था कि विशाल इन का बेटा है."

मैं परेशान थी, मांजी को क्या होता जा ा है? विशाल के परिवार से इतना जुड़ने क्या आवश्यकता है? मैं इन्हें कैसे झाऊं कि उन का विशाल के इतना करीब ना मेरे हित में अच्छा नहीं है. क्या विशाल गंभीर आंखों के पीछे छिपे भाव को मैं ीं समझती? मैं जानबूझ कर अनजान बनी ती हूं, पर इस का मतलब यह तो नहीं कि अनजान हूं.

एक शाम मैं अपने कमरे की खिड़की दूर एक फैक्टरी की चिमनी से उठते हुए ं को देख रही थी. कहां तक अतीत से ूं? हर जगह मानो अमित की छाप है. ुभा!" मैं ने चौंक कर देखा, विशाल खड़ा विशाल ने मेरी भीगी आंखों को लक्ष्य या, फिर धीरे से बोला, "परसों दीवाली कल मेरी बहन रीता अपने पति सुदेश बच्चे के साथ आ रही है. मां चाहती हैं त्योहार हम एक साथ मनाएं."

अचानक मैं भरभरा कर रो पड़ी. ाल कुछ पल खामोश खड़ा रहा. फिर ा, "जानता हूं, शुभा, इस त्योहार ने तुम या छीन लिया है. तुम्हें शक है न कि ली का त्योहार मनाने से ही अमितजी मौत हुई थी, मैं यह त्योहार पहले ही ना चाहता हूं."

मैं ने झटके से सिर उठा कर विशाल देखा.

"हां, शुभा, मैं तुम्हें यों घुटते हुए नहीं सकता. मैं तुम से शादी करूंगा."

"नहीं," मैं चीख पड़ी, "मैं मांजी को छोड़ सकती. मैं अमित की थी और इसी में रहूंगी."

"छोड़ने को कौन कहता है, बेटी? शादी के बाद हम चारों एक साथ रहेंगे."

यह स्वर विशाल की मां का था.

"नहीं...नहीं." मैं रोती हुई बाहर निकल आई. मांजी से लिपट कर मैं रोने लगी. मांजी मौन रहते हुए मुझे थामे रहीं.

दूसरे दिन रीता अपने पति एवं बच्चे के साथ आ गई. मैं विशाल को स्पष्ट रूप से मना करने के लिए अवसर तलाशती रही, पर रीता हर वक्त मेरे पास बनी रही. रीता ने तो मुझ से यहां तक कह दिया, "भैया आप को बहुत चाहते थे. आप के बारे में अकसर चर्चा करते रहते थे."

पर मेरे मन में तो विशाल के लिए कुछ भी नहीं था. वह तो संयोग से मेरे घर के सामने का किराएदार बन कर आ गया था.

रीता का बच्चा बहुत प्यारा था. शाम को मैं रोटी के लिए आटा गूंध रही थी कि रीता आ गई. तभी बाहर से विशाल ने आवाज़ दी तो वह सोनू को गलीचे पर लिटा कर बाहर चली गई. सोनू रोने लगा तो मैं ने उसे उठा लिया. तभी दरवाजे पर रीता एवं विशाल दिखे. विशाल अजीब सी दृष्टि से मुझे देख रहा था. रीता ने हंस कर कह दिया, "भाभी, कितनी अच्छी लग रही हो सोनू को ले कर."

"भाभी!"

"ओह, माफ करना. न जाने कैसे मुंह से निकल गया." रीता ने क्षमा मांग ली. उधर सोनू मेरे वक्ष पर अपना मुंह रगड़े जा रहा था. मेरे अंदर का आईना चटकने लगा. रीता को मैं ने बच्चा थमा दिया तो लगा मैं कितनी खाली सी हूं, कितनी अधूरी.

दीवाली के दिन मुझे ज्ञात हो गया कि मांजी क्या चाहती हैं. उस सारे दिन रीता, विशाल आदि व्यस्त थे. मांजी मौन भाव से देखे जा रही थीं. सारा दिन मुझे भारी पड़ रहा था. किसी काम से मांजी के कमरे में घुसते समय मेरे पांव रुक गए. मांजी बोल रही थीं, "आज के दिन शुभा पर क्या बीत रही होगी, शीला. मैं उस के सामने कितना प्रयास करती हूं खुश रहने का. मेरे

पीछे उस का जीवन बरबाद हो रहा है."

"मांजी, आप निश्चित रहें. जब मां शादी के लिए तैयार हो गईं तो हम शुभा को भी मना लेंगे. शुभा ने आप के प्रति अपना फर्ज पूरा किया है, अब आप अपना फर्ज पूरा कीजिए." यह सुदेश का स्वर था.

शाम होतेहोते विशाल ढेर सारे पटाखे, फुलझड़ी और मिठाई ले आया. मुझे लगा, फिर कुछ अनर्थ हो कर रहेगा. विशाल की इच्छा थी कि हम भी दीवाली मनाएं. मैं ने जा कर मांजी का हाथ थाम लिया, "मां, उन्हें रोको, यह ठीक नहीं हो रहा है."

"अमित तो चला गया, बेटी. अतीत के पीछे वर्तमान को मत ठुकराओ."

मां के उत्तर पर मैं चौंक पड़ी. मैं समझ गई, वह बहू को बेटी बना कर उस का घर बसाना चाहती हैं.

विशाल की मां अपने घर दीप सजा कर मेरे घर चली आईं. रीता एवं विशाल दीप सजाने में उन की सहायता करने लगे. मैं इन लोगों के बीच क्यों इतनी असहाय हो उठी थी, क्यों विशाल को चाह कर भी मना नहीं कर पा रही थी, कौन सी अदृश्य डोर मुझे खींचे लिए जा रही थी, मैं समझ नहीं पा रही थी.

सांझ पूरी तरह ढल चुकी थी. रीता, सुदेश सोने चले गए थे. मां एवं मांजी नीचे कमरे में थीं. मैं अकेली छत के कोने में बैठी जलतेबझते दीपों की लंबी कतारों को देख रही थी. तभी पीछे से हौले से विशाल ने मुझे पुकारा, "शुभा."

मैं ने विशाल की तरफ देखा. उस की आंखों में थकावट के लाल डोरे तैर रहे थे. कितना करता है यह हमारे लिए, लेकिन क्यों? क्या यह विशाल के दबे प्यार का अंकुर नहीं है?

"देख रहा हूं, विवाह से तुम सहमत नहीं हो. तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं होगा. मैं मां से मना कर देता हूं."

मैं ने फिर विशाल को देखा. विशाल में क्या कमी है जो उसे अच्छी पत्नी नहीं मिल सकती? यह तो विशाल की महानता है जो वह मुझ विधवा को पत्नी बनाना चाहता है. विशाल के बढ़े हुए हाथ को छोड़ कर क्या मैं अपनी जिंदगी के साथ अन्याय नहीं कर रही हूं?

सोनू की खिलखिलाहटों से घर कितना भर गया है. मांजी के बाद मेरे सूनेपन को बांटने वाला कौन होगा?

मैं ने विशाल का हाथ मजबूती से थाम लिया. सामने एक दीप टिमटिमा रहा था. शायद तेल समाप्त हो गया था. मैं ने विशाल की दृष्टि उधर करते हुए कहा, "वह दीप बुझने वाला है, विशाल. इस से पूर्व कि वह बुझ जाए, उस में तेल डाल दो."

सहसा मेरे कानों में आवाज आई, "शुभा... शुभा, कहां खोई हुई हो?"

मेरे विचारों की कड़ी टूट गई. कब से मैं खिड़की के रास्ते बाहर दीवाली की ढलती रोशनी को देख रही थी. रात आधी बीत चुकी थी और मैं थी कि वर्तमान के सुखद क्षणों को भूल कर अतीत में उलझी हुई थी.

विशाल ने बांहों से थाम कर मुझे पलंग पर बैठा दिया. फिर मेरी आंखों के सूनेपन को देखते हुए बोला, "सच बताओ, शुभा, क्या मुझ से विवाह कर के तुम खुश नहीं हो?"

मैं समझ गई, मेरे अंदर के रितेपन को विशाल ने पकड़ लिया है.

"नहीं, विशाल, यों ही नींद नहीं आ रही थी. तुम भी तो सो रहे थे." मैं ने मुसकराने का प्रयास किया.

"तो जगा लेतीं." विशाल ने शरारत से मुझे खींच लिया और मेरे चेहरे को अपनी हथेली के बीच रखते हुए बोला, "शुभा जानता हूं, तुम अतीत से घिरी हुई थीं अतीत के उन्हीं क्षणों को स्मरण करो जिन से वर्तमान सुखद बन सके, शुभा."

विशाल सही कह रहा था, मैं अतीत की कड़ियों को तोड़ कर विशाल की बांहों में खो गई.


सरदर्द
बदन का दर्द
सर्दी-जुकाम
इससे मिले
फौरन आराम
AMRUTANJAN
PAIN BALM
AMRUTANJAN LTD.
14/15, Luz Church Road Madras-4
AMRUTANJAN
Pain Balm
९० वर्षों से विश्वसनीय
अमृतांजन
पीड़ा से जल्द आराम.
हानिकारक प्रभाव से मुक्त !

आइए बाजी हो जाए

लेख • कमला सपोलिया

किसी जुआरी के सामने जुए की बुराई करने पर वह बुरा मानता है. अपने ऐब पर सैकड़ों परदे डालना चाहता है. अपनी कमजोरी के लिए सौसौ बहाने बनाता है. कई लोग तो जुए की प्रशंसा में ऐसी बातें करते हैं कि सुनने वाला पल भर के लिए तो प्रभावित हो ही जाता है.

कुछ लोग कहते हैं कि ताश जैसा मनोरंजन का कोई और साधन नहीं है. आसान खेल है, जब चाहे खेलने बैठ गए, जब मन हुआ उठ कर चले आए. न किसी से कुछ लेना, न किसी को कुछ देना. कुछ लोग ऐसे भी हैं जो यह कहते हैं कि ताश का खेल इतना मजेदार होता है कि व्यक्ति उस में अपने सारे दुख भूल जाता है. किसी बीमार आदमी को ताश की मेज पर बैठा दो तो वह अपनी बीमारी को भूल जाता है.

जुआ खेलने वाले बड़ी चतुराई से अपने ऐबों पर परदा डालने की कोशिश करते हैं, पर क्या इस से होने वाली तबाही से वे बच पाते हैं?

ताश खेलने वाली महिलाएं अकसर यह तर्क प्रस्तुत करती हैं कि ताश खेलने का एक बहुत बड़ा लाभ है कि आप किसी के पचड़ों में नहीं पड़ते. न किसी से ज्यादा बात करो न उन की बुराई में पड़ो. उन का यह भी कहना है कि ताश खेलने वाले कभी किसी की चुगली और निंदा नहीं करते. इन बातों के लिए उन के पास समय ही नहीं होता.

लेकिन जुआरियों की इन बातों में कोई दम नहीं है. अपने ऐबों पर सभी ऐसे ही चतुराई से परदा डालते हैं, लेकिन गलत चीज को कोई चाहे जितना शोख रंगों में रंगने की कोशिश करे, वह फिर भी गलत ही रहती है. जीवन में बहुत से घर और लोग जुए के नाम पर तबाह होते देखे जा सकते हैं.

वैसे आज के समय में ताश को बड़ा महत्त्व मिलने लगा है. ऊंची सोसाइटी के लोगों में इस का कुछ फैशन बन गया है. जो व्यक्ति ताश नहीं खेलता, उस की तरफ ताश खेलने वाले ऐसी नजरों से देखते हैं, मानो पूछ रहे हों, "तुम किस चिड़ियाघर से आए हो जो तुम्हें ताश खेलना भी नहीं आता?"

जुआरियों के तौरतरीके दूसरे लोगों से बिलकुल अलग होते हैं. वे अपनेआप मे इतना मस्त रहते हैं कि उन्हें दीनदुनिया क होश नहीं रहता. वे न किसी की खुशी म शामिल होते हैं न किसी के गम में. देखा जाए तो जुआरियों को अपनी भी कोई खबर नह होती. उन्हें यह भी नहीं पता लगता कि कब पतन की तरफ फिसलने लगते हैं. अपने कर्तव्य और जिम्मेदारियों को भू जाते हैं.

बहुत से लाग इस विषय पर बह करते हुए यह कहते हैं कि ऐसा तो तब हो है जब कोई सीमा के बाहर ताश खेल लगता है, किंतु अकसर लोग ताश खेल हुए समय की कोई पाबंदी नहीं रख पा जीतने वाला और ज्यादा जीतना चाहता हारने वाला अपने पैसे वापस लेना चाहता घंटों, दिनों और हफ्तों तक खेल जमा र है. साथ में शराब के दौर चलते हैं, सिग का धुआं उड़ता है और हारने वालों तबाही का जलूस निकलता है.

रमेशजी के परिवार में ताश क

हर वक्त कोई न कोई झगड़ाझमेला
ता रहता है. घर में कोई कमी नहीं है.
गैर लोग हैं, लेकिन धन का सदुपयोग
ने के बजाए जब देखो पतिपत्नी ताश
ने में लगे रहते हैं. उन्हें देख कर उन का
वर्षीय इकलौता बेटा भी जुए के चक्कर
फंस गया है. कुछ दिन पहले वह कालिज
भाग कर दोस्तों में बैठ कर सारा दिन
श खेलता रहा. इस के लिए वह पिता की
से सात सौ रुपए चुरा कर ले गया.

पहले उन्हें नौकर पर शक हुआ. उसे
ा गया. जब पुलिस में रिपोर्ट करने की
आई तो संजीव ने बताया कि उस ने
ए निकाले थे. पिता ने गुस्से में आ कर
भी खूब पीटा.

कल शाम संजीव लेखिका के घर आया तो उस ने पूछ ही लिया, "संजीव, तुम ने ऐसा क्यों किया?"

"मैं ने क्या किया चाचीजी," वह बोला, "मां और पिताजी भी तो दिनरात ताश खेलते हैं. ताश खेलना अगर मेरे लिए गलत है तो उन के लिए कैसे सही हो सकता है? मैं ने तो वही किया जो बड़े करते हैं."

संजीव की बात का कोई जवाब नहीं



वह ठीक ही तो कह रहा था. उस के ापिता उस के मार्गदर्शक न बन कर खुद उसे गलत रास्ता दिखा रहे हैं. कल जब ीव बड़ा हो कर जुए और शराब की याा में भटक चुका होगा तो इस में उस का दोष होगा? दोष आज भी उस के ापिता का है, कल भी उन्हीं का होगा. ज वे अपने बेटे का जीवन सुधारने के लिए छ नहीं कर रहे, कल चाह कर भी वह कुछ ीं कर पाएंगे. उस वक्त वह संजीव के ों को देख कर दुखी होंगे. उसे शादी की ड़यों में जकड़ना चाहेंगे. सोचेंगे कि पराई ी आ कर उसे सुधार लेगी, लेकिन ऐसा छ नहीं होगा. वह बेचारी कुछ नहीं कर ऐगी, क्योंकि वह स्वयं दुखी होगी. उस के ने गले में पत्थर बंधा होगा. संजीव की नी की सजा उसे भुगतनी पड़ेगी.

इसी तरह जगदीश को अपने परिवार सरासर अन्याय करते देखा था. उस की ी शीला के पास आनाजाना था, लेकिन दीश को देख कर माथा ठोंकने को जी हता था. वह बहुत लापरवाह और गैर-म्मेदार आदमी था. उस में दुनिया भर के थे.

मुसीबत यह थी कि वह किसी की ता भी नहीं था. दफ्तर से निकल कर धा ताश की टोली में जा बैठता था. अपने लोग उसे मिल भी जाते थे. जब तक जेब ड़े सारे रुपए खर्च नहीं हो जाते थे, वह से उठता ही नहीं था. जगदीश की बुरी तों के कारण उस के घर का खर्च कभी नहीं होता था. जुआ तो वह खेलता था. में शराब और सिगरेट भी पीता था. से ज्यादा वेतन वहीं उड़ा देता था. र हो कर शीला को एक स्कूल में री करनी पड़ी. नौकरी और शराबी के बीच उस की और घर की दुर्गति लगी.

समय के साथ लड़कियां बड़ी हो गईं, न जगदीश की अक्ल पर पत्थर पड़े उस की सारी शाम क्लब में कटती थी. समय पर घर आता था, न ठीक से

जुआ

जुआ लोभ का पुत्र, दुराचार का भाई और बुराइयों का पिता है.

—वाशिंगटन

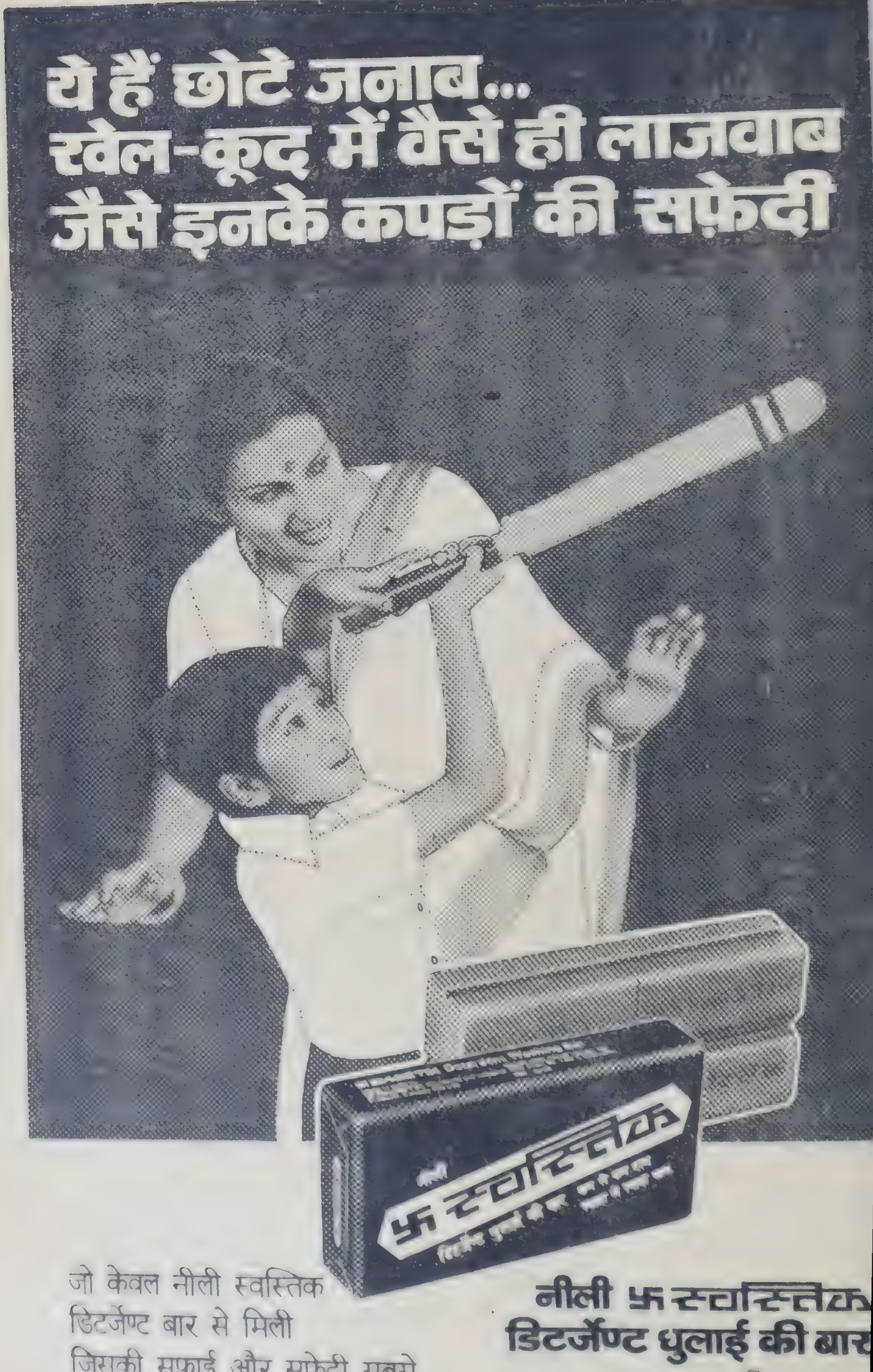
खाता, सोता था. ऐसा आदतें हों तो इनसान का शरीर भी जवाब दे जाता है. एक दिन जगदीश को दिल का दौरा पड़ गया. उस की तरक्की होतेहोते रुक गई. तैश में आ कर उस ने नौकरी से इस्तीफा दे दिया. पहले तनख्वाह से गुजर नहीं होता था, अब पेंशन से क्या बनता? सरकारी बंगला भी छूट गया. शीला को स्कूल में दो कमरे मिल गए जिस में सारा परिवार घुट कर रह गया.

घर की बरबादी का कारण

नौकरी छोड़ने के बाद जगदीश ने अपनी पेंशन इकट्ठी ले ली, लेकिन उसे जो तीस हजार रुपए मिले, वह साल भर के अंदर उस ने जुए में उड़ा दिए. शीला बहुत रोईधोई. लेकिन उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा. आज उस की बेटी बिंदु 26 वर्ष की हो गई है. इंदु 24 की और मोना 21 साल की. किसी की शादी की कोई आशा नहीं है, क्योंकि शादी के लिए पैसे की जरूरत होती है और पैसा है नहीं. जुए की वजह से पूरा घर ही बरबाद हो गया.

कुछ वर्ष पहले एक सरकारी अधिकारी रवि ने अपने एक सहयोगी की पत्नी को मार डाला. रवि शुरू से ही कुछ बिगड़ा हुआ आदमी था. शराब खूब पीता था. पत्नी तंग आ कर बच्चों के साथ अपनी मां के घर चली गई थी. इस से उसे पूरी आजादी मिल गई और वह दिनरात जुआ खेलने लगा. परिणाम यह हुआ कि उस पर बहुत कर्ज चढ़ गया. पैसा लेने वाले पीछे पड़ गए तथा तरहतरह की धमकियां देने लगे.

रवि को चिंता होने लगी कि कहीं


ये हैं छोटे जनाब...
खेल-कूद में वैसे ही लाजवाब
जैसे इनके कपड़ों की सफ़ेदी
स्वस्तिक
जो केवल नीली स्वस्तिक
डिटर्जेण्ट बार से मिली
जिसकी सफ़ाई और सफ़ेदी सबसे
उत्तम और दाम बिल्कुल कम.
नीली 卐 स्वस्तिक
डिटर्जेण्ट धुलाई की बार
एक बार स्वस्तिक बार ...
फिर हमेशा स्वस्तिक बार

ोर्ट हो गई तो नौकरी भी जाएगी. वह ताक में रहने लगा कि कहीं से कुछ पैसा र जाए. उस की नजर दो महीने पहले ह कर आई एक सहयोगी की पत्नी पर ा जिस के मातापिता ने उसे शादी में ी सोना दिया था. यह बात रवि को सी तरह मालूम हो गई.

अगले दिन सुबह अपने दो साथियों के थ रवि अपने सहयोगी के घर पहुंच गया. र दफ्तर गया हुआ था. पत्नी को कोई क नहीं हुआ. उस ने रवि को बैठाया और के लिए चाय बना कर ले आई. अभी वह में चाय डाल रही थी कि मौका देख कर ने उस का गला दबा दिया और उस के के गहने चुरा कर भाग गया.

छः महीने के बाद रवि आगरा में किसी ापोर्ट कंपनी में वेश बदल कर नौकरी ता हुआ पकड़ा गया. मुकदमा चला और सजा हुई. उस ने बुरा काम किया था, का नतीजा तो उसे भुगतना ही था. कन उस की पत्नी और बच्चों का क्या अपराध था जो उन को इतना दुख और अपमान सहना पड़ा.

अच्छाभला इनसान जब जुए के चक्कर में फंस जाता है तो यह देख कर बड़ा अचरज होता है कि उस का चरित्र कितना गिर जाता है. वह तरहतरह के झूठ बोलने लगता है और अपने को ही धोखा देता है. अपने स्वार्थ के अलावा उसे दुनिया में कुछ नजर नहीं आता. यहां तक कि वह अपने प्रियजनों को भी भूल जाता है.

जुआ खेलना बहुत बुरा है, यह बात सब जानते हैं फिर भी लोग अपनी तबाही करने से बाज नहीं आते. दीवाली के दिनों में जोश और महफिलें और भी गरम होती हैं. लोगों की दीवाली होती है पर जुआरियों के घरों में दिवाला होता है. उन के परिवार दुख के घेरे में घुट कर रह जाते हैं. जो पैसा जुए में बरबाद किया जाता है, उस से तो घर में सैकड़ों गुना बढ़िया दीवाली मनाई जा सकती. क्या यह छोटी सी बात जुआरियों की समझ में नहीं आ सकती है? •

जीवन की मुसकान

मैं पाली के एक हस्पताल में अपने एक संबंधी को देखने गया था. वहां एक वृद्धा बैठी विलाप कर रही थी. पूछने पर पता चला कि उस के 20 वर्षीय बेटे के लिए खून की आवश्यकता है और हस्पताल तथा आसपास के लोग खून देने को तैयार नहीं हैं.

उसी समय हस्पताल की एक महिला डाक्टर को पता चला कि उस गरीब वृद्धा के बेटे का खून उसी के ग्रुप का है. उस ने वृद्धा को सांत्वना दी और अपना खून दे कर उस के बेटे के प्राण बचा लिए.

जब वह डाक्टर खून दे रही थी, उस समय वृद्धा उस को स्नेहपूर्वक देख रही थी. सभी लोग डाक्टर के त्याग से गदगद हो गए. —हेमराज चौधरी

*

हमारे मिडिल स्कूल के चपरासी के गुर्दे में पथरी होने के कारण डाक्टर ने उसे आपरेशन करवाने की सलाह दी. एक गरीब कर्मचारी होने के कारण उस की इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह आपरेशन का खर्चा उठा पाता.

यह बात जब हमारे प्रधानाध्यापक को पता चली तो उन्होंने न सिर्फ उस की दवाइयों और खून की बोतलों का ही प्रबंध अपने खर्च पर करवाया, बल्कि जब तक वह हस्पताल में रहा, वह उस का हाल मालूम करने के लिए भी निरंतर जाते रहे. —निर्मलकुमार

*

हमारे महल्ले में एक महिला लगातार अपनी तीसरी बेटी होने पर बहुत दुखी थी. इस बार उसे लड़का होने की उम्मीद थी. उस को दुखी देख कर उस की एक पड़ोसिन ने कहा कि यदि उस के लड़का हुआ तो वह अवश्य ही उस को दे देगी. पड़ोसिन महिला का मत था कि उस के लिए लड़कालड़की दोनों बराबर हैं. कुछ दिनों बाद उस के घर लड़का ही पैदा हुआ और पहली संतान होते हुए भी उस ने अपने लड़के को सहर्ष उस लड़की से बदल लिया.

—विनीता सू

*

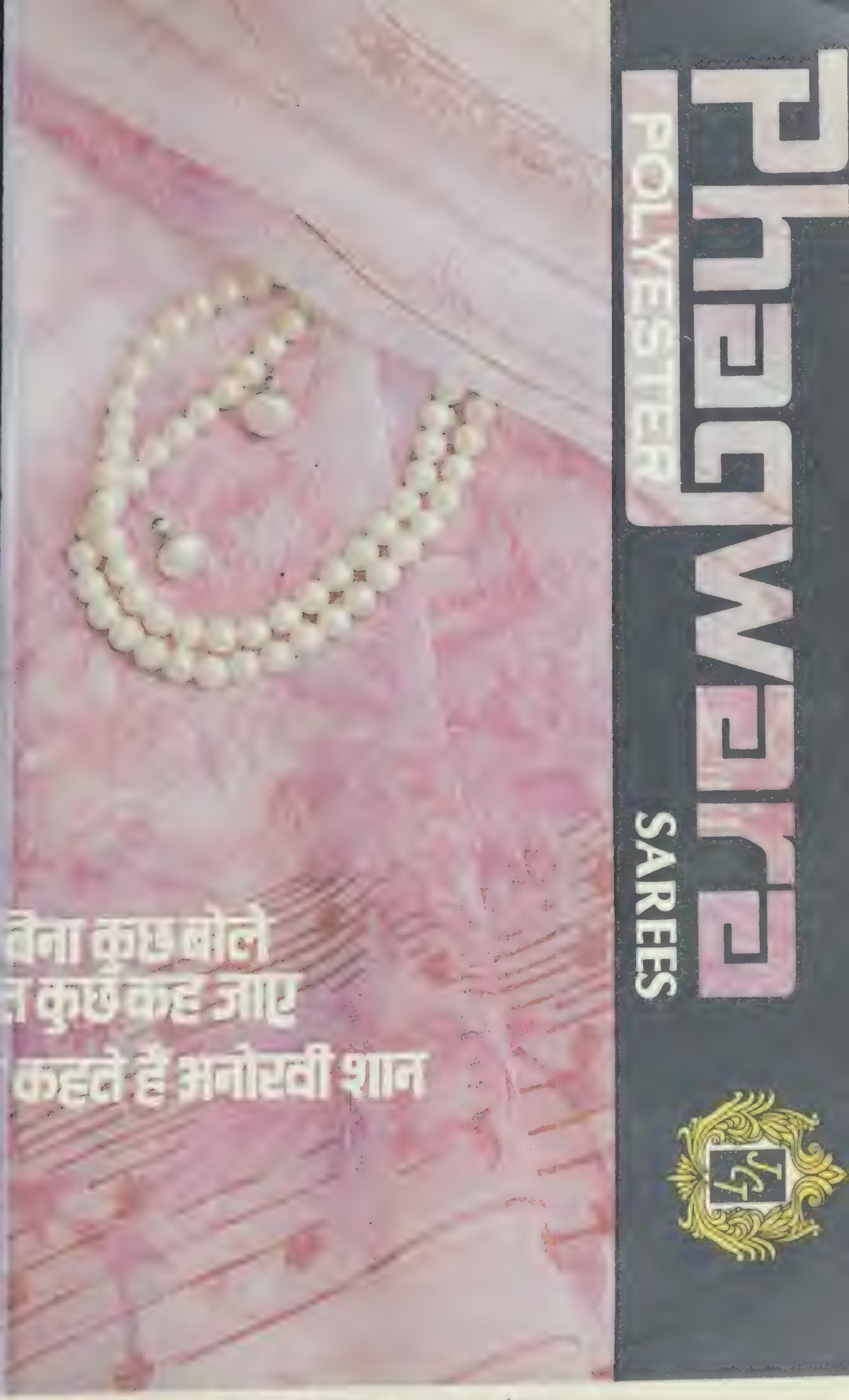
लगभग पांचछः वर्ष पुरानी घटना है मुझे धामपुर से रुड़की आने के लिए 'स्यालदह एक्सप्रेस' लेनी थी. गाड़ी आई तो उस में बहुत भीड़ थी. किसी तरह मैं एक डब्बे में चढ़ गया. अचानक एक सीट पर बैठी एक प्रौढ़ महिला के पांव पर मेरा जूता प गया तो वह जोर से चीख पड़ी, "अंधा है तु दिखाई नहीं देता."

उन का वाक्य पूरा होने से पहले ही मैं कहा, "माफ कर दीजिए, अम्मांजी, मुझ गलती हो गई." और मैं उन के पांव छूने लिए झुक गया. तभी मुझे यह देख आश्चर्य हुआ कि वह महिला फफक कर पड़ी और उस ने मुझे अपने पास ही लिया.

फिर उस ने मुझे बताया कि लग मेरी ही उम्र का उस का बेटा मर गया और वह उसी की लाश देखने सहारनपु रही है.

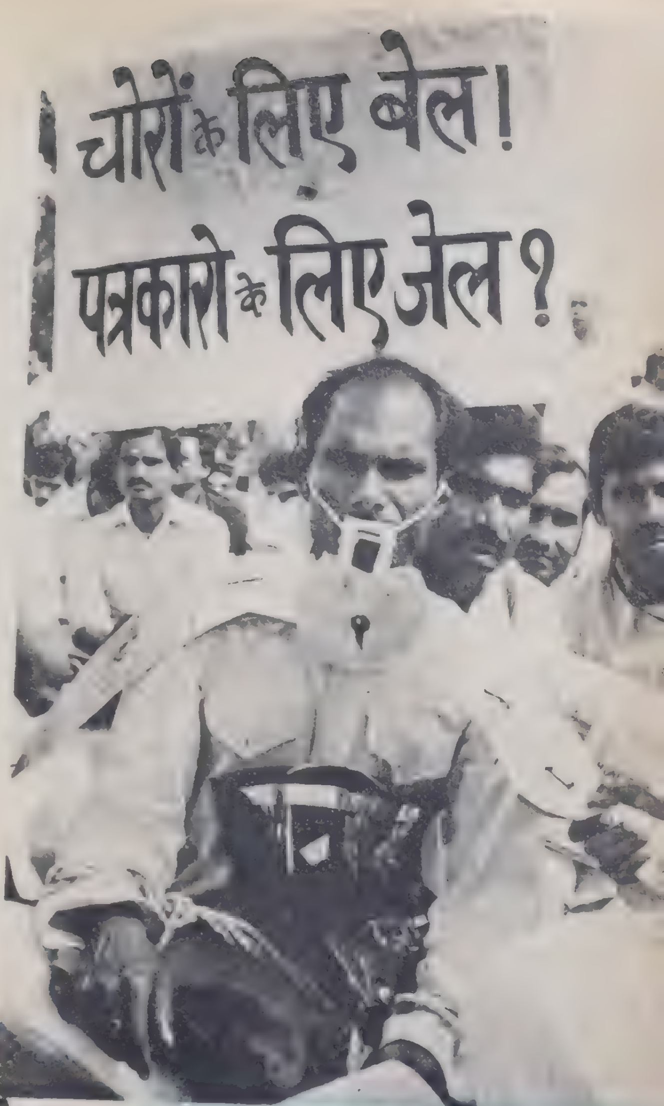
—डा. योगेंद्र नाथ शर्मा 'अ

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधि अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव प रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय वि सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी नई दिल्ली-110055.


POLYESTER
SAREES
िना कुछ बोले
त कुछ कह जाए
कहते हैं अनोखी शान

ेख • मानवेन 'राकेश'

्रेस का ला क्यों ोंटा जा रहा है?



आज प्रेस जनता के हितों की रक्षा करने वाला अकेला चौकीदार है जो जनता की कठिनाइयों को निर्भीकता से सबके सामने ला रहा है. फिर भी पत्रकारों पर हमले और हत्याओं की राजनीति से इस आवाज को क्यों दबाया जा रहा है?

मराठी दैनिक 'तरुण भारत' के एक पत्रकार अरविंद करहाडकर की 8 अगस्त, 1983 को छुरा मार कर हत्या ्र दी गई थी. इतना ही नहीं, ्त्या के बाद उन का शव सतारा ्रले की सड़क पर नाले के निकट ्क पाइप में घुसेड़ दिया गया था.

इस से मिलतेजुलते ्माचार आए दिन पढ़ने को ्लते हैं. पत्रकारों पर हमला ्गैर उन की हत्या आज आम ्ात हो गई है. ये हमले पुलिस ्गैर राजनीतिबाजों द्वारा ्रवाए जा रहे हैं. इन का एक-्ात्र उद्देश्य पत्रकारों को भयभीत ्र उन्हें यथार्थ स्थिति और सचाई को ्कट करने से रोकना है.

पत्रकारिता जहां एक व्यवसाय है, ्हीं एक पवित्र कर्तव्य भी है. हमारे ्विधान ने जनता को अपनी बात कहनेसुनने ्ो स्वतंत्रता प्रदान की है, किंतु वर्तमान ्रिस्थितियों में यह स्वतंत्रता मात्र कागजी ् प्रतीत होती है.

हमारे देश के राजनीतिबाजों का प्रेस

बड़े शहरों के पागल बना देने वाले शोरगुल में भी आपकी शांति और चैन कैसे बरक़रार रह सकता है ? आइए हम आपको बताएँ...



कॉयर की रंगबिरंगी दुनिया मे आइए!

कॉयर से सजाइए अपने घर की दरो-दीवार। कॉयर-भारत में तैयार किया जाने वाला एक अनोखा फ़ाइबर-जिसकी खूबसूरती के अंदाज़ भी उतने ही अनोखे हैं।

कॉयर-जोरदार आवाज़ों को अपने अंदर समेट लेने वाला फ़ाइबर! इसीलिए तो अपने घर को कॉयर से सजाइए और शोरगुल को आपसे दूर रखिए।

गर्मियों में कॉयर की सजावट (दीवालों के प्रावरण, कृत्रिम छत और बिछावन) से [illegible]मान में तकरीबन 3 सेंटी ग्रेड कमी [illegible] जाती है. और सर्दियों में कॉयर की [illegible] आपको आराम पहुँचाती है।

क्या कॉयर महंगा है ?

दूसरी सजावट सामग्रियों के मुकाबले कॉयर कहीं कम खर्चीला है और रख-रखाव में बिल्कुल आसान. कॉयर कीट-प्रतिरोधक है. इस पर धूल जमा नहीं होती बल्कि ज़मीन पर सरक जाती है. इसीलिए तो इसे साफ़ करने के लिए न ही खर्चीले 'ड्राय' की ज़रूरत पड़ती है और न ही 'वैक्यूम' सफाई की

केवल सुन्दरता में ही कॉयर लाजवाब नहीं बल्कि इस्तेमाल में भी शानदार है. अब आप ही सोच-समझकर व्यवहारिक फ़ैसला कीजिए और कॉयर की दुनिया [illegible] में बसाइए।



कॉयर बोर्ड

कोचीन ६८२०१६


४ कैरेट सा सुनहरा
अनुभव
हरा और सुखद...
क्रन्स गोल्ड कप चाय
अनोखा अहसास . . .
ही खास स्वाद ।
ना असली उतना ही
केदार । डन्कन्स
ड कप । सर्वोत्तम
ी.सी. पत्ती चाय ।
GOLD CUP
TEA
DUNCANS
ी अधिक वर्षों से सर्वोत्तम चाय के
उत्पादक और निर्माता ।

से आगपानी जैसा वैर है. हो भी क्यों न? अकसर राजनीतिबाज यह तक नहीं समझ पाते कि वे क्या बोल रहे हैं. अगले दिन अखबार में जब उन का वक्तव्य प्रकाशित होता है और उन का कोई चमचा उन्हें उस वक्तव्य से होने वाली हानि के बारे में बताता है, तब उन के समक्ष एक ही रास्ता रह जाता है. वे अपने पूर्ववक्तव्य का खंडन कर के कह उठते हैं कि "समाचारपत्र ऊलजलूल बातें छाप रहे हैं," या "यह मात्र पीत पत्रिकारिता का एक और उदाहरण है." या फिर वे इसी प्रकार की अन्य लीपापोती करने लगते हैं.

समयसमय पर प्रेस की आवाज दबाने के लिए अध्यादेश जारी किए जाते हैं. अपने हर भाषण में समाचारपत्रों के लिए आचारसंहिता बनाने का सुझाव दिया जाता है.

राजनीतिबाज दरअसल इस आचारसंहिता में मात्र एक ही सूत्र चाहते हैं कि उन के विरुद्ध कुछ न लिखा जाए. सांप्रदायिक दंगे कुंठित मानसिकता के कारण होते हैं, इस बात को वे स्वयं स्वीकार करते हैं, किंतु यही बात समाचारपत्र छापते हैं तो यह भड़काने वाला समाचार हो जाता है जो आचारसंहिता के खिलाफ है.

अकाली आंदोलन के विरुद्ध कुछ लिखा जाए, यह न तो अकाली नेता चाहते हैं और न ही सरकार. आखिर झूठ तो लिखा नहीं जा सकता. यदि सचाई को नजरअंदाज किया जाए तो पत्रकारिता का उद्देश्य ही खत्म हो जाता है, पर सचाई को व्यक्त करने की कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है, यह बात 6 जून, 1983 को एक अखबार में प्रकाशित निम्न समाचार से स्पष्ट होती है: 'पंजाब केसरी' के संपादक रमेशचंद्र को जरनैल सिंह भिंडरांवाले ने चेतावनी दी है. भिंडरांवाले ने कहा है कि वह उस व्यक्ति का सम्मान करेंगे जो रमेशचंद्र की हत्या करेगा.

24 जून, 1983 को दो समाचार प्रकाशित हुए थे

दैनिक 'प्रताप' के दो कर्मचारी इंद्रेश-कुमार और केवल किशन 'प्रताप' के दफ्तर में (जालंधर) पार्सल बम विस्फोट दुर्घटना में मारे गए.

'कश्मीर टाइम्स' के संपादक वेद भसीन पर जम्मू में हमला किया गया. इस हमले के विरोध में पत्रकारों ने जलूस निकाला और हमले के लिए भारतीय जनता पार्टी को दोषी ठहराया है.

इन समस्त दुर्घटनाओं के लिए राजनीतिबाज उत्तरदायी हैं. प्रेस पर अपना वर्चस्व बढ़ाने के लिए सरकार नाना प्रकार के हथकंडे अपनाती है. पत्रकारों को अपनी बात कहने से रोकने का प्रमुख तरीका है समाचारपत्रों को प्रतिबंधित करना. भारत की जनता अब जागरूक हो चली है, इसलिए समाचारपत्रों पर प्रतिबंध लगाना अब आसान नहीं है. लोकतांत्रिक राष्ट्र होने के नाते न्यायालय में भी इसे चुनौती दी जा सकती है.

सरकारी दमन का तरीका

ईमानदार पत्रकारों को भयभीत करने का दूसरा तरीका है, आर्थिक दबाव. छोटे पत्र तो सरकारी विज्ञापनों और अखबारी कागज के कोटे के बल पर ही चलते हैं. इसलिए ये पत्र सरकारी दमन का खुल कर विरोध नहीं कर पाते. सरकार के भय से बड़ी कंपनियां भी विरोधी पत्रिकाओं को विज्ञापन देने में हिचकिचाती हैं.

सरकार के पास अपने प्रचार के लिए दो प्रमुख माध्यम आकाशवाणी और दूरदर्शन तो हैं ही. इन के द्वारा प्रसारित होने वाले समाचारों को शायद ही कोई ध्यान से सुनता होगा. वैसे, लोगों की दिलचस्पी दूरदर्शन पर उद्घोषिका को देखने और रेडियो पर क्रिकेट मैच का स्कोर सुनने में अवश्य रहती है.

पंजाब में तो स्थिति इतनी विस्फोटक हो चुकी है कि वहां पत्रकारों के लिए शायद पेन के साथसाथ पिस्तौल रखना भी आवश्यक हो जाएगा. पंजाब के समाचारपत्र कार्यालयों में सुरक्षा प्रबंध कड़े किए जा र

इन कार्यालयों में प्रवेश के पूर्व तलाशी भी शुरू की जा रही है. निस्ट विचारधारा वाले एक दैनिक के दक और भूतपूर्व राज्य सभा सदस्य ीतसिंह आनंद अपने साथ हमेशा एक क्षक और रिवाल्वर रखते हैं. इस का ण उन्हें दल खालसा से लगातार प्राप्त ही हत्या की धमकियां हैं. क्या इस से ट नहीं हो जाता कि आज अपने देश में कार कितने असुरक्षित हैं?

पुलिस का दायित्व है कि वह नागरिकों रक्षा करे. पुलिस यह रक्षक की भूमिका ाने में तो असमर्थ है ही, किंतु भक्षक की का वह बखूबी निभा रही है. हाल ही में रु (बांदा जिला) में हुए हत्याकांड से बढ़ इस की और क्या मिसाल हो सकती है?

'प्रदेश पंथ' में 11 जुलाई, 1983 को समाचारपत्र प्रकाशित हुआ था. इस चार ने पुलिस की फर्जी मुठभेड़ों की या उधेड़ दी. इस समाचार से पुलिस के ाधिकारी बुरी तरह खीज उठे. पुलिस इस पत्र के संपादक सुरेश गुप्ता को कियां दी जाने लगीं. बबेरू के समस्त कारों को थाने में बुला कर स्पष्ट शब्दों में गया कि इस तरह के समाचार भविष्य काशित नहीं होने चाहिए. बाद में सुरेश ा की सुनियोजित ढंग से हत्या करवा दी

बड़ौदा के पुलिस आयुक्त तकुमार दत्ता तो प्रेस के साथ दुर्व्यवहार े के लिए काफी प्रसिद्ध हैं. उन के वहार से क्षुब्ध हो कर एक दिन बड़ौदा भी पत्रकारों ने काली पट्टी बांध कर किया. इन पुलिसकर्मियों के अलावा माजिक तत्त्व भी प्रेस का गला घोंटने का क्र रचते रहे हैं.

स्वतंत्र प्रेस असामाजिक तत्त्वों की की किरकिरी इसलिए है, क्योंकि उन धंधा इस के कारण बेरोकटोक नहीं चल . गुंडे और अवैध शराब के विक्रेता स तथा अन्य सरकारी अधिकारियों को रिश्वत दे कर चुप करा सकते हैं, लेकिन यह हथियार पत्रकारों के समक्ष नहीं टिक पाता. वैसे इस के भी अपवाद हैं. स्वार्थ में फंसे कुछ पत्रकार प्रेस की विश्वसनीयता को कम कर रहे हैं. अश्लीलता तथा यौन उत्तेजना से पूर्ण तथाकथित सत्यकथाओं ने भी प्रेस की विश्वसनीयता को कम किया है.

इस सब के बावजूद आज प्रेस जनता के हितों की रक्षा करने वाला अकेला चौकीदार है. राजनीतिबाज जनता के मतों से शासन पाते हैं, पर सत्ता पाते ही जनता को भूल जाते हैं. हमारी शासन व्यवस्था ने अदालतों को भी जनता के अधिकारों की रक्षा का दायित्व दे रखा है, पर वकील, जज तथा पेशकार मिल कर जनता को बुरी तरह से परेशान करते हैं. यह प्रेस ही है जो जनता की इच्छाओं, आकांक्षाओं व कठिनाइयों को समझता है और उन्हें सब के सामने ला रहा है. ●

लेखकों से निवेदन

प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में चारछः सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्रव्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं. हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं. स्वीकृत रचनाओं के बारे में सूचना चार से छः सप्ताह में दे दी जाती है.

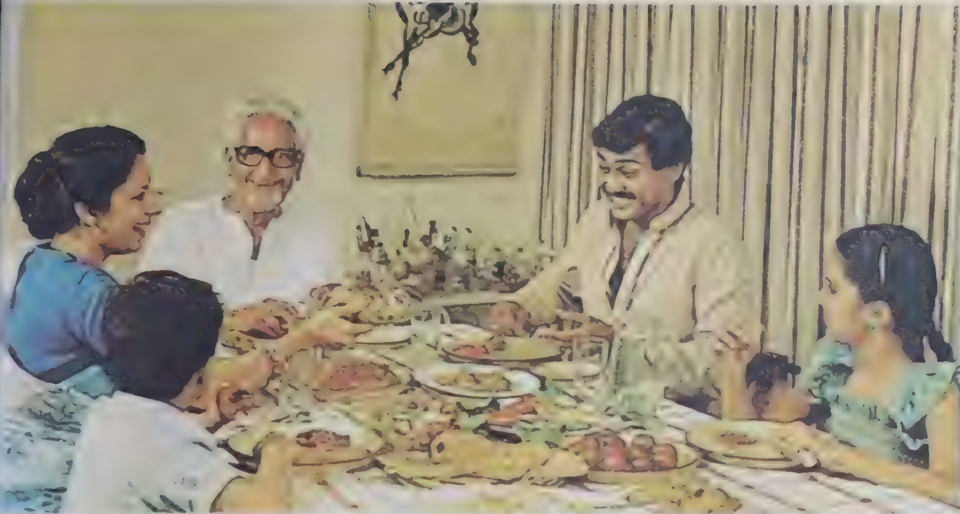
टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.

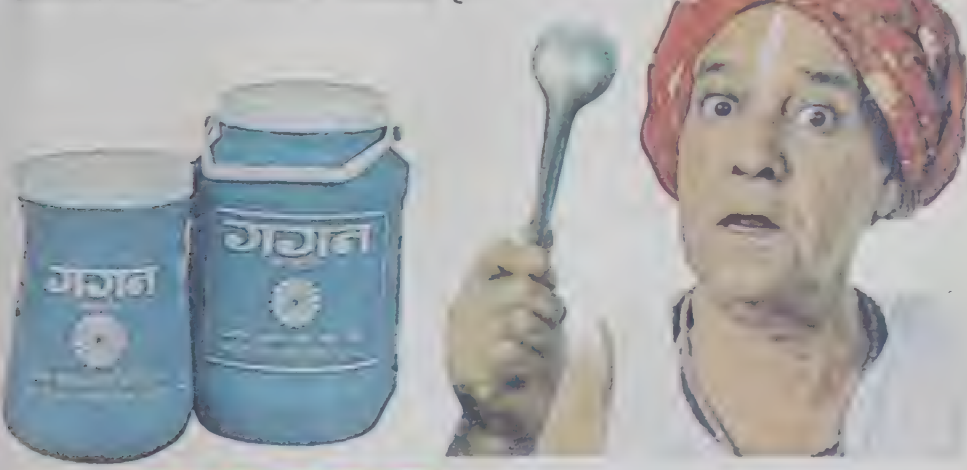
रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें.

यदि आप किसी ऐसे विषय पर लिखना चाहते हैं जिस में अधिक समय अथवा परिश्रम के लगने की संभावना है तो उस बारे में पूर्व सलाह लेना काफी लाभदायक होता है. इस बारे में भेजे गए पत्रों का यथोचित उत्तर दिया जाता है.

—संपादक







गगन
गगन



जब मां नौकरी के लिए जाए

लेख • मंजू शर्मा

मां का बच्चे को छोड़ कर नौकरी के लिए घर से बाहर जाना शिशु के मन में भय और असुरक्षा की भावना उत्पन्न कर देता है, पर कुछ सुझावों पर अमल कर के आप इस समस्या को हल कर सकती हैं.

आज के युग में आर्थिक परिस्थितियों के कारण महिलाओं को नौकरी के लिए घर से बाहर जाना पड़ता है. इस हालत में बच्चों की देखभाल भी उन के लिए समस्या बन जाती है. विशेष तौर पर उस समय जब बच्चा अभी नर्सरी की शिक्षा के भी काबिल न हो, यानी बहुत छोटा हो. इस समस्या का समाधान तभी हो सकता है जब मां अपनी और शिशु की मानसिकता शुरू से ही वैसी बनाए. अन्यथा कार्य की थकावट और घर में बच्चों की चिंता दोनों के कारण जीवन अस्तव्यस्त हो जाएगा.

नौकरीपेशा माताओं के सामने बच्चे की देखभाल के लिए दो विकल्प रहते हैं

यह संयुक्त परिवार में है तो घर में सास
ा कोई अन्य स्त्री बच्चे को संभाल
ती है. अन्यथा बच्चे को शिशु देखभाल
(चाइल्डकेयर सेंटर) या क्रेच में रखना
ा है.

मां का बच्चे को छोड़ कर घर से बाहर
शिशु के मन में एक प्रकार की
रक्षा की भावना पैदा करता है.
वैज्ञानिक रूप से वह मां के सामीप्य में
न को अधिक सुरक्षित महसूस करता है.

नौकरी के लिए जाने से पहले मां को
को भी मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार
ना पड़ता है कि वह उस की अनुपस्थिति
ी उसी प्रकार सुरक्षित रहेगा जैसा कि
के पास. उस में इस भावना को लाना
री है ताकि उस में किसी प्रकार की हीन
ना न आ जाए.

साथ ही, शिशु देखभाल केंद्र (क्रेच)
चयन करते समय भी कुछ बातों का ध्यान
श्य रखना चाहिए. सब से महत्त्वपूर्ण
तो यह कि इन केंद्रों में बच्चों की
भाल के लिए जो आयाएं रखी हैं, उन का
हार कैसा है? जब तक इन का व्यवहार
चों के प्रति आत्मीयता पूर्ण नहीं होगा,
चा उन के पास रहने के लिए तैयार नहीं
. साथ ही उन का रहनसहन, खानपान
बच्चों को दी जाने वाली सुविधाओं को
ध्यान में रखना चाहिए. इस से जहां एक
बच्चे में सुरक्षा की भावना आएगी, वहां
का सही मानसिक विकास भी होगा.

शिशु के संतुलित विकास के लिए यह
श्यक है कि उसे वे सब सुविधाएं शिशु
भाल केंद्र में मिलें, जो उसे घर में मिलती
अगर उसे वहां स्नेह नहीं मिलेगा तो उस
कुंठित हो जाने की आशंका रहती है.
र मां भी क्रेच की देखभाल से पूर्ण रूप से
वस्त हो जाएगी, तो उस के लिए काम
जाना आसान हो जाएगा. काम करते
उस का ध्यान नहीं बंटेगा.

अतः बच्चे के लिए किया गया अच्छा
जहां मां को आत्मसंतोष प्रदान करता
हां इस से बच्चे के मस्तिष्क में भी
सुरक्षा की भावना आती है. उसे लगने लगता है कि अपनी मां की अनुपस्थिति में भी वह सुरक्षित हाथों में है.

बच्चे की संतुष्टि

लेकिन कई बार शिशु देखभाल केंद्र में उत्तम प्रबंध के बावजूद बच्चा उस से संतुष्ट नहीं रह पाता. वह अपने दैनिक जीवन के एक जैसे कार्यों में बदलाव चाहता है. क्रेच के एकरस जीवन से उसे कभीकभी ऊब होने लगती है, क्योंकि घर के जीवन में तो वह अपनी विभिन्न रुचियों को पूरा कर लेता है जो यहां संभव नहीं हैं.

पश्चिमी देशों में एक सर्वेक्षण से यह बात स्पष्ट रूप से सामने आई है कि वे बच्चे जो पहले अपने परिवारों के साथ रहे हैं, बाद में उन के बिना नहीं रह पाते. अतः उन्हें शिशु देखभाल केंद्र में छोड़ना संभव नहीं हो पाता. इसलिए मां के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि जब वह इस बात का निश्चय करती है कि बच्चे को क्रेच में छोड़ कर जाना है तो बच्चे में प्रारंभ से ही उस भावना का विकास किया जाए. बच्चे को इस बात के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से आश्वस्त किया जाना चाहिए कि वह आप की अनुपस्थिति में भी खुश रह सकता है और आप के जाने के बाद भी उसे पूर्ण सुविधाएं प्राप्त होंगी.

यह समस्या केवल बच्चों तक ही सीमित नहीं है कि उन में अपने परिवार से अलग रहने की रुचि विकसित करनी पड़ती है. बच्चे अपनी मां अथवा परिवार से अलग नहीं रहना चाहते तो कुछ माताएं भी बच्चों को किसी अन्य की देखभाल में रखना पसंद नहीं करती हैं. चाहे बच्चा परिवार के लोगों यानी सास आदि की देखभाल में हो अथवा क्रेच में, वे असुविधा अनुभव करती हैं. उन्हें लगता है कि यदि आर्थिक परिस्थितियों के कारण उन्हें नौकरी के लिए न जाना होता तो वे अपने बच्चों को अपने से अलग कभी न रखतीं. अपनी इसी मानसिकता के कारण वे अपने बच्चों की हर मांग को पूरा करती हैं. परिणाम यह होता है कि बच्चा अधिक


अपनी पसंद, रहनसहन पे है उन को नाज
क्या खूब है पैरीवेयर का रंगीन अंदाज !
Parryware
Parryware
VITREOUS

जिद्दी हो जाता है. पर यह बात न तो बच्चे के लिए उपयुक्त है और न मां के लिए.

कभीकभी यह बात बच्चे और मातापिता के बीच एक तनाव की सी स्थिति उत्पन्न कर देती है. बच्चे की मांगें दिनप्रतिदिन बढ़ती जाती हैं, जिन्हें पूरा करने में मातापिता अपने को असमर्थ पाते हैं. विशेष तौर पर इस स्थिति में मां की हालत दयनीय हो जाती है. अतः मां को चाहिए कि इस समस्या के समाधान के लिए वह बच्चे को उस की गलती का एहसास कराए.

इस संदर्भ में यह बात ध्यान रखने योग्य है कि बच्चे को यह नहीं पता होता कि आप नौकरी के लिए क्यों जाती हैं, न ही उस की बाल बुद्धि यह सोच सकती है. आप के समझाने पर भी उस का शिशु मस्तिष्क आप की समस्या को नहीं समझ सकता.

अतः छोटे बच्चों (स्कूल जाने से पहले की अवस्था में) के लिए किए गए प्रबंध की पूर्णता के साथसाथ बच्चे की रुचियों को समझने और मनोरंजन के साधन जुटाने की भी कोशिश की जानी चाहिए. साथ ही, बच्चे को प्रारंभ से ही इस बात के लिए मानसिक रूप से तैयार कर देना चाहिए कि वह उन से अलग रहेगा.

इस के अलावा एक अन्य महत्त्वपूर्ण बात भी कामकाजी माताओं को ध्यान में रखनी चाहिए कि वे अपने कार्य एवं बच्चे के उत्तरदायित्व को सहजता से निभाने के लिए अपनी दिनचर्या में परिवर्तन करें. उदाहरण के लिए जब तक आप अपने प्रबंध एवं कार्य के प्रति पूर्ण रूप से आश्वस्त नहीं हो जातीं, दूसरे कामों में कमी कीजिए. सिनेमा, सैरसपाटे, पिकनिक आदि का मोह छोड़िए. दूसरे, बाजार एवं घर की वस्तुओं की खरीदारी के लिए समय निश्चित कर के चलें.

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि बाहर काम करने के लिए जाना न केवल आप के जीवन में एक नई शुरुआत है, बल्कि इस से आप की पूरी दिनचर्या पर प्रभाव पड़ता है. इस दृष्टि से विशेष सजगता और सतर्कता जरूरी है. •

झिलमिलाई रात

ाज संवर कर
ालताल में
ालमिलाई रात,
ावाली की रात—
ाज तो महके हैं जज्बात!
चन काया सोन जुही सी
ारों का गलहार,
रभित आंचल से खुल पड़ता
ाज भरा श्रृंगार.
ारेपन में
कीछिपी सी
सकराई रात!
गमगजगमग आंगनदेहरी
ालमिल हंसी मुंडेर,
जनी गंधा झरझर झरती
हका लाल कनेर.
गता है ज्यों
ाठे सुर में
नगुनाई रात.
ाओ, दीपित कर दें रस्ते
हाथों में हाथ
ागों की उज्ज्वल पांतें मा
पनों का है साथ.

ाों के
ागिन दीपों से
गमगाई रात!

—[illegible]



हॉकिन्स सबसे सुरक्षित
सबसे जल्द स्वादिष्ट खाना पकाये



समझदारी से स्वादिष्ट खाना पकाने का तरीका

प्रेशर कुकर मे खाना बनाने में समय और ईंधन बचता है. इससे कई खाद्य पदार्थों के पोषक तत्व खास करके प्रोटीन और विटामिन ज्यादा मात्रा में बचे रहते हैं. ऊपर जो ८ व्यंजन दिखाए गए हैं उनकी विधियाँ आपको मुफ्त मिल सकती हैं. अगर आप बगल में दिए गए पते पर लिखें. हर हॉकिन्स प्रेशर कुकर के साथ एक हिन्दी या आपकी पसन्द के अतिरिक्त १२ भारतीय भाषाओं में पाक-पुस्तिका दी जाती है जिसमें ११९ अन्य स्वादिष्ट व्यंजन विधियाँ हैं. हॉकिन्स की किफायती बनावट और भाप के घूमने की ज्यादा जगह के कारण इसमें खाना सबसे जल्द पकता है. तजुरबों से यह साबित हो गया है कि हॉकिन्स से हर साल लगभग ३०० रु. की बचत होती है

हॉकिन्स—आपकी सबसे ज्यादा सुरक्षा के लिए

हॉकिन्स दुर्घटना मुक्त है. इसका ढक्कन कुकर के अंदर से बंद होता है जो सिर्फ भाप का दबाव घटने पर ही खुल सकता है. इसका सेफ्टी वाल्व जो हैन्डल बार के नीचे है भाप को सुरक्षा के साथ नीचे बिखेर देता है

हर हॉकिन्स के बनने में कड़ी से कड़ी देख-रेख होती है और साथ में एक ५ साल की लिखित गारण्टी दी जाती है.
१२८ अधिकृत सेवा केन्द्रों में मुफ्त कुशल सेवा दी जाती है और असली पुर्ज़े मिलते हैं.

सबसे ज़्यादा टिकाऊ उत्पादन-३६ प्रकार के

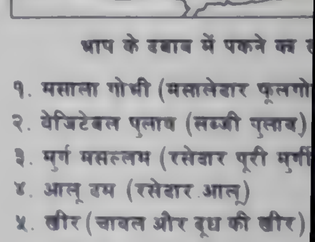
हर बार ढक्कन खोलते या बन्द करते समय हॉकिन्स का गास्केट बगल से रगड़ नहीं खाता इसलिए ज़्यादा टिकता है. धातु का सेफ्टी वाल्व साधारण रबर के सेफ्टी वाल्वों से ज्यादा टिकाऊ है ऊँची क्वालिटी के फौलाद के लेप के कारण ज़ंग नहीं लगता.

हॉकिन्स के पास है दुनियाभर में सबसे ज्यादा प्रकार के प्रेशर कुकर जिनमें से आप चुन सकते हैं—२ से २२ लीटर नाप के ३६ प्रकार जो डिब्बों के साथ या बगैर, सामान्य तला या भारी तले में, ताप कुशल अल्युमिनियम या हमेशा चमकती स्टेनलेस स्टील में मिलते है

हॉकिन्स रु.९० में शुरुआती रकम

आपको हॉकिन्स अधिकृत किराया-खरीद दुकानदार से हॉकिन्स प्रेशर कुकर केवल रु. ९० शुरुआती रकम में मिल सकता है (बाकी छः बराबर माहवार किस्तों में अदा किया जा सकता है.)

आपके सबसे नजदीकी हॉकिन्स किराया-खरीद दुकानदार के पते के लिए या ऊपर के चित्र में दिखाए गए आठ मजेदार व्यंजनों की पुस्तिका या फिर खाना पकाने के ब
सलाह या सेवा के लिए इस पते पर
हॉकिन्स, विभाग- ३५६, पी.ओ. बॉ
बम्बई ४०० ०१६.



भाप के दबाव में पकने का स

१. मसाला गोभी (मसालेदार फूलगो
२. वेजिटेबल पुलाव (सब्जी पुलाव)
३. मुर्ग मसल्लम (रसेदार पूरी मुर्गी
४. आलू दम (रसेदार आलू)
५. खीर (चावल और दूध की खीर)
६. मटन रोस्ट (भुना गोश्त)
७. टोमेटो सूप (टमाटर का सूप)
८. दाल महारानी (साबुत उड़द)

गृहलक्ष्मी के लिए

ख • कमला वर्मा



सामान्य रूप से लक्ष्मी का अर्थ रुपयापैसा और अन्य संपत्ति माना जाता है. चूंकि अर्जित संपत्ति को हेज कर रखने और आवश्यकता के नुसार खर्च करने का काम घर की गृहिणी रती है, इस कारण गृहिणी को गृहलक्ष्मी हा जाता है.

हिंदू समाज में दीपावली के दिन लक्ष्मी जन का जो कार्यक्रम होता है, इस के पीछे ह पौराणिक धारणा है कि ऐसा करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है अर्थात घर की आमदनी बढ़ती है.

वास्तव में यदि गृहलक्ष्मी अप्रसन्न, दुखी, चिंतित और असुरक्षा की भावना से ग्रस्त है तो लक्ष्मी पूजन का कोई अर्थ नहीं रह जाता.

रमेश एक धनी व्यक्ति है जो बहुत पैसा कमाता है. अपनी कमाई का एक बड़ा भाग वह शराब, जुआ और अन्य कई व्यसनों पर खर्च करता है. यद्यपि वह अपनी पत्नी और बच्चों पर भी पर्याप्त खर्च करता

यदि घर में गृहिणी अर्थात गृहलक्ष्मी दुखी और असंतुष्ट है तथा उस का प्यार, विश्वास और सहयोग प्राप्त करने का प्रयास ही नहीं किया जाता तो लक्ष्मी पूजा जैसी खोखली रस्म निभाने से क्या लाभ?

है, किंतु उस की पत्नी और बच्चे सदैव असंतुष्ट रहते हैं. पत्नी का प्रेम उस ने कभी नहीं पाया. बच्चों का सहज सम्मान और आदरभाव भी उसे कभी नहीं मिल सका. वह घर में या तो तानाशाह की भांति रहता है या अजनबी की तरह. दीपावली के दिन बच्चों से जिस प्यार और आत्मीयता की वह अपेक्षा करता है, वह उसे नहीं मिलता. पत्नी की हमेशा त्योरियां चढ़ी रहती हैं और बच्चे भयभीत कबूतर की भांति लगते हैं. इतना पैसा कमाने के बावजूद वह हमेशा दुखी, असंतुष्ट और तनावग्रस्त रहता है. शराब पीना और अन्य निम्न स्तर के शौक पालना यही उस का जीवन रह गया है.

इतने वर्षों से विधिविधान पूर्वक लक्ष्मीपूजन कर के भी क्या उस ने कुछ हासिल किया?

पत्नी से सलाह और सहयोग लें

राजेश की स्थिति इस से बिलकुल भिन्न है. पहले इन की कपड़े की साधारण सी दुकान थी, किंतु अब यह एक बड़े वस्त्र व्यवसायी हैं, प्रारंभ से ही उन्होंने पत्नी और बच्चों की सुरक्षा के लिए कुछ धन संग्रह किया. पूर्ण सुरक्षा के बाद उन्होंने एक बड़े उद्योग में पैसा लगाया.

यह क्रम उन्होंने पत्नी से सलाह और सहयोग लेने के बाद ही शुरू किया. इस में हानि की भी संभावना थी. यदि हानि होती, तब भी उन के घर की व्यवस्था ठीक ही रहती, क्योंकि घर की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन के पास सुरक्षित धन अलग से था. पत्नी और बच्चों का विश्वास प्राप्त कर के पूर्ण मनोबल से वह अपने व्यवसाय की प्रगति में जुट गए और उन्हें सफलता मिली.

वह बताते हैं कि व्यवसाय में कभीकभी संकट का समय भी आता है, किंतु इस से उन के घर की व्यवस्था नहीं बिगड़ती. पत्नी और बच्चे कभी भी स्वयं को असुरक्षित नहीं समझते.

यह एक समझदार, सहृदय और विवेकशील व्यक्ति का उदाहरण है. ऐसे लोगों के घर में कभी भी दरिद्रता नहीं आती.

वैसे दरिद्रता मात्र रुपएपैसे से नहीं दूर होती. यह तो मन की असुरक्षा की भावना है.

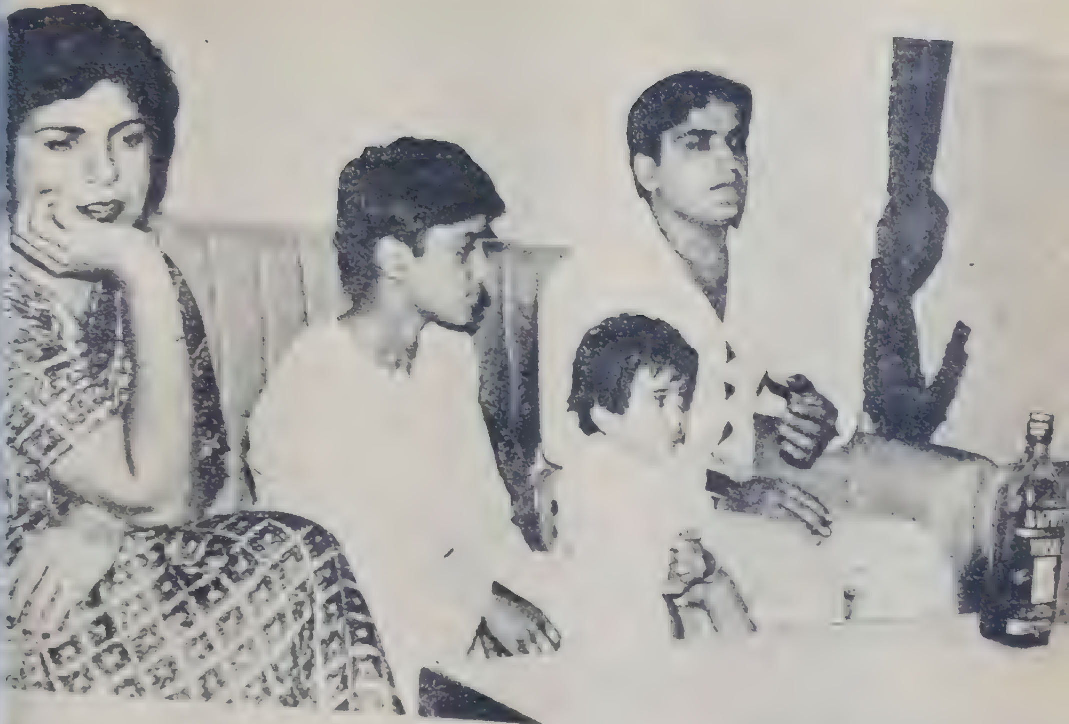
कई पुरुष धन कमाते हुए स्त्री पर एहसान जताते हैं, वे अपनी पत्नी के लिए कुछ खर्च करते हैं तो उन्हें ऐसा लगता है जैसे वे उस पर कृपा कर रहे हैं. ऐसे लोग पैसा खर्च करते हुए एक बाजारू भाव प्रकट करते हैं जैसे वे स्त्री के तनमन को खरीद रहे हैं. ऐसे व्यक्ति लक्ष्मी से प्रतिष्ठित नहीं हो सकते. उन की हथेली चाहे रुपयों से भरी हो, फिर भी दिल किसी उजाड़ बस्ती सा वीरान रहता है. वे चाहे प्रति वर्ष मुहूर्त देख कर लक्ष्मी पूजा करें, पर धन का सुख उन्हें नहीं मिलता.

घर की दरिद्रता का संबंध मन की दरिद्रता से है. हृदय से गृहिणी का सम्मान करना, उस का विश्वास प्राप्त करना और उसे प्यार देना ही सच्ची लक्ष्मी पूजा है. स्त्री का सहयोग प्राप्त हो तो घर में कम संपत्ति होने पर भी ज्यादा संतोष और खुशहाली रहती है.

पत्नी को विश्वास हो कि पति के हृदय में कोई छलकपट या दुराव नहीं है तो वह ह तरह की स्थिति में मितव्ययता के सा गुजारा कर सकती है. बच्चे भी पिता के प्रि आदरभाव तभी रख सकते हैं, जब उन विश्वास होता है कि उन के पिता धन कमा के लिए जो परिश्रम कर रहे हैं, वह उन व सुखसुविधा के लिए ही है, अतः घर व व्यवस्था में वे भी पूर्ण सहयोग प्रदान कर हैं.

क्या ऐसे घर में कभी दरिद्रता सकती है? आवश्यक खर्चों के समय ऐसे में कभी किसी का मुंह नहीं ताकना पड़ कभी किसी खर्च या नुकसान की हालत चिंतित होना और खीजना नहीं पड़ता

अन्यथा कई ऐसे परिवार भी हैं आधुनिक सुखसुविधाओं की चीजें खूब



कर भी उस परिवार के लोग त्योहार के
र सामान उधार खरीदते हैं. स्कूल,
लज की फीस देने के समय मित्रों से
र मांगते हैं. कहीं से भी रुपए प्राप्त
में असफल होने पर घड़ी, अंगूठी या
कोई चीज बेचने पर विवश हो जाते हैं.

क्या ऐसे परिवार को समृद्ध और
र कहा जा सकता है? जिस घर में पैसे के
हमेशा कलह और विवाद होते रहते
ह घर संपन्न नहीं कहा जा सकता. इस
न में दीपावली की लक्ष्मीपूजा एक
ली रस्म ही है.

कुछ लोगों का कहना है कि वे घर की
ो को प्रसन्न करने के लिए अनुचित और
तक तरीकों से भी पैसा इकट्ठा करते
कर भी उन की पत्नी असंतुष्ट रहती है.
असंतोष स्वाभाविक ही है. चरित्रभ्रष्ट
र व्यक्ति किसी को न तो प्रभावित कर
ा है और न ही संतुष्ट और सुखी.

एक प्रोफेसर हैं जो कालिज में कभी
से नहीं पढ़ाते. घर में सुबहशाम
न करने वाले विद्यार्थियों का जमघट

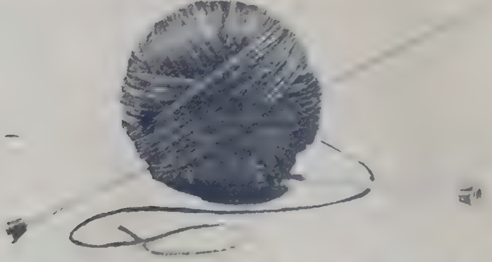
जो पुरुष गृहलक्ष्मी को प्रसन्न रखना नहीं जानता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता के द्वार उस के लिए बंद हो जाते हैं ▲

लगाए रहते हैं. परीक्षा के समय पास करवाने के लिए कुछ विद्यार्थियों से अतिरिक्त धन भी वसूल कर लेते हैं. पर उन के घर की हालत देख कर घिन आती है. उन की पत्नी हमेशा भड़कीले शृंगार में बनीठनी घूमती रहती है. बच्चों में खराब आदतें और आवारागर्दी दिखाई पड़ने लगी हैं.

क्या यह प्रोफेसर साहब धन का कोई सदुपयोग कर पा रहे हैं. यह भी अपने सहीगलत शौक पूरे कर के भौतिक संतुष्टि के नएनए उपाय सोचते रहते हैं. इस प्रकार के परिवार श्री और समृद्धि के प्रतीक नहीं हो सकते. ऐसा परिवार दीपावली के समय मन की सच्ची भावना से प्रकाशित और आलोकित नहीं हो सकता.

हर वर्ष दीपावली प्रसन्नता और नवीन उल्लास ले कर आए, इस के लिए यह आवश्यक है कि घर का प्रधान व्यक्ति

भारत की सबसे बेहतर विविध उपयोगी बुनाई मशीन के बारे में कुछ अनोखी जानकारी



उषा बुनाई मशीन – जिसका दाम तो बाकी बुनाई मशीनों जैसा पर आपकी आमदनी दुगनी



अब देखिए उषा इन्टरनेशनल की अनोखी पेशकश — हर स्त्री के लिए — **UK-828** ऑटोमेटिक बुनाई मशीन — आपकी सर्वोत्तम बुनाई मशीन।

एक ही साथ दो धागे बुन कर अपनी आमदनी दुगनी कीजिए

अब आप दो अलग अलग प्लाइयां या दो तरह के धागे मिला कर पोशाक बुन सकती हैं. जैसे कि सूती/नाइलॉन, ऊनी नाइलॉन, सूती/ऊनी। या रंग बिरंगे धागों से फेयर आइल डिज़ाइन भी बना सकतीं हैं।

५०० से भी अधिक नए डिज़ाइन

यही नहीं, सिर्फ उषा ही एक ऐसी ऑटोमेटिक मशीन है जो कि वीविंग पैटर्नस, रिवर्सिबल और मोटिफ़ डिज़ाइन बुन सकती है। ज्यादा फ़ायदे, पर दाम ज्यादा नहीं!

हर साल २०००/- तक ज्यादा – बचत और कमाई

टिकाऊपन और बिना परेशानी से काम करने के लिए बनाई गई उषा से आप हर साल रखरखाव पर १०००/- तक की बचत कर सकती है।

इसमें अपनी ज्यादा कमाई के पैसे जोड़ कर, हर साल २०००/- का फ़ायदा पाइए

विशिष्ट गुण :

★ ज़्यादा आमदनी : सबसे ज्यादा उत्पादन (एक साथ दो धागे बुनने वाली एक मात्र ऑटोमेटिक मशीन)

★ कम से कम रखरखाव : उत्तम डिज़ाइन के बेड व सूईयों के कारण कम से कम टूट-फूट

★ टिकाऊ : सूई रीटेनर स्प्रिंग्ज़ और हारडन्ड स्प्रिंग स्टील बेड

★ चलाने में आसान : नई से नई तकनीकी का उपयोग

★ विविध उपयोग : सैकड़ों नए डिज़ाइन, जैसे कि वीविंग पैटर्न और रिवर्सिबल

★ गारंटी : १२ महीने

★ मुफ़्त प्रदर्शन और मुफ़्त शिक्षण: उषा खरीदने से पहले

★ साथ ही उषा की जानी-मानी, व्यापक और तैयार बिक्री-बाद सेवा

इन सब विशिष्ट गुणों के का[...] आप उतने ही समय में दुग[...] बुनाई कर के अपनी आमद[...] भी दुगनी कर सकती है।

उषा

कुशलता की परम्परा

ज्यादा बुनाई, ज्यादा कम[...]
उषा से लाभ पाइए

र्शत पुरुष सर्वप्रथम गृहिणी की भावना, कांक्षा और आवश्यकता को समझे, उस अनुकूल स्वयं बने और उसे अपने अनुकूल ाए. यह दीपावली के त्योहार की सब से ी सार्थकता होगी.

नवविवाहित पुरुषों को तो इसी ावली से अपनी गृहलक्ष्मी के स्वागत के ए हृदय का वंदनवार सजा लेना चाहिए. से हर तरह का दुराग्रह, शंका और ह उसी प्रकार हटा देना चाहिए जिस र दीपावली से पूर्व जमे हुए मकड़ी के ले और समस्त कूड़ाकचरा हटा दिया ता है.

कहींकहीं व्यवसायी समाज में यह रणा है कि घर की स्त्री-वर्ग संतुष्ट और ी रहे तो घर में कभी आर्थिक संकट नहीं सकता. इसी धारणा के कारण राजस्थान व्यवसायी समाज प्रत्येक लाभ में पहले की स्त्रियों का भाग अलग निकाल कर देता है. शेष धन अन्य चीजों में खर्च ता है. यह निस्संदेह एक स्वस्थ धारणा इस से घर की आर्थिक नींव सदैव मजबूत ी रहती है.

अन्य वर्ग के पुरुषों को भी इस से णा लेनी चाहिए. गृहलक्ष्मी का विश्वास र सहयोग प्राप्त होने से बढ़ कर कोई और ायी खुशी नहीं हो सकती.

कुछ लोग अपनी पत्नी को घरेलू खर्च लिए रुपए देने के बाद पाईपाई का हिसाब ते हैं. हिसाब न मिलने पर मुंह बना लेते पर यह तो नौकर और मालिक का संबंध मित्र और सहयोगी का नहीं. ऐसी स्थिति त्नी को सम्मान और प्रतिष्ठा कहां से ेगी?

आवश्यकता इस बात की है कि पुरुष नी गृहलक्ष्मी को सुखी और संतुष्ट करने उपाय स्वयं सोचे. जो पुरुष अपनी लक्ष्मी को प्रसन्न करना जानता है और के हृदय का अनुराग प्राप्त कर लेता है, न के प्रत्येक क्षेत्र में उस के लिए लता के द्वार खुल जाते हैं, इस में कोई ह नहीं है. ●

कहानी • कुमुद भटनागर

प्यार के दीप



स्वाति ने शादी के लिए ए तलाकशुदा व्यक्ति को पस किया तो उस की दीदी सह चौंक गईं, पर आखिर उ इस बात का कायल होना प कि स्वाति ने संदीप को अच तरह परख कर ही उस लिए दिल में प्यार के द जलाए हैं.

तीज त्योहारों से उसे कुछ चिढ़ नहीं थी, पर ऐसा कुछ लगाव भी नहीं था कि खासतौर से छुट्टी ले कर घर भागे.

रति के अपने साथ दीवाली मनाने के निमंत्रण के उत्तर में उस ने लिखा था कि इस वर्ष की छुट्टियां वह अवश्य ही उन लोगों के

ाथ गुजारेगी. दीवाली पर छुट्टी मिल गई ो वरना बाद में आ जाएगी. लेकिन उस के ुरंत बाद ही सुबोध का ट्रंककाल आ गया ा. "किसी भी तरह दीवाली पर ही छुट्टी ले ो, स्वाति, नहीं तो रति भी दीवाली नहीं ना पाएगी. वह यही सोच कर उदास हो ाती है कि हम लोग तो यहां मजे में दीवाली ना रहे हैं और तुम वहां परदेस में अकेली ड़ी हो."

"खैर, ऐसी बात तो नहीं है, जीजाजी. ब तो यह परदेस भी घर सा लगने लगा है और दीवाली वगैरा पर घरपरिवार वाले मेत्र बुला ही लेते हैं. लेकिन जब आप और ीदी इतने स्नेह से बुला रहे हैं तो मैं दीवाली े पहले अवश्य पहुंच जाऊंगी," उस ने वाब में लिख दिया था.

और स्वाति दीवाली से चारपांच रोज हले ही पहुंच गई थी. शहर से दूर बसा औद्योगिक उपनगर स्वाति को बहुत पसंद आया. शाम की चाय के बाद रति को फिर से रसोईघर में घुसे देख कर उस ने पूछा, "अब ये सैंडविच किस लिए बना रही हो, दीदी?"

"यहां दीवाली से कुछ दिन पहले घरघर ताश का प्रोग्राम रहता है. आज रात को अपने यहां है सो इसी लिए कुछ नाश्ता बना रही हूं." रति ने बताया.

"आप ने मुझे दीवाली के बाद बुलाना था. अब तो छुट्टी दीवाली के शोरशराबे में ही निकल जाएगी. आराम का मजा ही नहीं आएगा." स्वाति के चेहरे पर कुछ उदासी सी छा गई थी.

"कह तो तू ठीक ही रही है, मगर ऐसा है, स्वाति," रति हिचकिचाई, "मेरी नजर में कुछ अच्छे लड़के हैं. कोई जबरदस्ती नहीं है कि तू उन्हें पसंद ही करे. अगर उन में से कोई तुझे जंचे तो बात आगे बढ़ाएंगे..."

"वरना तलाश का सिलसिला जारी रखेंगे." स्वाति ने बात काटी, "जब मेरी



शादी हो जाएगी तो तुम्हारे लिए क्या शुगल रह जाएगा? अच्छा एक बात और बताओ, ये सब अच्छे लड़के दीवाली के शुभ मुहूर्त पर ही देखने जरूरी हैं, आगेपीछे नहीं देखे जा सकते?''

''शायद नहीं, क्योंकि तब उन्हें खास तौर से बुलाना पड़ता. आजकल तो रोज ही किसी न किसी के यहां ताश खेली जाएगी और सभी लड़के आएंगे. चारपांच घंटे की बैठक तो जमती ही है, सो उस में तू आसानी से देख सकती है.''

''स्वयंवर की प्रथा उड़ गई नहीं तो अब तक उस का भी सरकारीकरण हो चुका होता और आप को अवश्य उस का संचालक बना दिया जाता.''

''तू और तेरी बातें भी निराली हैं.'' रति हंसी, ''पर देख, स्वाति, इस बात को हंसी में मत उड़ा. मां की सेहत तेरी ही फिक्र में गिरती जा रही है सो शादी तो तुझे करनी ही पड़ेगी. यहां जो लड़के मैं ने देखे हैं उन में से किसी को भी शादी के बाद लड़की के नौकरी करने में एतराज नहीं है और तेरी बदली भी यहां आसानी से हो सकती है.''

''यानी आप ने पहले से सब कुछ योजना कर रखी है,'' स्वाति मुसकराई, ''सो आज कितने रंगरूट बुलाए हैं आप ने?''

''रूंगरूटवंगरूट कुछ नहीं, सब बेहद बांके जवान हैं, देखेगी तो मेरी पसंद की दाद देगी. चारों इकट्ठे रहते हैं, सो इकट्ठे ही आएंगे.''

''वैसे आप को पसंद तो कोई एक ही होगा, बता दीजिए तो उसे जरा गौर से देख लूंगी.''

''शादी तू ने करनी है और कोई एक भी तुझे ही पसंद करना है. मैं अपनी पसंद तुझ पर नहीं थोपूंगी.''

स्वाति का खयाल था कि बड़ा बोझिल औपचारिक सा वातावरण होगा. लेकिन सभी समवयस्क थे और हंसीमजाक का बहुत ही बेतकल्लुफी का माहौल था. स्वाति को भी सब से घुलनेमिलने में अधिक समय नहीं लगा.

दीवाली की सुबह रति ने उस से पूछा. ''तू पांचछः रोज से उन लड़कों को देख रही है, क्या खयाल है?''

''अच्छे लड़के हैं सभी.''

''मुझे तेरे से ऐसे ही ऊलजलूल जवाब की उम्मीद थी, क्योंकि तू ने किसी को ध्यान से देखा ही नहीं.''

''आप ठीक कहती हैं, दीदी, क्योंकि जरूरत ही नहीं थी. पहले दिन ही मुझे संदीप पसंद आ गया था.''

''संदीप?'' रति ने चौंक कर पूछा.

''हां, और यह भी मालूम है कि वह तलाकशुदा है.''

''मगर वह तुम्हें मिला कहां?'' अब तक चुप बैठे सुबोध ने पूछा, ''उसे ताश के लिए तो किसी ने नहीं बुलाया.''

''क्योंकि लोगों की नजरों में उस ने बिलावजह किरन को तलाक दिया है और असलियत यह है कि किरन ने उसे बिलावजह छोड़ा है और यह तो संदीप की शराफत है कि उस ने किरन की इज्जत की खातिर सब इलजाम अपने ऊपर ले लिया है.''

''पर तुझे यह सब मालूम कैसे हुआ? कहां फंसाया संदीप ने तुझे?'' रति ने पूछा.

''फंसाया नासमझ, नाबालिग बच्चियों को जाता है, दीदी, मैं संदीप और तुम्हारे पसंद किए गए युवकों जैसे बीसियों लड़कों के साथ काम करती हूं और उन्हें अच्छी तरह पहचानती हूं और अपना बुराभला भी अच्छी तरह समझती हूं. मुझे कोई क्या फंसाएगा,'' स्वाति चिढ़े स्वर में बोली.

''यह तो ठीक है, मगर संदीप से तुम्हारी मुलाकात हुई कहां?'' सुबोध ने पूछा.

''लाइब्रेरी में. आप ने लाइब्रेरियन को बताया था न कि मुझे अच्छी पुस्तकें पढ़ने का शौक है सो उस ने मेरा परिचय संदीप से करवा दिया, क्योंकि वह हरेक बढ़िया किताब खरीदता है.'' स्वाति की आंखों



ने पिछला सप्ताह चलचित्र सा तैर

"स्वातिजी, यदि आप को अनूठी कों का संग्रह देखना है तो संदीपजी की लाइब्रेरी देखिए," लाइब्रेरियन ने चय कराने के बाद कहा था.

"अच्छा! कब दिखाइएगा?" स्वाति ने प से पूछा था.

"जब भी सुबोधजी को फुरसत हो, आ ," संदीप ने नम्रता से कहा था.

"जीजाजी को क्यों तकलीफ दी जाए. पता बताइए, मैं खुद ही आ जाऊंगी या अभी घर जा रहे हों तो अभी चलते

"चलिए."

घर बहुत ही कलात्मक और पूर्ण ढंग से सजा हुआ था. सजावट में अवश्य किसी नारी का योग था. किसी अकेले कुंआरे के घर जैसा नहीं था. जब स्वाति अपनी पसंद की किताबें छांट कर चलने लगी तो संदीप ने आग्रह किया, "कुछ ठंडा तो पी कर जाइए."

वह फ्रिज से दो ठंडी बोतलें निकाल लाया. "वैसे मौसम तो गरमगरम चाय या काफी का है मगर नौकर बाजार गया हुआ है."

"आप की श्रीमतीजी शायद शहर से बाहर गई हुई हैं." स्वाति ने पूछा.

"जी हां, सदा के लिए," संदीप सूखी

"ओह, वाकई, तुम जेलर तो हो, पर बेहद प्यारे," किरन उस के गले से झूल कर बोली थी. ▲



LINTAS.LPT-RB-9-1710 HI

सा था, "मेरा तलाक हो चुका है बीवी
बीवी से ही नहीं, समाज से भी."

'ओह, माफ करिएगा, मैं ने आप का
खाया."

'वह अब पत्थर हो चुका है, इन
छोटी बातों से नहीं दुखता." संदीप
रा दिया था, "आप अभी तो रहेंगी न
इन?"

'जी हां, 15 दिन की छुट्टी है."

उस के बाद उन में रोज ही मुलाकात
गी थी और बातोंबातों में संदीप ने उसे
था कि उस की मुलाकात किरन से
क लाइब्रेरी में ही हुई थी और फिर
ई लेनेदेने घर जाने लगा था. एक दिन
क किरन के पिता ने शादी का प्रस्ताव
दिया था. वह हैरान रह गया था, क्योंकि
मालूम था कि किरन को एक
चालक से प्रेम है.

'अरे, वह सब कालिज के जमाने की
ता थी. तुम से मिलने के बाद वह
ने लगी है कि उस चंचल छिछोरे
की बजाए वह तुम्हारे जैसे गंभीर
जीवी के साथ ज्यादा खुश रह सकेगी,"
ने उसे समझाते हुए कहा था.

किरन से पूछने पर उस ने एक लजीली
राहट के साथ कहा था, "हां, अगर
झे अपने काबिल समझते हो...मुझे
दे सकते हो..."

पर शादी के बाद किरन ने स्वयं ही उसे अपने काबिल नहीं समझा, न उसे प्यार दे सकी, न उस से प्यार ले सकी. बुद्धिजीवी के साथ एकदो घंटे साहित्य चर्चा या अन्य गंभीर विषयों पर वार्तालाप करना अलग बात थी और साथ में सारा जीवन बिताना दूसरी. जीने का मजा तो जिंदादिल सुधीर के साथ था. तेज रफ्तार से मोटर साइकिल भगाते पिकनिक पर जाने, अचानक पिक्चर का प्रोग्राम बनने या चांदनी का मजा लेने आधी रात को घूमने जाने में जो मजा था, वह संदीप की सीमित रफ्तार से चलाई गई गाड़ी या हफ्तों पहले आरक्षित कराई बढ़िया होटल में टेबल पर खाना खाने या शहर से दूर झील के किनारे के अतिथिगृह में चांदनी का मजा लेने में नहीं था.

"दुर्घटना अचानक हुआ करती है. खुशी और आराम के क्षणों की योजना आज के व्यस्त जीवन में पहले से बना लेनी पड़ती है," संदीप की इस विचारधारा से किरन बिलकुल सहमत नहीं थी.

समुद्र के पानी को जैसे झील में बांध दिया हो. वह रहरह कर तड़प उठती. सुधीर के साथ गुजारे क्षणों को याद करती. फिर सुधीर का छुट्टियों में आना, संदीप का अपने ही घर में अजनबी हो जाना, एकदूसरे से बात करते हुए घर को जेल और संदीप को जेलर कहना, जिंदगी को उमरकैद कहना



अपनी जिंदगी को खुले आम कोसना.
खर तंग आ कर एक रोज संदीप को कह
इना पड़ा कि वह सदा के लिए सुधीर के
क्यों नहीं चली जाती. इस पर किरन ने
हाय भाव से कहा था, "ऐसा करने से
और मेरे परिवार की कितनी बदनामी
ी. सब की सहानुभूति तो तुम से होगी."

"और अगर मैं तुम्हें छोड़ दूं तब तो
की सहानुभूति तुम्हारे साथ होगी न?"

"ओह, वाकई, तुम जेलर तो हो पर
द प्यारे," किरन उस के गले से झूल कर
ी थी.

ौर फिर उस ने किरन को तलाक दे
दिया था. किसी के बहुत पूछने पर
कह दिया था कि पसंद नहीं थी. हंसमुख
चंचल होने के कारण किरन सब में
कप्रिय थी और इस घटना के बाद सब उस
फरत करने लगे थे. धीरेधीरे अपनी बस्ती
हना उस के लिए असहनीय हो गया था
वह यह सोच कर रुका रहा था कि एक न
दिन लोगों को शायद सचाई का पता
जाए.

"मान लिया कि संदीप के साथ
दती हुई है, लेकिन इस से उस का
कशुदा होना तो नहीं मिट जाता और
जैसी सर्वगुण संपन्न लड़की को
कशुदा व्यक्ति से शादी करने की क्या
श्यकता है?" रति ने पूछा.

"क्योंकि मुझे वह पसंद है. मुझे उस में
बुराई नजर नहीं आती." स्वाति ने
दिया, "देखो, दीदी, आप जो लड़के
रही हैं, उन के बारे में भी आप को क्या
म कि कभी किसी से प्रेम रहा हो और
गवश शादी न हो सकी हो, जबतब उस
याद सताती हो? लोग विधुर या
कशुदा से शादी क्यों नहीं करते,
लिए कि उन के वर्तमान में हमेशा
न का साया मंडराता रहता है, लेकिन
कल प्रेमियों पर भी वही बात लागू होती
स्वाति बोली.

"और इस मानसिक अटकाव का पता
परिवार और घनिष्ठ मित्रों को भी नहीं होता. शादी के बाद बीवी को ही भुगतना पड़ता है. सो जब यह खटका सभी के साथ लगा हुआ है—तो फिर जिस के बारे में मालूम है, उसी से शादी क्यों न की जाए," सुबोध बोला, "मैं संदीप को अच्छी तरह जानता हूं और इस किरन वाले प्रसंग को छोड़ कर उस के बारे में कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है."

"लेकिन मां तुम लोगों की यह फिलासफी नहीं समझेंगी," रति ने कहा.

"मां को मैं समझा लूंगा." सुबोध बोला.

"और संदीप के पास भी तुम ही प्रस्ताव ले कर जाओगे क्या?" रति ने पूछा.

"उस की जरूरत नहीं है, दीदी, संदीप स्वयं प्रस्ताव ले कर आएगा." स्वाति बोली.

"मुझे मालूम था कि मेरी जिम्मेदारी तो बस तुम्हारा परिचय संदीप से कराने भर की थी."

"आप ने कब कराया परिचय?"

"मैं ने नहीं मगर मेरे कहने से लाइब्रेरियन ने तो कराया," सुबोध हंसा.

"तुम ने परिचय करवाया? मगर क्यों?" रति ने पूछा.

"क्योंकि मुझे मालूम था इसे संदीप पसंद आएगा. इस की और संदीप की रुचियां एक सी हैं. लेकिन अगर मैं तुम से कहता तो तुम बिगड़ पड़तीं. शायद स्वाति भी सहमत न होती, सो मैं ने सोचा कि इन्हें खुद ब खुद एकदूसरे से मिलने दो." सुबोध हंसा. "एक बात का तुम्हें विश्वास दिलवा दूं, रति, स्वाति खुश रहेगी संदीप के साथ."

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"क्योंकि मैं इसे भी जानता हूं और संदीप को भी," सुबोध ने उठते हुए कहा.

"लेकिन तुम कहां चले?" रति ने पूछा.

"संदीप के घर कहने कि भई तुम्हारी जिंदगी में तो हमारी साली ने प्यार के दीप जला दिए. अब तुम रात को आ कर हमारे साथ दीवाली के दीप जलाओ." •

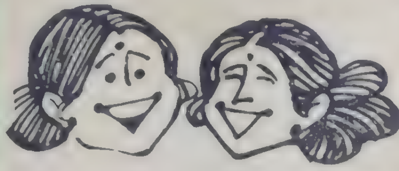


तुम्हारे आंगन में दीप बन कर जलने की ख्वाहिश है
काली रातों सी अंधेरी ज़िंदगी रोशन करने की ख्वाहिश है
ये ज़िंदगी थी किश्ती तूफ़ान की थी, मगर अब से तुम
साहिल बन कर आए हो हमें संभलने की ख्वाहिश है.
तुम्हारी इक नज़र से ही ज़िंदगी हो गई चमनचमन
अब बहार बन के तुम्हारी राहों में महकने की ख्वाहिश है.
इन दो आंखों को बनाया है हम ने घरआंगन अपना
हर तमन्ना भूल कर अब इन में ही बसने की ख्वाहिश है.

—वनिता श्रीवास्तव


कानों को चाहिए जॉन्सन्स बड्स
सफ़ाई में सावधानी
जॉन्सन्स बड्स इत्मीनान
के साथ इस्तेमाल कीजिए.
जॉन्सन्स बड्स के तने
लचीले और सुरक्षित होते हैं
और इनके दोनों ओर रुई के सिरे होते हैं.
कानों की सफ़ाई या कई दूसरे कामों के लिए
बिल्कुल उपयुक्त. कहीं भी इस्तेमाल के लिए
आसान और सुरक्षित.
५०, १०० और १५० के पेको में मिलता है.
buds
150 swabs
Johnson & Johnson
OBM/9842 HN

ये पत्नियां



क बार महिलाओं की पार्टी चल रही थी. उस में सभी महिलाएं अपनेअपने तों के बारे में बता रही थीं. किसी का डाक्टर था तो किसी का पति नेयर. जब एक महिला की बारी आई ाह बोली, "मेरे पति आटो पाट्र्स हैं." न में उस के पति आटो पाट्र्स की दुकान ा हैं. —उषा लूथरा

*

मारे गांव में रुक्मिणी हरण नाटक खेला जा रहा था. एक पहलवान रुक्मिणी का नय कर रहा था. उस ने एक दृश्य में उठ कर संवाद बोला तो ब्लाउज चर्र से गया.



वह जिस महिला से ब्लाउज मांग कर था, वह भी दर्शकों में ही बैठी थी. ज के फटते ही वह जोर से चिल्लाई, , मेरा ब्लाउज फट गया." यह सुन कर ब उस की ओर देखने लगे तो वह शर्म न उठ सकी. —शिवकुमार दीपांकन

*

एक घनिष्ठ मित्र की पत्नी कम पढ़ी-लखी है, लेकिन महल्ले में अपना न किया करती है. यही बात वह अपने भी कहती थी.

एक दिन उस ने अपने पति से पूछा, "आप दफ्तर में कौन सा काम करते हैं?"

पति बोले, "मैं मशीन पर टाइप करता हूं."

"लाइए, मैं आप के पैर दबा दूं, क्योंकि मशीन चलातेचलाते थक गए होंगे."

पति ने हंस कर कहा, "आज तुम ने अपने कम पढ़ेलिखे होने का प्रमाण दे दिया."

वह बौखला कर बोली, "वह कैसे? मैं समझी नहीं."

"तो अब समझ लो कि टाइप हाथ से किया जाता है, पैर से नहीं."

—रफीक अहमद

*

मेरी पत्नी बहुत डरपोक और चिड़चिड़े स्वभाव की है. वह शाम को ही घंटी बंद कर देती है, क्योंकि लोग रात तक आतेजाते रहते थे. घंटी बरामदे में थी और बैठक काफी अंदर.

एक बार जाड़े में मैं एक पार्टी में चला गया. मैं बहुत रात गए लौटा. पत्नी चारों ओर से कमरा बंद कर के मेरा इंतजार कर रही थी. मैं आवाज न दे सका. और मेरी पत्नी भी बाहर आ कर देख नहीं सकी. रात में मैं किसी के घर भी नहीं जा सकता था, इसलिए सारी रात मुझे बाहर ही रहना पड़ा. सुबह जब मेरी पत्नी ने दरवाजा खोला तो मुझे बरामदे में बैठा पाया. वह आश्चर्य से मुझे देखती रह गई. —संतोषकुमार भार्गव

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

सुंदर खिलौने एवं गुड़ियां

बचपन से ले कर बुढ़ापे तक आकर्षण

लेख • सतीशकुमार जैन

सुंदर खिलौने और सजी धज
गुड़ियां हमें एक निरा
कल्पनालोक में ले जाती है
जहां मन चिंताओं को भू
कर खुशी और उमंग से भ
जाता है. आइए, इन खिलौ
के निर्माण और सज्जा के बा
में कुछ रोचक जानका
हासिल करें

सुंदर खिलौनों एवं सजीधजी गुड़ियों के चाव से न बच्चे अछूते रहते हैं, न युवा और न प्रौढ़ एवं वृद्ध ही. सुंदर बच्चों, परियों, राजकुमारों, राजकुमारियों, चिड़ियों एवं जानवरों के भोलेभाले मुसकराते तथा विशेष हावभाव में मासूम चेहरे एक अजीब आकर्षण उत्पन्न करते हैं. खिलौनों के संसार में पहुंच कर बच्चे एवं बड़े आनंद के एक निराले लोक में खो जाते हैं.

जीवन का सब से चिंतामुक्त एवं प्रसन्नतायुक्त समय है—व्यक्ति का बचपन. न कोई चिंता, न किसी उत्तरदायित्व का





भार और न ही किसी प्रकार का मर्यादा से बंधा जीवन अबोध, अल्हड़ शैशवकाल खुशियों से भरा खजाना है. उस उम्र में न जीवन की त्रासदियां सालती हैं और न ही उभरती हैं जीवन की विषमताओं के प्रति गहन संवदेना. कली जैसी मुसकान, गुलाब जैसा खिला चेहरा और मुक्त सरल हंसी—ये सब बचपन की विशेषताएं हैं.

खिलौने एवं गुड़ियां बचपन की सुखद स्मृतियों के लोक में लौटा लाती हैं. इसी लिए ये चीजें बड़ी आयु वालों को भी अच्छी लगती हैं. बच्चों की तो वे प्राण हैं, क्योंकि वे उन्हीं की प्रतिच्छाया हैं. खिलौने न केवल धनिक वर्ग का ही मनोरंजन करते हैं, बल्कि निर्धन बच्चों को तो वे और भी अधिक प्यारे होते हैं. अभाव शौक की वस्तुओं के प्रति कई गुना आकर्षण बढ़ा देता है. इसी कारण खिलौनों एवं गुड़ियों की मांग हर वर्ग के व्यक्तियों में रहती है. जेब में जितने दाम, उसी के अनुसार खिलौनों की मांग



पैसठ सालों से मशहूर
AFGHAN SNOW
अब
एक नये
रूप में
इसकी कोमल छुअन से
जागे यौवन
Afghan Snow
Afghan Snow
E. S. Patanwala
AMC/83

कुछ देशों ने अत्यंत कलात्मक एवं अजीब खिलौने तथा गुड़ियां बनाने के अतिरिक्त व्यापारिक रूप से भी उन में यथेष्ट प्रसिद्धि प्राप्त की है. नई दिल्ली में बहादुरशाहजफर मार्ग पर स्थित अंतरराष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय को देखने पर इन गुड़ियों का साजसिंगार एवं उन के मोहक हावभाव जादुई प्रभाव उत्पन्न करते हैं. कारीगरों ने अपनी कल्पना को कैसेकैसे आयाम दिए हैं. सरल, अबोध मुसकानों को, भावभंगिमाओं को कैसेकैसे रूपों में चित्रित किया है, परिधानों की छांट में कितनी सूझबूझ से काम लिया है, देख कर आश्चर्य होता है. कुछ गुड़ियों को देख कर तो लगता है जैसे वे अभी बोल उठेंगी. व्यक्ति जितना भावुक एवं संवेदनशील होता जा रहा है, उस की रचनात्मक अभिव्यक्ति भी उतनी ही मुखर होती जा रही है. गुड़िया एवं खिलौने भी कलात्मक अभिव्यक्ति का एक प्रमुख क्षेत्र बनते जा रहे हैं.

जापान को गुड़ियों का देश कहा जाता है. कलात्मक अभिरुचि और संपन्न सांस्कृतिक जीवन के लिए यह संसार भर में प्रसिद्ध है. इस अभिरुचि को व्यक्त करने के लिए उन्होंने खिलौनों और गुड़ियों को भी एक सुंदर माध्यम बनाया है. उद्योग के रूप में भी यह वहां बहुत विकसित हुआ है. आश्चर्य की बात है कि अधिकांशतः ये खिलौने वहां बड़े कारखानों में न बन कर बच्चों एवं महिलाओं द्वारा बनाए जाते हैं. हंगरी, जरमनी व रूस आदि ने भी बड़ी सजीव और बहुत सुंदर गुड़ियां बनाने में यथेष्ट ख्याति अर्जित की है.

भारत जैसे बड़े देश में यहां के करोड़ों बच्चों के लिए अच्छे, आकर्षक एवं सस्ते खिलौनों की बहुत आवश्यकता है. ये उन का अच्छाखासा मनोरंजन कर सकते हैं. यद्यपि खिलौनों की मांग बच्चों के जन्मदिन पर उन्हें उपहार देने के लिए एवं घरों की सजावट के लिए सारे ही वर्ष बनी रहती है, किंतु उन की सब से अधिक बिक्री होती है प्रसन्नता के त्योहार दीवाली पर. खिलौनों के दुकानदार उस समय विशेष रूप से अपनी दुकानों को सजाते हैं.

पहले अधिकतर मिट्टी और लकड़ी के ही खिलौने अधिक बनते थे. मिट्टी के खिलौने बनाने का काम अभी भी पश्चिमी बंगाल के नदिया जिले के कृष्णानगर में अच्छे बड़े स्तर पर होता है. मैसूर में लकड़ी के खिलौने अधिक बनाए जाते हैं. यद्यपि परिश्रम द्वारा वे कलात्मक तो बन जाते थे, किंतु कुतूहलपूर्ण नहीं होते हैं. चाबी वाले खिलौने के निर्माण के साथ उन के प्रति कुतूहल एवं विस्मय बढ़ने लगा. चाबी द्वारा उड़ने वाले हवाई जहाज, चलने वाली रेल, मोटर गाड़ी, समुद्री जहाज, नगाड़े पीटते भालू एवं बंदर किस बच्चे एवं बड़े के मन में उन के प्रति ललक नहीं उत्पन्न करते? जितनी देर तक खिलौना चाबी से चले उतना ही उस का महत्त्व है और उतने ही अधिक दाम है.

भारत में चाबी से चलने वाले खिलौनों के जनक और अब एक बड़े खिलौना निर्माता डा.कैलाशचंद जैन से भेंट करने पर ज्ञात हुआ कि सन 1942 में एक पुराने मोटर मैकेनिक, दो मजदूरों और 500 रुपयों की पूंजी से उन्होंने यह उद्योग आरंभ किया था. अपना खिलौना मोटरों को सर्वप्रथम उन्होंने नई दिल्ली स्थित बिड़ला मंदिर के आगे यह

कह कर स्वयं बेचा था, "भारत में बनी मोटर दो आने में... स्वदेशी मोटर दो आने में... सस्ती मोटर दो आने में." सारा माल बिक जाने और एक दिन में ही उस से 24 रुपए का लाभ होने के उत्साह का ही यह परिणाम है कि आज डा.कैलाशचंद जैन की 'राजा मैकेनिकल कंपनी प्राइवेट लिमिटेड' खिलौनों के निर्माण के लिए भारत भर में प्रसिद्ध है.



स्प्रे द्वारा गुड़ियों के नाक, कान, आंख आदि की रंगाई.

जापानी खिलौनों के निर्माता कुदो से डा.जैन ने आधुनिक खिलौने बनाने का तरीका सीखा और अब उन का यह व्यवसाय इतना विकसित है कि उन के कारखानों में कई सौ व्यक्तियों को, जिन में अधिकतर महिलाएं और लड़कियां सम्मिलित हैं, रोजगार मिला हुआ है. अपंग व्यक्तियों के प्रति डा.जैन की विशेष सहानुभूति है. काफी बड़ी संख्या में अपंग व्यक्तियों को रोजगार देने के कारण उन्हें दिल्ली प्रशासन द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है.

खिलौनों एवं गुड़िया की दुनिया में एक नया मोड़ आया प्लास्टिक की ईजाद के कारण. अब मिट्टी और लकड़ी के स्थान पर अधिकतर खिलौने प्लास्टिक के ही बनते हैं. प्लास्टिक, पी.वी.सी. और टिन से बने मशीन और बेटरी से चलने वाले खिलौने तथा प्लास्टिक, पी.वी.सी. और प्लास्टर आफ पेरिस से बनी गुड़ियां देश में अनेक स्थानों पर बड़ी मात्रा में बन रही हैं. ये आकर्षक आकृतियों एवं साजसज्जा में लगभग सभी बाजारों में मिलती हैं.

देश में जैसेजैसे शिक्षा का प्रसार बढ़





है, रहनसहन का स्तर ऊंचा हो रहा है
र बच्चों के विकास और मनोरंजन की
र अधिक ध्यान दिया जा रहा है, वैसेवैसे



गुड़ियों को परिधान पहनाती लड़कियां.

खिलौनों की आवश्यकता और बिक्री भी बढ़ रही है. बच्चों के लिए न केवल उन का मनोरंजन करने वाले खिलौने ही बनाए जाते हैं, बल्कि उन के बौद्धिक, तकनीकी और कलात्मक ज्ञान को बढ़ाने के उद्देश्य से भी खिलौने बनाए जा रहे हैं. खिलौनों को मोटे तौर पर चार वर्गों में बांटा जा सकता है अर्थात चाबी वाले, बैटरी से चलने वाले, रगड़ कर चलने वाले और बिना चलने वाले सजावटी खिलौने एवं गुड़ियां.

चाबी से चलने वाले खिलौनों के प्रथम निर्माता हैं डा.कैलाशचंद जैन. अब देश में कई नगरों में चाबी वाले आकर्षक खिलौने बनाए जाते हैं. इन का मूल्य इन के आकार

विभिन्न प्रकार की छोटी गुड़ियां.

एवं चलने की क्षमता के आधार पर लगभग पांच रुपए से ले कर 25 रुपए तक रखा जाता है. बढ़िया खिलौने अब बैटरी से चलने वाले बनाए जाते हैं. इन के मुख्य निर्माण केंद्र हैं—दिल्ली एवं बंबई. दिल्ली में सातआठ कंपनियां ये खिलौने बना रही हैं. इन खिलौनों का मूल्य 30 रुपए से ले कर डेढ़ सौ रुपए तक होता है. इन के एक कारखाने में 10 से ले कर सौ तक व्यक्ति कार्य करते हैं. बैटरी से चलने वाले खिलौनों के निर्माण में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है और सुंदर से सुंदर डिजाइन के खिलौने बना रहे हैं.

रगड़ कर चलाए जाने वाले खिलौनों के अंदर एक चक्र होता है जो रगड़ने पर गति धारण कर लेता है. जब तक चक्र में चलने योग्य गति रहती है, खिलौना भी चलता रहता है, बिलकुल उसी प्रकार जैसे कुम्हार का चक्र. इन खिलौनों का मूल्य डेढ़ रुपए से ले कर 20 रुपए तक होता है.

देश में चाबी वाले, बैटरी से चलने वाले और रगड़ कर चलाए जाने वाले खिलौने बहुत बड़ी संख्या में तैयार किए जा रहे हैं. अपेक्षाकृत अधिक मूल्य होने के कारण इन की खपत धनी एवं मध्यमवर्गीय परिवारों में ही होती है.

पी.वी.सी. से बने बगैर चलने वाले सुंदर से सुंदर खिलौनों एवं गुड़ियों का निर्माण भी देश में बड़ी संख्या में किया जा रहा है. इन्हें सांचे में ढाल कर बनाया जाता है. इन में जो खिलौने बनाते हैं वे हैं—जानवर, चिड़िया, विभिन्न आयु के बच्चे, परियां, राजकुमारियां एवं राजकुमार. कुछ गुड़ियां तो इतनी सजीव बनी होती हैं कि देखते ही बनता है. दिल्ली के एक प्रसिद्ध गुड़िया निर्माता रमेशचंद जैन 'राजन टायज' नामक छोटी एवं बड़ी बहुत सुंदर गुड़ियों का निर्माण कर रहे हैं. उन की गुड़ियों की देश के अनेक भागों में अच्छी मांग है. उन के कारखाने में जा कर देखा कि लड़कियां एवं प्रौढ़ महिलाएं कितनी दत्तचित्त हो कर सावधानी से पी.वी.सी. से इन गुड़ियों को बनाती हैं, उन को आकर्षक पोशाकों में सजाती हैं. उन्होंने जब अपने द्वारा निर्मि[त] गुड़ियों को एक मेज पर सजाया तो अनूठा ही दृश्य उपस्थित हो गया. ऐसा लगा जै[से] छोटीछोटी राजकुमारियों एवं परियों की एक सभा हो रही हो.

गुड़ियां सदैव ही बच्चों को प्रिय रह[ी] हैं. नानीदादी अपने चहेते धेवतेधेवतियों [व] पोतेपोतियों की प्रसन्नता के लिए गुड़ियां सि[ल] कर देती थीं. लड़कियां भी स्वयं अपने लिए गुड़ियां बनाती थीं. घरों में गुड्डेगुड़ियों का निर्माण किया जाता था और फिर बच्चे उल्लासपूर्वक उन का विवाह रचाते थे. विवाह अर्थात संभोग का भारतीय जीवन में कैसा विशिष्ट स्थान है कि बच्चे भी इस के रचाने के चाव से अछूते नहीं रहते.

गुड़ियों के प्रति वही सहज चाह अ[ब] परिष्कृत रूप में बढ़ती जा रही है. कपड़े की साधारण गुड़ियों के स्थान पर अब प्लास्टिक और पी.वी.सी. की बनी और सुंदर परिधा[न] पहने गुड़िया मन भाती हैं.

पी.वी.सी. गुड़ियां बनाने का तरीक[ा]

पी.वी.सी. (पौलि विनाइल क्लोराइड) घोल श्रेणी के रेजिन. डी.ओ.पी. तथा अन्य रसायनों के मिश्रण से मंथन द्वारा घोल तैयार कर लेते हैं. घोल को सांचों [में] डाल कर भट्टी में रखा जाता है. थोड़ा गर[म] होने पर सांचों को बाहर निकाल लेते हैं. [जो] घोल तरल रूप में रह जाता है उसे कि[सी] बरतन में निकाल लिया जाता है. सांचे [को] मिश्रण के उस माल सहित जो गरम होने [के] कारण उस के अंदर चिपक कर रह जाता [है] फिर भट्टी में रखते हैं. जब उस लगे हुए मा[ल] की पूरी पकाई हो जाती है तब सांचे [को] निकाल कर ठंडे पानी में डाल देते हैं. ठ[ंडा] होने पर उस आकृति को सांचे में से निक[ाल] लेते हैं.

उस आकृति की आकर्षक रंगों [से] रंगाई की जाती है. सुंदर आंखें, भौंह, ना[क,] कान व बाल विभिन्न रंगों से स्प्रे द्वारा ब[नाए] जाते हैं. बालों को रेशमी धागा चिपका [कर] भी बनाया जाता है. फिर उस आकृति

र व चमकदार परिधानों से सजाया जाता अब गुड़िया तैयार हो जाती है सुंदर सिंगार के साथ. फिर आकर्षक डब्बों में कर उन्हें बिक्री के लिए भेजा जाता है.

गुड़ियों को अधिक आकर्षक बनाना व र परिधानों से सजाना निर्माता की ल्पना व अपने व्यवसाय में लगन पर निर्भर ता है. उस की कल्पना में जितने अधिक भाव तथा परिधान आते रहते हैं, ड़ियों की मोहकता एवं आकर्षण भी उतना अधिक बढ़ता रहता है.

रमेशचंद जैन ने बतलाया कि खिलौने गुड़ियां बनाने में एक परिवार के कई स्य भी लग जाते हैं और प्रत्येक को दूरी के लगभग 10 रुपए प्रतिदिन मिल ते हैं. कारखाने में घोल तैयार करने, सांचों घोल में पकाने, पके हुए माल को रंगने, आकृतियों को चित्रित करने और उन को रधान पहनाने के भिन्नभिन्न कक्ष बने हुए ने हैं जहां अधिकतर लड़कियां एवं हिलाएं काम करती हैं. मजदूरी अधिकतर के हिसाब से दी जाती हैं. इस से न केवल चों, अपंग व्यक्तियों एवं महिलाओं को रोजगार मिलता है, बल्कि कम पूंजी ा साधारण वित्त के दुकानदार भी अच्छी सिक आय कर लेते हैं. रमेशचंद जैन के विचार में दिल्ली में व अन्य निर्माण स्थानों पर पी.वी.सी. के खिलौनों एवं गुड़ियों की मांग निरंतर बढ़ रही है क्योंकि वे अधिक टिकाऊ एवं सस्ते होते हैं.

बच्चों का आरंभिक वर्षों में विकास, अच्छी शिक्षा, खेलकूद एवं मनोरंजन के साधनों पर अधिक निर्भर करता है. खेलखिलौनों की भी इस कारण उन के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है. वह उन की क्रियात्मक एवं कलात्मक शक्ति का विकास करते हैं. खिलौने खरीदते समय बालकों के मातापिताओं को चाहिए कि वे बच्चों की आयु, रुचि तथा उन की बुद्धि का अवश्य ध्यान रखें. खिलौने जितने सुघड़ एवं आयु के अनुकूल होंगे, बच्चों को उन से खेलने में उतनी ही अधिक प्रसन्नता मिलेगी और उन की बुद्धि का विकास होगा.

देश में इस समय खिलौने एवं गुड़ियां बनाने वाले कारखानों में लगभग 10-12 हजार व्यक्ति लगे हुए हैं. लगभग उतने ही व्यक्ति कारखानों से बाहर रह कर ठेके पर कार्य कर के अपनी आजीविका कमा रहे हैं. इस उद्योग को विकसित करने और उस के द्वारा रोजगार के साधन बढ़ाने और विदेशी मुद्रा अर्जित करने की बहुत अधिक संभावनाएं हैं. •

ज्योतिलेख









दीप जले मन के

गन अटारी पर
 जले
 के.

नी के आंचल में
रों के फूल
.

ना ही रूप देख
ण में
 थके.

ट से चंद्रकिरण
कल रही
 के.

पों की पंक्ति में
लि रहा
जियारा.

कोने में आज कहीं
दुबका है
अंधियारा.

हवा उड़ी सांसों पर
निशिगंधा
बन के.

दीप जले
मन के.

—शिवप्रसाद 'कमल'





बच्चों के मुख से

रा छः वर्षीय भतीजा बहुत ही नटखट . एक बार मैं उसे पढ़ाते हुए बीचबीच ाल भी पूछ रहा था. उस की पुस्तक में धी पर भी एक पाठ था, जिस में लिखा ि गांधीजी अपने मातापिता की सेवा के कारण खेलकूद में भाग नहीं लेते थे.

मैं ने उस से पूछा, "बताओ, गांधीजी ूद में भाग क्यों नहीं लेते थे?"

उस ने जवाब दिया, "चाचाजी, भला ो कोई प्रश्न है? आप को यह भी नहीं । कि गांधीजी बूढ़े थे, फिर खेलकूद में कैसे लेते?" —विमल बिहाणी

*

ी चाची के पड़ोस में शादी थी. दूसरे दिन लड़की विदा हो रही थी. सभी लोग थे, इतने में मेरे छोटे भानजे का ध्यान ओर गया जिधर लड़की की दादी रो ी.



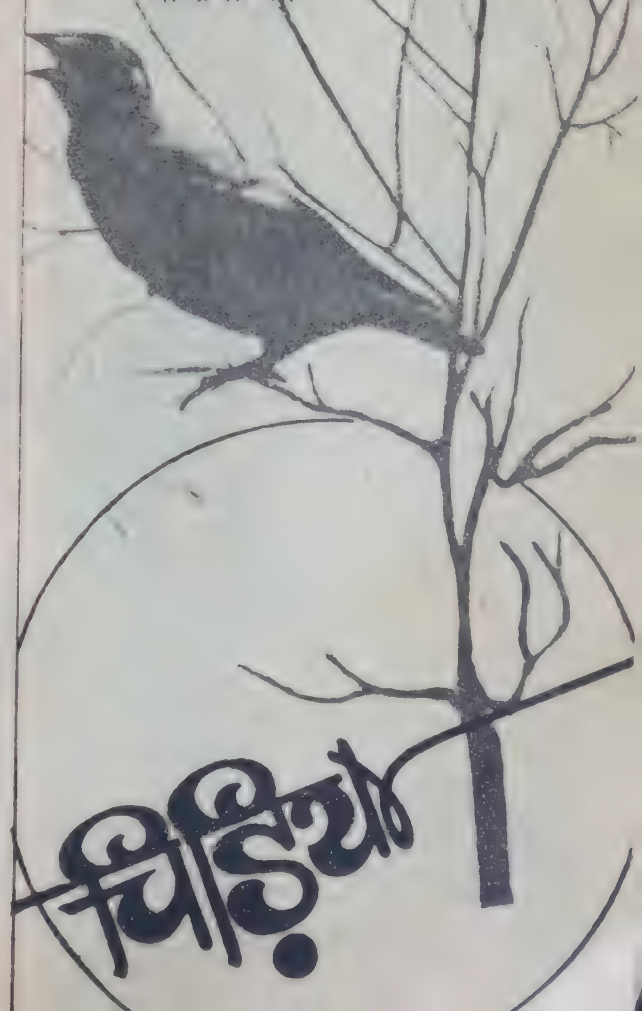
ह मुझ से बोला, "मौसी, उधर वह दादीजी कैसे रो रही हैं? एक ह नानी से कह रही थीं कि ऋचा का ो जाए तो चैन की बंसी बजाऊंगी." ड़की के साथ खड़े जितने लोग रो रहे ने लगे. —दीपा श्रीवास्तव •



चिड़िया

डालडाल पर फुदकफुदक कर
चींचीं चूंचूं गाती चिड़िया.
घरआंगन में जबतब जा कर
दाना चुग कर खाती चिड़िया.
इधरउधर से छोटेछोटे
तिनके चुन कर लाती चिड़िया.
बड़े परिश्रम से अपना घर
फिर है स्वयं बनाती चिड़िया.
मेहनत करने का हम सब को
मूल मंत्र सिखलाती चिड़िया.

—वीरेंद्रचंद्र पंत



उजाले की ओर

अपने कंधे पर किसी के हाथ का स्पर्श पाते ही शुचि चौंक गई थी और उस ने हड़बड़ा कर अपने कंधे पर हाथ रखने वाले की ओर देखा था.

रचना को देखते ही अपनी घबराहट पर नियंत्रण पाने के लिए वह हलके से मुसकरा दी थी, "आओ बैठो."

"क्या सोच रही थी?" रचना उस के सामने ही बैठ गई थी.

"कुछ भी नहीं." शुचि अपनी घबराहट पर एक सीमा तक नियंत्रण पा चुकी थी. रचना से स्वयं को छिपा रखने के लिए उस ने बात बनाई थी, "किताब पढ़ रही थी."

कहानी • सुदर्शन बाली





"झूठ बोलना भी नहीं आता तुझे."
की बात पर रचना मुसकरा दी थी.
भी झूठ बोलती हो, तभी पकड़ी जाती

"क्या...क्या मतलब?" अपना झूठ
जाने के कारण शुचि फिर घबरा गई
चना की घूरती हुई निगाहों से बचने के
उस ने अपनी आंखों को झुका लिया था.

"मतलब साफ है, यार," रचना
सी हो गई थी, "तू पढ़ नहीं, सोच
थी और अपनी बात को सच प्रमाणित
के लिए मैं केवल इतना कह देना काफी
ती हूं कि मैं 10 मिनट से तेरे पीछे खड़ी
हली बात तो यह है कि तुझे मेरे आने
पता नहीं चला और दूसरी बात यह
जब से मैं आई हूं, तू ने किताब का एक
ा नहीं पलटा है. जाहिर है कि अगर तू
ही होती तो ये दोनों ही बातें न हुई
"

शुचि अपने सिर को ऊपर उठाने का साहस ही नहीं जुटा पा रही थी. वह जानती थी कि अपनी बात कह चुकने के बाद भी रचना उसी की ओर देख रही होगी और शुचि में अब उस की निगाहों के ताव को सहन कर सकने की क्षमता नहीं रह गई थी.

"बता न?" उसे खामोश पा कर रचना ने ही बातों का सिलसिला आगे बढ़ाया था, "क्या सोच रही थी तू?"

"यों ही कुछ पुरानी यादों ने आ घेरा था." न चाहते हुए भी शुचि को सच बोलना पड़ा था.

"क्या महीप की याद आ गई थी?" रचना अब भी उस के चेहरे को घूर रही थी, उस का स्वर पहले से गंभीर हो गया था.

शुचि का सिर स्वयं ही 'हां' में हिलने लगा था और उस की आंखों से पानी की दो बूंदें निकल कर फर्श को भिगो गई थीं.

"पगली..." रचना ने अपना हाथ बढ़ा कर उस की आंखों को साफ कर दिया था, "रोने से आज तक किसी भी समस्या का हल

नहीं निकल पाया है, कभी निकल भी नहीं सकेगा और फिर आज जिस दलदल में तू फंसी हुई है, वह तेरे लिए किसी दूसरे ने नहीं, बल्कि स्वयं तू ने अपने लिए तैयार किया था और अब मकड़ी की तरह तू भी अपने ही बनाए जाल में फंस कर रह गई है. लेकिन इतना होने के बाद भी तुझ में और मकड़ी में एक अंतर है."

"क्या...क्या अंतर है?"

"मकड़ी लाख चाहने पर भी अपने जाल में से नहीं निकल पाती," रचना ने उसे अंतर समझाया था, "लेकिन तू निकल सकती है. और सच तो यह है कि तेरा यह जाल उसी दिन टूट गया होता, जिस दिन महीप तुझे लेने आया था. अब तक तू इस जाल में केवल इसलिए फंसी हुई है, क्योंकि तू ने उस के साथ जाने से इनकार कर दिया था."

"तो...तो क्या तू भी यही चाहती है कि मैं फिर से महीप के पास वापस चली जाऊं?"

"मेरे विचार में मैं ने तुझे आज तक यह सलाह कभी नहीं दी है कि तुझे महीप के पास नहीं जाना चाहिए." अपनी बात कहने के बाद उस ने पूछा था, "क्या मैं ठीक नहीं कह रही हूं?"

मजबूर

हश्र होगा क्या मेरा फिर
गो मुझे मालूम है,
पर इश्क भी मजबूर है
जब हुस्न हो यूं खिलाखिला.

—'अदा' दहलवी



"मानती हूं कि तू ने मुझे कभ
महीप के पास न जाने की सलाह नहीं
उस के बारे में मेरी जब भी तेरे साथ बा
है; तू ने हमेशा उसी का पक्ष लिया
रचना की बात से सहमत होते हुए भी
ने शिकायत की थी, "और मुझे केवल
बात का दुख है कि यह जान लेने के बा
कि वह मेरी उपेक्षा कर के उस चुड़ै
साथ रंगरेलियां मनाता फिरता है, तू
उस के पास वापस जाने के लिए कहती
है."

"एक बात बताएगी?" शुचि की
के उत्तर में कुछ भी न कह कर रचना ने
था.

"पूछो."

"क्या तू यह बात दावे के साथ
सकती है कि उस लड़की के साथ मही
संबंध पतिपत्नी जैसे हैं?"

"मैं...मैं हमेशा उन के साथ थो
रहती हूं." रचना के इस प्र
शुचि के भीतर कुछ तोड़ दिया था, "
उन्हें बातें करते हुए सुना है. उस के आ
महीप एकाएक बेबाक हो जाता है औ
चुड़ैल उस की बातों पर हंसती हु
कलेजे पर छुरियां चलाती रहती है."

"महीप को तू आज से नहीं, करी
साल से जानती है. कालिज के दिनों में ह
तुझे बेहद प्यार करता था. जब तू ने उसे
से पहली बार मिलाया था तो वह मेरे
भी कुछ इस कदर खुल कर बातें करने
था, जैसे हम उस दिन पहली बार न
कर वर्षों से परिचित हों. उस के जाने
ही मैं ने तुझ से कहा था कि वह जितना
और हंसमुख है, उतना ही भोला भी है
अगर वह उस लड़की के साथ खुल क
कर लेता है तो इस का मतलब यह त
कि वह उस से प्यार करने लगा है. उ
आदत ही ऐसी है और..."

"बस...बस रहने दे." रचना क
शुचि को चुभने लगी थीं. उस की बा
कर शुचि ने एक बार फिर शिका

ा, "तू ने तो उस का पक्ष लेने की कसम ही ा रखी है."

"मुझे गलत मत समझ, शुचि," वना ने उसे समझाना चाहा था, "मैं तेरी श्मन नहीं, सहेली हूं. तुझे इस आग में लता हुआ देख कर मुझे दुख होता है. मैं ाहती हूं कि जिस घर को तू अपनी मूर्खता ' उजाड़ आई है, वह फिर से बस जाए."

"मुझे समझाने के बजाए तू महीप को यों नहीं समझाती? अगर वह..."

"उसे तब समझाती, अगर मेरी नजरों ' वह एक प्रतिशत भी दोषी होता." रचना उस की बात काटते हुए कहा था, "मेरी जरों में वह इसलिए भी दोषी नहीं है कि तना कुछ होने के बावजूद वह तुझे मनाने आ ुका है."

शुचि को बोलने का अवसर दिए बना ही रचना कहती गई थी, "सच, अब ो मुझे तेरी मूर्खता पर रोना आता है. कदूसरे को पाने के लिए तुम दोनों को ही पनेअपने घर वालों से बगावत करनी पड़ी ी. तेरे मांबाप के घर के दरवाजे तेरे लिए सी दिन बंद हो गए थे, जिस दिन तू ने हीप के साथ उन की इच्छा के खिलाफ चहरी में जा कर शादी की थी. और अब पनी मूर्खता के कारण महीप के घर के रवाजे तू स्वयं अपने लिए बंद कर आई है. गर तू ने जल्दी ही अपनी भूल को न धारा तो किसी दिन महीप के दिल के वाजे भी तेरे लिए बंद हो जाएंगे. अभी ' कुछ नहीं बिगड़ा है, मेरी बात मान कर त के पास वापस चली जा."

"यह नहीं हो सकता." रचना की नों ने शुचि को पूरी तरह झकझोर दिया , लेकिन वह अपनी जिद छोड़ने के लिए ार नहीं हो पा रही थी, "जब तक वह ा चुड़ैल का साथ नहीं छोड़ता, मैं वापस ां जाऊंगी." अपना निर्णय सुनाने के बाद च ने एक प्रश्न रचना की ओर उछाल ा था, "एक बात बताएगी?"

"पूछो."

"अगर तू अपने पति को किसी पराई



जख्म

जख्म पर जख्म
राहे इश्क में खाया जाए,
और हर जख्म
जमाने से छुपाया जाए.

—मीना सिद्दीकी

औरत के साथ खुल कर बातें करते हुए सुन ले, तो क्या तू भी वही नहीं करेगी जो मैं ने किया है?"

रचना उस की बात पर खुल कर हंस पड़ी थी. देर तक हंसते रहने के बाद उस ने कहा था, "यही सवाल तू दूसरे ढंग से भी पूछ सकती थी."

"कैसे?"

"यह पूछने के बजाए अगर तू ने यह पूछा होता कि अगर मेरे पति मुझे किसी गैर मर्द के साथ बातें करते हुए देख लें तो क्या वह मुझे छोड़ नहीं देंगे?"

"मैं...मैं समझी नहीं कि तू ने क्या कहना चाहा है?"

"यह बात तो तू जानती ही है कि कालिज के दिनों में मैं नीरद से प्यार करती थी. वह भी मुझे चाहता था और हम दोनों शादी भी करना चाहते थे, लेकिन हम दोनों ही तेरी और महीप की तरह साहसी नहीं थे. इस समाज के बंधनों को तोड़ नहीं सके थे और मेरी शादी दिनेश के साथ हो गई थी." निमिष भर के लिए रुकने के बाद उस ने आगे कहा था, "लेकिन एक बात तू नहीं जानती है."

"क्या...कौन सी बात?"

"नीरद के साथ अपने संबंधों की बात

ा दिनेश को पहली ही रात में बता दी थी. ो बात पर वह मात्र मुसकरा कर रह गए और तुम्हें यह जान कर हैरानी होगी कि रद अब भी कभीकभी मुझ से मिलने आ ता है."

रचना उसे अपनी बातें बता कर ज़बूर कर देना चाहती थी कि वह अपनी ल को सुधार ले, "शादी के बाद नीरद स दिन पहली बार मुझ से मिलने आया , मैं बहुत डर गई थी. दिल में न जाने तनी आशंकाओं ने जन्म ले लिया था. ाम को जब दिनेश दफ्तर से आए थे, मैं ने हें सारी बात बता दी थी. मेरी बात सुन र उन्होंने अपनी चिरपरिचित मुसकान खेरते हुए कहा था, "रचना, पतिपत्नी के बंधों का आधार विश्वास हुआ करता है. सी से मिल कर दो बातें कर लेने से कुछ हीं होता. नीरद तुम्हारा दोस्त है और मैं म्हारा पति हूं. तुम्हारा पति होने के नाते झे इस बात का पूरा अधिकार है कि मैं तुम्हें स से मिलने से इनकार कर दूं, लेकिन मैं सा नहीं करूंगा, क्योंकि मुझे तुम पर कीन है."

शुचि को उस की भूल का एहसास कराने के लिए रचना ने अपनी बात को जारी ा था, "अगर दिनेश तेरी ही तरह कुचित विचारों के होते तो वह कब के मुझे ल्लत की जिंदगी जीने के लिए छोड़ चुके ो." रचना ने एकाएक बातों का रुख ल दिया था, "क्या तुम मेरे एक सवाल उत्तर दे सकती हो?"

"क्या पूछना चाहती हो तुम?"

"आजकल विश्व अकसर तुम से नने आता रहता है. वह यहां क्या करने ता है?"

"हम दोनों एक ही दफ्तर में काम ते हैं." शुचि उस की बात की गहराई को सकी थी. सहज स्वर में उस ने कहा था, र इसी कारण वह मुझ से मिलने चला ा है."

"और तुम उस के साथ खूब हंसहंस कर बातें भी करती हो." रचना ने मानो कोई तीर चला दिया हो, "मैं ने अपनी आंखों से तुम्हें उस के साथ हंसते हुए देखा है. मेरी बात को तुम झुठला नहीं सकोगी."

"यह भी कोई बात हुई?" अब शुचि समझ गई कि रचना अप्रत्यक्ष में क्या कह गई थी. अपनी सफाई देने की गरज से ही उस ने कहा था, "घर में आए मेहमान के साथ बात तो करनी ही पड़ती है. अब उसे घर से निकाला तो नहीं जा सकता."

"और वह लड़की भी महीप के दफ्तर में ही काम करती है जिस के कारण तुम उसे छोड़ आई हो. अगर तुम घर आए विश्व के साथ बातें करने को मजबूर हो सकती हो तो यही दशा महीप की भी हो सकती है." कहने के बाद उस ने पूछा था, "क्या ऐसा संभव नहीं है?"

शुचि को मानो सांप सूंघ गया हो. उस से कुछ भी कहते नहीं बन पाया था. सिर को झुकाए वह खामोश बैठी रही थी.

"एक बात याद रखना शुचि कि किसी भी बात को बिगाड़ लेना बहुत आसान होता है, लेकिन बिगड़ी हुई बात को बना पाना कभीकभी कठिन ही नहीं, असंभव भी हो जाता है. और इस से पहले कि उस बात को बना पाना असंभव हो जाए, आदमी को संभल जाना चाहिए." कहने के साथ ही वह जाने के लिए उठ खड़ी हुई थी.

"तुम...तुम जा रही हो क्या?" उसे उठते हुए देख कर शुचि ने पूछा था.

"हां, जाना ही होगा. दिनेश बाजार जाने के लिए मेरा इंतजार कर रहे होंगे. कल दीवाली है न, कुछ सामान वगैरह खरीदना है." शुचि का हाथ थामे हुए ही वह दरवाजे की ओर बढ़ने लगी थी, "मैं तुम्हें निमंत्रण देने आई थी."

"कैसा निमंत्रण?"

"अभी बताया तो था कि कल दीवाली है." रचना दरवाजे पर रुक गई थी, "छुट्टी होने के कारण सारा दिन घर में पड़ीपड़ी जलती रहोगी. यह दीवाली तुम्हें हमारे साथ ही मनानी होगी."

"वह तो ठीक है, लेकिन..."

"क्या तुम महीप के पास जा रही ?" उस की बात काट कर रचना ने पूछा

"नहीं...नहीं तो..."

"तब मैं तेरी कोई बात सुनने वाली ीं हूं. कल सुबह 10 बजे हमारे घर पहुंच ना, नहीं तो मुझे खुद आना पड़ेगा तुझे ले ने के लिए."

शुचि उस के अनुरोध को टालने का हस नहीं कर पाई थी, "ठीक है, मैं पहुंच ऊंगी."

उस की स्वीकृति मिलते ही रचना तो नी गई थी, लेकिन जाने से पहले शुचि के स्तत्व को पूरी तरह हिला गई थी और चि विवश सी हो गई थी अपने ही अतीत एक नजर देखने के लिए.

"अरे तुम!" रिया को देखते ही महीप क सा गया था, "तुम यहां कैसे?"

"इधर से गुजर रही थी, सोचा आप से मिलती चलूं," कहने के बाद रिया ने पूछा था, "क्या यहीं खड़े रखने का विचार है, भीतर आने के लिए नहीं कहेंगे?"

"ओह, मैं तो भूल ही गया था." अपनी भूल को सुधारने के लिए महीप दरवाजे में से एक ओर हट गया था, "आओ."

रिया मुसकराती हुई कमरे में प्रवेश कर गई थी, "क्या आप की पत्नी घर पर नहीं है?"

"यहीं है, अभी मिलाए..." सामने से शुचि को आते देख कर महीप को अपनी बात बीच में ही छोड़नी पड़ी थी. बात बदल कर शुचि की ओर संकेत करते हुए उस ने कहा था, "मेरी प्रेमिका शुचि ही अब मेरी पत्नी है." और फिर शुचि को रिया का परिचय देते हुए कहा था, "शुचि, यह रिया है, मेरे ही दफ्तर में काम करती है."

रिया को महीप के साथ खड़ा देख कर शुचि के सीने में एक टीस सी उठ कर रह गई थी. उस के मस्तिष्क में बिजली सी कौंधी थी, "कहीं...कहीं महीप मेरी जगह इसे तो प्यार नहीं करने लगा है?"

"नमस्ते, दीदी." शुचि के सीने में ़ड़ने वाले तूफान से बेखबर रिया ने दोनों थ जोड़ कर उस का अभिवादन किया था.

"नमस्ते." शुचि का स्वर एकदम श्क था. रिया की उपस्थिति उस के सीने किसी खंजर की तरह चुभ रही थी. स्वयं । उन के सामने खड़ा पाने में असमर्थ पा कर ़चि ने वहां से हट जाने के लिए कहा था, आप लोग बैठिए, मैं नाश्ता ले कर आती ." और वह तेज कदमों से रसोईघर की ार चली गई थी.

शुचि के व्यवहार पर महीप भौचक्का । रह गया था. उस ने जाती हुई शुचि को ाकना चाहा था, लेकिन वह ऐसा करने का ाहस नहीं जुटा पाया था. शुचि के व्यवहार ो देखते हुए वह सोचने लगा था कि अगर ़ुचि ने उस की बात न मानी तो रिया के ामने अपमानित होना पड़ेगा. अपने इसी य के कारण उस ने शुचि को रोकने का चार त्याग दिया था.

सोईघर में पहुंचते ही शुचि सुबकसुबक कर रोने लगी थी. रहरह कर उस के स्तिष्क में यही विचार आ रहा था कि ़ीप अब उस की जगह रिया से प्यार रने लगा है और उस के इस संदेह को बैठक से निकल कर उस के कानों को फाड़ देने ले महीप और रिया की मिलीजुली हंसी के ाके सच में बदल रहे थे.

"तुम्हें एकाएक क्या हो गया था?" या के जाने के बाद ही महीप ने पूछा था.

"यह...यह यहां क्यों आई थी?" शुचि ा भी भरी बैठी थी.

यह सुनते ही महीप को समझते देर ीं लगी थी कि शुचि के दिमाग में संदेह के ड़े कुलबुलाने लगे हैं. स्वयं को संयम में । कर महीप ने मुसकराते हुए शुचि से ही । के प्रश्न का उत्तर लेना चाहा था, "तुम ीकभी अपने किसी सहयोगी से मिलने ी जाया करती हो, तुम वहां क्या करने ी हो?"

"महीप..." शुचि चीख पड़ी थी, "तुम...तुम मुझ पर शक करने लगे हो?"

"नहीं, शक मैं ने तुम पर नहीं, तुम ने आज मुझ पर किया है." महीप शांत था. अपनी बात को तर्क की कसौटी पर सच बनाने के लिए उस ने दलील दी थी, "अगर मैं ने तुम पर शक किया होता तो मैं ने यही बात तुम से बहुत पहले पूछ ली होती. मैं ने आज तक तुम से इस विषय पर कुछ नहीं कहा है. इस का कारण यही था कि मुझे तुम पर पूरा यकीन है, आज भी मैं ने यह बात न कही होती, अगर तुम ने पहल न की होती."

इस घटना के बाद शुचि महीप से कटती चली गई थी. लाख चाहने पर भी वह अपने दिमाग से संदेह के कीड़े को नहीं निकाल पा रही थी.

रिया भी यदाकदा महीप से मिलने आ जाया करती थी. शुचि को स्वयं से दूर जाते देख कर महीप यह महसूस करने लगा था कि रिया अनजाने में ही उन दोनों के बीच दीवार बनती जा रही है. कितनी ही बार उस ने चाहा था कि वह रिया से कह दे कि वह उस से मिलने न आया करे, लेकिन शिष्टाचार हमेशा ही उसे ऐसा करने से रोकता रहा था.

एक दिन शुचि ने दफ्तर से आते ही विस्फोट किया था, "मैं ने अपनी बदली पंडोह में करवा ली है."

"क्या!" महीप को झटका सा लगा था. परेशान सी आंखों से शुचि की ओर देखते हुए उस ने पूछा था, "तुम...तुम ने ऐसा क्यों किया?"

"मैं खुद को तुम दोनों के बीच दीवार समझने लगी हूं." महीप को तड़पते देख कर शुचि का मन खुशी से भर गया था. उस की तड़प को और बढ़ाने के लिए शुचि ने एक तीर और चला दिया था, "मेरे जाने के बाद तुम उस के साथ..."

महीप की परेशानी क्रोध में बदल गई थी. शुचि ने क्या कहना चाहा था, यह समझने में उसे देर नहीं लगी थी. उस की बात काट कर महीप ने कहा था, "तुम्हारा

'हां, खास ही कह लो." रचना ने उसे बांहों के घेरे से मुक्त कर दिया था.

'क्या खास बात है?"

मेरा देवर उमेश आया है अपनी " साथ."

क्या?" शुचि चौंक कर उस की ओर ने दी थी, "अभी कुछ ही दिन पहले तू था कि उमेश अभी तक और आज तू कह रही है कि पत्नी के साथ आया है."

"अरे बाबा, कल तक वह कुंआरा ही रचना ने मुसकराते हुए शुचि की को सुलझा दिया था, "कल ही उस ने में जा कर अपनी पसंद की लड़की से ी है और आज हम से मिलने चला " शुचि का हाथ पकड़ कर रचना अपने साथ ले जाने लगी थी, "चल, मैं उन से मिला दूं."

बैठक के दरवाजे पर पहुंचते ही शुचि रों में बेड़ियां पड़ गई थीं. वह ठगी सी सामने बैठी रिया को देखती रह गई

"क्या हुआ?" उसे रुकते देख कर ने पूछा था, "तू रुक क्यों गई?"

"अरे दीदी," इस से पहले कि शुचि कह पाती, रिया ने उस के पास आते ही था, "आप यहां!"

"तुम...तुम इसे जानती हो?" रचना की ओर देखना छोड़ कर रिया की खने लगी थी.

'हां, जानती हूं." रिया ने बताया था, महीपजी की पत्नी हैं. मैं उन्हीं के में काम करती हूं और इन के घर भी जा चुकी हूं."

ना को अब यह समझने में देर न क रिया वही लड़की थी जिस के शुचि अपने पति और घर को छोड़ ली आई थी. एक क्षण के लिए तो उस में भी रिया के प्रति संदेह पैदा हो गया किन रिया के चेहरे की रौनक और की चमक को देखते ही रचना का मट गया था.

संदेह

संदेह हमारा शत्रु है, वह हमारे हृदय में भय उत्पन्न करता है जिस से हमें जिस पर विजय प्राप्त करने का पूरा भरोसा होता है, उसी के सामने नतमस्तक होना पड़ता है.

—शेक्सपियर

रिया को हंसते हुए देख कर शुचि के मन में तूफान सा उमड़ने लगा था. वह यह सोचने के लिए विवश हो गई थी कि कहीं उस ने महीप पर शक कर के भूल तो नहीं की थी और फिर रिया का मुसकराता हुआ चेहरा शुचि के मस्तिष्क में इस विचार को भरता ही चला गया था कि महीप पर संदेह कर के उस ने बहुत बड़ी मूर्खता की है.

"एक बात मेरी समझ में नहीं आई, दीदी." शुचि के मनोभावों से बेखबर रिया ने पूछा था, "कल हमारी शादी के समय महीपजी भी कचहरी में थे. हम ने उन्हें अपने साथ ही यहां लाना चाहा था, लेकिन उन्होंने यह कह कर हमारी बात मानने से इनकार कर दिया था कि आप दीवाली मनाने उन के पास जाने वाली थीं, लेकिन अब आप को यहां देख कर मुझे हैरानी हो रही है."

रिया अनजाने में ही शुचि को दो बातें बता गई थी. एक तो यह कि महीप को अभी भी शुचि का इंतजार था और दूसरी यह कि शुचि के साथ अपने झगड़े की बात महीप ने किसी को नहीं बताई थी. रिया की बातें शुचि को शक के अंधेरे से निकाल कर विश्वास के उजाले की ओर ले जाने लगी थीं. अपनी भूल का एहसास होते ही शुचि पिघल गई थी. अपनी उसी भूल को सुधारने के लिए उस ने तुरंत ही वहां से महीप के पास भाग जाना चाहा था, लेकिन चाह कर भी वह ऐसा नहीं कर सकी थी. ऐसा कर के वह रिया के

मन में किसी भी प्रकार का संदेह पैदा नहीं होने देना चाहती थी. लेकिन उस ने मन ही मन में निर्णय कर लिया था कि रचना से अकेले में बात कर के वह महीप के पास चली जाएगी.

"आप खामोश क्यों हैं, दीदी?" उसे चुप पा कर रिया ने ही पूछा था, "क्या आप दीवाली मनाने के लिए महीपजी के पास नहीं जा रही हैं?"

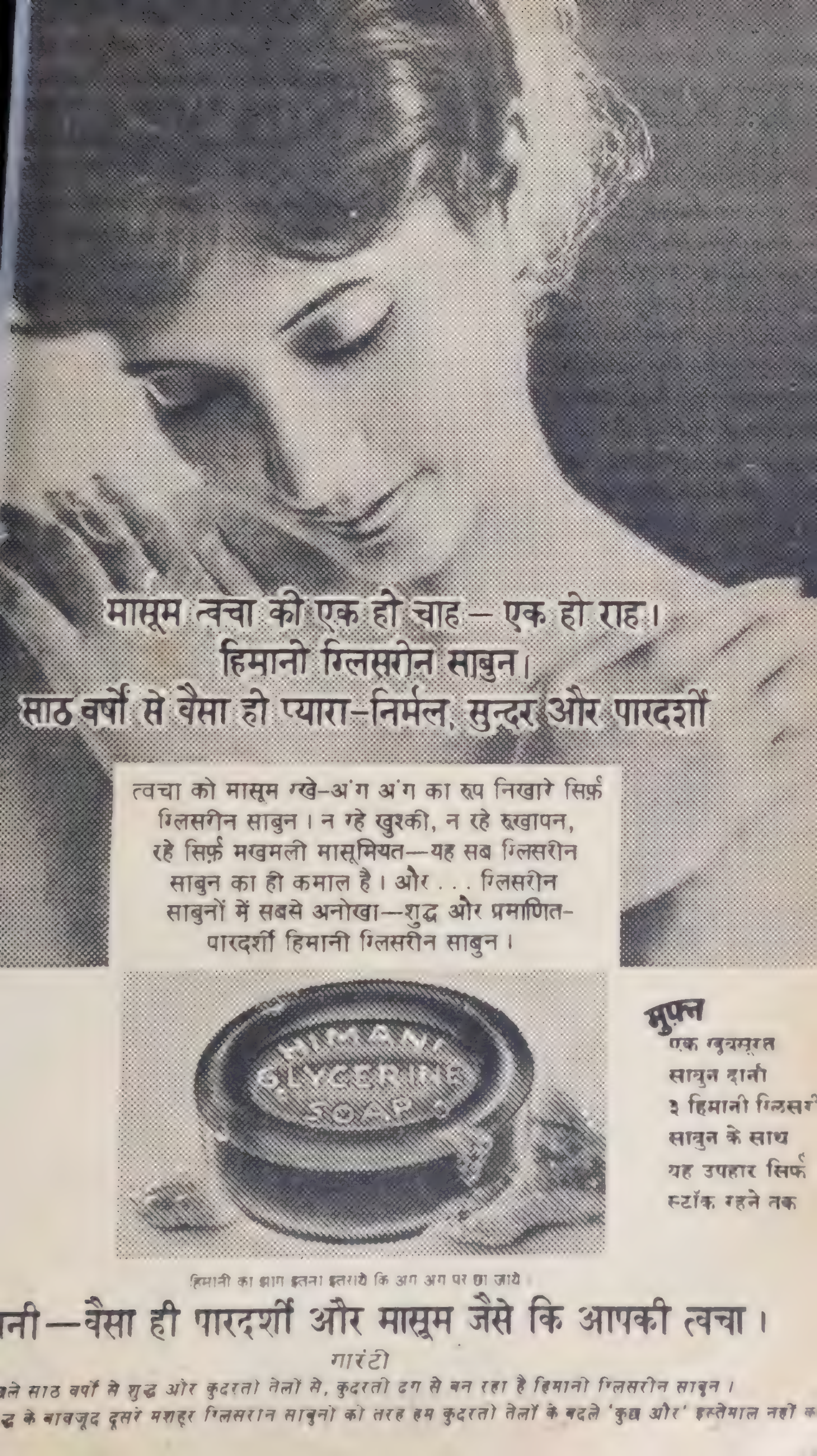
"बात यह है रिया." इस बार बातों के सिलसिले को रचना ने अपने हाथों में ले लिया था. एक नजर शुचि की ओर देखने के बाद उस ने अपनी बात जारी रखी थी, "केवल शुचि ही नहीं, मैं और दिनेश भी यह दीवाली महीप के साथ ही मनाने के लिए जाने वाले थे. यह हमें लेने के लिए ही आई है. अब तुम लोग आ गए हो, इसलिए अब हम तो नहीं जा सकेंगे, लेकिन शुचि चली जाएगी."

"इन के आने से कौन सा फर्क पड़ गया है?" बात को बनता हुआ देख कर शुचि ने उसे पूरी तरह से सुलझा दिया थ
दोनों तो मेरे साथ चल ही रहे थे, अ
भी चल पड़ेंगे." कहने के बाद उस ने
पूछा था, "तुम दोनों भी चल रहे हो
साथ?"

"नेकी और पूछपूछ. महीपजी
चाहते थे कि हम अपनी पहली दीवा
के साथ ही मनाएं, लेकिन उमेशजी
माने थे." रिया ने बिना किसी छलव
उस की बात मान ली थी, "अब ज
सभी जा रहे हैं तो भला हम पीछे
रहेंगे."

"रचना, अब तुम लोग जल्दी से
हो जाओ." शुचि रचना की ओर देख
याचना भरे स्वर में बोली थी, "कहीं
हो कि हमें वहां पहुंचने में देर हो ज

"चिंता मत करो, अब देर
होगी." उस के संकेत को समझते ही
के चेहरे पर संतोष की रेखाएं उभ
थीं, "तुम बैठो, हम अभी तैयार हो क
हैं."



मासूम त्वचा की एक ही चाह — एक ही राह।
हिमानी ग्लिसरीन साबुन।
साठ वर्षों से वैसा ही प्यारा—निर्मल, सुन्दर और पारदर्शी
त्वचा को मासूम रखे—अंग अंग का रूप निखारे सिर्फ़ ग्लिसरीन साबुन। न रहे खुश्की, न रहे रूखापन, रहे सिर्फ़ मखमली मासूमियत—यह सब ग्लिसरीन साबुन का ही कमाल है। और . . . ग्लिसरीन साबुनों में सबसे अनोखा—शुद्ध और प्रमाणित—पारदर्शी हिमानी ग्लिसरीन साबुन।
HIMANI GLYCERINE SOAP
मुफ़्त
एक खूबसूरत साबुन दानी
२ हिमानी ग्लिसरी
साबुन के साथ
यह उपहार सिर्फ़
स्टॉक रहने तक
हिमानी का झाग इतना इतराये कि अंग अंग पर छा जाये।
नी—वैसा ही पारदर्शी और मासूम जैसे कि आपकी त्वचा।
गारंटी
ले साठ वर्षों से शुद्ध और कुदरती तेलों से, कुदरती ढंग से बन रहा है हिमानी ग्लिसरीन साबुन।
द्ध के बावजूद दूसरे मशहूर ग्लिसरीन साबुनों की तरह हम कुदरती तेलों के बदले 'कुछ और' इस्तेमाल नहीं क

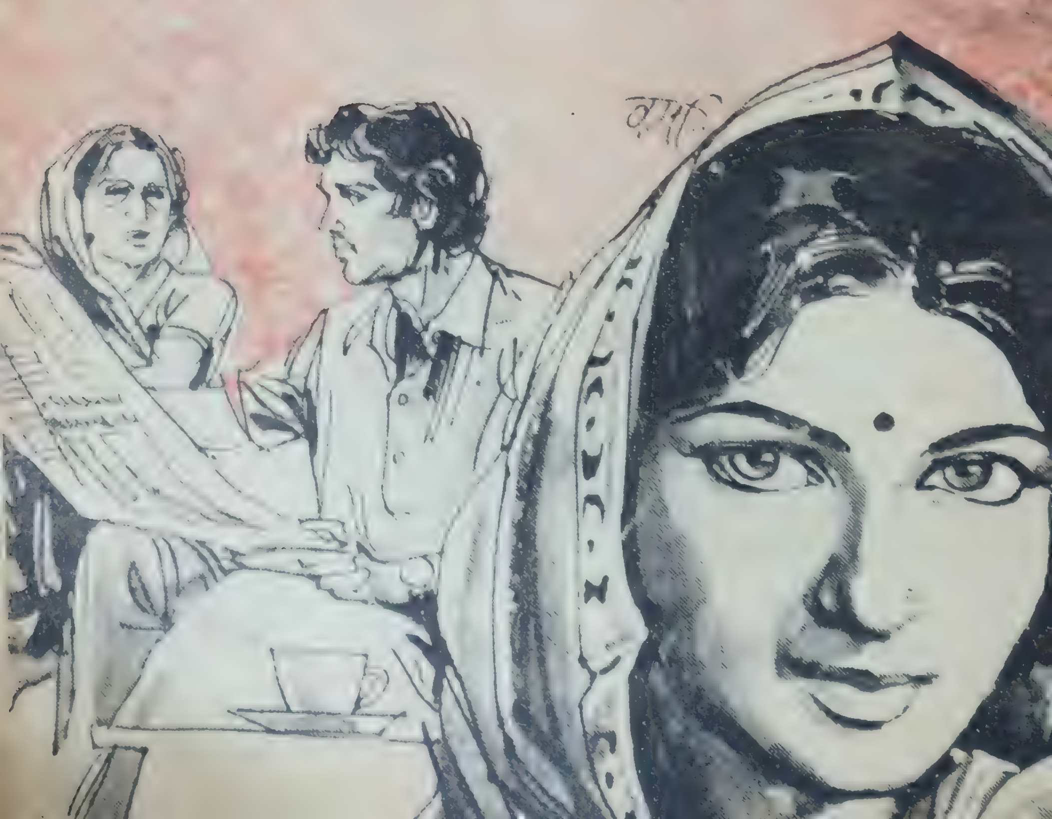
नवीन ने राधा की सरल[illegible] को गंवारपन कह कर ठुक[illegible] दिया और जीवन की तड़[illegible] भड़क और रंगीनियों को [illegible] सब कुछ मान लिया था, प[illegible] एक दिन उस का मन ही नहीं[illegible] जीवन के मानदंड भी बद[illegible] गए.

कहानी • आदर्श मलगूरिय[illegible]

बदलते मानदंड

रेस्तोरां में एक किनारे बने प्लेटफार्म पर खड़ी एंग्लोइंडियन गायिका खुले कंधों वाले आधुनिक वस्त्र पहने, हाथ में माइक लिए लगभग अश्लील हावभाव दर्शाती हुई एक अंगरेजी सैक्सी गाना गा रही थी. बैंड के कानफोड़ शोर के कारण बातचीत करना कठिन ही था. बातचीत की आवश्यकता भी क्या थी? तेज अंगरेजी धुन पर भीड़ भरे फ्लोर पर थिरकते युवतियों के जोड़े, रंगबिरंगी जलतीबुझती लालनीली रोशनियों के प्रकाश में एकदूसरे के स्पर्श-सुख से ही तृप्त हो रहे थे.

नवीन और रेखा भी दीनदुनिया से बेखबर एकदूसरे में डूबे हुए नशीले वातावरण में मदहोश हुए जा रहे थे. इस में कुछ योगदान ठंडी बीयर का भी था. रेखा बारबार अपने माथे पर बिखर आती रूखी लट को झटकती और नवीन उस की इसी अदा पर मिटा जा रहा था. चुस्त जींस और





हालटर टाप में वह बला की बांकी और सेक्सी लग रही थी. नाचती तो वह बहुत ही बढ़िया थी.

नवीन के सब मित्र उस से ईर्ष्या करते सी चुस्त और आकर्षक लड़की का होना वाकई गौरव की बात थी. "अरे तू ने तो बहुत बड़ा हाथ मारा है," कह मित्र उस के कंधे पर धौल जमाते तो स्वयं को अमिताभबच्चन से कम न ता.

एक बजे के करीब फीका परंतु हद का महंगा खाना खा कर दोनों बाहर तो रेखा ने आइसक्रीम पार्लर जाने की इश की. दोनों पैदल ही वहां तक चले तेज स्वर में बजते स्टीरियो से सारा गूंज रहा था. भीड़ में घुस कर नवीन तरह दो कोन आइसक्रीम ले कर बाहर आ गया. रात आधी से अधिक ढल चुकी थी, परंतु यहां की रंगीनी में कोई कमी नहीं आई थी. पास की वीडियो गेम्स की मशीनों, विशेषकर रेसिंग वाली मशीन पर बेहद भीड़ थी. युवकयुवतियां और बच्चे एकएक रुपए के सिक्के थोड़ीथोड़ी देर बाद डालते जाते और इस अल्पकालिक महंगे खेल का आनंद लेते.

रेखा ने भी वहां काफी समय और रुपया गंवाया. घर जाने लगे तो मोटरसाइकिल पर रेखा नवीन की कमर के गिर्द हाथ डाल कर चिपट कर बैठ गई. रेखा को उस के होस्टल में छोड़ कर जब नवीन बालीगंज पहुंचा तो तीन बज रहे थे. कालबेल बजाने पर राधा को दरवाजा खोलते देख वह हैरान रह गया. इतनी रात में राधा उस के घर! खैर तो है सब?

"क्या बात है, राधा? इस वक्त यहां कैसे?"

बात करतेकरते नवीन को बीयर की गंध का ध्यान आया तो मुंह पर रूमाल रख लिया.

"मिनी की तबीयत बहुत खराब थी. मौसी अकेली घबरा जाती, इसी लिए मैं आज यहीं रुक गई," राधा चिटकनी लगाते हुए बोली.

राधा नवीन के बगल वाले घर में रहती थी. दोनों परिवारों में बहुत मेलजोल था. नवीन के पिता की मृत्यु के पश्चात राधा के पिता ने उन्हें बीमे, ग्रैच्युटी आदि दिलवाने में काफी सहायता की थी. सरकारी दफ्तरों के लालफीताशाही के जंजाल में मां तो उलझ कर हलकान हो गई थीं. राधा के पिता स्वयं अपने काम से छुट्टी ले कर यहां से वहां भटकते फिरे थे. घर में राधा की मां ने ही बच्चों को संभाला था.

यों उन में रिश्ता कुछ भी न था, परंतु दोनों परिवार मानवीय संवेदना के कच्चे बंधन में जकड़े हुए थे. नवीन और राधा साथसाथ बड़े हुए थे. नवीन अपनी पढ़ाई पूरी कर अच्छी नौकरी में लग गया था. राधा ने गृहविज्ञान में बी.ए. कर लिया था. आजकल घर के कामकाज में हाथ बंटाती थी. नवीन की बैठक में भी उस के हाथ की बनी कढ़ाई वाली तसवीरें फ्रेम में टंगी थीं.

नवीन की मां का दमा जब बढ़ जाता तो राधा अकसर वहीं घर में रहती. स्कूल का काम पूरा कराने में नवीन की छोटी बहन मिनी की सहायता करती. नवीन उसे एक पड़ोसिन से अधिक अहमियत न देता था, जो दुख, तकलीफ के समय सदा सहायता के लिए उपलब्ध रहती थी. आधी रात के बाद भी उस का घर में होना इस बात का द्योतक था कि घर में कोई बीमार है. अंदर जा कर देखा तो मिनी बुखार में बेहोश पड़ी थी. राधा उस के माथे पर बीचबीच में बर्फ की पट्टियां रख रही थी.

मिनी शाम को स्कूल से आई तभी बुखार से जल रही थी. राधा ने ही डाक्टर को फोन कर के घर बुला लिया था और बाजार जा कर दवाइयां आदि ले
मां पास के कमरे में सो रही थीं. मिनी
चिंता की कोई बात नहीं थी. उसे
इनफैक्शन हो गया था. जिस की शि
गंदगी के कारण लोगों को आम शि
रहती थी.

नवीन ने राधा को उस के घ
दिया. मिनी भी सो गई थी. दो घंटे ब
अलार्म लगा कर नवीन सो गया. सवे
कर देखा तो मिनी का बुखार काफी क
गया था. उसे दवा खिला कर नवीन फि
कर सो गया और 10 बजे तक सोता ही

उस दिन रविवार था. उठा तो
चाय बना कर ले आई थी और रसो
दोपहर के खाने के लिए खटरपटर कर
थी. महरी नहीं आई थी. वह रसो
निकली तो मिनी के शरीर को गीले
निचोड़े हुए तौलिए से पोंछ कर उस के
दूधटोस्ट बना कर ले गई. नवीन नाश
प्रतीक्षा करते हुए अखबार में सिर
हुए था.

मां मंदिर से आईं तो राधा ने आलू
परांठे और दही मेज पर रख दि
के लिए गरम चपाती सेंक दीं. नाश
काम निबटा रसोई समेट और एक
खुद खा कर राधा अपने घर चली ग

कब से वह इसी तरह, इसी घ
एक अंग बनी हुई थी. मां के पैरों प
मलती, महरी के न आने पर घ
कामकाज में मां की सहायता करती
मिनी के साथ कैरम खेलती. इस प्रकार
प्रायः हर समय घर में दिखाई देती
नवीन उस की उपस्थिति को सहज
लेता.

"यह लड़की न होती तो कल मि
न जाने क्या हाल होता." मां राधा
पर बोलीं, "पर तू इतनी देर तक क
नवीन? रात बड़ी देर से आया था क्य
दफ्तर में फोन करने पर पता चला
जल्दी ही वहां से चला गया था."

नवीन के गले में कौर अटक



मां...दरअसल मैं...मैं...एक जरूरी
फंस गया था. नवीन ने गरमगरम
कप उठा कर मुंह से लगा लिया.
बेटा, अब मेरी बूढ़ी हड्डियों में
चलाने की हिम्मत नहीं रही. दमे से
हाल हो जाती हूं, घर और मिनी की
करने के लिए बहू आ जाए तो
."

इतनी जल्दी भी क्या है, मां?"नवीन
न में नहीं आ रहा था कि रेखा के
मां से कैसे कहे.

ल्दी क्यों नहीं, बेटा? घर संभालने
बहू तो चाहिए ही."

स की क्या गारंटी है, मां, कि आने
ुम्हारी घरगृहस्थी संभाल ही
कह कर नवीन हंसने लगा.

ारंटी है, बेटा, इसी लिए तो आज
कह रही हूं."

या बात कह रही हो, मां?"

"क्यों, मेरी क्या आवश्यकता है तुम्हें? मेरे बिना क्या पार्टी नहीं जमेगी?" नवीन ने तीखे स्वर में रेखा से कहा ▲

नवीन यह सोच कर हड़बड़ा उठा कि मां ने कहीं बात चला तो नहीं दी.

"इसी को कहते हैं बगल में छोरा शहर ढिंढोरा. घर में ही तो लड़की है,अब खोजने कहां जाएंगे?"

"कौन लड़की ?" बात जरा देर से नवीन के दिमाग में घुसी, "राधा की बात कर रही हो?"नवीन ठठा कर हंस पड़ा.

"क्यों राधा में क्या कमी है?" मां नाराज सी हो गई.

"ओह, मां, राधा तो राधा है, उसे बहू कैसे बना लोगी?"

"क्यों, कठिनाई क्या है? उस के मांबाप भी कब से उस के लिए लड़का ढूंढ़ रहे हैं, अब अग्रवालों में लड़की के विवाह में बहुत

ा है. बेचारे नौकरीपेशा आदमी इन
पूरा कैसे करे? इसी लिए दूसरी
भी विवाह होने लग पड़े हैं. राधा के
कब से इसी चक्कर में यहां से वहां
हे हैं. हर स्थान से मुंह लटकाए
ा जाते हैं. यदि मैं बात करूं तो
य लड़के से राधा का विवाह करने में
ई उज्र नहीं होगा और मुझे भी ऐसी
चाहिए. हमारे घर में किस चीज की
? अब तू इनकार न करे तो मैं उन से
डूं."

ब नवीन झल्ला उठा, "मां, तुम भी
करती हो. मेरे लिए वही देहातिन सी
ड़की रह गई है क्या?"

वीन अखबार पटक कर उठ खड़ा
ठतेउठते ही सामने राधा को देख वह
सा हो गया. राधा दरवाजे से ही
में आंसू सोखती पलट कर वापस
ई. मां के पुकारने पर भी न रुकी.
अब क्या मेम ब्याहनी है तुझे जो आते
और मिनी को घर से बाहर करे?"
निरुपाय सी हो गई. नवीन भी
कर घर से बाहर चला गया. मां पर
सा भी आ रहा था. खामखां बेकार
छेड़ दीं.

वारी राधा का यों ही अपमान हो
ब उस से कैसे शादी कर लूं? फ्राक
चोटियां किए उसे कब से घूमते देख
, सीधीसादी साधारण सी.
चते अनजाने में ही मोटर साईकिल
होस्टल जा पहुंची. रेखा के बारे में
पता लगा कि वह वहां नहीं है, ब्यूटी
ई हुई है. खिन्न हो कर वह वापस घर

नी बारबार मां से पूछ रही थी,
ीदी कब आएंगी?" राधा अब कहां
ी थी? नवीन और मां ही मिनी की
करते रहे. एक सप्ताह बाद उस
उतरा. बीच में एक दिन नवीन को
छुट्टी भी लेनी पड़ी. मां और
उस विषय पर फिर कोई बात नहीं

रेखा और नवीन की मित्रता पूर्ववत थी, परंतु नवीन स्पष्ट अनुभव कर रहा था कि रेखा की गरमजोशी पहले जैसी नहीं रही थी. वैसे भी आजकल उस का झुकाव विनय की ओर ज्यादा था. अकसर वह उस के स्कूटर पर बैठी दिखाई देती. नवीन मन ही मन जलभुन जाता, परंतु वह कर भी क्या सकता था?

रेखा ने तो कभी उस के प्रति एकनिष्ठ प्रेम की सौगंध नहीं खाई थी, न ही कभी नवीन को लगा था कि उस का उस के ऊपर एकाधिकार है, परंतु फिर भी उसे अपने प्रेम पर विश्वास था.

उस दिन दीवाली थी. विनय के फ्लैट पर दोपहर से ताश पार्टी जमी हुई थी. शाम को जोरदार पार्टी का प्रोग्राम था. मां से शाम को देर से घर आने को कह नवीन रेखा को उस के होस्टल से ले कर विनय के फ्लैट पर जा पहुंचा.

सब लोग वहां जमा थे. लैला और नीता नमकीन और चाय परोस रही थीं. आज उधर ताश में नवीन को मात पर मात हो रही थी. उस के 'ब्लाइंड' (बिना खुले पत्ते) में निकले एक ही रंग के पत्ते भी विनय की सीक्वेंस (एक ही क्रम के पत्ते जैसे गुलाम, बेगम, बादशाह) से पिट रहे थे. ऊपर से रेखा पत्ते देखने बारबार विनय के कंधों पर उछल पड़ती थी. नवीन के कटे पर नमक का छिड़काव हो रहा था. अंत में विजय के तीन बादशाहों की 'ट्रेल' से जब नवीन के तीन दहले उस के जेबें खाली करवा कर पिट गए तो वह खेल छोड़ कर उठ खड़ा हुआ.

"घर में मां ने पूजा के समय पहुंचने के लिए कहा था." अब उस ने बहाना बनाया.

"अरे यार, लक्ष्मी पूजा तो यहां हो रही है, घर में क्या करोगे?"

रवि ने कहकहा लगाया, नवीन उठ कर बाहर आ गया. पीछे से विनय के सुनाई देते शब्द उस के कानों में विष घोल गए.

"आजकल बेचारे पर लक्ष्मी बहुत नाराज है."

रेखा भी उसे बाहर तक छोड़ने आई और बोली, "रात की पार्टी में आओगे न?"

"क्यों, मेरी क्या आवश्यकता है तुम्हें? मेरे बिना क्या पार्टी नहीं जमेगी?" नवीन का स्वर जहर बुझा हुआ था.

"उफ, ताश में हारने पर तुम्हारा तो मूड ही बिगड़ गया है. रात तक ठीक कर के आना."

"ताकि विनय की बांहों में तुम्हें मचलते देख कर भी अनदेखा कर दूं. तुम्हारे इस तरह हर एक से प्रेम जताने पर आंखें मूंद लूं?"

"किस ने कहा है तुम्हें यह सब देखने-सहने को? किस अधिकार से तुम मुझे मेरी मनमरजी करने से रोक सकते हो? मैं तुम्हारी कोई लौंडी नहीं हूं." रेखा का स्वर खूब तेज था.

"रेखा, क्या तुम्हारे मन में मेरे लिए जरा भी स्थान नहीं है?"

"स्थान है क्यों नहीं, पर एक मित्र का है. तुम्हीं ने इस सीमा का अतिक्रमण किया है."

"तो तुम्हारा मेरे साथ घूमनाफिरना क्या सिर्फ एक खेल था?"

"खेल नहीं, मेरे स्वतंत्र जीवन की दिनचर्या का एक अंग था. मेरे तो कई पुरुष मित्र हैं. तुम कहां मुझ पर एकाधिकार जमाने लगे." नवीन जैसे आसमान से गिरा. अपनी आर्थिक स्वतंत्रता के गुमान से भरी, पुरुष मित्र का शान से ऐलान करती क्या वही रेखा थी जिसे वह मां की बहू बनाने का स्वप्न देख रहा था?

उस का उतरा मुख देख कर रेखा पिघली, "बुरा मानने की बात नहीं है, नवीन, तुम्हारे साथ हंसबोल लेती हूं. इस से अच्छी तरह समय बीत जाता है, पर इस का अर्थ यह तो नहीं कि अपनी बढ़िया नौकरी, स्वतंत्रता को तिलांजलि दे कर तुम्हारे घर झाड़ूपोंछा करने के लिए चल पड़ूंगी? तुम पुरुष समझते क्या हो? जरा सा अच्छा समय
व्यतीत करने की कीमत नौकरी
क्या आयु भर गुलामी का पट्टा
अदा करती हैं.

"अपने वेतन का बड़ा भाग मु
खर्चा चलाने के लिए भेजना पड़ता
की दुनिया में मर्दों की तरह जीना
और तुम चाहते हो कि भावात्मक
मृग मरीचिका के पीछे भाग कर
परिवार को बीच मझधार में छोड़
चक्की में झुलस जाऊं. क्या तुम क
करोगे कि विवाह कर के भी
करते हुए मैं अपने परिवार को पैसे
तुम्हारे अपने प्रति आकर्षण को अनु
के ही मैं ने तुम से मिलनाजुलना कम क
था. तुम भी मुझे अपना मित्र ही सम
से अधिक कुछ नहीं. उस के मैं यो
नहीं."

रेखा की दो टूक बातों से न
आंखों से परदा हट गया था. रेख
लड़कियां घर की शोभा नहीं बन

"अच्छा रेखा, अब मैं चलता
कर वह घर की ओर चल पड़ा.
छूटते पटाखों, जलते दीपों से बचता
तक आ पहुंचा.

दरवाजे में खड़ा वह अपने
बदले से घर को पहचान न पाया. सा
जगमग कर रही थीं. झिलमिलाती
जलते दीए की लौ में दमकती रा
दूसरी ही लड़की दिखाई दे रही
शायद नवीन के मानदंड बदल गए
को सामने खड़ा देख कर उस के ह
गए.

"अरे, आ, नवीन, तू ऐन मौ
गया. मेरी तबीयत बहुत खराब थी
कर के राधा भी आ गई."

मां बहुत खुश थी नवीन के
पर.

"हां, मां, आज घर में सचमु
आ गई है."

नवीन की गहरी मुसकराहट
कुछ समझ नहीं सकी. मां अवश्य
गई.

वाली के वसर पर छ नए आयोजन

सैन्नी अशेष

प का कार्यक्षेत्र कोई सा भी हो सकता है, दीवाली के मौके पर आप इस बार अपने कार्य, रुचि कूलता के अनुरूप कोई न कोई जरूर कर सकते हैं. उस आयोजन तो होगा ही, नए संपर्क, नई उमंग मनोरंजन भी होंगे. हम यहां कुछ ऐसे ही आयोजनों की रूपरेखा दे रहे हैं :

दीवाली पर पति और पत्नी की भूमिकाएं—इस प्रकार के विषय दे कर परिचित दंपतियों को आमंत्रित करें.

चुटकुला गोष्ठी में बच्चे, उन के अभिभावक एवं बूढ़े, अपनेअपने चुटकुले सुनाएं. चुटकुलों में अभद्रता न हो और उन में नवीनता जरूर हो.

अपनेअपने कार्यक्षेत्र में हुए दीवाली के पिछले रोचक अनुभवों को सुना कर परस्पर मनोरंजन करें.

दीवाली के मौके पर कुछ नए आयोजन कर के आप त्योहार को सार्थक करने के साथसाथ अपने घरपरिवार, आसपड़ोस और समाज में उल्लास तथा सद्भाव बढ़ा सकते हैं.



ात का दिलचस्प आयोजन कर के
भाग लेने के इच्छुक लोगों को
करें.
ूहिक व संतुलित आतिशबाजी में
साथ अभिभावक भी भाग लें.
ने गलीमहल्ले को मिलजुल कर
रहित भाव से सजाएं.
 परिवार सम्मिलित रूप से
नाएं और उन का आनंद लेने के
नेअपने मेहमानों को भी आमंत्रित

ाली से संबंधित विषय दे कर
वादविवाद प्रतियोगिता के लिए
र अभिभावकों से एकत्र किए गए
शुल्क से इकट्ठे हुए रुपयों को
के रूप में बांटें. पुरस्कार व निर्णय
ोग निष्पक्ष और मान्य हों.
प्रकार का आयोजन अपनी स्थिति

रुचि और परिवेश देख कर निश्चित करें. उसे कारगर बनाने के लिए आप अपनी सूझबूझ से कोई और कार्यक्रम जोड़ सकते हैं.

याद रखें, ऐसे किसी भी आयोजन में प्रत्येक परिवार बराबर खर्च करे, किसी एक पर ज्यादा बोझ न पड़े. प्रत्येक आयोजन उपयोगी तो हो, किंतु उस में कोरे उपदेश न हों. मनोरंजन की व्यवस्था प्रत्येक आयोजन में होनी चाहिए. मिठाई या फल व यथोचित जलपान का प्रबंध दीवाली के ऐसे आयोजन को ज्यादा दिलचस्प बनाते हैं.

अपने क्षेत्र व परिवेश के अनुरूप सार्थक आयोजन कर के एक ओर आप त्योहार को सार्थक करेंगे, दूसरी ओर घरपरिवार, आसपड़ोस एवं समाज में उल्लास तथा सद्भाव बढ़ाएंगे. ऐसे आयोजन से निश्चय ही आप भले परिवारों से अच्छा परिचय भी प्राप्त कर सकते हैं. ●

ब भारत में रक्त कैंसर जानलेवा नहीं

हशत से भरी रक्त कैंसर जैसी बीमारी का भी अब इलाज संभव है. बंबई के टाटा
यल हस्पताल के चीफ आंकोलॉजिस्ट विशेषज्ञ डा.आडवाणी ने पहली बार एक
, जो 'एक्यूट मेनोमायलाइड ल्यूकीमिया' से ग्रस्त थी, का सफलतापूर्वक
ज्जा प्रत्यारोपण (बोन मेरो ट्रांसप्लांट) किया.
क्त में लाल व श्वेत कोशिकाएं तथा प्लेटलेट्स होते हैं. ये दोनों कोशिकाएं
जा में ही तैयार होती हैं. इन में श्वेत कोशिकाएं रोगाणुओं से रक्षा करती हैं.
यूकीमिया (रक्त कैंसर) में श्वेत कोशिकाएं असामान्य अर्थात आकार में बड़ी व
ं अधिक हो जाती हैं. ये रक्त नलिकाओं के द्वारा शरीर के विभिन्न भागों में पहुंच
न पहुंचाती हैं. छोटीछोटी रक्त नलिकाओं में से इन का गुजरना मुश्किल होता है.
र कोशिकाओं के बढ़ते जाने से रोगी मौत के करीब पहुंच जाता है.
स्थिमज्जा प्रत्यारोपण में सभी सामान्य व असामान्य 'ल्यूकीमिया' कोशिकाओं
 कर के किसी उपयुक्त दाता (भाई, बहन आदि) की स्वस्थ अस्थिमज्जा को
 कर सीधे रोगी की शिरा में पहुंचाया जाता है. इस से चूंकि रोगी की रोग
क क्षमता बिलकुल खत्म हो जाती है, अतः थोड़ा सा भी संक्रमण उस के लिए
रक हो सकता है.
स आपरेशन में 1,94,000 रुपए खर्च आता है.

मामीजी ने अपनी धुन में आ कर दीवाली के दिन ताश की ब
जमाने की घोषणा की तो सब लोग सकते में आ गए, पर आ
जिंदगी के इस पहले और आखिरी दांव में उन्होंने जो कमा
कर दिखाया, उस से सभी के चेहरों से खुशी छलक गई

शगुन

कहानी • रमा प्रभाकर

दोपहर के खाने के लिए जब सारा घर इकट्ठा हुआ तो मामी ने ऐलान कर दिया, "आज दीवाली की रात को ताश जमेंगे और आज का खेल खाली हाथों नहीं खेला जाएगा. जिसे भी खेलना हो वह अपने साथ पैसे ले कर ही खेलने बैठे."

मामी की इस बात पर छोटे से ले कर बड़े तक सभी सकते में आ गए. सीधीसादी मामी को यह जुआ खेलने की धुन कहां से सवार हो गई. सब से पहले मां ही बोलीं, "क्या कह रही हो, भाभी. तुम जुआ खेलोगी?"

मां की बात पर मामी ने झिड़क दिया. बोलीं, "सुधा, तुम भी कैसी बात कर रही हो? अरी, दीवाली के दिन जुआ कोई जुआ थोड़े ही होता है, वह तो त्योहार का शगुन होता है. और आज मैं पैसों से ही ताश का खेल होने दूंगी."

"लेकिन, अम्मां, आप पहले तो कभी पैसों से ताश नहीं खेलीं. आज अचानक आप को कैसे ध्यान आ गया कि दीवाली के दिन जुआ खेलना त्योहार का शगुन होता है?"

निशीथ भैया ने मामी को छेड़
एकदम नाराज हो कर बोलीं, "प
खेला तो क्या कभी नहीं खेल स
पहले ही बताए देती हूं कि आज का



ही होगा. जिसे भी खेलना हो पैसे
ख कर बैठना. उधार का चक्कर भी
हीं चलेगा."

वाली की छुट्टियों के ये दिन बड़ी मौज-
मस्ती में कट रहे थे. मामाजी, मामीजी
नशीथ भैया कई सालों बाद हमारे घर
र तो यही सोचा था कि इस बार की
ो इकट्ठे ही मनाएंगे. सचमुच इन दिनों
के जैसे पर लग गए थे. सारा दिन कैसे
बीत जाता था, पता ही नहीं चलता था.

हमारी मामी जितनी गोलमटोल थीं, उतनी ही मस्त तबीयत की भी थीं. वह जितनी शौकीन खानेपीने की थीं, उतना ही शौक उन्हें ताश खेलने का भी था. हालांकि ताश में उन्हें कोटपीस के अलावा और कुछ खेलना नहीं आता था और न दूसरा कोई खेल खेलना पसंद ही था. आजकल वैसे ही सब का छुट्टियों का मूड चल रहा था, इसलिए खाना खाने के बाद मामी कोटपीस खेलने के लिए पत्ते बांट कर बैठ जाती थीं. हमारी सारी दोपहरी कोटपीस खेलतेखेलते ही बीत जाती थी.

बहन, आज तो मैं अपने बेटे को दांव
गाने चली हूं. मैं निशीथ के लिए
ी रेखा का हाथ मांगने आई हूं,"
बाद मौसी से बोलीं.



लेकिन मामी की नई घोषणा तो बिलकुल अचंभे में डाल देने वाली थी. खाली वक्त में ताश खेलने का कोई भी बुरा नहीं मानता था, पर इस घर में पैसों से ताश खेलने की बात कोई सोच भी नहीं सकता था.

इस समय घर में सब से बड़े मा
थे, सो मामी की बात को काटता
निशीथ भैया ने मेरे कान के पास
ला कर इतनी जोर से अपनी बात
बाकी सब लोग भी उन की बात



"पता है, रीतू, पटरी पर
भविष्यवक्ता के तोते से अम्मां
लिफाफा निकलवाया था. उस लि
पड़े परचे में लिखा था, 'अब तुम्हा
दिन आने वाले हैं. समय तुम्हारा स
और तुम्हें लक्ष्मी की प्राप्ति होगी
लिए अम्मां आज पैसों से ताश
चाहती हैं."

निशीथ भैया की बात सुन क
सब तो मुसकरा दिए, लेकिन
निशीथ भैया को ऐसे घूरा कि वह

खाना खाने में लग गए.
ब्राना खाने के बाद सब लोग
पने कामों में लग गए. और कोई दिन
तो खाने के बाद मामी ताश के पत्ते
लगतीं, लेकिन आज दीवाली थी,
ए इस समय सभी अन्य तैयारियों में
ए थे.
निशीथ भैया बीच वाले कमरे को
में व्यस्त हो गए. वह कुरसी पर खड़े
र कमरे की छत तथा दीवारों पर
के फूल तथा झालरें चिपका रहे थे
पास खड़ी उन्हें बारीबारी से कभी
कभी झालर पकड़ा रही थी. इसी
में एक ओर बैठी मामी रात को दीए में
के लिए रुई की बत्तियां बना रही थीं.
'रीतू!'' दरवाजे के पास से आई अपने
पुकार पर मेरे साथ ही मामी तथा
भी दरवाजे की ओर देखा.
रवाजे के पास रेखा दीदी खड़ी थीं.
दीदी तथा हमारे परिवारों के बीच
चली आ रही घनिष्ठता से अब तक मामा, मामी तथा निशीथ भैया भी परिचित हो चुके थे, इसलिए उन के अचानक इस तरह आ जाने से किसी को आश्चर्य नहीं हुआ.

''रीतू, जरा अपने पेंटिंग के ब्रश तो देना, एक तसवीर बनानी है,'' रेखा दीदी ने कहा तो अनजाने ही मेरे मुंह से निकल गया, ''दीदी, आप को तसवीर बनाने की क्या जरूरत है? अच्छी सी साड़ी पहन कर खुद ही बैठ जाना.''

मेरी बात सुन कर भैया और मामी दोनों ही मुसकरा दिए. और कोई दिन होता तो मेरी इस तरह की बचकानी बातों पर शायद दीदी भी मुसकरा देतीं, या हलके से

के पास से आई अपने नाम की
र मेरे साथ ही मामी तथा भैया ने
ाजे की ओर देखा.



चपत जमा देतीं. लेकिन मामी और भैया के सामने वह एकदम लाल पड़ गईं. बोलने के बाद जब मैं ने मामी और भैया को मुसकराते और दीदी को झेंपते देखा तो एकदम लगा कि मुझे ऐसा नहीं बोलना चाहिए था. मैं जल्दी से ब्रश लेने को चल दी तो रेखा दीदी भी पीछेपीछे चली आईं. कमरे में आ कर मैं ने अपने कान पकड़ लिए, "गलती हो गई, दीदी."

रेखा दीदी हंस पड़ीं. गाल पर चपत लगाते हुए बोलीं, "अरी पगली, यह क्या करती है? अच्छा चल, जल्दी से ब्रश दे. मुझे अभी बहुत से काम करने हैं."

ब्रश ले कर दीदी चली गईं तो मैं फिर से निशीथ भैया की मदद करने के लिए बीच वाले कमरे में आ गई. अब तक मामी वहां से उठ कर जा चुकी थीं. शायद वह बत्तियां बना चुकी थीं.

हमारा काम भी करीबकरीब पूरा हो चुका था कि अचानक निशीथ भैया बोले, "रीतू, तुम्हारी यह रेखा दीदी क्या करती हैं?"

भैया का यह प्रश्न इतना अप्रत्याशित था कि जवाब देने में मुझे कुछ क्षण लग गए. मेरे हिसाब से तो रेखा दीदी कई काम करती थीं. कालिज में पढ़ने जाती हैं, मात्र कह देने से उन के कामों का विवरण पूरा नहीं हो पाता. कालिज में तो बहुत सी लड़कियां पढ़ती हैं, लेकिन सभी मेरी दीदी की तरह थोड़े ही हो सकती हैं.

"रेखा दीदी एम.ए. में पढ़ रही हैं. सुबह तो वह अपने कालिज जाती हैं और शाम को मुहल्ले के बच्चों को पढ़ाती हैं. बाकी समय में कढ़ाई, बुनाई, सिलाई करने के अलावा कविताएं लिखती हैं."

कविता लिखने की बात मैं ने रेखा की बड़ाई करने के विचार से निशीथ भैया को कह तो दी, लेकिन बाद में खुद ही सोचने लगी कि मैं ने यह बोल कर ठीक नहीं किया. कहीं भैया ने यह बात उन के सामने कह दी तो मेरी खैर नहीं. इस बात के लिए तो कान पकड़ने से भी माफी नहीं मिलेग
रेखा का यह भेद मेरे अलावा ि
दोचार लोगों को ही मालूम था.

"कविताएं बस लिखती ही है
छपती भी हैं?"

निशीथ भैया की बातों के चक
एक बार फिर फंस गई.

"छपती क्यों नहीं, खूब छप
इतना बोल कर जैसे मैं संभल कर
गई. भैया ने भी इस बात को आ
बढ़ाया. वह बोले, "वह और क्याक्या
हैं?"

भैया की बात पर मुझे मां की ब
आ गई. वह कहती थीं, "रेखा तो ह
माहिर है."

"वह तो हर फन में माहिर हैं.
इस बार उन्होंने अपने सारे घर की पु
के साथ मिल कर खुद ही की है? इ
पुताई करने वाले एक तो वैसे ही नही
और मिलते भी हैं तो खूब पैसे मा
दीदी ने कहा, 'छोटा सा तो घर है,
पुताई कर लेंगे.' और सचमुच उन्हों
रघु ने मिल कर दो दिन में सारे घर क
कर दी. आप अगर उन का घर देखो
नहीं सकते कि पुताई किसी पेशेवर
न कर के उन्होंने की होगी.

मेरे लंबे भाषण पर निशीथ
पड़े. कमरे का काम खत्म हो चुका
कुरसी से नीचे उतर आए. मैं ने इ
बिखरी कागज की कतरनें समेट
उन्हें उठा कर बाहर आंगन की अ
पड़ी. आंगन में ही बालटी के पानी
भिगो कर रखे हुए थे. उन्हें बाहर
कर सूखने रख दिया.

चौके की एक खिड़की बाहर
खुलती थी. कागज की कतरनें फेंक
वापस आ रही थी तो उस खिड़की
चौके में मां और मामी के बीच
बातों की भनक कान में पड़ी और इ
बीच में रेखा का नाम सुन कर मैं चि
एक बार तो इच्छा हुई जरा सा रुक
सुनती जाऊं, लेकिन धीरेधीरे


AO BRAND
COCONUT OIL
Ahmed Mills

ऊपर चढ़ती धूप यह बता रही थी कि सांझ होने में अब अधिक देर नहीं है. अब तो जल्दीजल्दी काम निबटाने में ही भलाई है.

रात का अंधेरा घिरा तो दीयों की रोशनी में सारा घर जगमगा उठा. दूरदूर जहां तक निगाह जाती थी दीयों की जगमग दिखाई दे रही थी. सारे वातावरण में आतिशबाजियों की गूंज थी. बच्चे, बड़े सभी पटाखे छोड़ रहे थे.

धीरेधीरे दीए बुझने शुरू हो गए. आतिशबाजी का भी शोर कम होता चला गया. हां, बीचबीच में ठ...ठ करते हुए बम फटने की आवाज अवश्य सुनाई दे जाती.

घर में सब लोग खाना खा चुके थे और गपशप चल रही थी. मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मामी ने अभी तक ताश के पत्तों की बैठक नहीं जमाई है. इतने में मां ने पास आ कर धीरे से कहा, ''रीतू, रेखा के घर चल रही है?''

रेखा के घर तो मैं कभी भी चलने को तैयार थी. उन का घर था भी कौन सा दूर. बस, हमारे घर से चार घर छोड़ कर पांचवां घर उन का ही तो था. मैं चप्पल पहन कर झट से तैयार हो गई.

मां और मामी का इतनी रात को रेखा के घर जाने का कारण मेरी समझ से बाहर था, लेकिन दीवाली को किसी के घर जाना केवल मिलने जाना भी तो हो सकता है, यही सोच कर मैं अपनी उत्सुकता दबा गई.

इतनी रात को हम तीनों को अपने घर आया देख कर बिंदु मौसी थोड़ा चौंक सी गईं. वैसे हमारे परिवारों में जिस प्रकार की घनिष्ठता थी, उसे देखते उन के चौंकने की कोई बात नहीं थी. कोई कभी भी चला आता था. हां, बिंदु मौसी के चौंकने का कारण हो सकता था और वह था मामी का भी साथ होना.

रेखा द्वारा सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाई गई बैठक में घर के सभी सदस्य आ गए थे. मामाजी और रेखा के अलावा रघु भी आ गया था.

यों तो हम घर से खाना खा क
लेकिन बिंदु मौसी ने हमारे आगे
दी और मौसी का आग्रह टालना अ
मेरी मामी मस्त तबीयत की
धुन की भी पक्की हैं. जब जो धुन म
जाए, उसी को पकड़ कर बैठ जाती
अच्छीभली मिठाई खा रही थीं. अ
कर रही थीं कि अचानक उन्होंने
रुख बिलकुल दूसरी तरफ कर दिया
''मैं ने सोचा था कि आज दीवाली
जरूर दांव लगा कर खेल खेलूंगी. अ
जानती ही हो, बहन, दीवाली के दिन
यह शगुन ही है.''

मामी की बात सुन कर मैं सक
गई. यह मामी को क्या हुआ है? यहां
से ताश खलने आई हैं? बिंदु मौसी
ताश की इक्कीदुक्की तक पहचान
आती और यह यहां जुआ खेलने च
हैं. अगर मुझे पहले से यह पता होत
इन के साथ कभी न आती, लेकिन मां
हो गया था जो इन्हें ले कर यहां चल
मैं ने मां की ओर देखा, लेकिन वह
निश्चित बैठी मुसकरा रही थीं.

मामी की बात किसी की भी
शायद पूरी तरह नहीं आई
मौसी ने कुछ समझने और कुछ न स
बीच अपनी गरदन हां में हिला दी.
तो आगे बढ़ने के लिए जैसे इतना स
बहुत था. वह बोलीं, ''सुबह निश
कर रहा था कि मैं ने पटरी पर
भविष्यवक्ता के तोते से अपना
जानने के लिए एक लिफाफा निकल
उस में लिखा था कि मेरा समय
देगा और मुझे लक्ष्मी की प्राप्ति ह
तो खैर हंसी कर रहा था, लेकिन मैं
कि दीवाली के दिन ही दांव लगाने
क्यों न करूं. क्या पता, लक्ष्मी मेरी
यही शगुन करने मैं आप के घर

बिंदु मौसी सुन कर घबरा
हकलाती हुई बोलीं, ''आप की
समझ में नहीं आई.''

ेकिन मौसाजी ठठा कर हंस पड़े.

"बहनजी, आप किन के साथ दांव ़गा कर खेलने की बात कर रही हैं? अपने चपन में इन्होंने लूडो और सांपसीढ़ी भले ी खेली हो, लेकिन अब तो उन का नाम भी ूल चुकी हैं. ताश के किस पत्ते का क्या हते हैं, यह तो वह भी नहीं जानतीं. आप ने ेवाली की रात में खेलने के लिए बड़े गलत ़खलाड़ी का चुनाव किया है."

मामी बड़ी शांति से मौसाजी का हंसना ़खती रहीं, फिर मुसकराते हुए बोलीं, भाई साहब, मैं ने गलत चुनाव नहीं किया . मेरा चुनाव तो बिलकुल ठीक है. आप ही ़री बात नहीं समझे हैं. आज सुबह मैं ने पैसों ़ ताश खेलने को जरूर कहा था, लेकिन ़गर मुझे केवल ताश ही खेलने होत तो ़हां आने की जरूरत नहीं थी. वह इरादा तो ़ ने बदल दिया है. मैं ने बाद में सोचा कि ़ीवन में पहली बार जुआ खेलने चली हूं तो ़रा बड़ा सा दांव लगाऊं ताकि जीतूं तो ़चमुच लक्ष्मी प्राप्त हो जाए."

मामी की बातें मुझे भी बिलकुल समझ में नहीं आ रही थीं. आखिर मामी बिंदु ़ौसी से बोलीं, "बिंदु बहन, आज तो मैं अपने ़टे को दांव पर लगाने चली आई हूं. मैं निशीथ ़ लिए आप की रेखा का हाथ मांगने आई हूं. ़ब मेरे सारे पत्ते आप के सामने खुले पड़े ."

मामी चुप हो कर ऐसे बैठ गईं जैसे ़चमुच उन्होंने अपने हाथ के ताश के पत्तों ़ खोल कर सब के सामने फैला कर रख ़या हो.

मामी की बात सुन कर सारे कमरे में ़न्नाटा छा गया. मैं ने दोपहर को रेखा के ़हरे को शर्म से लाल होते देखा था, लेकिन ़स समय तो वह न जाने कैसी होने लगी थीं. ़र धीरे से उठ कर वह अंदर के कमरे में ़ली गईं. बिंदु मौसी और मौसाजी बड़े ़विश्वास से मामी को देखने लगे. कुछ देर ़द मौसाजी ने ही चुप्पी तोड़ी, "सुधाजी, ़नजी जो कुछ कह रही हैं, उस से क्या हम

सद्गुण

सद्गुण में भी चार चांद लग जाते हैं जब वह किसी सुंदर व्यक्ति में होता है. —वर्जिल

यह समझें कि उन्हें हमारी स्थिति के बारे में पूरी जानकारी है?"

मां कुछ बोलतीं, उस से पहले ही मामी बोलीं, "सुधा ने मुझे सब कुछ बता दिया है. सब कुछ जान कर ही तो मैं दीवाली के दिन यह बाजी खेलने आप के घर आई हूं. निशीथ को तो आप ने देखा ही है. अब मैं बिंदु बहन के पत्ते खुलने का इंतजार कर रही हूं. देखना है अपनी जिंदगी का यह पहला और आखिरी दांव हारती हूं या जीतती हूं."

बिंदु मौसी और मौसाजी आश्चर्य से एकदूसरे की ओर देखने लगे. मां की मुसकराहट भी अब गंभीरता में बदल गई थी. अब की बार कमरे की चुप्पी तोड़ी बिंदु मौसी ने.

वह बोलीं, "बहनजी, आप के पत्तों के सामने तो हमारे पत्ते बहुत ही छोटे हैं."

मामी जैसे अभी तक अपनी सांस रोके बैठी थीं. उन्होंने एक गहरी सांस छोड़ी फिर पुलक में भर कर बोलीं, "तो यह बाजी मेरे हाथ रही."

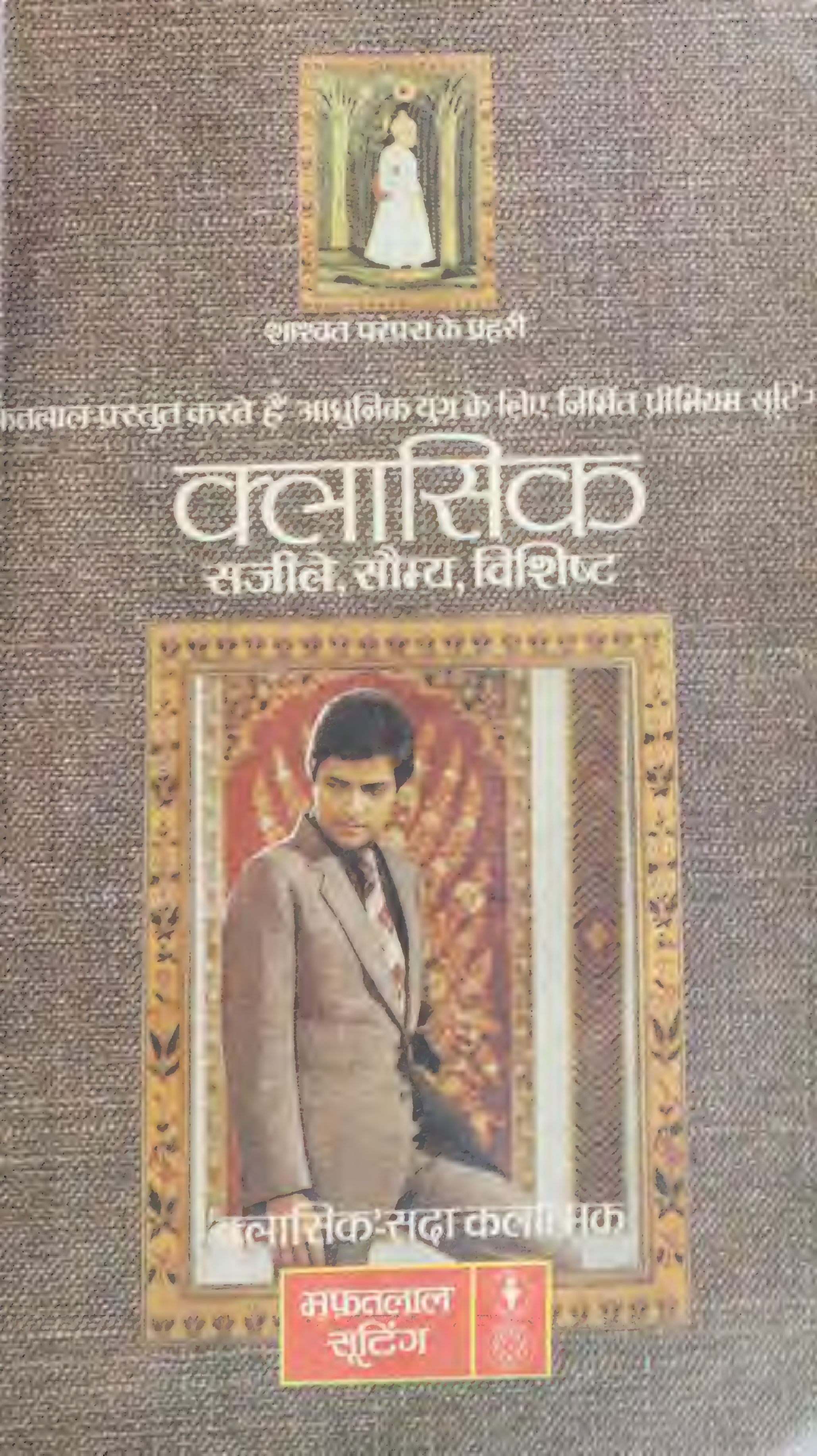
बिंदु मौसी ने मामी के हाथ पकड़ते हुए कहा, "हां, बहनजी, आप बाजी जीत गईं. आप का शगुन आप को मुबारक हो."

अब मामी मेरी ओर मुड़ीं, "रीतू, जरा दौड़ कर घर पर खबर तो कर आ कि मामी बाजी जीत गई हैं."

मैं उठती, उस से पहले ही मौसाजी ने मुझे रोक दिया और सोफे से उठ कर खड़े होते हुए बोले, "यह तो ठीक है कि आपने बाजी जीत ली है, लेकिन हम भी बाजी कहां हारे हैं? यह खबर देने मैं खुद ही जाऊंगा."

मौसाजी कुरतेपाजामे में ही चप्पल पहने घर से बाहर जाने को चल दिए. •


LUX
LUX
LUX
"लक्स का नया रूप...
अब तो और भी प्यारा है!"
—हेमा मालिनी
"लक्स का नया रूप कितना लुभावना है! मेरा अपना सौंदर्य साबुन लक्स. इसके प्यार भरे स्पर्श से ही मेरा रंगरूप इतना सुंदर और रेशमी कोमल हो कर निखर आता है."
Hema Malini
शुद्ध, सौम्य लक्स—फ़िल्मी सितारों का सौंदर्य साबुन.


शाश्वत परंपरा के प्रहरी
प्रस्तुत करते हैं आधुनिक युग के लिए निर्मित प्रीमियम
क्लासिक
सजीले, सौम्य, विशिष्ट
क्लासिक-सदा
मफतलाल सूटिंग

दीवाली में अभी 10 दिन पड़े हैं, फिर भी बच्चे अभी से उत्सुक दिखाई देने लगे हैं.

रिकी बहुत खुश है और वह अपनी नन्हीनन्ही हथेलियां बजाते हुए कह रही है. "दीवाली पर पिताजी मेरे लिए बड़ेबड़े पटाखे लाएंगे. टेलीफोन, राकेट, ऐटम बम और भी बहुत सारे. देखना, भैया, बहुत मजा आएगा."

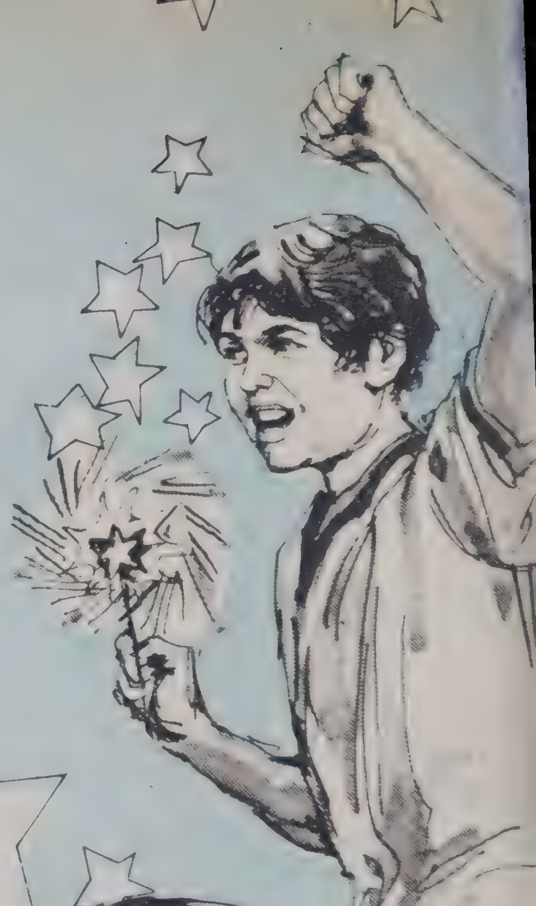
"पिताजी कुछ नहीं लाएंगे. तुम उन्हें पटाखों के लिए कहोगी तो वह तुम्हें पीटेंगे हां, रिकी." अमृत की दो टूक बातें उस का बाल मन सह नहीं सका और वह रोने लगी.

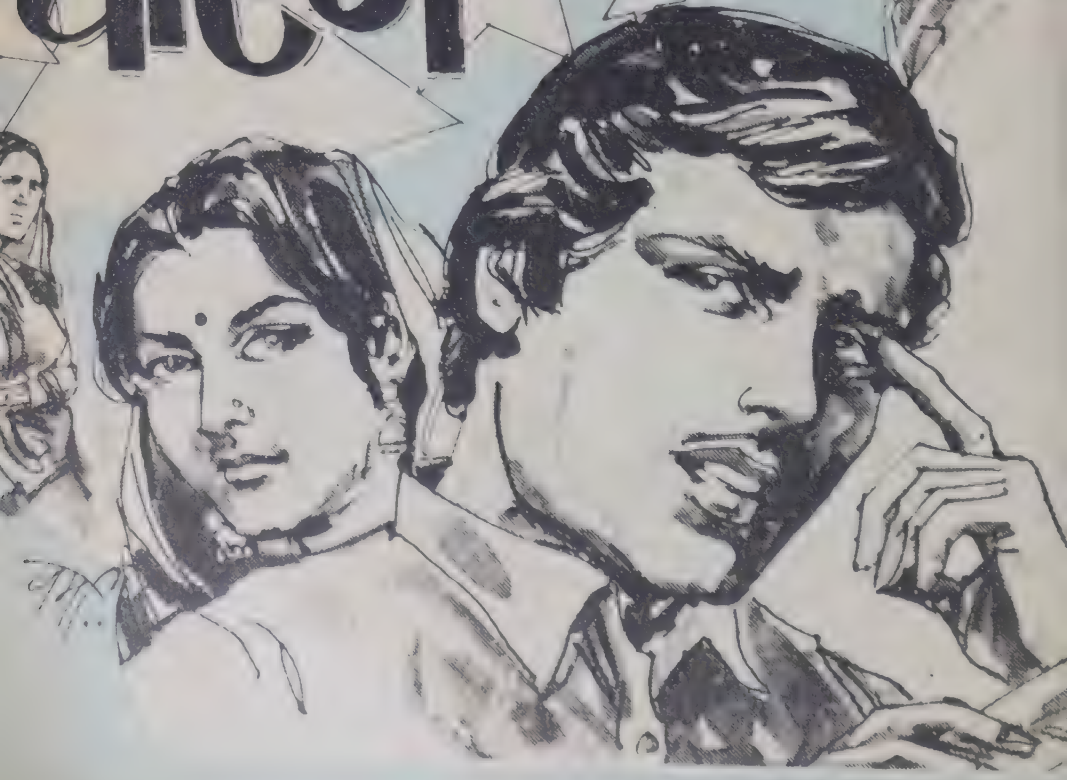
मैं बरामदे में कुरसी पर बैठा अखबार पढ़ रहा था और उन की बातें सुन रहा था.

वह रोती हुई मेरे पास आई और

कहानी • बुलाकी शर्मा

वारण







ट छीनते हुए बोली, "मेरे लिए
लाएंगे न, पिताजी? भैया झूठा है. उसे
भी नहीं दूंगी. हां, सारे मैं ही
"

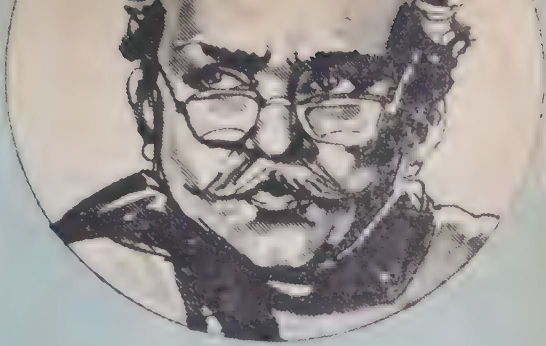
ने उसे गोद में ले कर पुचकारा,
यों हो, रिकी बेटा, हम तुम्हारे लिए

**ढ़ियों से हमारे परिवा
वली पर्व नहीं मनाय
ा था. पर रिकी और
के उदास चेहरे देख
मैं ने एक महत्त्वपूर्ण
कर लिया और बरसों
मारा घर दीपों से जग-
उठा.**

ट पटाखे लाएंगे. तुम्हारा भैया झूठ
."

खुश हो गई और गोद से कूद कर
चिढ़ाने भागी.

कन अमृत के शब्द मेरे दिमाग में



घूमने लगे. उस की नाराजगी गलत नहीं थी. पिछली दीवाली पर उस ने पटाखे लाने की जिद की थी. मैं ने उसे शांति से समझाने की कोशिश की थी, लेकिन वह अपनी जिद पर अड़ा रहा था. इस पर मैं ने उस की पिटाई कर दी थी.

बात यह है कि हमारे परिवार में दीवाली नहीं मनाई जाती. इस उल्लासपूर्ण त्योहार पर प्रायः सभी घरों में स्वादिष्ट व्यंजन बनते हैं, नए परिधान धारण किए जाते हैं, आतिशबाजी की जाती है, लेकिन हमारा परिवार इन सब बातों से बिलकुल निलिप्त रहता है.

वैसे कभी हमारे यहां भी यह त्योहार पूरे हर्षोल्लास से मनाया जाता था, लेकिन पिछली तीन पीढ़ियों से नहीं मनाया जाता. कहते हैं कोई 50 वर्ष पूर्व दीवाली के दिन हमारे परदादा का देहावसान हो गया था. पूरी उम्र भोगी थी उन्होंने. सौ में मुशकिल से चारपांच वर्षों की ही कमी थी. पीछे भरापूरा परिवार था, लेकिन उस दिन से हमारे लिए दीवाली पर्व पर 'वारण' पड़ गया यानी निषेध लग गया.

किसी त्योहार पर परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो जाती है तो बहुत से लोग उस त्योहार को मनाना बंद कर देते हैं, भले ही वह सदस्य कुछ ही घंटों की उम्र का क्यों न हो. फिर वह दिन उन के लिए त्योहार नहीं, बल्कि शोक दिवस बन जाता है. वारण से वह परिवार तभी मुक्त होता है जब उसी →





ां, नानी को कहां चैन – जब तक न हो पोस्टमेन

; पोस्टमेन भोजन का स्वाभाविक
बनाए रखता है

को यह अच्छी तरह
ठीक वैसे ही जैसे देशभर
ृहिणियों को मालूम है;
पकाने के लिए उन्हें
बस पोस्टमेन–और कुछ
यह अच्छी तरह
के पोस्टमेन सबसे शुद्ध,
गफली का तेल है. और
पोस्टमेन उनका भोजन
बनाता है....हल्का और
मतलब ये कि जब तक
' खाने में 'आलू मटर'
तक मज़ा ही क्या ?
% से अधिक वर्षों से
से छोड़कर और कोई
ाध्यम आप नहीं चाहेंगी.



तलिए, भूनिए या पकाइ
पोस्टमेन
सब प्रकार की रसोई का सेहतमंद मा

घर घर नए प्राणी का जन्म हो और वह नया प्राणी लड़का होना चाहिए, लड़की नहीं, क्योंकि लड़के के जन्म पर ही खुशियां मनाने की परंपरा चली आ रही है.

इस मान्यता ने हमारे लिए दीवाली को शोक दिवस बना कर रख दिया है. मेरे परदादा को गुजरे आधी सदी बीत चुकी है, फिर भी वह शोक हम पर साए की तरह चिपका हुआ है.

मुझे अच्छी तरह याद है, जब मैं बच्चा था तब दूसरे घरों के बच्चों की देखादेखी मैं भी दीवाली पर नए कपड़े सिलवाने और पटाखों के लिए जिद किया करता था. उस समय पिताजी मुझे समझाने की कोशिश करते कि यह दिन हमारे लिए शोक का है, इसलिए दीवाली के बाद सब फरमाइश पूरी कर देंगे.

मेरा अबोध मन उन के तर्क से सहमत नहीं हो पाता था और मैं गुस्से में पूछ बैठता था, "शोक किस बात का?"

"तुम्हारे परदादा इसी दिन गुजरे थे, बेटा."

"कब की बात है? मैं ने तो उन को देखा भी नहीं."

"बरसों पहले की बात है, बेटा."

"तो इतने दिन पहले का शोक कभी मिटेगा ही नहीं, बाबूजी? हम कभी दीवाली मनाएंगे ही नहीं क्या?" मैं पूछता.

मेरे प्रश्नों से उन को गुस्सा आ जाता था और वह मेरे गाल पर थप्पड़ मार कर कहते, "बहुत बोलने लग गया है. कह तो दिया इस घर में दीवाली नहीं मनाई जाएगी. ज्यादा बोलेगा तो दूंगा एक और झापड़."

पिताजी का गुस्सा उन की खीज ही व्यक्त करता था. कारण के प्रति स्वयं आश्वस्त न होते हुए भी वह इस का निर्वाह करते आ रहे थे, क्योंकि ऐसी परंपरा जो चली आ रही थी. यदि वह उल्लास से दीवाली मनाते भी तो उन्हें यही सुनना पड़ता, "देखो, इस दिन घर का मुखिया मरा और आज दिए जला कर उस की मौत की खुशियां मनाई जा रही हैं."

पिताजी के दिमाग में शायद यू
विचार रहे होंगे. अब मुझे ऐसा लगता
लेकिन तब मुझे कितना बुरा लगता था
सोचता, यह सब बहानेबाजी है. पिता
कंजूस हैं, उन्हें मुझ से प्रेम नहीं है. सब
मांबाप अपने बच्चों को पटाखे दिलाते हैं, न
कपड़े सिलवाते हैं. फिर यहां ही ऐसा क
मा शोक हो गया है?

दीवाली पर प्रायः मैं घर से पैसे चु
कर ले जाता और दोस्तों के साथ पटा
छोड़ता. बाजार से मिठाइयां खरीद क
खाता. ऐसा कर के मैं पिताजी के प्रति उमड़
अपना गुस्सा शांत करता.

जो परंपरा मुझे बाल्यावस्था
उद्वेलित किए रही, आज दो नन्हे बच्चों क
पिता बन कर उसी परंपरा का मैं ने दाम
पकड़ लिया है. क्या इसलिए कि पिताजी क
मृत्यु के बाद घर का मुखिया मैं बन गया
और मुखिया को परंपराओं का निर्वाह कर
ही चाहिए, भले ही वह तर्कहीन औ
निरर्थक क्यों न हों? पिता बनते
रूढ़िवादिता के भंवर में सायास क्यों फंस
चला जाता है, समझ में नहीं आता.

पिछली दीवाली पर मैं ने पिताजी का
अनुसरण किया था. तीनचार वर्षों
ऐसा ही तो कर रहा हूं. अमृत ने पटाखों
लिए जिद की थी और मैं ने वही जवाब दि
था जो पिताजी मुझे दिया करते थे. उस ने
उसी तरह मेरी बातों पर अविश्वास कि
जिस तरह मैं किया करता था, और फिर
ने उस की धुनाई कर दी थी, जैसे पिता
मेरी करते थे.

मतलब कि मैं भी सिर्फ पिता बन ग
हूं, रूढ़ियों की जंजीरों से उसी तरह जक
हुआ जिस तरह मेरे पिता जकड़े हुए थे औ
उन के पिता के पिता जकड़े हुए थे.

बिस्तर से उठते ही रिंकी मेरे प
आई, "पिताजी, आज दीवाली है न?"

"हां बेटे."

"मेरे लिए पटाखे लाने हैं और प
भी, याद है न?"



"इतना क्या लाया है, रे?" शाम को मेरे हाथों में थैलियां देख कर मां चौंक पड़ी.

कल याद ?
के पिताजी मिठाइया भी लाते ?
रसगुल्ले और खीर मोहन
ताजी."
ब, बेटे." फिर मैं ने दूर खड़े
ा," तुम्हारे लिए क्या लाना है.

नहीं." वह रूठा हुआ था.
"

यहां तो शोक है न, मांगूंगा तो
वा क्या मिलेगा?"
कचा गया. उसे जवाब देने की
हा. उस का गुस्सा और दर्द मुझे
कझोरने लगा. इन रूढियों ने
ुशियां छीन ली हैं. उन की
ें मुझे विचलित करने लगीं.
प्रथा मुझे गलत लगने लगी.
बच्चों की प्रसन्नता. उन की
मुझे अपने नन्हेनन्हे बच्चों के
शियां चाहिए.
मेरे हाथों में थैलियां देख कर
तना क्या ले आया है, रे?"
दीवाली है न, मां?"

"लेकिन हम कैसे मना सकते हैं? हमारे तो वारण है."

"तो क्या हुआ?" मैं बोला, "शोक को लंबा खींचना अशुभ ही है. इस दिन सब तरफ रोशनी हो रही है और हम अंधेरे में बैठे हैं. यह अंधेरा बच्चों को कितनी पीड़ा पहुंचाता है. देखो, उन के चेहरे मुरझाए हुए हैं. उजाला ही अंधकार को भगाएगा, मां."

मां कुछ नहीं बोलीं, पत्नी ने थैलों को खाली किया. पटाखे, मिठाइयां, अमृत का सूट, रिंकी का फ्राक, पत्नी की गुलाबी साड़ी और मां के लिए पापलीन की सफेद साड़ी.

बरसों बाद दीपों की जगमग से हमारा घर मुसकराने लगा. अमृत और रिंकी फुदकफुदक कर पटाखे छोड़ रहे थे.

शाम को सब ने एक साथ खाना खाया. उस समय सब ने नए कपड़े पहने. मां भी नई साड़ी में थीं. मेरे निर्णय पर यह उन की सहमति थी. ●


गज़ब है
मीटर
बस रह जाय
कर !





आजकल महंगाई की वजह से गृहस्थी चलाना कितना कठिन कार्य है, यह किसी से छिपा नहीं है. इसलिए सुशील गृहिणी के नाते आप का यह कर्तव्य है कि व्यर्थ के खर्चे कम कर के घर में पैसों



की बचत की जाए. परिवार में ऐसे कई छोटेमोटे काम होते हैं जिन्हें मामूली सी जानकारी होने पर बिना मजदूर, नौकर या मिस्त्री की सहायता के आप स्वयं भी कर सकती हैं.आप की मितव्ययता, मेहनत और सूझबूझ आर्थिक दृष्टि से तो लाभदायक होगी ही, इस से आप अपने पति और अन्य परिवार वालों की प्रशंसा प्राप्त कर सकेंगी

बरसात का मौसम बीतने के बाद घरघर में दीपावली की तैयारियां प्रारंभ हो जाती हैं. मुख्य रूप से घर की सफाई और रंगरोगन का कार्य महिलाओं के जिम्मे होता है, हालांकि कई परिवारों में पति भी इस काम में सहायक हो जाते हैं यदि आप चाहें तो घर की सफाई और पुताई आदि काम मजदूरों से न करा कर बड़ी आसानी से खुद भी कर सकती हैं. इस के लिए कुछ सामान्य बातों की जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए

पहले क्या करें : घर की पुताई करने से पहले सफाई करना बहुत जरूरी है. इसलिए पहले झाड़ू से दीवारों, अलमारियों, दरवाजों आदि सभी स्थानों का धूलकचरा अच्छी तरह झाड़ कर साफ कर दें. यदि पहले की

पुताई पर पपड़ी आदि आ रही हो, भागों को ब्रश या टाट आदि से रग साफ कर लें. कहीं छेद या गड्ढे हों तो सीमेंट अथवा चूने के घोल में नीचे बै गाढ़े चूने की लेई से भर देना चाहि

घर क

प्रकार भरे हुए गड्ढों को घंटे तक सूखने दें. यदि दीवार पर चिकनाई लगी हो तो उसे ब्रश से कर के उस के ऊपर चावल के मांड रेत मिला कर पुताई कर देनी चाहिए स्थान पर सतह धुंए से काली हो रही रगड़ कर पानी में रख कर मिला कर कर दें.

घोल की तैयारी : चूने की पुताई हो तो अच्छी किस्म का बिना बुझा हुआ बाजार से लाना चहिए. बुझा हुआ पुताई करने पर अच्छी चमक नहीं चूने को किसी बरतन में पानी में मि 48 घंटे तक रख दें. इस अवधि कभीकभी डंडे से हिलाती रहें ता एक जैसा तैयार हो सके. इसी दौरान की मांड या पानी में गोंद डाल कर उ कर के चूने के घोल में मिला दें. इसी की कुछ मात्रा भी मिला देनी चाहि

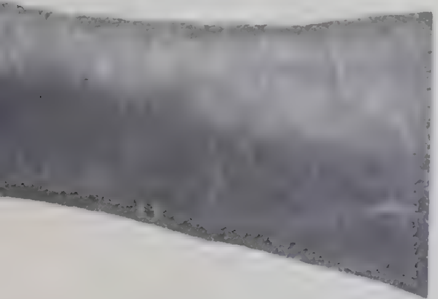
इन सभी वस्तुओं को मिलाने घोल को अच्छी तरह हिला कर एक लेना चाहिए. यदि रंगीन पुताई कर आवश्यक मात्रा में रंग भी मिला ले

ुताई स्वयं करें मगर कैसे?

लेख • घनश्याम वर्मा

ास्टर की दीवार पर पुताई करने के घोल में थोड़ा सा साबुन भी मिलाया है. पुताई से पहले घोल को कपड़े में लेना चाहिए.

घोल तैयार होने के बाद कूची से पुताई ी चाहिए. कूची को एक बार दाएं से और बाएं से दाएं तथा दूसरी बार से नीचे तथा नीचे से ऊपर की ओर ना चाहिए. यदि पुताई एक बार ही ी है तो 100 वर्ग फुट क्षेत्र के लिए सवा चूना, दो बार करनी है तो दो किलो तीन बार करनी हो तो पौने तीन ग्राम चूना पर्याप्त होगा. पांच किलो में गोंद या सरेस की मात्रा 30 ग्राम तक नमक 250 ग्राम पर्याप्त रहता है.



डिस्टेंपर की पुताई दीवार पर डिस्टेंपर से पहले कुछ आवश्यक बातों का ध्यान यदि दीवार पुरानी हो तो पहले उसे साफ कर लें. सीमेंट के प्लास्टर वाली को एक पौंड जिंक सल्फेट के एक पानी में तैयार किए गए घोल से धो ाहिए. उस के बाद सूखने पर इसे एक से रगड़ कर पोंछ दें.

ध्यान रहे कि नमी वाली दीवार पर र ठीक नहीं जमता. अच्छा डिस्टेंपर के लिए पहले सरेस तथा साबुन के की एक बार पुताई (कोटिंग) करना हता है. सफेद चूने की एक बार पुताई े भी काम चल जाता है.

सरेस तथा साबुन की कोटिंग के लिए 150 ग्राम सरेस के साथ आधी टिकिया साबुन थोड़े से पानी में मिला कर उस के घोल को तब तक गरम करें, जब तक दोनों पूरी तरह मिल न जाएं. इस घोल की कोटिंग साफ दीवार पर करनी चाहिए. इस से पूर्व दीवार के छेदों को खड़िया और सरेस के गाढ़े पेस्ट से भर कर सुखा लेना चाहिए. सूखने के बाद रेगमाल से रगड़ कर दीवारों को साफ कर लेना चाहिए. उस के बाद ही डिस्टेंपर करना ठीक रहता है.

डिस्टेंपर का घोल तैयार करने के लिए डेढ़ किलो डिस्टेंपर 50 ग्राम सरेस और आधी टिकिया साबुन में थोड़ा पानी मिला कर पांच मिनट तक गरम कर लें. जब सरेस और साबुन घुल जाएं तब घोल को छान कर उस में थोड़ीथोड़ी मात्रा में पानी इस प्रकार मिलाएं कि घोल न तो पतला रहे और न ज्यादा गाढ़ा. सौ वर्ग फुट सतह के लिए उपर्युक्त मात्रा पर्याप्त रहती है. एक कमरे के लिए एक बार में ही घोल तैयार कर लेना चाहिए क्योंकि बारबार डिस्टेंपर घोलने पर रंग में अंतर आ सकता है. प्रतिदिन पुताई से निबटने के बाद ब्रश गरम पानी से धो कर रख देना चाहिए.

इसी प्रकार बाजार से आयल पेंट ला कर घर के खिड़की दरवाजों तथा कनस्तर आदि पर इच्छा के अनुसार रंग किया जा सकता है. आइल पेंट को पतला करने के लिए उस में तारपीन का तेल मिला लें.

इस प्रकार, आप घर में स्वयं पुताई आदि कर के काफी बचत कर सकती हैं •


जगमग दीपों-सा आनन,
रंगों में लिपटा तन-मन
कोमल कर करें नमन-
शुभ हो, शुभ हो, शुभ हो.
राजकमल

ंगामा

ंग्य • सत्यकुमार



''खबरदार जा पटाखे चलाए. तुझे पता नहीं कि राजू की तबीयत ठीक नहीं है?'' राजू की मां गोपाल को डांटते हुए बोली

लवे कालोनी के दोदो कमरों के आमने सामने तीन मंजिलों में बने 36 क्वार्टर. हरेक मंजिल में छः क्वार्टर. नीचे के रों के सामने दो चारपाइयों का छोटा सा , जो किसी ने लान बना रखा था और ने ईंटों की रोड़ी बिछा कर पक्का कर था. क्वार्टरों की दोनों पंक्तियों के मध्य मीटर का रास्ता. थोड़ी सी जगह में बस्ती. हर समय चिल्लपौं मची रहती. नीचे नौ नंबर के क्वार्टर में केदारनाथ का ड्राइवर रहता था और 10 नंबर में श्वरदयाल. केदारनाथ के दो लड़के

बीमार राजू की मां ने पटाखे छुड़ाने वाले बच्चों को डांटा तो धीरेधीरे लड़ाई बढ़ती गई और महल्ले भर में हंगामा मच गया. पर फिर कुछ ऐसा हुआ कि लोग लड़ाईझगड़ा भूल कर कहकहे लगा उठे और महल्ला पटाखे और हंसीखुशी की आवाजों से गूंज उठा.



''हर साल तो पटाखे चलते हैं, इस बार नहीं चलते तो क्या आफत आ जाती?'' कुछ भलमनसाहत हो तब नो...'' विश्वेश्वरदयाल गुस्से में बोला. ▲

थे—14 वर्ष का गोपाल और सात वर्ष का अमित. विश्वेश्वर दयाल के एक लड़का था—10 वर्ष का राजू और एक लड़की थी—दो वर्ष की मीरा.

दशहरे से राजू ज्वरग्रस्त था. उसे टाइफायड हो गया था. दीवाली पास आ रही थी और वह स्वस्थ नहीं हो पा रहा था. दुर्बल भी बहुत हो गया था. हर समय सिर में दर्द रहने के कारण चिड़चिड़ा हो गया था. बातबात पर जिद करने लगता.

राजू के बीमार होने के कारण इस साल विश्वेश्वर दयाल पटाखे आदि नहीं लाए थे. राजू की मां तो कई दिनों से पड़ोस के बच्चों से भी कह रही थीं, ''दीवाली पर ज्यादा धमधड़ाका नहीं करना. हमारे राजू की तबीयत ठीक नहीं है.''

पर बच्चे भला कहां मानते
दीवाली से दो दिन पहले ही होहल्ला
कर दिया था और दीवाली की शाम तो
जलते ही धूमधड़ाका करने लगे. गोपाल
अपने घर के सामने अनार और एटम
चला रहा था.

राजू दिन में सो लिया था और
बाहर के कमरे की खिड़की के सामने
पर अधलेटा था. गोपाल ने जब प
चलाने शुरू किए तो वह मां से बोला,
गोपाल से कहो कि...''

उस की सांस फूल गई. बात पूरी
कर पाया. मां तो कई दिन पहले से ही
को पटाखे न चलाने की ताकीद कर रही
वह गुस्से में भरी बाहर गई और गोपा
डांटते हुए बोली, ''खबरदार जो
चलाए. तुझे पता नहीं कि राजू की त
ठीक नहीं है?''

अमित तभी भीतर से फुलझड़
डब्बा लाया था. उस ने मोमबत्ती
फुलझड़ी जलाई और नाचनाच

ीआहजी' कहते हुए उसे घुमाने लगा. राजू की मां ने आगे बढ़ कर उस का ाटक दिया. फुलझड़ी नीचे गिर पड़ी. की मां बोली, ''शैतानों के दिमाग में समझ में नहीं आती.''

अमित रोने लगा. उसे संदर्भ का कुछ हीं था. उसे रोता सुन कर उस की मां ' से आई. वह आते ही राजू की मां पर पड़ी, ''तुम मेरे बच्चे को मारने वाली ोती हो? कई दिनों से सुनतेसुनते कान ए. क्यों नहीं चलाएंगे बच्चे पटाखे ? भर बाद तो एक दिन त्योहार आता है. द्वार पर चला रहे हैं, कोई तुम्हारी नहीं है.''



''बेटा, राजू, तुम ने तो पलंग पर पड़ेपड़े ही पटाखे चला दिए. हंगामा करा दिया.'' स्टेशन मास्टर ने हंसते हुए कहा ▼

राजू की मां खिसिया कर बोली, जी, राजू बीमार है, इसलिए मैं कह ी.''

ोपाल की मां ने उस की पूरी बात नहीं ोली, ''बीमार है तो अच्छे डाक्टर का कराओ. महीनों हो गए उसे पड़े हुए. पैसा तो खर्च किया नहीं जाता. दूसरों को पैसा फूंकते देख कर भी जलन होती है.''

राजू की मां बोली, ''तुम्हीं रह गई हो न धन्ना सेठ पूरी कालोनी में? बरतन मांजने को एक महरी भी तो रखी नहीं जाती. चली हैं रानीजी शेखी बघारने.''

आसपास की औरतें, बच्चे इकट्ठे हो गए. दोनों को गुत्थमगुत्था होने से पहले अलग कर दिया. राजू की मां बड़बड़ाती हुई अपने क्वार्टर में लौट गई. गोपाल की मां ने पासपड़ोस के इकट्ठे हुए बच्चों को पटाखे बांट दिए और बोली, ''चलाओ, खूब चलाओ. खत्म हो जाएंगे तो और मंगा दूंगी. देखें, कौन रोकता है?''

धूमधड़ाका होने लगा. सामने तिमंजिले मकान की छत से किसी ने हवाई

उस का कोण गलत हो गया और वह
क घर के सामने आ कर गिरी. गोपाल
उस के साथी होहो कर के हंसने लगे.
इस बार विश्वेश्वरदयाल निकल कर
बच्चों को गाली देते हुए बोला,
क समझ रखा है? मारमार कर भूसा
गा. घर में आग लगाओगे?"
गोपाल ने कहा, "चाचाजी, हम तो
लान में पटाखे चला रहे हैं. वह हवाई
मने ऊपर से आई थी."
विश्वेश्वरदयाल ने फिर गाली देते
हा, "सब समझता हूं. तुम्हारी ही शह
ने ही किसी यार को इशारा कर दिया
बहुत बकबक की तो खोद कर गाड़

अब केदारनाथ आस्तीन चढ़ाता हुआ
से निकला और बिफर कर बोला,
भखारीदास, क्यों बच्चों पर बलबला
? पहले बीवी टांयटांय कर रही थी.
तीसमारखां बन कर आया है? खोद
ी तू? तुझे ही नहीं गाड़ दिया तो..."
विश्वेश्वरदयाल बोला, "अरे
म, जिंदगी गुजर गई तेरी इंजन में
झोंकतेझोंकते. अब बुढ़ापे में ड्राइवर
या है तो किसी को कुछ समझता ही
हर साल तो पटाखे चलते हैं, इस बार
लते तो क्या आफत आ जाती? कुछ
साहत हो तब तो. कुत्ते की दुम रहेगी
ी ही न."
अब आसपास के लोग भी इकट्ठे हो
सारी बस्ती के लोग दो वर्गों में बंट
स्टेशन का स्टाफ विश्वेश्वरदयाल
ले रहा था और ट्रैफिक का स्टाफ
ाथ का.
कसी ने पुलिस को फोन कर दिया. दो
आ गए. लोग धीरेधीरे अपनेअपने
की ओर सरकने लगे. पुलिस वालों
पक्षों की बात सुनी और हंसते हुए
बादशाहो, हम तो सोच रहे थे कुछ
ी का प्रबंध होगा. यहां तो न किसी
फूटा, न हड्डी टूटी. खोदा पहाड़
चुहिया." वे शांति बनाए रखने का
आदेश दे कर चले गए.

स्टेशन मास्टर को सूचना मिली. वह अपनी छड़ी हिलाते हुए आए. सब जनों को दीपावली की शुभकामनाएं दीं. सारी बातें तसल्ली से सुनी. फिर बोले, "भई, दीवाली पर बच्चे पटाखे तो चलाएंगे ही. यह तो एक प्रकार से उन का अधिकार है. परंतु धूमधड़ाके से रोगी को परेशानी होती है, यह भी सच है. मेरी राय में 10 बजे तक बच्चे पटाखे चला लें और उस के बाद छुट्टी."

बच्चे खुशी से ताली बजाने लगे. स्टेशन मास्टर ने फिर विश्वेश्वर दयाल से कहा, "आप राजू को पीछे वाले कमरे में लिटा दें. उस के कानों में थोड़ी रुई लगा दें या कोई नींद की गोली दे दें. एकदो घंटे की ही तो बात है."

विश्वेश्वरदयाल का मुंह लटक गया. स्टेशन मास्टर ने तब गोपाल तथा बच्चों से कहा, "भई, तुम लोग तो फुलझड़ी, पटाखे चला कर दीवाली का आनंद ले रहे हो. हलवा, पूरी, मिठाई भी खा रहे हो, पर राजू तो बीमार है. वह तुम्हारे साथ उत्सव में भाग नहीं ले सकता. तुम्हें कम से कम उसे सब से पहले दीपावली की शुभकामनाएं देनी चाहिए थीं तथा उस से शीघ्र स्वस्थ हो जाने की कामना करनी चाहिए थी."

गोपाल सहित सब बच्चे स्टेशन मास्टर के साथ विश्वेश्वर दयाल के क्वार्टर में गए. राजू के चेहरे पर मुसकराहट आ गई.

स्टेशन मास्टर ने हंसते हुए कहा, "बेटा राजू, तुम ने तो पलंग पर पड़ेपड़े पटाखे चला दिए, हंगामा करा दिया."

राजू लजाते हुए बोला, "चाचाजी, मैं तो मां से कह रहा था कि गोपाल से कहो कि हमारे लान में पटाखे चलाए ताकि खिड़की से मैं भी देख सकूं. पर मां ने मेरी बात पूरी सुनी ही नहीं."

सभी लोग कहकहे लगा कर हंस पड़े. फिर गई रात तक विश्वेश्वर दयाल के लान में धूमधड़ाका होता रहा. •

अपने शिशु के लिए दूध से ठोस आहार की ओर परिवर्तन को आसान बनाइए...

नेस्टम बेबी सीरियल खास तौर से इस सहज परिवर्तन के लिए बनाया गया है

आप अपने बच्चे को सबसे अच्छी चीज़ देना चाहती हैं। इसीलिए आप उसे अपना दूध पिलाती हैं जो सबसे अधिक पौष्टिक और आसानी से पचने वाला आहार है।

जब वह लगभग चार महीने का हो जाता है तब उसे ठोस आहार की ज़रूरत होती है। लेकिन अभी उसकी पाचन शक्ति कोमल ही रहती है इसीलिए उसे ऐसा अन्न चाहिए जो आसानी से पच जाए, जैसे नेस्टम।

नेस्टम पहले ठोस आहार के रूप में बिलकुल सही है क्योंकि इसे विशेष ढंग से तैयार किया गया है। यह चावल से बनाया गया है। और पौष्टिकता के विशेषज्ञ यह मानते हैं कि यह सबसे आसानी से पचने वाला अन्न है क्योंकि इसमें लासा नहीं है।

पौष्टिकता के प्रति जागरूक रहने वाली आप जैसी माताएं नेस्टम के लिए 'हां' इसीलिए कहती हैं क्योंकि इसमें आपके बच्चे के लिए 11 विटामिन, आयरन और कैल्शियम—प्रमुख पौष्टिक तत्व मौजूद हैं। विटामिनों से उसकी त्वचा में चमक, आंखों में दीप्ति और बच्चे के शरीर में रोगों से बचाव करने की क्षमता आती है। आयरन स्वस्थ रक्त के लिए है और कैल्शियम हड्डियों तथा दांतों को मज़बूत बनाता है।

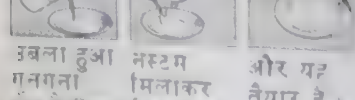
बच्चे को ठोस आहार देने की शुरुआत करना आसान काम नहीं है। लेकिन नेस्टम दूध से ठोस आहार की ओर सहज परिवर्तन में आपकी मदद कर सकता है।



आयरन और
11 विटामिनों
से भरपूर
नेस्टम
राइस

SAA FSL/N 2571

बनाने में आसान



उबला हुआ गुनगुना दूध डालिए | नेस्टम मिलाकर हिलाइए | और यह तैयार है।



दीवाली का सबक

कहानी • मो.मुबीन

बैठक में जुए की महफिल जमी हुई थी. सिगरेट के पैकेट खाली हो रहे थे और अधजले सिगरेट के टुकड़े फर्श पर बिखर रहे थे.

सलमा के विरोध के बावजूद अनवर ने दीवाली के दिन घर पर जुए की महफिल जमा ली थी, पर सलमा ने ऐसी तरकीब ढूंढ निकाली कि अनवर और उस के साथियों को हमेशा के लिए सबक मिल गया.

दो दिन तक इस बात को ले कर झगड़ा होता रहा, परंतु अंत में सलमा को विवश हो कर अनवर बात माननी पड़ी. अनवर ने वही किया वह चाहता था.

उस समय बैठक में जुए की महफिल मी हुई थी. सारा कमरा धुएं से भरा हुआ . सिगरेट के पैकेट पर पैकेट खाली हो रहे और अधजले सिगरेट के टुकड़े फर्श पर खर रहे थे.



दरवाजा खोलने पर सामने पुलिस इंस्पेक्टर को खड़ा देख कर अनवर के हाथपैर फूल गए और घबराहट में उस के हाथ से पत्ते फिसल कर फर्श पर गिर पड़े. ▲

पत्तों के नाम कमरे में गूंजते. कभी किसी बाजी पर चर्चा का शोर उभरता तो कभी पत्तों की फड़फड़ाहट उभरने लगती. वह अपने कमरे में अंधेरा किए पलंग पर लेटी थी. बाहर सारा शहर रोशनी से जगमगा रहा था. शहर के किसी भी भाग में अंधेरा नजर नहीं आता था. बारूद की हलकीहलकी दुर्गंध हवा में बसी हुई थी. कभी पटाखों का शोर वातावरण में गूंजता तो कभी अनार की तेज रोशनी आंखों को चौंधिया देती.

सड़कों पर चहलपहल भी थी, परंतु कभीकभी सड़कें वीरान भी हो जाती थीं. घरों में खुशी, उत्साह भरे कहक उभर रहे थे. ऐसे वातावरण में वह अप कमरे में अंधेरा किए बैठी थी. इस प्रकार व स्वयं से या फिर अनवर से ही बदला ले रह थी जिस ने आज दीवाली के दिन घर व जुए का अड्डा बना रखा था.

उसी मकान में रह रहे कई पड़ोसियों उसे और अनवर को अपने घर भोजन लिए बुलाया था. उन का अपनत्व देख व तो उस का भी मन भर आया था. वह उन घर जाना चाहती थी, परंतु अनवर ने उस सारी भावनाओं का गला घोंट दिया.

अनवर तो खेल में व्यस्त था. अकेली किसी के घर जाए भी तो कैसे? अ घर में होते हुए उस जुए को देख कर एक प्रकार की मानसिक यातना सी हो थी.

दो दिन पहले ही अनवर ने कह दि

दीवाली की रात दफ्तर के कुछ साथी
एकदो दोस्त घर आएंगे जुआ खेलने के

"क्यों?" यह सुनते ही वह भड़क उठी
'यह क्या कोई जुए का अड्डा है जो वे
खेलने के लिए यहां आएंगे."

"जुए का अड्डा तो नहीं, पर हर
ी को बन जाता है."

"लेकिन क्यों?"

"क्योंकि दीवाली के दिन जुआ खेलना
रंपरा बन गई है."

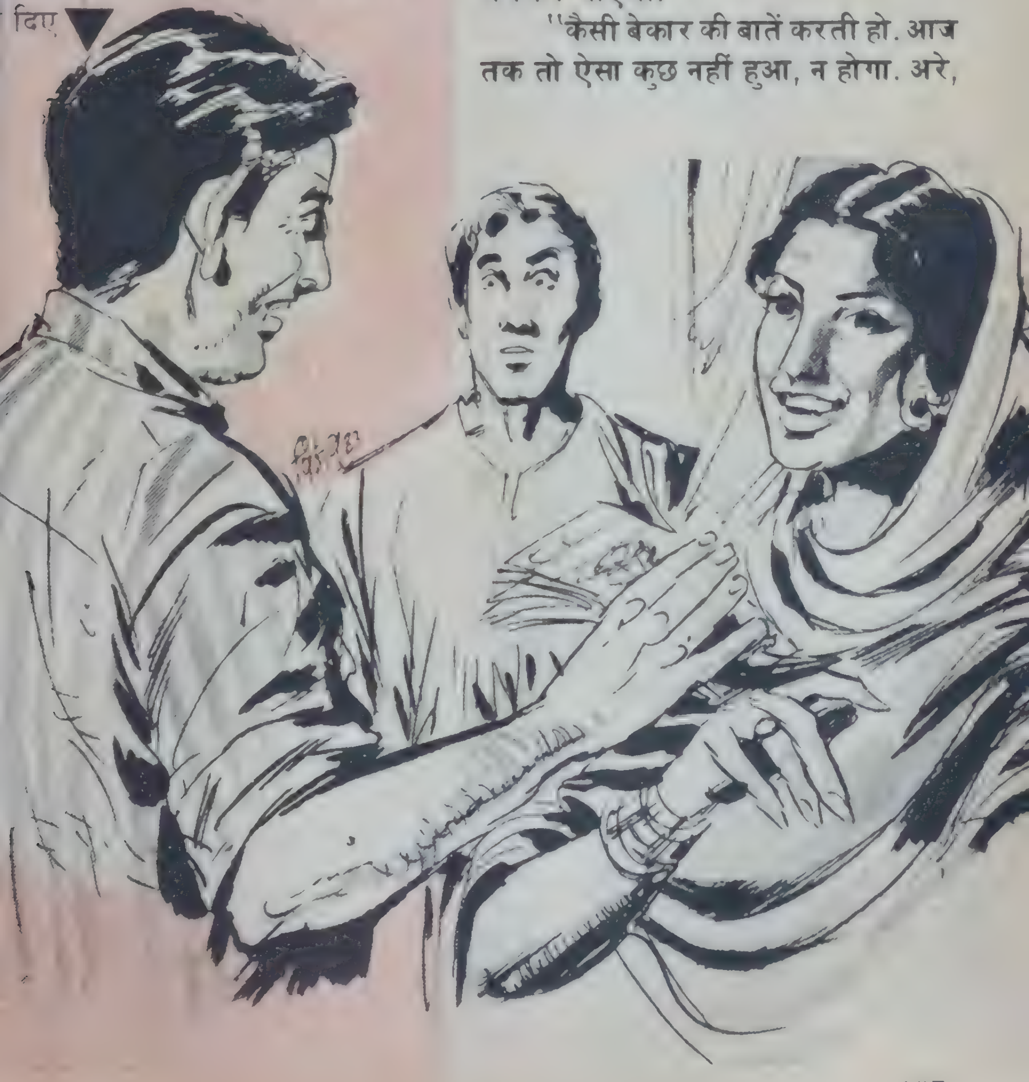
"यदि जुआ ही खेलना है तो उस के
क्या कोई जुआघर, होटल का कमरा या
किसी कुंआरे आदमी का घर नहीं है?"

"कहीं भी जुआ नहीं हो सकता," अनवर ने कहा था, "क्योंकि पुलिस को मालूम है कि इस दिन खूब जुआ खेला जाता है. इसलिए जुए के तमाम अड्डों या ऐसे सभी स्थानों पर, जहां जुआ खेला जा सकता है, पुलिस बारबार छापा मारती है. यदि पकड़े गए तो मुशकिल खड़ी हो सकती है. इसलिए मेरे दोस्त सब से छिप कर यहां जुआ खेलते हैं. यहां किसी का कोई भय नहीं होता, न पुलिस के छापे का भय, न और कोई समस्या..."

"परंतु यह सोचिए, यदि इस बार घर में जुआ खेलते पकड़े गए तो क्या दुर्गति बनेगी. सारी इज्जत और शराफत मिट्टी में मिल जाएगी."

"कैसी बेकार की बातें करती हो. आज तक तो ऐसा कुछ नहीं हुआ, न होगा. अरे,

ा. ये रहे पैसे जो मैं ने रात जब्त किए
कहते हुए माजिद ने सारे पैसे सलमा
दिए ▼



कोई सोच भी नहीं सकता कि इस बड़ी सी इमारत के किसी कमरे में जुआ खेला जा रहा है और फिर एक मुसलमान के घर...ऐसा तो सोचा भी नहीं जा सकता.''

वह लाख विरोध करती रही, परंतु अनवर ने उस की एक न चलने दी.

वह कई तर्क एक के बाद एक पेश करता गया.

''देखो, अभी हमारे विवाह को एक वर्ष भी नहीं हुआ. विवाह से पहले मैं यहां अकेला रहता था. इसलिए हर वर्ष दीवाली पर यहां महफिल जमती थी. इस वर्ष ऐसा नहीं हुआ तो सब कहेंगे, 'वाह, अनवर मियां, विवाह होते ही सारी दोस्तीयारी भूल गए?' सब मुझ पर व्यंग्य करेंगे. मुझे अपमानित होना पड़ेगा. क्या तुम चाहोगी मैं अपमानित होऊं.''

''परंतु आप यह क्यों नहीं सोचते कि यदि पुलिस आ गई तो हमारी कितनी बदनामी होगी?''

परंतु अनवर का यही कहना था कि ऐसा हो ही नहीं सकता. दो दिन से उस का मस्तिष्क बड़ा उलझा हुआ था. क्या करे, उस की समझ में नहीं आ रहा था.

उसे ऐसी दोस्ती और परंपरा से घृणा थी. जुए में अनवर के दोस्त सौ दो सौ रुपया

नजर

कर नहीं सकता जमाना
मुझ को अब हम दम से दूर,
हर सांस उस का नाम है
हर नजर उस की नजर.

—'अदा' देहलवी



हारेंगे. क्या यह नहीं हो सकता कि इस जुआ न खेल कर उन पैसों से घर वाल लिए मिठाई, कपड़े इत्यादि ले जाएं? व वह सोचती कि सब को ऐसा सबक सिर चाहिए कि वे फिर जीवन भर के लिए त के पत्तों को हाथ न लगाएं और जुआ खे भूल जाएं.

परंतु वह अकेली कर भी क्या सक थी.

अनवर के और उस के विवाह को स आठ मास हुए थे. वे एकदूसरे को ब चाहते थे. उस की जरा सी भी कोई हर उन के प्रेम में दरार डाल कर उन एकदूसरे से दूर कर सकती थी, इसी अधिक विरोध भी नहीं कर सकी. उस इस हार पर अनवर ने किसी खुशी प्रदर्शन नहीं किया. उलटे उस की प्र कर दी, ''तुम कितनी अच्छी हो. कितना खयाल रखती हो. कितने उदार की हो.'' और वह बेजारी से सब सु रही.

बाजी पूरे जोर पर चल रही थी

एक की जेब से पैसे निकल कर की जेब में जा रहे थे. कोई हार रहा था, जीत रहा था. भीष्म बराबरी में था.

अनवर काफी हार चुका था. कुंद जीत रहा था. श्याम की जेबें भी खाल चुकी थीं.

उस समय अनवर को अच्छे पते ल और वह अनुमान लगा रहा था कि इस वह अपने हारे हुए पैसों में से एक बड़ा वापस ले सकता है.

उसी समय दरवाजे पर दस्तक और सब के हृदय धड़क उठे.

''इतनी रात को कौन आ सकता श्याम ने पूछा.

''अरे, शफीक होगा,'' कुंदन ''उस ने आने का वादा किया था.''

''काफी मोटी मुर्गी है,'' भीष्म ''यदि आया तो अपना तो कल्या जाएगा.''


मसूड़ों को मज़बूत बनाइये
दाँतों की ज़िन्दगी बढ़ाइये
Forhan's
सिर्फ़ फोरहॅन्स में ही
मसूड़ों को मज़बूत बनाने वाला
बंधनकारी ऐस्ट्रिंजेंट है
ट्रजेंट की क्रियाशीलता की पहचान है- इसके स्वाद की झुनझुनाहट !
त दाँतों को भी स्वस्थ मसूड़ों की जरूरत होती है.
ों के कमज़ोर और मुलायम हो जाने का
ब है, कि अब आपके दाँतों का आधार कमजोर
या है.इसीलिए फोरहॅन्स में विशेषरूप से
कारी ऐस्ट्रिंजेंट मिलाया गया है जो मुलायम
कमज़ोर मसूड़ों को संकुचित करके स्वस्थ
ा है.
ब्रश करते समय आप जो झुनझुनाहट महसूस करते हैं
दरअसल वही ऐस्ट्रिंजेंट की क्रियाशीलता की
पहचान है बधनकारी ऐस्ट्रिंजेंट आपके मसूड़ो को
स्वस्थ बनाता है ताकि आपके दाँत लम्बे समय तक
मजबूत रह सकें.
नए अपने दाँतों को मज़बूत आधार दीजिए
कारी ऐस्ट्रिंजेंट वाला फोरहॅन्स इस्तेमाल कीजिए
प के
ज़ोर हैं
दाँत
लगते हैं
फोरहॅन्स का
बंधनकारी ऐस्ट्रिंजेंट
मसूड़ों को संकुचित
करता है
जिससे आपके
दाँतों को लम्बी
जिन्दगी मिलती है
Forhan's
FOR THE GUMS
Forhan's
The toothpaste created by a dentist
ोरहॅन्स पर भरोसा रखिये
यह दाँतों के डॉक्टर का
बनाया हुआ टूथपेस्ट है
306F-173 HIN

"जाओ, अनवर, देखो कौन है?"
न बोला.

अनवर ने पत्ते हाथों में ही रखे दरवाजे
इस आया और दरवाजे खोला.

दूसरे ही क्षण उस का हृदय जोर से
क उठा. हाथपैर फूल गए और घबराहट
ते हाथ से फिसल कर फर्श पर बिखर

सामने एक पुलिस इंस्पेक्टर खड़ा उसे
रहा था.

"तो मेरा शक सही निकला कि इस
में जुआ खेला जा रहा है," वह बोला.

"जुआ..."

"स्वर के कंठ में उस का स्वर फंस गया,
"नहीं, इंस्पेक्टर साहब, हम तो बस यों
वक्त गुजारने के लिए ताश से दिल
ा रहे हैं."

"वक्त गुजारने के लिए ताश से दिल
ा रहे हैं?" कहते हुए इंस्पेक्टर भीतर
आया, "फिर यह पैसों का ढेर कैसा?
रदार, यदि किसी ने एक भी नोट उठाने
छपाने का प्रयत्न किया तो..."

इंस्पेक्टर को सामने देख कर सब को
ने छूटने लगे.

"यह तो किसी शरीफ आदमी का घर
म होता है. परंतु यहां जुए का अड्डा भी है
..छिः..."

"घर तो शरीफ आदमी का ही है,
टर साहब." अनवर सिर झुका कर
, "आप विश्वास कीजिए यह कोई जुए
ड्डा नहीं है. बस, दीवाली पर जुए की
रंपरा चली आ रही है उस कारण हम
खेलने बैठ गए थे."

"बको मत," इंस्पेक्टर गरजा, "यह
परंपरा है. जुए के लिए उस की आड़ न
यह घिनौना अपराध हजारों घरों को
द करता है और आज के दिन ही
ं घर बरबाद होते हैं. इसलिए विशेष
र इसे रोकने के लिए हमें शरीफ घरों
ी नजर रखने का आदेश मिला है. मैं
से गुजर रहा था तो मुझे ऐसी आवाजें



कारवां

वो कि आना था जिन्हें
'पाशी' जफरमंदी के साथ,
वो जो गुजरे थे इधर से
कारवां गुम हो गए.

—कुमार 'पाशी'

आईं जैसे भीतर जुआ खेला जा रहा है और मेरा शक सही निकला. चलिए, सब नीचे चलिए. नीचे पुलिस की जीप खड़ी है."

उसी समय सलमा भी आ गई. इंस्पेक्टर को देखते ही उस का हृदय धक से रह गया, "ऐसा मत कीजिए, इंस्पेक्टर साहब, इन्हें मत पकड़िए," वह विनती करती हुई बोली.

"यह कौन है?" इंस्पेक्टर ने तेज नजरों से अनवर को घूरा.

"मेरी पत्नी है," अनवर ने सिर झुका कर कहा. वह ऊंचे, पूरे तगड़े इंस्पेक्टर के व्यक्तित्व से बुरी तरह प्रभावित हो उठा था.

"बहनजी," इंस्पेक्टर सलमा की ओर मुड़ा, "आप बीच में मत आइए. इन्होंने अपराध किया है, इस की इन्हें सजा मिलेगी. दोष आप का भी है. आप ने इन्हें अपने घर में जुआ खेलने की अनुमति क्यों दी?"

"मैं ने बहुत समझाया था, इंस्पेक्टर साहब, परंतु यह नहीं माने." सलमा की आंखों में आंसू आ गए.

"ठीक है, अब इन्हें हम समझाएंगे और ऐसा समझाएंगे कि ये जीवन भर याद रखें और फिर ऐसा काम न कर सकें."

"ऐसा मत कीजिए, इंस्पेक्टर साहब,

हम शरीफ आदमी हैं. यदि हम थाने गए तो हमारी बड़ी बदनामी होगी," श्याम गिड़गिड़ा कर बोला.

"आप सिर्फ थाने ही नहीं चलेंगे, आप को इस अपराध के लिए जेल भी जाना पड़ेगा. मैं ने यह वर्दी इसी लिए पहनी है."

"नहीं," जेल का नाम सुनते ही कुंदन का गला सूख गया, "यदि मुझे जेल हुई तो मेरी नौकरी चली जाएगी."

"यह आप को जुआ खेलने से पहले सोचना चाहिए था. तुम लोग नीचे चलते हो या मैं पुलिस को बुलाऊं?" इंस्पेक्टर गरजा.

"हमें क्षमा कर दीजिए, इंस्पेक्टर साहब, इस के बाद हम कभी ताश को हाथ नहीं लगाएंगे. हम कसम खाते हैं. हमारी यह गलती क्षमा कर दें," भीष्म गिड़गिड़ाया.

"भाई साहब, इन की गलती क्षमा कर दें. मैं आप को विश्वास दिलाती हूं कि चाहे दीवाली आए या कोई और त्योहार, ये ताश के पत्तों को हाथ भी नहीं लगाएंगे," सलमा बोली.

सलमा की विनती सुन कर इंस्पेक्
का मन पसीज गया.

"बहनजी, आप ने मुझे भाई कहा
केवल आप के इस शब्द के लिए मैं इन्हें ए
बार क्षमा कर सकता हूं," इंस्पेक्टर बोल
"परंतु क्षमा करना ही इन के लिए सजा न
होगी."

"जेल और थाने ले जाने के बजाए आ
जो सजा दें हमें मंजूर होगी, इंस्पेक्ट
साहब," कुंदन बोला.

"तो ठीक है," इंस्पेक्टर बोल
"सामने जो रकम रखी है, उस के अला
हर आदमी मुझे दोदो सौ रुपया दे तो
मामला दबाने और तुम लोगों को छोड़ देने
लिए तैयार हूं."

"हमें मंजूर है, इंस्पेक्टर साहब," स
एक स्वर में बोले.

इंस्पेक्टर ने आगे बढ़ कर मेज
रखी सारी रकम उठा ली. कुंदन और भी
ने जेब से दोदो सौ रुपए निकाल
इंस्पेक्टर की ओर बढ़ा दिए. श्याम ने कुं



"ये जले राकेट बम पटाखे मैं ने इसलिए जमा किए हैं ताकि कल दोस्तों को दिखाऊंगा कि
न इतने पटाखे छोड़े."

से उधार लिए. अनवर ने विवशता से सलमा की ओर देखा तो सलमा समझ गई उस के पास पैसे नहीं हैं. वह भीतर से दो सौ रुपए ले आई.

"ठीक है. अभी तो जाता हूं. परंतु अब इस घर और तुम लोगों को अच्छी तरह पहचान गया हूं. इस के बाद पकड़े गए तो कोई छूट नहीं बरती जाएगी," कहते हुए इंस्पेक्टर चला गया तो सब सिर को हाथ लगा कर बैठ गए.

"अरे, शुक्र करो बच गए," कुंदन बोला, "वरना यदि थाने या जेल जाने की नौबत आती तो किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहते."

"लानत है इन पत्तों पर." श्याम जोश में ताश के पत्ते फाड़ने लगा, "अब मैं जीवन भर कभी इन्हें हाथ नहीं लगाऊंगा."

"मैं भी आज से जुआ खेलने से तोबा करता हूं." भीष्म ने अपने दोनों कान पकड़ लिए.

"आज दीवाली के दिन हमें ऐसा सबक मिला है कि अब हम कभी जुआ नहीं खेलेंगे," कुंदन बोला. फिर सब अपनेअपने घर चले गए.

"काश, मैं तुम्हारी बात मान लेता, सलमा, तो बात यहां तक न पहुंचती," अनवर ने लज्जा से सिर झुका कर कहा, "किसी तरह इज्जत बच गई वरना हम किसी को मुंह दिखाने लायक न रहते."

"जो हुआ उसे भूल जाइए," सलमा उसे प्यार से समझाती हुई बोली, "और आज यह कसम खाइए कि अब आप कभी ऐसा काम नहीं करेंगे जिस से आप की इज्जत पर धब्बा लगे और आप को शर्मिंदगी उठानी पड़े."

"जीवन भर मैं ऐसा काम नहीं करूंगा," अनवर दृढ़ निश्चय से बोला.

फिर दोनों चुपचाप सोने के लिए अपने कमरे में चले गए.

दूसरे दिन रात को वह सलमा के साथ बैठा बातें कर रहा था. उसी समय दरवाजे

पर दस्तक हुई. उस ने जैसे ही दरवा
खोला उस की जान ही निकल गई. रात वा
इंस्पेक्टर दरवाजे पर खड़ा उसे घूर रहा
उस समय उस के शरीर पर वर्दी नहीं थ
"इंस्पेक्टर साहब, आप..." अनव
की आवाज फिर एक बार उस के कंठ में फ
गई.
"कौन साजिद तुम!" सलमा भी
गई, "आओ, अंदर आओ."
"आदाब अर्ज है, भाई साहब," कह
हुए जब वह भीतर आया तो अनवर चौं
पड़ा.
वह आश्चर्य से कभी सलमा
देखता, कभी इंस्पेक्टर को, जिसे सलमा
साजिद कहा था.
"बहुत जल्दी आ गए," सल
मुसकरा कर उस से बोली.
"क्या करूं, आपा? वह तुम्हारा बे
जो था. सोचा दोतीन दिन आप लोगों
अमानत अपने पास क्यों रखूं. आज ही दे
अपने कर्तव्य से मुक्त हो जाऊं."
"सलमा!" अनवर आश्चर्य से सल
को देखने लगा, "यह कौन हैं?"
"पुलिस इंस्पेक्टर दांडेकर," सल
चंचल स्वर में बोली.
अनवर की स्थिति पागलों सी हो ग
उस की समझ में नहीं आ रहा था कि यह
क्या चल रहा है.
"नहीं, आपा," साजिद हंसते
बोला, "भाईजान को इतना सताना ठ
नहीं. मैं पहले ही रात को उन
अच्छीखासी खबर ले चुका हूं और तुम
भी इन्हें सताने पर तुली हो. मैं बताता
भाइ साहब, मैं कौन हूं. मैं सलमा
चचाजाद भाई हूं यानी आप का साला. इ
पहले हम कभी एकदूसरे से नहीं मिले
इसलिए हम एकदूसरे को पहचानते न
गत सप्ताह ही मेरी यहां बदली हुई. दो
पहले मैं आप लोगों से मिलने के लिए आ
था. परंतु सलमा आपा ने एक नाटक खे
के लिए मुझे एक रोल दे दिया. इंस्पेक्टर
रोल."

टक!" अनवर आश्चर्य से सलमा लगा.

ां, वह एक नाटक था," सलमा आप ने दो दिन पहले जब दीवाली रर में जुआ खेलने की बात कही तो का विरोध किया था. जब आप नहीं ां ने सोचा, आप लोगों को कोई ऐसा या जाए कि आप लोग यह गंदी मेशा के लिए छोड़ दें. उसी समय मुझ से मिलने आया तो मुझे तरकीब मैं ने साजिद को इंस्पेक्टर बन कर लिए कहा और उस ने ऐसा ही

दाकारी तो अपने बाएं हाथ का भाई साहब," साजिद बोला, "केवल ी वर्दी नाटक वालों से किराए पर जो अपने हाथी जैसे डीलडौल पर ी. कहिए, अदाकारी पसंद आई?" ो यह तुम लोगों की मिलीभगत तो जान ही निकल गई थी," कहते र सिर पकड़ कर बैठ गया.

ापा, ये रहे पैसे जो मैं ने रात जब्त " कहते हुए साजिद ने सारे पैसे ो दे दिए, "जिन लोगों के हैं उन्हें वापस कर दो."

"नहीं" अनवर बोला, "यदि उन्हें पता चल गया कि रात को जो कुछ हुआ वह एक नाटक था तो उन्होंने जो तोबा की है वे उसे तोड़ देंगे और फिर से जुआ खेलने के लिए तैयार हो जाएंगे. उन्हें इस नाटक का पता नहीं चलना चाहिए."

"वह तो ठीक है, परंतु उन के पैसे उन्हें वापस किस तरह किए जाएं?" साजिद बोला.

"उस के लिए तो एक झूठ का सहारा लेना ही पड़ेगा," सलमा बोली. "ऐसा करते हैं जिस के जितने पैसे हैं उतने पैसों की मिठाई, बच्चों के कपड़े और उन की पत्नियों को साड़ियां उपहार के रूप में हमारी ओर से दे दी जाएं. इस प्रकार उन के पैसे भी उन्हें मिल जाएंगे और हमारे जो आपसी संबंध हैं उन उपहारों के कारण वे और भी मधुर हो जाएंगे और हमारे इस नाटक का भी उन्हें पता नहीं चलेगा. इस तरह वे अपने उस सबक को याद कर के फिर कभी जुआ खेलने का विचार भी मन में नहीं लाएंगे."

"हां, यह बहुत अच्छी बात है," साजिद और अनवर एक स्वर में बोले. •

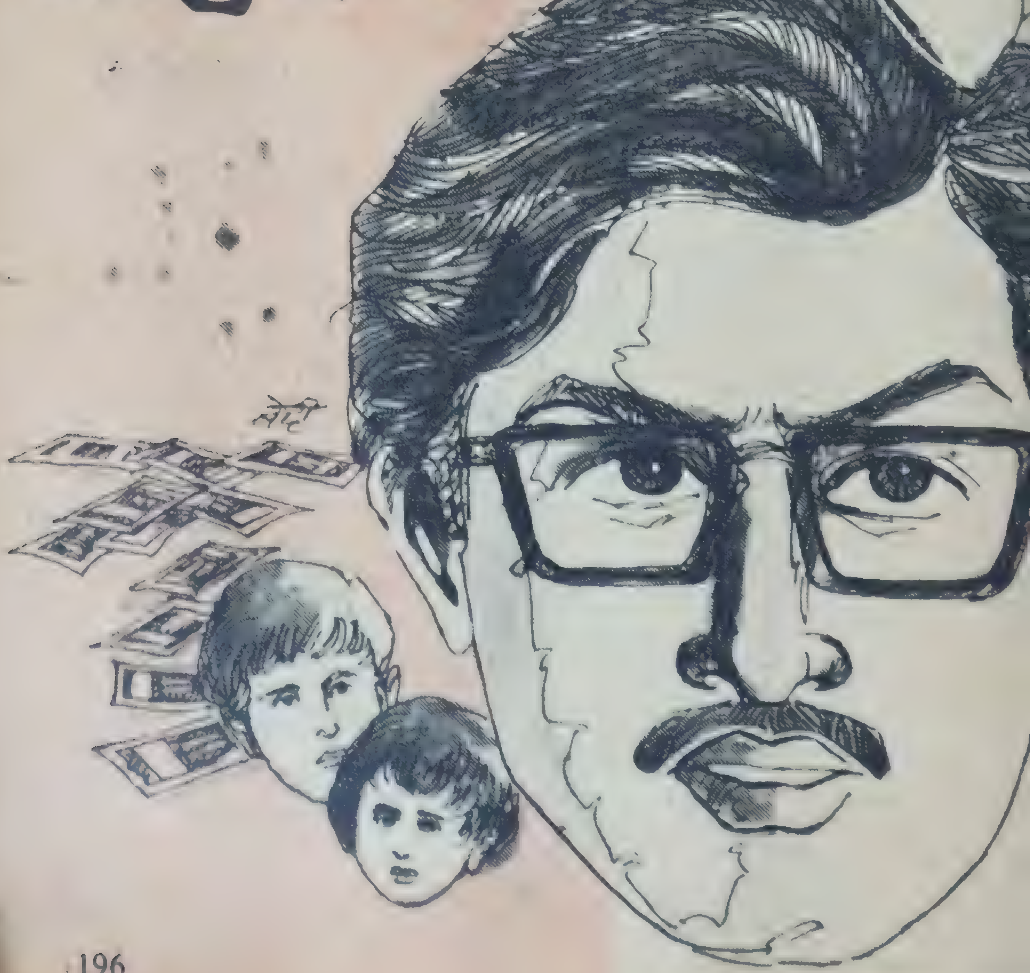


घर में प्रविष्ट होते ही सुदर्शन ने राहत की सांस ली. बहुत थक गया था वह दिन भर के काम से. लौट कर पत्नी और बच्चों की संगति तथा चाय या काफी का प्याला बड़ा अच्छा लगता है. लेकिन यह कामकाज? दीवाली के दिन भी चैन नहीं मिला था. काम ही ऐसा है उस का. किसी को इनकार नहीं कर सकता वह.

बहुत से डाक्टर खाली समय होने पर भी मना कर देते हैं, परंतु सुदर्शन की व्यस्तता, बल्कि अति व्यस्तता किरण को सदा अखरी है. वारत्योहार, समय कुछ नहीं

कहानी • चंद्रा र. देवत

मोहभंग



रश्मोतल की दीवाली को
र रात भर जुए और शराबों
ितियों में डूबे रहने वाली
ने सुदर्शन से तलाक ले तो
पर मन का अंधकार छंटने
स के कदम फिर से घर की
ला सजाने के लिए लौट

ह. जब भी किसी मरीज को उस की
कता होती है, वह फौरन उस के
पहुंच जाता है – एक मीठी
हट के साथ. कितने ही रोगी कह भी
' डाक्टर साहब, आप की दवाओं से

ज्यादा कारगर तो आप की यह जिंदादिल मुसकराहट है. देख कर, जल्दी से जल्दी दुखदर्द, रोग से छुटकारा पा कर आप की तरह मुसकराने को जी चाहता है.''

सुदर्शन सोफे पर बैठते हुए धीमे से हंस पड़ा. अब तो उस के पास बहुतों की शुभकामनाएं भी एकत्र हो गई थीं, पर एक दिन वह भी था, दीपावली का ही दिन जब किरण उसे बाहर न जाने देने के लिए जिद कर बैठी थी. उस की नौकरी भी नईनई ही थी. स्वयं वह भी लापरवाह था. उस ने उस दिन उस स्त्री के साथ जाने से मना कर दिया था जिस का पति किसी दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया था. तुरंत उस व्यक्ति

''दफा हो जाओ यहां से. मेरे हाथपैरों को जंग नहीं लग गया है जो बीवी की हराम की कमाई खाऊं,'' सुदर्शन ने घृणापूर्वक तीखे स्वर में कहा. ▼



का बड़ा आपरेशन किया जाना आवश्यक था, पर सुदर्शन ने यह सोच कर स्वयं को संतोष दे दिया था कि ड्यूटी पर मौजूद कोई अन्य डाक्टर आपरेशन कर देगा, परंतु उस रात त्योहार मनाने की धुन में कोई भी बड़ा सर्जन ड्यूटी पर नहीं था.

अगले दिन प्रातः जब उस महिला के पति की लाश उठी तो सुदर्शन की चेतना को जबरदस्त धक्का लगा था. उस आदमी की पत्नी ने उस की ओर देख कर घृणा से मुंह फेर लिया था और इस बात से वह बड़ा लज्जित हो उठा था.

तभी से उस ने अपनी जीवनधारा बदल डाली थी. जिस दिन उस के प्रयत्नों से किसी के प्राण बच जाते, सुदर्शन उसी दिन अपने लिए त्योहार समझता. उसे अपनी उस भूल के प्रायश्चित्त का यही उपाय समझ में आया था, पर किरण इस बात को नहीं समझ पाती थी कि उस के पति के प्रयत्नों से कितने ही घरों के चिराग रोशन रहते हैं. किसी को खुशियां बांटना कितना संतोषप्रद कार्य है, सुदर्शन अपनी पत्नी को यह बात कभी नहीं समझा पाता था.

तभी उस के विचारों का क्रम टूट गया था. "पिताजी." उसे एक हलका सा स्वर सुनाई दिया था. उस ने भीतरी द्वार की ओर देखा और मुसकरा उठा था, "छाया बेटी!" स्वर में स्नेह की मिश्री घुल आई थी. पांच वर्षीया सहमी, उदास सी छाया का मुख खिल उठा था. सुदर्शन ने बांहें फैला दी थीं. छाया दौड़ कर पिता की गोद में चढ़ गई थी. पितापुत्री दोनों ही गद्गद हो उठे थे. लाड़ से उसे चूमते हुए सुदर्शन ने पूछा था, "श्रीकांत कहां है, बेटी?"

"भैया पढ़ रहे हैं," छाया ने पिता के गले में झूलते हुए बताया था.

"आज भी!" सुदर्शन के मन में कुछ खटक सा गया था, "और तुम्हारी मां?"

छाया की बांहें ढीली पड़ गई थीं. उदासी पुनः मुख पर घिर आई थी. सुदर्शन समझ गया था. न चाहते हुए भी स्वर में

कड़वाहट उभर आई थी, "किसी पा
गई हैं?"

उदास छाया ने हां में सिर हिला
था.

"किस के यहां?"

"सरला चाची के यहां. उन का
आया था," छाया का स्वर धीमा था,
कह रही थीं कि आज जीतेंगी तो सारे
फायदा ही फायदा होगा. इसलिए आज
जरूरी है. थोड़ी देर में आ जाएंगी."

सुदर्शन का मन रो रहा था, किंतु
रूप से वह हंसते हुए बोला था, "और ह
बिटिया रानी और राजा बेटा घर में चुप
क्यों बैठे हैं? बाहर देखो, सब बच्चे खेल
रहे हैं, पटाखे छोड़ रहे हैं."

"उन की मांओं ने उन को नए
पहनाए हैं. वे कितनी सारी चीजें, मिठा
नमकीन बना रही हैं और फिर सब
दीए जलाएंगे. हमारे मांबाप तो..."

छाया की बात सुन कर सुदर्शन क
उतर गया था. वह संयत रहने का
करते बोला था, "आया कहां है?"

"वह हमें तैयार कर के अपने घर
गई है," यह शांत स्वर श्रीकांत का
आठनौ वर्षीय श्रीकांत किसी सम
वयस्क सा धीरगंभीर खड़ा था.

सुदर्शन चकित सा देखता रह
था. उस का नन्हा सा बेटा समय से
बड़ा होता जा रहा था. उस के अंत
कहीं कुछ टूट सा गया था.
पश्चात्तापमय ग्लानि चेहरे पर झलक
थी.

श्रीकांत ने शायद इसे अनुभ
लिया था. एकाएक श्रीकांत बच्चों की
रो पड़ा था और दौड़ता हुआ आ कर
की गोद में गिर पड़ा था. भाई को रोत
कर छाया भी रो पड़ी थी. दोनों बच
कलेजे से लगा कर स्वयं सुदर्शन की आ
छलक आई थीं.

थोड़ी देर बाद तीनों तनिक श
थे तो छाया ने पूछा था, "पिताजी,
मांबाप की तरह आप भी दीवाली



र क्यों नहीं रहते?"
'बेटे, एक आदमी को बहुत गहरी
ाई थी. अगर मैं समय पर जा कर उसे
ता तो वह मर जाता."
पिताजी, उस को दीवाली के दिन
यों लग गई?" छाया ने भोलेपन से
था, "अब वह दीवाली कैसे
ा?"
पतापुत्र अनायास हंस पड़े थे. उदासी
छंट गई थी.
दर्शन के कुछ कहने से पहले ही
ने उसे समझाया था, "अरे बुद्धू,
पनी मरजी से थोड़े ही लगती है.
ने तो एक आदमी की जान बचाई है.
अच्छा काम कर के आए हैं हमारे
. है न पिताजी?" श्रीकांत गर्व से
ा.
दर्शन ने उसे चूम लिया था, "हां बेटे,
ी जान बचाना मेरा कर्तव्य है. बहुत
ाम है यह. मेरी मजबूरी न होती तो
अपने बच्चों को छोड़ कर कभी
जाता."

"पर पिताजी, मां क्यों गई हैं?" श्रीकांत ने कुछ रोष जताते हुए पूछा, "मां कहती थीं, वह ताश खेलेंगी, बहुत सारे पैसे जीत कर लाएंगी," छाया बोल उठी थी, "ताश खेलना अच्छी बात है, पिताजी?".

"नहीं, बहुत गंदी बात है," श्रीकांत घृणा से बोला था.

सुदर्शन का मन पत्नी के प्रति वितृष्णा से भर उठा था. फिर भी वह बच्चों के मन में मां के प्रति घृणा के बीज नहीं बोना चाहता था, लेकिन बात संभालने का प्रयास करते हुए भी वह झूठ नहीं बोल पाया था, "बेटा, तुम्हारी मां के मन में यह अंधविश्वास है कि दीवाली के दिन जुआ खेल कर जीतना शुभ होता है. इस से सारे साल घर में पैसा आता है. इसी लिए..."

"तो आप क्यों नहीं गए?"

"मत रो, बेटे, मुझे क्षमा कर देना. मैं पागल हो गई थी. अपनी दुनिया को भूल गई थी," किरन रोते हुए बोली.

"मुझे ऐसी बातों पर विश्वास नहीं. मैं अपनी मेहनत पर विश्वास रखता हूं."

बच्चे समझे नहीं थे, इसी लिए छाया ने पूछा था, "पर मां तो रोज जाती हैं. दीवाली तो रोज नहीं होती."

सुदर्शन चुप कर गया था. किसकिस बात का उत्तर देता वह? उस ने सोचा, लीपापोती कर के पत्नी की आदतें वह कब तक छिपा सकेगा? बहुत लोग बहुत कुछ कहते हैं. सुदर्शन ने सदा टाला है यही सोच कर कि किरण जैसी भी है, बच्चों को 'हमारी भी एक मां है' का एहसास तो दिलाती है. और फिर सुदर्शन का संस्कारी मन संबंध विच्छेद की स्थिति को कभी गले से नहीं उतार सका था. उस का लालनपालन एक उच्च मध्यवर्गीय परिवार के मर्यादित संस्कारों में हुआ था. इस तथाकथित उच्चवर्गीयता के नाम पर निर्लज्ज आधुनिकता को सहज रूप में लेना उसे नहीं सुहा रहा था, तब भी वह सह रहा था.

पर आखिर वह कब तक सहता? उस की सहनशीलता को किरण उस की कायरता समझने लगी थी, इसी लिए वह घर, पति, बच्चों की अधिकाधिक उपेक्षा करने लगी थी. जब भी सुदर्शन विरोध करता, किरण उस की व्यस्तता की चर्चा कर उस पर ही दोष मढ़ देती थी.

क्रोध व घृणा को मन में दबा कर सुदर्शन उठ खड़ा हुआ था, बच्चों को बहलाने का प्रयास करते वह बोला था, "चलो बच्चो, दीए जलाने की तैयारी करें, तुम्हारी मां तो पता नहीं कब आए."

बच्चे बहल गए थे. तीनों ने थाली में दीप रख कर उन्हें जलाया था और फिर उन्हें घर और आगे के आंगन की मुंडेर पर सजा आए थे.

जब छाया ने पिता से लक्ष्मी पूजन करने के लिए कहा तो सुदर्शन ने हंस कर कहा था, "अरे बिटिया, किसी बेजान तसवीर की पूजा करने से क्या फायदा? मैं तो तेरी पूजा करूंगा. तू ही तो हमारे घर की

लक्ष्मी है." प्रसन्नता से छाया की बांछें
गई थीं.
"मैं लक्ष्मी हूं, तो फिर मुझे चौकी
बैठा कर मेरी पूजा क्यों नहीं करते?"
"तेरी पूजा का तरीका दूसरा है
अपनी लक्ष्मी बिटिया को खूब पढ़ाउ
लिखाऊंगा, बहुत अच्छी प्यारी सी ल
बनाऊंगा, फिर अच्छा सा दूल्हा खोज
तेरे हाथ पीले करूंगा. यही होगी मेरी ल
की पूजा."
"अच्छा, पिताजी, तो मैं भी बड़
कर दुलहन बनूंगी?"
खिलखिला कर सुदर्शन हंसी
लोटपोट हो गया था. श्रीकांत कुछ स
था, कुछ नहीं, पर तनिक ईर्ष्या व खुश
उस ने नन्ही बहन को मुंह चिढ़ा दिया
छाया फौरन जवाब में मजे से फ्राक का
फैला कर पिता की गोद में जा बैठी थी.
देर के लिए बच्चों के प्यार में सुदर्शन
कुछ भूल गया था.
रात देर तक तीनों पटाखों के शो
में मस्त रहे थे. फिर बच्चे पिता के सा
सो गए थे.
किसी ने हिला कर जगाया तो सु
की नींद टूट गई. अनायास दीवार घड़
ओर नजर उठ गई. दो बज चुके थे.
आधा घंटा पहले ही तो मुशकिल से
लगी थी. करवटें बदलता अंगारे
लोटता रहा था वह. और किरण अब
थी. सुदर्शन झटके से उठ बैठा, "तुम
वक्त है भले घर की स्त्रियों के घर
का?"
"ओ प्रियतम, जरा धीरे बोलो,
जाग जाएंगे. पहले इन्हें इन के कमरे
आओ."
सुदर्शन को भी ध्यान आ गय
परंतु घृणा मिश्रित क्रोध ज्वालामु
भीतर ही भीतर खौल रहा था. कि
सामने देख कर वह भड़क गया था. वह
से उतरा और किरण की बांह पकड़ क
बलपूर्वक खींचता हुआ ले गया थ
कमरे से बाहर धकेल दिया था.

'सुदर्शन," हतप्रभ हो किरण क्रोध में थी.

'चुपचाप यहां से चली जाओ. बच्चे ाए तो सीधे सड़क पर ले जा कर फेंक ा तुम्हें."

रण को भी तनिक अपराध बोध था. क्रोधावस्था में ही सफाई देती हुई ाई थी, "शोर मैं मचा रही हूं या तुम? लौटने के लिए कोई सवारी नहीं मिली क्या करती? खेल तो कभी का खत्म हो था. क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि मैं ों से कितना डरती हूं? तुम क्यों नहीं ाए लेने?"

"जाते समय डर नहीं लगा तुम्हें? और ब तुम डर मिटाने के लिए पी कर आई " कटुता से सुदर्शन ने पूछा था. अपने का द्वार उस ने बंद कर दिया था.

किरण सिटपिटा गई थी. सुदर्शन को से दांत भींचे अपनी ओर बढ़ते देख ा कर बोली थी, "मैं...मैं झूठ नहीं बोल उन लोगों ने जबरदस्ती...मैं ने बहुत किया था. मैं आना चाहती पर...पर वे लोग...कहने लगे..."

"भाड़ में झोंको पति और बच्चों को जुआ खेलो हमारे साथ. शराब पियो, ओ. साकी बनो उन बदमाशों के लिए." में पागल सुदर्शन अपना आपा खो बैठा स का हाथ उठ गया था. फिर किरण से पीछे रहती. देर तक दोनों में वाग्युद्ध रहा था. किस ने क्या कहा, किसी को में नहीं आ रहा था. दोनों भूल गए थे उन जैसे सभ्य, शिक्षित, संभ्रांत, ठत लोगों को ऐसी हरकतें करना नहीं देता.

सुदर्शन ने हाथ पहली बार उठाया था. वाग्युद्ध आए दिन होता रहता था. यतों का सिलसिला किरण ने ही किया था. सुदर्शन क्यों अपने काम के तना दीवाना है? जबजब किरण ने ा साथ चाहा, सुदर्शन रोगियों के लिए ध रहा, पत्नी के लिए नहीं.



एतबार

सजा के अपनी ही आंखें
हजार चेहरों पर,
किया है मैं ने सदा
एतबार चेहरों पर.
—कतील शिफाई

बढ़ती संपन्नता के साथ किरण को घरेलू कामकाज कुछ रहा नहीं था. उस ने बाहर अपना मनोरंजन ढूंढ़ना आरंभ कर दिया था. शौकीन तबीयत वह पहले से ही थी. मन लगाने के लिए उस ने अपनी रुचि व स्वभाव के अनुसार साधन ढूंढ़ा था ताश के रूप में. शरीफ घर की गृहिणी को शोभा दे या स्त्री का मान बढ़ाए, ऐसा कोई भला सा शौक उस की पसंद के दायरे में नहीं आता था. और इन गलत रुचियों ने उसे तेजी से अपनी ओर खींचा था. ताश का शौक जुआ बन गया था. हलकी शराब भी सोसायटी की जरूरत समझ अपना ली थी. अब वही व्हिस्की के रूप में जरूरत बन गई थी. अलबत्ता पति व परपुरुष का अंतर किरण की दृष्टि में अभी तक बना हुआ था.

इस प्रकार सुदर्शन उस के लिए समाज में संभ्रांत महिला कहलाने एवं शारीरिक तृप्ति का साधन मात्र रह गया था.

बच्चों के बाल मन को अच्छे संस्कार देना तथा उन की बुद्धि का ठीक दिशा में विकास करना भी कोई कर्तव्य है, किरण जानती ही नहीं थी तो निभाती क्या?

अब ये सब शिकायतें सुदर्शन को थीं लेकिन किरण की दृष्टि में उस की अपनी

शिकायत इतनी उचित न्यायपूर्ण व महत्त्वपूर्ण थी कि सुदर्शन की हर बात उसे व्यर्थ बकवास लगती. दीवाली की वह रात इसी स्थिति की इन्तहा थी.

अगले दिन तक सुदर्शन निर्णय कर चुका था. बच्चों के तैयार हो कर खेलने जाने तक किरण बाहर नहीं आई थी. दोपहर में जब वह सो कर उठी, कई मिलनेजुलने वाले आ कर दीपावली व नववर्ष की शुभकामनाएं लेदे कर आजा चुके थे. खिन्न हृदय सुदर्शन मुख पर झूठी मुसकान ओढ़े बहाना बनाता रहा, चूंकि सिद्धांततः वह अपने परिवार की स्वयं चिकित्सा नहीं करता, इसलिए किरण डाक्टर के पास गई है बाहर.

सुदर्शन बाहर जाने की सोच रहा था कि किरण ने आ कर अपना पर्स मेज पर उलट दिया. काफी रुपए थे. सुदर्शन ने घूर कर पत्नी को देखा. तब शुष्क स्वर में किरण बोली, "गिन लो, हारी नहीं थी मैं. जितने तुम्हारी अलमारी से ले गई थी उस से ज्यादा लाई हूं. हमेशा हारने और पैसे गंवाने का ताना देते हो. अब कहना मत..."

सुदर्शन के लिए और सुनना असह्य हो गया था. हाथ के एक ही झपाटे से सारे रुपए फेंकते हुए सुदर्शन ने घृणापूर्वक तीखे स्वर में कहा था, "दफा हो जाओ यहां से. मेरे हाथपैरों को जंग नहीं लग गया है जो बीवी की हराम की कमाई खाऊं."

किरण की भृकुटी तन गई थी. फर्श पर बिखरे हुए नोटों को समेटते हुए वह चिल्लाई थी, "इन्हें क्यों फेंक रहे हो? तुम्हारा कौन सा नुकसान हुआ है जो..."

"नुकसान!" सुदर्शन दुख मिश्रित व्यंग्य से हंसा था, "मेरी पत्नी, मेरे घर की इज्जत, त्योहार के दिन पराए लोगों के बीच जुआ खेलती रही, शराब पीती रही, मेरे बच्चे मां के बिना सूने से उदास बैठे रोते रहे और तुम इन रुपयों से मेरा यह नुकसान पूरा कर रही हो? क्या इसी लिए शादी की थी तुम से कि तुम अपना हर कर्तव्य, जिम्मेदारियां भूल कर जुआ खेलती रहो?"

"तुम्हारी वजह से. तुम सारासारा दिन बाहर रहो तो कोई बात नहीं? मैं जरा घूम आऊं तो पहाड़ टूट पड़ता है. आज भी मुझे इसी लिए गुस्सा आ गया था तुम पर. तुम क्यों गए थे बाहर? क्यों वक्त पर नहीं लौटे?"

"बंद करो बकवास," सुदर्शन उखड़ गया था, "बहुत सुन चुका हूं तुम्हारा यह बहाना. जुए की तुलना तुम किसी इनसान की जिंदगी से करती हो? कौन मर्द काम नहीं करता? मैं निठल्ला बैठा तुम्हारी शक्ल देखता रहता तो तुम्हें वैसे शिकायत होती. मेरे काम करते रहने से जो नाम, मान, प्रतिष्ठा, पैसा मिलता है, उसे बांटना कैसा भला लगता है तुम्हें? किरण, सच तो यह है, तुम ने स्वयं को बहलाने व दूसरों की सहानुभूति बटोरने के लिए, अपने कामों का औचित्य बलात सिद्ध करने के लिए कुछ बहाने गढ़ लिए हैं, ताकि अपराध भावना व ग्लानि तुम्हें सताए नहीं..."

"ये बहाने नहीं हैं," किरण बीच में चिल्लाई थी.

"खामोश!" सुदर्शन ने उसे घुड़क दिया था, "मैं आज निर्णय कर चुका हूं. सुन लो और फिर जो तुम्हारे मन में आए करना." सुदर्शन एक क्षण को रुक गया था. फिर बोला था, "किरण, हमारेतुम्हारे रास्ते एक नहीं हो सकते. मैं बहुत प्रतीक्षा कर चुका हूं. सोचा था, कभी तो तुम सुधरोगी. अब सब्र नहीं रहा मुझ में. अब हम साथ नहीं रह सकते. जो आजादी तुम चाहती हो, उसे पाने की एक ही सूरत है—तलाक."

एकबारगी किरण हतप्रभ रह गई थी. फिर उस के चेहरे पर एकाएक असीम प्रसन्नता उभर आई थी, "तो तुम ने निर्णय कर लिया है?"

"हां, मेरी ओर से नए वर्ष का यही उपहार समझना. शायद तुम इसे मेरी सच्ची मुबारकबाद भी मानोगी."

"बेशक, क्यों नहीं? बहुतबहुत धन्यवाद," कह कर उस ने लंबी सांस ली



थी, "अब मैं सचमुच सुकून और खुशी महसूस कर रही हूं."

सुदर्शन तनिक पीड़ा मिश्रित दृष्टि से उसे देखता रहा था. उस ने निर्णय तो ले लिया था, परंतु अंतर्मन में कहीं अफसोस अब भी था—यह इस बार कैसी दीवाली आई?

आपसी सहमति' के आधार पर कुछ समय बाद ही उन में तलाक हो गया था. तब तक किरण को उस के तथाकथित मित्रों ने खासा प्रोत्साहित किया था, लेकिन उस के बाद स्थिति बदलने लगी थी.

सुदर्शन जैसे जानेमाने डाक्टर की पत्नी होना स्वयं एक प्रतिष्ठा की बात थी. किंतु तलाकशुदा अकेली स्त्री, वह भी शराब और जुए की शौकीन. इस भारतीय सामाजिक परिवेश में ये सब बातें अब किरण को एक सस्ती, आसानी से उपलब्ध महिला बना रहे थे.

सुदर्शन उस के लिए एक लौह आवरण सदृश था जिस के पीछे मनचाहे तरीके से सुरक्षित रह कर वह स्वयं इस पर आघात भी कर सकती थी और बाहरी प्रहारों से बच भी सकती थी. आवरण हटते ही सामाजिक प्रहार सहना उसे भारी पड़ने लगा था.

अपने और पराए मर्द का भेद किरण भूल जाती तो कुछ समय के लिए किरण का इस समाज में खुल कर स्वागत होता, किंतु किरण शीघ्र ही इस के खोखलेपन को अनुभव करने लगी थी.

मायके में भी उस का वैसा मान नहीं रहा था. मातापिता तो फिर भी अपनी इकलौती, लाड़ली पुत्री को सांत्वना देते, परंतु भाईभाभियों को उस की फजूलखर्ची अखरने लगी थी. जो किरण पति की रोकटोक नहीं सुन सकती थी, वह भाईभाभियों की कैसे सुन लेती? सुदर्शन ने गुजारे के लिए अच्छीखासी रकम देना स्वीकार किया था, किंतु किरण की फजूलखर्चियों के समक्ष तो वह ऊंट के मुंह में



उदासी

थकीथकी सी फजाएं
बुझेबुझे तारे,
बड़ी उदास घड़ी है
जरा ठहर जाओ.

—सैफुद्दीन सैफ

जीरे जैसी थी, तिस पर उसे छाया का खर्च भी उठाना पड़ रहा था.

किरण को छाया का जरा भी खयाल नहीं था. उपेक्षित छाया अब घर में तो सदैव गुमसुम रहती, पर बाहर खुश रहती. स्कूल से लौट कर फौरन खेलने बाहर निकल जाती. पढ़ाई की तरफ उस का ध्यान नहीं था. न किसी को इस बात की परवाह ही थी कि वह पढ़ती भी है या नहीं. उस का दिनोंदिन जिद्दी बनते जाना सब को अखरने लगा था. सच तो यह है कि उन के रूखे व्यवहार ने ही छाया को अधिकाधिक जिद्दी बना दिया था. साथी बच्चों के प्रश्नों व तानों से तंग आ कर वह स्थिति का डट कर सामना करना सीख गई थी.

सुदर्शन व श्रीकांत ने यों स्थिति को स्वीकार कर लिया था, पर किसी महिला के बिना घर अटपटा लगता था. सुदर्शन तो फिर भी अपने व्यस्त जीवन में खो जाता था, किंतु श्रीकांत या तो पिता की प्रतीक्षा करता रहता था या पुस्तकों में खोया रहता था. वह स्वभाव से गंभीर हो चला था. छाया बाह्यमुखी हो गई थी तो श्रीकांत अंतर्मुखी. मातापिता, मित्र सब के प्रति उस की भावनाओं में अजीब रिक्तता आ गई थी, विशेष कर मां के प्रति. कोई भी स्थिति उसे


NIVEA
प्रतिदिन नीविया क्रीम लगाइए...
त्वचा को स्वस्थ और सुन्दर बनाइए
NIVEA
Liquid
NIVEA
creme
और नीविया लिक्विड से
त्वचा को नम और स्वच्छ बनाइए
सुन्दर...सुन्दर सलोनी त्वचा के लिए नीविया

सहज ही विचलित नहीं करती थी.

मां व छाया कभीकभार उस से स्कूल में मिलने आते थे, पर इस से उसे कोई खुशी नहीं होती थी. बस, मिल लेता था. मां का उसे लिपटाना, कभी आंखें छलक आना, वस्त्र, खिलौने, पुस्तकें देना सब कुछ अभिनय सा लगता था उसे. वह निर्लिप्त भाव से सब स्वीकार कर लेता था.

इस पर भी बहन व पिता के प्रति उसे तनिक लगाव था. कारण था सुदर्शन. घर लौट कर वह पूरी तरह पुत्र में खोया रहता. साथ खानापीना, उठनाबैठना, खेलना, पढ़ाना, जो भी जिस समय संभव हो. यह बात श्रीकांत को भली लगती थी, लेकिन पिता रहते ही कितनी देर थे?

पुत्र का गंभीर, अंतर्मुखी होता स्वभाव सुदर्शन से छिपा नहीं रहा था. तब भी बेबस से देखते रहने के सिवा और कोई चारा भी नहीं था. यथासंभव वह बेटे को बहलाने का प्रयत्न करता रहता. इन्हीं प्रयत्नों का परिणाम था कि पितापुत्र एकदूसरे के काफी निकट आ गए थे.

दिनदिन सरकते दो वर्ष बीत गए थे. उस दिन फिर दीवाली थी. पिछली बार भी स्मृति ने हलका सा झटका दिया था. किरण ने पहले भी श्रीकांत व सुदर्शन की अनुपस्थिति अनुभव की थी, पर तब तलाक हुए पांचछः महीने ही हुए थे. किरण ने सिर झटक कर मानो स्मृतियों को मुंह चिढ़ाया था. अलबत्ता छाया उदास व अन्यमनस्क रही थी.

पर इस बार? अब तक तो किरण स्वयं मुरझाने लगी थी. उस का मोह भंग होने लगा था. किसी में भी तो उस के प्रति वह उत्साह नहीं रहा था जिस की ललक में उस ने अपना घर उजाड़ डाला था. जो उत्साह दिखाता भी, वह उस के सुंदर शरीर के प्रति. इसे किरण अपना अपमान समझती थी.

आदतन वह अब भी जुआ खेलती थी. कुंठा मिटाने के लिए शराब भी बहुत पीने लगी थी. महफिलें अब भी लगती थीं, [illegible] वह उन में अब पहले जैसी लोकप्रिय नहीं रही थी. अपनी बढ़ती कुंठाओं के कारण किरण स्वयं ही उन से धीरेधीरे कटने लगी थी.

इस का कुछ अंशों में लाभ छाया को मिलने लगा था. किरण को वही अपनी संगीसाथी, मनबहलाव का साधन समझ आती, इस से छाया भी कुछ प्रसन्न रहने लगी थी.

उस दिन छाया यद्यपि बाहर खेल रही थी, पर उसे बारबार अपने पिता व भैया की याद आ रही थी. किरण भी बेहद गुमसुम दिखाई दे रही थी. भाईभाभियों के बच्चे सभी दीपावली के उत्साह में थे. घर में खूब चहलपहल थी.

किरण की किसी को चिंता नहीं थी. उस से कोई कुछ नहीं पूछ रहा था. कुछ करने को नहीं कह रहा था. वह बैठक में खामोश बैठी थी और उस समय को याद कर रही थी, जब उस की नईनई शादी हुई थी. उन दिनों सुदर्शन इतना बड़ा सर्जन नहीं था.

घर में सभी आवश्यक सुखसुविधाएं थीं, फिर भी किरण को बहुतकुछ स्वयं करना पड़ता था. तब सास भी थीं. सासबहू मिल कर तरहतरह के पकवान तैयार करती थीं. अभी तीनचार वर्ष पहले तक ऐसा ही होता आया था. बाद में संपन्नता बढ़ने पर किरण स्वयं न कर के बहुत सा काम नौकरों से करवाती थी. पर सब कुछ नौकरों पर छोड़ कर निश्चित तो नहीं हुआ जा सकता था. कैसे समय गुजरता था, पता ही नहीं चलता था.

फिर...फिर इस कमबख्त ताश की आदत ने सब सर्वनाश कर दिया. 'सोसायटी में अपनी स्थिति को बनाए रखना है' एक अंधा विचार मस्तिष्क को ऐसा जकड़ गया था कि शेष सब कर्तव्य, कर्म स्वाहा हो गए थे.

और उस दीवाली पर तो हद ही हो गई थी. अब किरण स्वयं को कोसती, सारी मूर्खता उसी की थी. क्यों एक मूर्खतापूर्ण



बंद बर्तन के अंदर उबाल बिंदु से भी ५०° सें. अधिक ताप पर किसी प्रेशर कुकर की सुरक्षा का विश्वास आपको कौन दिला सकता है?
हम दिलाते हैं इसका विश्वास!
ताप जब उबाल बिंदु से ऊपर चढ़ जाता है तो कई बातें हो सकती हैं। दिमाग का पारा बढ़ सकता है। प्रेशर कुकर फट सकता है। चोट लग सकती है। इन स्थितियों से बचने का एकमात्र उपाय है—प्रेशर कुकर खरीदने से पहले विश्वसनीय नाम की खातिरी।
जैसे कि बजाज।
भारत में बजाज ही उन कुछ नामों में से है जिनके पास २५ से भी अधिक वर्षों का अनुभव है। हर बजाज उत्पादन में इस अनुभव का प्रमाण आपको मिलेगा। घरेलू साधनों की हमारी सबसे विस्तृत श्रेणी में भी यह उत्कृष्टता मौजूद है। और फिर देश भर में हमारी सत्रह शाखाओं व ३५०० विक्रेताओं के ज़रिए बिक्री के बाद की तत्पर सेवा भी उपलब्ध है।
bajaj
यही कारण है कि घरेलू साधनों की उत्कृष्टता, मजबूती व सुरक्षा के लिए एक ही प्रमाण पत्र काफी है—बजाज।
bajaj
आज ही खरीदें-बजाज ही खरीदें
बजाज प्रेशर कुकर, बजाज आयरन, बजाज हीटर, बजाज फैन, बजाज ओवन, बजाज गैस स्टोव, बजाज वाटर फि

अंधविश्वास के पीछे भागी वह? दीवाली के दिन जुआ खेल कर जीतने से सारे वर्ष धन की वर्षा होती है. ऐसी बेहूदा बात उस के मन में क्यों आई, परंतु इस के पीछे तो उस का सर्वस्व चला गया. घर, पति, मानप्रतिष्ठा, नाम, पहचान, बच्चे, पैसा और यहां तक कि वह महफिलें भी.

हां, मायके वाले मदद करते हैं. सुदर्शन भी गुजारा देता है. छाया की अधिकांश आवश्यकताएं तो अब भी वही पूरी करता है. फिर भी उस पैसे पर उसे वैसा अधिकार अनुभव नहीं होता, जैसा पति से ले कर होता था.

अब कहां हैं वे अधिकार? मातापिता तक से कुछ ले कर लज्जा का अनुभव होता है. नौकरी कोई करने नहीं देता. अन्य कुछ कर नहीं सकती वह.

सोचतेसोचते किरण कब अपने कमरे में आ गई, उसे पता ही नहीं चला था. तभी वह छोटी भाभी की आवाज सुन कर चौंक उठी थी. वह द्वार पर खड़ी कह रही थी, "किरण बहन, तैयार हो जाओ न. सांझ ढल रही है. दीपमाला का समय हो गया है." फिर कुछ क्षण रुक कर बोली थी, "अरे, आप ऐसे गुमसुम क्यों बैठी हैं? त्योहार के दिन ऐसे रहना सुहागिन के लिए अपशकुन होता है."

किरण ने फीकी मुसकराहट से कहा था, "अब मैं सुहागिन कहां हूं, भाभी? मैं तो..." भाभी एक क्षण चुप रह गई थी. फिर बोली थी, "तलाक तो सिर्फ कंवर साहब से हुआ है, बच्चों से तो नहीं? उन्हीं का खयाल कर लो."

जाने क्यों किरण की आंखें छलछला आई थीं. भाभी साहस कर भीतर आ कर बोली थी, "भूल तो आप ने ही की थी, किरण बहन. अब पछताने से क्या लाभ? एक आदमी से पीछा छुड़ाया जा सकता है. पर किसकिस से किनारा करेंगी? बच्चों से? मधुर स्मृतियों से? पूरी जिंदगी का एकएक पल तो बांट लेती हैं हम पत्नियां, कोरी जिद

ा कर अपनी घरगृहस्थी से दूर भागना, ःकार तो सब चाहना, पर कर्तव्य, ेदारियां अपने साथी के लिए छोड़ देना का न्याय है? उस दिन आप घर से र न जातीं तो क्या बिगड़ जाता आप गृहलक्ष्मी हो कर अपना भरापूरा ंसार छोड़ कर किस लक्ष्मी की तलाश ागी थीं आप?"

वह कुछ और कहती कि मां की ाज सुनाई दी थी, "बहू, वक्त बीता जा है और तुम लोग हो कि..."

"आई, मांजी," उत्तर देती छोटी ी तेजी से बाहर निकल गई थी.

किरण सुन्न मस्तिष्क देखती रह गई कितना कुछ कह गई थी भाभी. सुदर्शन तनिक सा कहा मिर्ची लगता था, पर जैसी स्थिति तो वह स्वयं लाई है.

क्या करे वह? किरण सोच भी नहीं थी कि मां ने पुकारा था, "किरण बेटी, र हुई कि नहीं? छाया को भी ले आ."

किरण हड़बड़ा गई थी. तभी याद , भाभी ने कहा था, 'त्योहार के दिन रहना सुहागिन के लिए अपशकुन .' उसे अब शकुनअपशकुन की परवाह थी, पर उस ने सोचा, यह समय किसी समझाने, जिद करने का नहीं है, न उस यह अधिकार ही है कि वह किसी की ायां छीने. उसे मां, भाभी की घरेलू स्था को ही स्वीकारना होगा जो जैसे खुश रहे.

जल्दीजल्दी तैयार हो कर वह बाहर ल आई. भला सा लगा था सब का एकत्र , ये प्रफुल्लित मुख. किरण देखती रही भाव से. भाभियों ने अपना घरआंगन ाला से जगमगा दिया था. कैसे भले हैं टिमटिमाते दीपक. कभीकभी तेज ी हुई हवा से लड़ते हुए. कोई हारता है ोई हिम्मत कर के डटा रहता है.

एक मूर्खतापूर्ण नशे में मस्त उस ने ध्यान ही नहीं दिया था कि उस के अपने दो सुंदर दीपक भी उस दिन दीवाली म के बगैर बुझे रह गए होंगे. वह नशा उन्हें अलग भी तो कर गया है. क्यों पागल ह गई थी वह? क्यों उन दीपकों को रोशन करने का खयाल ही नहीं आया था उसे कभी?

ऐसा कर पाती तो उन की खिलखिलाहट में हर दिन त्योहार होता, हर रात दीवाली. सहसा उस की तंद्रा टूटी. छाया ने उसे हिलाया, "मां." किरण ने उस की ओर देखा. छाया के मुख पर वह उल्लास और निश्चितता नहीं थी जो भैया के बच्चों के मुख पर थी. फिर भी वह बच्ची थी. मन बहला रही थी. किरण ने उसे उठा कर पास के चबूतरे पर खड़ा कर दिया. छाया ने पूछा, "मां, आज पिताजी और भैया ने भी दीप जलाए होंगे न?"

"हूं...हां, बेटी." किरण एकाएक अनमनी हो गई.

उत्तर मिलने पर छाया उत्साहित हो कर बोली, "मां, उस बार जब तुम दीवाली पर ताश खेलने चली गई थीं न, तब पिताजी ने मुझ से कहा था, उन के घर की लक्ष्मी मैं हूं. वह मुझे खूब पढ़ाएंगे और फिर एक अच्छी लड़की बना कर मेरे हाथ पीले कर देंगे. उन्होंने कहा था यही उन की लक्ष्मी पूजा होगी."

छाया के स्वर में इतना बचपना व उत्साह था कि किरण अपनी हंसी न रोक पाई. बेटी को चूमते हुए उस ने उस का मन बहलाया, "तुम्हारे पिताजी ठीक कहते थे, बेटी, तुम अच्छी लड़की ही बनना."

"अपनेआप कैसे बनूंगी? पिताजी बनाएंगे न मुझे," फिर वह सोच में पड़ गई, "पर पिताजी कैसे बनाएंगे? वह तो हमारे साथ रहते ही नहीं?"

किरण का हृदय जैसे किसी ने मुट्ठी में भींच लिया. उस की मूर्खता क्या सचमुच उस की बच्ची का भविष्य नष्ट कर देगी? संरक्षण, अपनत्व, अधिकार, सुरक्षा का जो एहसास मातापिता और वह भी सभ्य, संभ्रांत, शालीन मातापिता के साथ रहते हुए हो सकता है, वह क्या ननिहाल में मात्र

और सहानुभूति पा कर हो सकेगा? तक आवश्यकताएं पूरी करना मात्र ही नपोषण है क्या? क्या वह अपने बच्चों असुरक्षा ग्रस्त, कुंठित बनाना चाहती है? , वह उन्हें सुसंस्कारयुक्त, विचारवान ना चाहती है.

हठ का अंधकार छंट गया. विवेक के क के प्रकाश में किरण के अंतर्मन में नी:त्व व मातृत्व के कर्तव्य व उत्तरदायित्व ष्ट हो गए. वह भी मन पर बोझ स्वरूप ीं, अंतःकरण तक उल्लास की किरणें लोकित करते हुए.

किरण ने झपट कर छाया को गोद में या और फुरती से बाहर निकल गई. राह मां दिखाई दीं, "तेरा फोन आया है, रण. कोई सरला है. तुझे बुलाया..." तेकहते वह रुक गईं. बेटी के मुख पर सिरे से उल्लास उदित होते देख वह स्मत रह गई थीं.

क्षण भर रुक कर छलछलाते नेत्रों से ते हुए किरण ने कहा, "मां, मैं अपने घर रही हूं."

मां कुछ नहीं समझीं. किरण कह कर चुकी थीं. बाहर कार खड़ी थी. स्वयं रण की थी सुदर्शन ने दी थी.

र पहुंचतेपहुंचते साहस छूटने लगा था. क्या सुदर्शन मान जाएगा? बाकायदा क तक तो हो चुका है, पर घर में सामने वते ही धक्का सा लगा. अभी तक माला नहीं हुई? इसी विचार ने साहस ा.

तभी छाया कूद कर गाड़ी से उतरी "पिताजी, भैया" पुकारती हुई भीतर ी.

सुदर्शन व श्रीकांत छाया की आवाज ी ही लपक कर बाहर आए. दोनों माला की ही तैयारी में लगे थे. बेटी को सुदर्शन ने हर्षातिरेक में उसे लिपटा ा.

कुछ क्षणों बाद उस की दृष्टि किरण पड़ी, किरण...और यहां? किरण झिझक रही थी. श्रीकांत एकटक उसे देख रहा था. सुदर्शन निश्चय नहीं कर पाया कि क्या करे? लौटा दे? डांटे? या...

किरण ने अवसर ही नहीं दिया. आंचल उंगलियों पर लपेटती वह झिझकती हुई भीतर आ गई. तभी दीपों से भरी थाली पर दृष्टि पड़ी. दीपों में बत्तियां लगी हुई थीं. तेल पास ही रखा था. निश्चय कर, आंचल सिर पर ले वह जा कर चुपचाप तेल दीयों में भरने लगी.

सुदर्शन देखता रहा. भावावेश में वह कुछ बोल नहीं पाया था. श्रीकांत की आंखों में अजीब सी चमक उभर आई थी. मन में वर्षों से छाई रिक्तता अनायास मिटती जा रही थी.

तैयारी कर के दृष्टि चुराती किरण ने धीमे से पुकारा, "श्री...छाया, आओ, दीए जलाएं."

दोनों बच्चों ने आशापूर्ण नेत्रों से पिता की ओर देखा. सुदर्शन उन्हें निराश नहीं कर सका. उस का अपना मन उल्लसित हो चला था. किरण को गृहिणी के चिरप्रतीक्षित रूप में देखने को आंखें तरस गई थीं.

संकेत पाते ही बच्चे किलकते हुए आसपास जुट गए. दीप जला कर किरण पलटी और मिठाई का डब्बा उठा कर उस में से बरफी का एक टुकड़ा उठा कर श्रीकांत के मुंह में डाल दिया. श्रीकांत एकदम जोरों से रोते हुए मां से लिपट गया. किरण की आंखें भी छलक आईं. वह भरी आवाज में बोली, "मत रो, बेटे. मुझे क्षमा कर दो. मैं पागल हो गई थी. अपनी दुनिया को भूल गई थी..."

किरण ने क्षण भर सुदर्शन को देखा. सुदर्शन को लगा, किरण ने जैसे यह सब उस से कहा हो. कैसे क्षमा नहीं कर पाता वह? और वर्षों बाद इस बार दीवाली सचमुच पूरे उत्साह के साथ मनाई गई. •

स्त्री

स्त्री के सम्मान से सभ्यता का परिचय मिलता है. —करटिस

हमारी बेड़ियां

मारे पड़ोस में एक मराठी परिवार रहता है. मराठियों में यह प्रथा है कि केलड़की की शादी होती है तो मेहमान ों के सिर आपस में लड़ाते हैं.

उन के यहां जब लड़के की शादी हुई तो ीब सौ मेहमान आए. उन्होंने बारीबारी ड़केलड़की का सिर उड़ाया जिस से दोनों सिर इतना सूज गया कि महीने तक दर्द ा रहा. —दीपककुमार अग्रवाल

*

मारे यहां एक जाति में यह प्रथा है कि जब दूल्हा घोड़ी पर बैठ कर जाता है तो पक्ष वाले कुछ ऐसी हरकतें करते हैं कि ड़ी हिनहिनाए और उछले ताकि दूल्हे को शानी उठानी पड़े.



हाल ही में एक लड़की की शादी में बरात आई तो प्रथा के अनुसार किसी ने रत कर दी जिस से घोड़ी खूब जोर से ली और दूल्हा अपना संतुलन खो बैठा घोड़ी के पैरों के नीचे आ गया.

दूल्हे को हस्पताल ले जाया गया. वहां टर ने कहा कि उस का एक पैर काटना ा. इस प्रकार एक कुप्रथा के कारण एक मी को अपना पैर गंवाना पड़ गया.

—पंकजकुमार 'कमल'

*

रे एक मित्र का कहना है कि मंगलवार को मां के पास नहीं जाना चाहिए.

एक बार गांव से उस के पास तार कि उस की मां सख्त बीमार है. तार सोमवार को आया था. वह मेरे पास आया. मैं ने उस से कहा, "अगर पैसे न हों तो ले लो और अभी चले जाओ."

वह बोला, "नहीं, यार, आज जाऊंगा तो मंगलवार को पहुंचूंगा और मैं मंगलवार को मां के पास नहीं जाना चाहता. कल जाऊंगा और बुधवार को पहुंच जाऊंगा." मेरे लाख कहने पर भी वह नहीं माना. वह मंगलवार को ही गया.

दो दिन बाद मेरे पास तार आया कि उस की मां मंगलवार को मर गई.

—मोहनसिंह बिष्ट

*

पिछली गरमियों में हम टूरिस्ट बस से भारतभ्रमण पर गए. हमारी बस में एक पतिपुत्री और उन की एक वर्ष की बच्ची भी थी, जो बीमार थी. उसे पहले ही ग्लूकोस चढ़ चुका था, फिर भी वे उसे अपने साथ ले आए थे. मद्रास में उस बच्ची की हालत बहुत खराब हो गई. वहां उसे दो बोतलें ग्लूकोस चढ़ाया गया. रामेश्वरम पहुंचने पर उस के मांबाप ने स्वयं तो समुद्र में स्नान किया ही, उस बीमार बच्ची को भी नहला दिया जिस से उस की हालत और भी खराब हो गई.

रामेश्वरम से बाहर निकलते ही उस ने दम तोड़ दिया. पर सभी लोग और उस बच्ची के मांबाप भी खुश हो रहे थे कि वह 21 कुंडों में स्नान कर के पवित्र हो गई और उसे संसार से मुक्ति मिल गई. —वंदना

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



दीवाली पर दुलहन सा आप का घर

इस बार दीवाली पर अपने घर की व्यवस्थित ढंग से सफाई कर के सुंदर कलाकृतियों, मोहक पुष्पों और रंगोली आदि से उस की सज्जा कीजिए. फिर देखिए, कैसा दुलहन सा दमकता है आप का घर!

लेख • गीता वत्स

यों तो हम रोज ही घर की सफाई करते हैं, परंतु दीवाली के आगमन से पूर्व इस पावन पर्व का स्वागत करने के लिए की जाने वाली सफाई व सजावट का एक अनूठा ही महत्त्व है. प्रतिदिन हम घर की भली भांति सफाई नहीं कर पाते, इसलिए बरसात के कारण फैली

ई गंदगी तथा कीटाणुओं से छुटकारा पाने लिए दीवाली से पहले घर की अच्छी रह सफाई की जानी चाहिए.

अब प्रश्न यह उठता है कि सफाई किस कार की जाए ताकि यह व्यवस्थित ढंग से जाए तथा अधिक परेशानी भी न हो. वाली से एक महीना पहले ही सफाई का र्य प्रारंभ कर देना चाहिए जिस से नियोजित व व्यवस्थित ढंग से काम पूरा जाए. सफाई का कार्य प्रारंभ करने से पूर्व ह बात अवश्य निश्चित कर लें कि आप कसकिस स्थान की तथा किस प्रकार की फाई करना चाहती हैं.

अपने बजट को ध्यान में रखते हुए यह चार कर लें कि क्या आप केवल झाड़पोंछ करेंगी या रंगरोगन ी करवाएंगी. पुराने रदे ही धो कर प्रयोग करेंगी या नए बनवाएंगी रनीचर की किस प्रकार ी सफाई करेंगी.

आइए, इस कार्य में म आप को कुछ जरूरी तों की जानकारी दें.

दीवारों व छतों की फाई: प्रतिदिन की जाने ली सफाई में हम दीवारों र छतों की सफाई को म महत्त्व दे पाते हैं, सलिए दीवाली से पूर्व न की भली भांति सफाई ी जानी चाहिए. दीवारों सभी तस्वीरें तथा लाकृतियां आदि उतार र झाड़ लें तथा सुरक्षित ान पर रख लें कि उन का फिर से प्रयोग किया जा सके. दीवारों व छतों पर सफेदी व रंगरोगन करवाना हो या नहीं, पर इन्हें सूखे कपड़े आदि से झाड़ना बहुत जरूरी है. इस से इन पर चिपकी हुई धूल व जाले उतर जाएंगे. किसी लंबे डंडे के साथ ब्रश या कपड़ा बांध कर दीवारों आदि को भली भांति झाड़ लें.

यदि आप इन पर सफेदी व रंगरोगन भी करवाना चाहती हैं तो दीवारों को सफेदी कराए जाने लायक अवश्य बना लें. दीवारों से रगड़रगड़ कर पुरानी सफेदी की परतें उतार दें अन्यथा दीवारों पर बढ़िया रंगत नहीं आएगी. पुरानी पपड़ी उतार कर प्लास्टर आफ पेरिस से दीवार एकसार कर लें.



रंगाई व पुताई कराते समय आप निश्चय ही यह चाहेंगी कि वह टिकाऊ तथा शानदार हो, इसलिए सफेदी कराते समय आप उस में सरेस व नीला थोथा मिला दें. इस से सफेदी अधिक दिन चलने के साथसाथ कीटाणुनाशक भी बन जाएगी. पुताई के लिए कूची की बजाए ब्रश का प्रयोग करें. इस से काम में अधिक सफाई आएगी.

सफेदी कराने से पूर्व रंगों का उचित चयन अनिवार्य है. रंग मनुष्य के स्वभाव व इच्छा प्रकट करते हैं, इसलिए इन का चयन बड़ी ही सूझबूझ से करना चाहिए ताकि आप का परिश्रम बेकार न चला जाए. दीवार, छत, फर्श तथा फरनीचर किसी भी स्थान के ये मुख्य चार भाग होते हैं जिन के रंगों में तालमेल होना जरूरी है. बहुत अधिक भड़कीले रंगों का प्रयोग आंखों में चुभता है किंतु यदि केवल हलके रंगों का ही प्रयोग किया जाए तो उस स्थान का आकर्षण कम हो जाता है. इसलिए हलके व गाढ़े दोनों रंगों का उचित सम्मिश्रण होना अनिवार्य है.

रंगों का उचित प्रयोग किसी भी स्थान में अनोखा आकर्षण ला देता है. रंगों के उचित प्रयोग से आप कमरे के आकार में भी भिन्नता दरशा सकती हैं. बहुत छोटे आकार के कमरे में ठंडे व हलके रंगों का प्रयोग करने से कमरा अपने आकार से बड़ा दिखने लगता है. इसी प्रकार बडे आकार के कमरे में गहरे रंगों का प्रयोग करने से कमरे का आकार कुछ कम लगता है.



यदि कमरा बहुत लंबा है तो आप कम चौड़ी दीवारों पर गहरे रंगों का प्रयोग करें. चौकोर कमरे को लंबा दिखाने के लिए कमरे की दो आमनेसामने वाली दीवारों पर गहरे तथा दो पर हलके रंगों का प्रयोग करें. उत्तर दिशा के कमरों में गाढ़े रंग जैसे लाल व पीले उपयुक्त रहते हैं. दक्षिण दिशा के कमरों में ठंडे रंगों का प्रयोग किया जाना चाहिए.

सफेदी कराने से पूर्व कमरे से सारा फरनीचर बाहर निकाल दें ताकि इन पर सफेदी की छीटें न पड़ें.सफेदी कराने के बाद फर्श की शीघ्र व भली भांति सफाई करना अनिवार्य है ताकि सफेदी के दाग आसानी से छूट सकें. यदि पानी निकलने की उचित व्यवस्था हो तो पानी व सींक वाली झाड़ू से रगड़रगड़ कर साफ करें. यदि सफेदी के दागधब्बे पानी से साफ न हों तो मिट्टी का तेल व साबुन प्रयोग करें. फर्श को अच्छी तरह धो कर व पोंछ कर सुखा दें तथा फरनीचर को यथास्थान रख दें.

दीवारों के बाद दरवाजे व खिड़कियों की सफाई की बारी आती है. दरवाजे व खिड़कियों की सफाई में रंगरोगन करवाना मुख्य कार्य है. प्लास्टिक पेंट महंगे तो अवश्य होते हैं, परंतु अधिक दिन चलते हैं. यदि आप पेंट नहीं करवाना चाहतीं तो लकड़ी के दरवाजे व खिड़कियों को सूखे कपड़े आदि से झाड़ कर सरसों के तेल से रगड़ें. इस से वे बिना रोगन कराए ही चमकने लगेंगे. लोहे की खिड़कियों व दरवाजों को थोड़े से गीले कपड़े से साफ करें. यदि खिड़कियों व दरवाजों पर शीशे लगे हैं तो उन्हें भी भली भांति साफ कर लें अन्यथा सफाई अधूरी रह जाएगी.

शीशों को सूखे कपड़े से झाड़ कर साबुन के घोल से रगड़ें तथा साफ पानी से अच्छी तरह धो दें. इन्हें तुरंत अखबार के कागज से रगड़रगड़ कर सुखाएं. गीले शीशों को कभी कपड़े से न पोंछें, क्योंकि कपड़े के तंतु शीशे के साथ चिपक जाते हैं

जिस से शीशे की चमक कम हो जाती है. यदि शीशे पर दागधब्बे लगे हुए हों तो थोड़े से चायपत्ती के पानी के साथ रगड़ें. शीशों को सुखाने के बाद अतिरिक्त चमक देने के लिए इन पर मैथीलेटिड स्पिरिट डाल कर रगड़ें.

दीवारों के साथसाथ बल्ब, ट्यूब व उन के होल्डरों को भी साफ कर लें जिस से वे आकर्षक लगें. बल्ब आदि को होल्डरों से उतार कर सूखे कपड़े से झाड़ लें. यदि जरूरत समझें तो थोड़े से गीले कपड़े से ट्यूब व बल्ब के शीशे पोंछ दें.

परदे: प्रतिदिन परदों की सफाई करना संभव नहीं होता, इसलिए दीवाली से पूर्व उन की स्वच्छता की ओर भी ध्यान दें. यदि परदे धोने के बाद प्रयोग के लायक हों तो उन्हें ही प्रयोग कर लें. परदों को धो कर इस्तिरी कर लें. इस से पुराने परदों में भी चमक आ जाती है, परंतु यदि घर में रंगरोगन करवाने के बाद परदे फीके लग रहे हों तो या तो उन्हें रंगवा लें या अपने बजट के अनुसार वह बनवा लें. वैसे अपनी सूझबूझ से आप चाहें तो अपनी साड़ी या पुरानी चादरों से भी खूबसूरत परदे बना सकती हैं.

फरनीचर: किसी भी स्थान को आकर्षक व लुभावना बनाने में फरनीचर की अहम भूमिका होती है. फरनीचर चाहे सस्ता ही हो, किंतु बेदाग व चमकता हुआ फरनीचर किसी भी स्थान का आकर्षण का केंद्र बन जाता है.

लकड़ी के फरनीचर से काली मैल साफ करने के लिए उसे पोटेशियम परमेगनेट के पतले घोल से रगड़ें. रंगरोगन वाले फरनीचर को साबुन के घोल के मिश्रण से साफ करें. गरम चीज के दाग साफ करने के लिए अलसी का तेल गरम कर के उस में तारपीन का तेल मिला कर मिश्रण बना लें तथा सूती कपड़े से रगड़ें. स्याही के धब्बे नीबू के रस से साफ करें.

लकड़ी के फरनीचर से खरोंच साफ करने के लिए जैतून के तेल व मैथीलेटिड स्पिरिट के घोल से रगड़ें तथा दरारों में

घर की आंतरिक साजसज्जा में केवल चमकता हुआ फरनीचर ही काफी नहीं है, बल्कि उस का सही रखरखाव भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है.

प्राकृतिक मोम भरें. मेज आदि पर पानी के गिलास रखने से अकसर धब्बे पड़ जाते हैं. इन्हें साफ करने के लिए जैतून के तेल में नमक मिला कर रगड़ें. जंग हटाने के लिए इसे नमक के तेजाब के घोल से रगड़ कर साफ करें.

चमड़े वाला फरनीचर सिरके व अलसी के तेल के 1:2 अनुपात वाले मिश्रण से साफ करें. लकड़ी के फरनीचर को चमकाने के लिए पहले सिरके से रगड़ कर मैल साफ करें व पोंछ कर सुखा लें. अब पानी व सरसों का तेल 3:1 के अनुपात में मिला कर फेंट लें. इस में थोड़ी सी स्पिरिट व जैतून का तेल मिला कर पोलिश तैयार कर लें तथा इस से फरनीचर की पोलिश करें.

आंतरिक सज्जा : घर की आंतरिक सज्जा में केवल चमकता हुआ फरनीचर ही काफी नहीं है, बल्कि उस का सही रखरखाव भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है. आप का फरनीचर कितना ही महंगा क्यों न हो, यदि वह व्यवस्थित ढंग से नहीं सजाया गया तो उस का मूल्य कम हो जाएगा. इसलिए फरनीचर जैसा भी हो, उस की सफाई तथा उचित व्यवस्था अनिवार्य है.

फरनीचर हमेशा कमरे के आकार के अनुरूप ही होना चाहिए. इसलिए यदि कमरे का आकार छोटा है तो छोटे आकार के फरनीचर तथा बड़े कमरे में बड़े आकार के फरनीचर का ही प्रयोग करें. ऐसी चीजें रोजरोज खरीदना संभव नहीं है, इसलिए

इसे अच्छी तरह देखभाल कर ही खरीदना चाहिए. यदि फरनीचर का आकार बड़ा है तथा कमरे का छोटा तो कम फरनीचर का ही प्रयोग करें, अन्यथा कमरा अनाकर्षक लगेगा. इसी प्रकार यदि कमरा बड़ा है तो ज्यादा फरनीचर प्रयोग करें.

फरनीचर के सही रखरखाव के साथ दीवारों व छत की सजावट भी महत्त्वपूर्ण है. छत की सजावट के लिए अपने बजट के अनुसार बल्ब होल्डर ला कर सजाएं. इन का आकार भी कमरे के आकार के अनुरूप ही होना चाहिए. दीवारों की सजावट उचित आकार व डिजाइन की तसवीरों तथा सुंदर कलाकृतियों के द्वारा की जा सकती है. इन का चयन इच्छा व रुचि के अनुसार किया जा सकता है.

सजावट के लिए रंगों का चयन

चाहे आप प्राकृतिक दृश्यों की तसवीर सजाएं या पशुपक्षियों की, पर उन का चयन करते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि उन का रंग व चमकदमक कमरे में प्रयोग किए गए फरनीचर व दीवारों आदि के रंगों के साथ मेल खाता हो. इन्हें समूह में सजाने से इन का आकर्षण और भी बढ़ जाता है. लेकिन यदि तसवीरें भिन्नभिन्न आकार या प्रकृति की हैं तो इन्हें कुछ दूरी पर लगाएं. इन्हें दीवार पर उचित ऊंचाई पर ही लगाएं. सामान्यतया पांच फीट की ऊंचाई उचित रहती है, परंतु दीवार की ऊंचाई के अनुसार इस में कमी या वृद्धि की जा सकती है. यदि दीवार की ऊंचाई कम है तो लंबी तसवीरों का प्रयोग करने से दीवार लंबी लगती है. ज्यादा ऊंची दीवार की ऊंचाई में कमी करने के लिए चौड़ी तसवीरों का प्रयोग उचित रहता है.

पुष्प सज्जा : घर की आंतरिक सज्जा में पुष्प सज्जा बहुत जरूरी है. यह व्यक्ति की अपनी रुचि पर निर्भर करता है कि उसे किस प्रकार की पुष्प सज्जा पसंद है. फूलों को घर में कलात्मक ढंग से सुशोभित कर के घर के वातावरण को प्राकृतिक रूप दिया जा सकता है. पुष्प सज्जा कमरे के आकार, स्थान व रंगों के अनुसार ही होनी चाहिए. यदि बड़ी मेज के किनारे पर फूलों को सजा कर रखना हो तो उस का आकार बड़ा होना चाहिए.

कमरे के बीच में रखने के लिए लंबे फूलदान में मध्यम आकार की पुष्पसज्जा हो तो कमरे की खूबसूरती में चार चांद लग जाते हैं. इसी प्रकार कोने की मेज के लिए छोटे आकार की पुष्प सज्जा उचित रहती है.

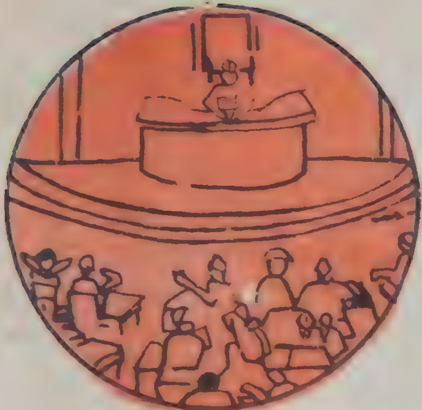
रंगोली : हमारे देश में त्योहारों व अन्य उल्लासपूर्ण पर्वों पर जमीन को सजाना बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है. इस सजावट के पीछे अतिथियों के स्वागत की भावना छिपी हुई है. पहले बंगाल व दक्षिण भारत में ही इस का प्रचलन था, परंतु आजकल देश के अन्य भागों में भी इस का प्रचलन बढ़ गया है.

रंगोली स्थायी व अस्थायी दो प्रकार की होती हैं. अस्थायी अर्थात सूखी रंगोली गुलाल व सूखे चावलों के आटे से बनाई जाती है, जब कि स्थायी रंगोली का अलंकरण पोस्टर कलर व गीले पदार्थों से किया जाता है.

रंगोली बनाने से पहले स्थान, उस के अनुरूप डिजाइन व रंगों का उचित चयन अनिवार्य है. रंगोली का डिजाइन स्थान के अनुरूप होना चाहिए. सीढ़ियों पर छोटेछोटे फूलपत्तियों के डिजाइन, कमरे के बीच बड़ा सा गोल डिजाइन, मुख्य द्वार पर तिकोन या आधा चक्र का डिजाइन तथा कमरे के कोने में तिकोन डिजाइन अच्छे लगते हैं.

रंगोली का अलंकरण करते समय इस बात का ध्यान रखें कि उस में रंग सफाई से भरे जाएं. पहले चाक से रंगोली बना लें फिर इस में रंग भरें ताकि रंगोली साफ व आकर्षक बने. रंगोली में अतिरिक्त आकर्षण पैदा करने के लिए पास में जलता हुआ दीया भी रखें.

आप भी इस वर्ष दीवाली पर अपने घर को इसी प्रकार सजाएं. फिर देखिए, कैसा दुलहन सा दमकता है आप का घर. •



शून्यकाल का शून्यालाप

इस स्तंभ में कुछ ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जो संसद में पूछे नहीं जाते, पर पूछे जाने चाहिए. यहां प्रस्तुत हैं इस प्रकार के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न और उन के संभावित उत्तर.

विभिन्न दलों के नेताओं को अपनी पार्टी के अस्तित्व का इतना ज्यादा मोह है कि वे एक पार्टी नहीं बनते?

तथा अन्य प्रश्न...

सदस्यः पुराने गठबंधनों की असफलता और जनता पार्टी की सफलता के उदाहरण के बावजूद विपक्षी दल फिर से एक पार्टी की बजाए मोर्चे और गठबंधन के रूप में सामने क्यों आ रहे हैं?

मंत्रीः पार्टी को तोड़ने में थोड़ी ताकत लगानी पड़ती है, मोर्चे और गठबंधन के बंद खोलने में ज्यादा जोर नहीं लगाना पड़ता. फिर इस से सब की पार्टी का अलगअलग अस्तित्व बना रहता है. नया व्यवसाय रास न आए तो पुराना तो कहीं नहीं जाता.

सदस्यः विभिन्न दलों के नेताओं को अपनी पार्टी के अस्तित्व का इतना ज्यादा मोह क्यों है कि वे एक पार्टी नहीं बनते?

मंत्रीः "मोर्चे का एक घटक फलां दल भी है" जब ऐसी खबरें छपती हैं तो कुछ दलों के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है, वरना जनता में तो दल कहीं नजर नहीं आता, नेता का ही नाम सुनाई देता है.

सदस्यः क्या यही स्थिति आप के दल की नहीं है?

मंत्रीः बिलकुल नहीं. हमारे दल को बने सौ साल होने जा रहे हैं. इतनी उम्र तो हमारी नेता की भी नहीं है. यह जरूर है कि इन सौ सालों में दल के सौ बार टुकड़े जरूर हुए हैं, दल के चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी भी हुई है, एकदो बार दल ने आत्महत्या भी की है, पर फिर भी सत्ता के कारण हमारा दल सौ साल का कहलाता है.

सदस्यः मोर्चे और गठबंधन में आप के लिए कौन सा ज्यादा खतरनाक है?

मंत्रीः हमारे लिए तो हमारे दल के असंतुष्ट ही ज्यादा खतारनाक हैं, पर इंदिराजी ने चंद्रशेखर और बहुगुणा वाले मोर्चे की कम, लोक दल और भारतीय जनता पार्टी वाले मोर्चे की आलोचना ज्यादा की है, इसलिए हम उसे ही ज्यादा बुरा बताएंगे.

सदस्यः इन में से सफल कौन सा होगा?

मंत्रीः कुछ पता नहीं. अपने में समुद्र की सी विशालता लपेटे ये दल तालाबों (रामाराव, फारुक) का सहारा मांग रहे हैं.

सदस्यः प्रधान मंत्री की विदेश यात्रा को वक्तव्य विशेषज्ञों ने ऐतिहासिक क्यों बताया है?

मंत्रीः कुछ लोगों को बयानबाज कहा जाता है. कोई मौका हो, घटना या दुर्घटना हो, ये लोग मिल कर एक बयान जारी कर देंगे. इस से कई लाभ मिलते हैं. अखबारों में नाम छप जाता है. बयान इंदिराजी या राजीव गांधी के सर्मथन में हो तो रेडियो, टेलीविजन पर भी नाम आ जाता है. भक्तों की सूची में नाम दर्ज हो जाता है. इसलिए ये लोग हर घटना, हर यात्रा को ऐतिहासिक ही बताते हैं.

सदस्यः सुना है, प्रधान मंत्री ने विदेश यात्राओं पर अंकुश लगाना शुरू कर दिया है. उन के विचार में नेताओं, अधिकारियों की यात्राएं लाभप्रद नहीं होती हैं.

मंत्रीः जी हां, नेता और अधिकारी

सम्मेलनों में भाग लेने जाते हैं. जब विदेश में वह सम्मेलन हो रहा होता है, उस समय ये लोग पिस्तौल और कांच का सामान खरीदते नजर आते हैं. शिष्टमंडल में जाने वाले वहां इलाज करवाते हैं या अपने बेटेबेटियों के लिए व्यवसाय ढूंढ़ते हैं.

सदस्य: क्या अब कोई विदेश यात्रा पर नहीं जाएगा?

मंत्री: यात्राएं तो वैसे ही जारी रहेंगी. मुंह बंद करने के लिए नेताओं को कुछ दिन के लिए बाहर भेजना जरूरी होता है. अब हम यात्राओं का दोहरा लाभ उठाने की सोच रहे हैं. जब कोई हमारे यहां से निरस्त्रीकरण सम्मेलन में भाग लेने जाएगा, तभी वह हमारे लिए नए शस्त्रों की खरीद का सौदा भी कर आएगा.

सदस्य: हरियाणा में सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव रखने की अनुमति विधान सभाध्यक्ष ने नहीं दी. आप के विचार में क्या आप का दल अविश्वास प्रस्ताव का सामना करने में असमर्थ था?

मंत्री: अब हम क्यों मानें? अब तो हम यही कहेंगे कि हमारे पास पूर्ण बहुमत है, मगर वहां हमारे दल की स्थिति कुछ अस्पष्ट है. हम यह कह ही नहीं सकते कि हमारे सदस्य संख्या कितनी है, क्योंकि असंतुष्ट से अनजान होते वहां देर कम ही लगती है.

सदस्य: हरियाणा में कारों का क्या झगड़ा है?

मंत्री: जब सरकार झगड़े में है तो कार क्यों नहीं होगी? कुछ हटाए गए मंत्रियों को उन के समर्थकों ने कारें भेंट में दी हैं. उन पर चढ़ कर वे दिल्ली बड़ी आसानी से आ जाते हैं. इसलिए हम कोशिश में हैं कि उन कारों को पार्टी की संपत्ति करार दे कर उन से छीन लें. हमारी राजनीति में जितनी जल्दी पंख आते हैं, उन्हें कतरने के लिए हमारी कैंचियां भी उतनी ही जल्दी तैयार हो जाती हैं.

सदस्य: पंजाब में एक और पुलिस अधिकारी पर हमला हुआ है. वहां की कानून व्यवस्था क्या आप के काबू से बाहर नहीं है?

मंत्री: आप पंजाब की तो बिलकुल फिक्र न करें. वहां कानून व्यवस्था में कोई खराबी नहीं है. सब कुछ हमारे काबू में है. आप ने देखा नहीं कि प्रधान मंत्री का सीधा शासन लागू होने से पहले वहां के एक मंत्री बेअंत सिंह ने गुस्से में आ कर इस्तीफा दे दिया था, मगर हम ने उन्हें काबू में कर लिया और उन का इस्तीफा वापस हो गया.

सदस्य: सुना है, पंजाब में उग्रवादियों ने जिन लोगों को मारना है, उन की सूची बना रखी है?

मंत्री: उस सूची की सूचना हमारे पास है, लेकिन हमें उस सूची की बजाए उस सूची की ज्यादा चिंता है जो हमारे हाई कमान के पास है और जिस में उन के नाम दर्ज हैं जिन्हें सत्ता से हटाना है. एक बार में एक ही सूची की फिक्र हो सकती है.

सदस्य: लगता है, वहां मामला दरबारासिंह के काबू में नहीं था. आप उन्हें अयोग्य होने के कारण भी इतने दिन तक हटा क्यों नहीं पाए?

मंत्री: किस मुंह से हटाते? वहां का कामधाम तो काफी समय पहले से ही हम ने संभाल रखा था और हम अपनेआप को दरबारासिंह से ज्यादा योग्य साबित नहीं कर पाए थे. अब प्रधान मंत्री का सीधा शासन लागू हो गया है तो बदनामी भी हमें सीधे ही मिलेगी.

सदस्य: 20 सूत्री कार्यक्रम के बारे में आप का क्या विचार है?

मंत्री: बड़ी अच्छी चीज है. पता नहीं इस से गरीबी हटती है या नहीं, पर सत्ताधारी हटते, बनते रहे हैं. जब किसी मंत्री, मुख्य मंत्री को जमाना होता है तो हम उस की तारीफ करते हैं कि इन्होंने 20 सूत्री कार्यक्रम के क्रियान्वयन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है. उन के बताए गांव में उद्घाटन, भाषण, चाटन वगैरा कर आते हैं. जब किसी को हटाना होता है तो पहले के जिन आंकड़ों के आधार पर हम तारीफ कर चुके होते हैं, उन्हें मनगढ़ंत करार दे देते हैं.

—गोविंद शर्मा

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★★ सुबह

निर्मातानिर्देशक : जब्बार पटेल
संगीत : हृदयनाथ मंगेशकर
मुख्य कलाकार : स्मिता पाटिल, गिरीश करनाड, श्रीकांत मोघे, आशालता.

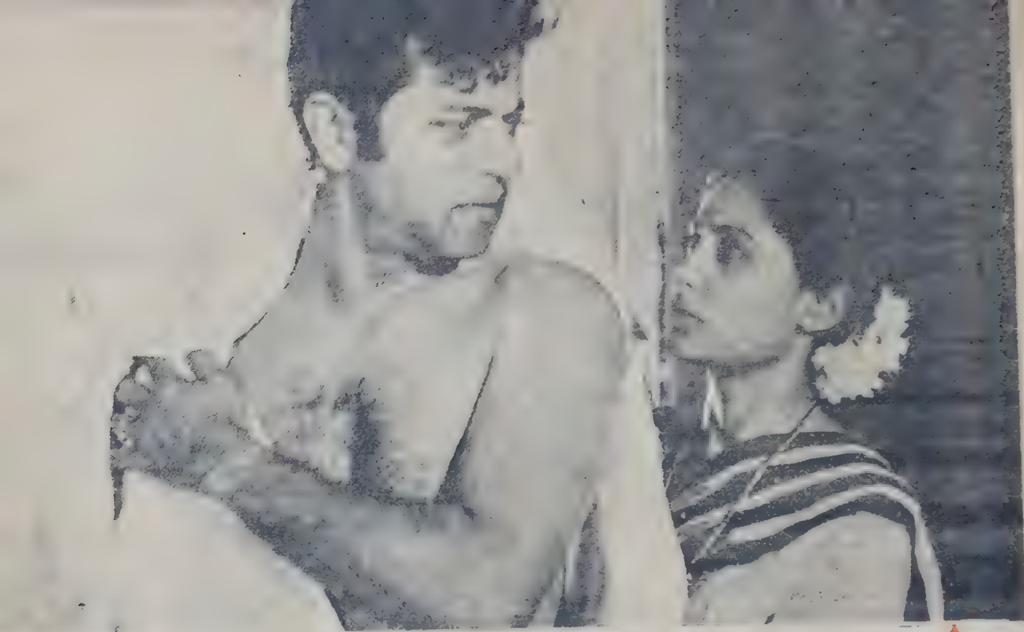
आज जब अधिकांश फिल्म निर्माता अधिक से अधिक पैसा कमाने के उद्देश्य से फिल्में बना रहे हैं, निर्मातानिर्देशक जब्बार पटेल ने विचारोत्तेजक फिल्म 'सुबह' बना कर सरकारी महिला आश्रमों में होने वाले अनाचारों और उस में लिप्त राजनीतिबाजों की पोल खोल कर साहसिक कार्य किया है. आज अगर कोई समाज से भ्रष्टाचार समाप्त करने की कोशिश करता है तो उस की वह दुर्दशा की जाती है कि वह पस्त हो जाता है. फिल्म 'सुबह' के माध्यम से निर्देशक ने समाज की यथार्थ स्थिति से दर्शकों को अवगत कराया है.

सावित्री (स्मिता पाटिल) एक पढ़ीलिखी महिला है. समाजशास्त्र में उस ने डिप्लोमा किया है. परिवार में वह अपने पति सुभाष (गिरीश करनाड), समाजसेविका सास, डाक्टर देवर व देवरानी के साथ रहती है. उस की एक पांच वर्ष की बेटी भी है. वह खुद का परिवार के साथ तालमेल नहीं बैठा पाती और अंदर ही अंदर घुटती रहती है. वह चाहती है कि महिला आश्रम में जा कर वहां रहने वाली महिलाओं की दशा सुधारे तथा वहां पनपने वाले भ्रष्टाचारों को समाप्त करे.

एक महिला आश्रम में उसे अधीक्षिका की नौकरी मिल जाती है तो वह पति, बेटी व परिवार के अन्य सदस्यों को छोड़ कर घर से 300 मील दूर आश्रम में आ जाती है. आश्रम में होने वाले भ्रष्टाचार को देख कर उस के रोंगटे खड़े हो जाते हैं. प्रबंध समिति के सदस्यों की सहायता से राजनीतिबाज वहां वेश्यावृत्ति जैसे घिनौने कार्य कराते हैं. मगर वह हिम्मत नहीं हारती और इन भ्रष्टाचारों को समाप्त करने की जीजान से कोशिश करती है.

प्रबंध समिति के सदस्य उस से नाराज होते हैं और उस पर कई आरोप लगाए जाते हैं. एक सदस्यीय आयोग के सामने वह सारी सचाई उगलती है और खुद को निर्दोष साबित करती है. अब वह निराश हो जाती है और त्यागपत्र दे कर वापस घर चल पड़ती है.

दो साल के बाद वापस घर आने पर उसे अपने दांपत्य जीवन में दरार सी महसूस होती है. लगता है, कहीं कुछ टूट गया है. पति द्वारा उसे मालूम होता है कि उस ने दूसरी स्त्री से संबंध बना लिए थे, क्योंकि उस की भी तो शारीरिक जरूरतें थीं. अब सावित्री को महसूस होता है कि जिस राह पर वह चली थी, अब उसे उसी राह पर दोबारा चलना होगा और वह अपने नए लक्ष्य की खोज में घर से निकल पड़ती है.



फिल्म 'सुबह' के एक दृश्य में गिरीश करनाड व स्मिता पाटिल.

फिल्म में स्मिता पाटिल ने बहुत प्रभावी भूमिका की है. उस का मानसिक अंतर्द्वंद्व दर्शकों को प्रभावित करता है. एक तरफ उस का लक्ष्य है, दूसरी तरफ पति व बेटी की चाह. उस के चेहरे पर भावों का उतारचढ़ाव देखते बनता है. सशक्त सुपरिंटेंडेंट की भूमिका में वह काफी जमी है. गिरीश करनाड का अभिनय भी अच्छा है. अन्य कलाकार साधारण ही हैं.

शुरू में फिल्म कुछ बोरियत लगती है, मगर फिर गति पकड़ लेती है. ऐसी फिल्म में गीतसंगीत की गुंजाइश नहीं थी, फिर भी जैसा है, ठीक है.

★ हादसा

निर्माता : अकबर आर्ट्स
निर्देशक : अकबर खान
संगीत : कल्याणजी आनंदजी
मुख्य कलाकार : अशोककुमार, अकबर खान, रंजीता, स्मिता पाटिल, नसीरुद्दीन शाह, हेलन, अमरीश पुरी, जगदीप.

पत्नी शोकेस में सजाने वाली सिर्फ खूबसूरत गुड़िया ही नहीं होती, बल्कि हाड़मांस की बनी जीतीजागती इनसान होती है. उस की भी इच्छाएंआकांक्षाएं होती हैं, शारीरिक जरूरतें होती हैं. इस विषय को निर्मातानिर्देशक अकबर खान ने फिल्म 'हादसा' में प्रस्तुत किया है. इतना अच्छा विषय ले कर भी वह बंबइया फिल्मों के असर से बच नहीं सका है. फिल्म को टिकट खिड़की पर चलाने के लिए उस में सभी मसाले भर दिए गए हैं. तस्करी, डिस्को, कार रेस, नौका रेस भर कर उस ने फिल्म को अस्वाभाविक बना डाला है. लगता है फिल्म टुकड़ोंटुकड़ों में देख रहे हैं.

आशा (स्मिता पाटिल) का पति चक्रवर्ती (अमरीश पुरी) नपुंसक है. इस के कारण वह मानसिक रूप से बीमार रहती है. एक दिन उस की मुलाकात मोटर गैराज में काम करने वाले युवक जय (अकबर खान) से होती है तो उसे लगता है कि उस के बचपन का साथी गुड्डू उसे मिल गया है. वह उस पर आसक्त हो जाती है.

आशा का इलाज डा. वेद माथुर (अशोक कुमार) करते हैं. डा. वेद माथुर की बेटी रावी (रंजीता) जय को चाहने लगती है. दोनों में प्रेम हो जाता है. मगर दोनों जहांजहां जाते हैं, आशा की कातिलाना

नजरें उन का पीछा करती हैं, क्योंकि वह नहीं चाहती कि जय किसी और का हो जाए. वह राबी को खत्म करने की भी कोशिश करती है.

इसी बीच एक स्मगलर रतन (नसीरुद्दीन शाह) जय द्वारा चोरी करने से मना करने पर राबी को कुछ गुंडों द्वारा उठवा लेता है. राबी को छुड़वाने में जय के हाथों एक गुंडा मारा जाता है और जय को पुलिस गिरफ्तार कर लेती है. वह पुलिस की हिरासत से भाग निकलता है. यहां आशा उस की मदद करती है और पुलिस की गोलियां अपने ऊपर झेल कर जय को बचा लेती है.

फीरोज खान और संजय खान के छोटे भाई अकबर खान की यह पहली फिल्म है. पूरी फिल्म में उस ने कैमरे को अपने ऊपर ही केंद्रित रखा है. अभिनय की दृष्टि से वह साधारण ही रहा है.

मानसिक रोगी की भूमिका में स्मिता पाटिल बहुत प्रभावित करती है. अब तक दर्शक उसे एक कला अभिनेत्री के रूप में ही जानते थे, मगर अब उस ने सिद्ध कर दिया है कि व्यावसायिक फिल्मों में भी वह अपनी भूमिका बखूबी निभा सकती है. नसीरुद्दीन शाह स्मगलरों के मुखिया के रूप में नहीं जंचता. रंजीता कहींकहीं प्रभावित करती है. अन्य कलाकार साधारण ही हैं. फिल्म का संपादन दोषपूर्ण है. छायांकन अच्छा है.

★ मजदूर

निर्माता : बी.आर. फिल्म्स
निर्देशक : रवि चोपड़ा
संगीत : राहुलदेव बर्मन
कलाकार : दिलीपकुमार, नंदा, राज बब्बर, पद्मिनी कोल्हापुरे, रति अग्निहोत्री, राज किरण, सुरेश ओबेराय.

मालिक और मजदूरों के संघर्ष पर आधारित फिल्म 'मजदूर' में निर्माता ने मजदूरों के पक्ष को ऊंचा उठाया है. मिल मालिकों के खिलाफ बगावत का झंडा खड़ा कर उस ने मजदूरों को प्रबंध में भागीदार होने का आह्वान किया है. निर्माता के अनुसार मजदूरों के खूनपसीने से ही मिलें चलती हैं, लेकिन वह भावुकता में बह कर यह भूल गया है कि जब तक मालिक पूंजी लगा कर मिलें ही नहीं लगाएंगे और प्रबंधक अपनी कार्यकुशलता नहीं दिखाएंगे तब तक क्या मिलें चल सकेंगी? बिना डिगरी, डिप्लोमा या प्रशिक्षण लिए मजदूर क्या मिलें चला सकेंगे? इस बात को सोचेसमझे बगैर निर्माता ने अपनी कल्पना से फिल्म 'मजदूर' बना डाली है. वैसे आधे से अधिक फिल्म असफल प्रेमिका के प्रेमी से बदले की बन गई है.

दीनानाथ (दिलीपकुमार) एक महत्त्वाकांक्षी मजदूर है. वह सेठ हीरालाल (सुरेश ओबराय) की मिल में काम करता है. किसी बात पर तुनक कर एक दिन वह नौकरी से त्यागपत्र दे देता है और एक अनाथ युवक अशोक (राज बब्बर) से मिल कर एक जली हुई मिल खरीद लेता है. इस काम में कुंदनलाल बतरा (इफ्तखार) उस की मदद करता है दोनों मिल कर ठीक

फिल्म 'मजदूर' के एक दृश्य में राजबब्बर और रति अग्निहोत्री. ▼



करते हैं और व्यापार करने लगते हैं. कई अन्य मजदूरों को दीनानाथ अपने प्रबंध में भागीदार बना लेता है. कुछ ही दिनों में वह लाखोंकरोड़ों में खेलने लग जाता है.

एक दिन कुंदनलाल बतरा की बेटी स्मिता (रति) की मुलाकात अशोक से होती है. दोनों में प्यार हो जाता है. उधर दीनानाथ की बेटी मीना(पद्मिनी कोल्हापुरे) अशोक को मन ही मन चाहने लगती है. स्मिता अशोक से बदला लेने के लिए दीनानाथ के बेटे रमेश (राजकिरण) से शादी कर लेती है. यहां वह अशोक व मीना के बीच दरार पैदा कर देती है. अब दीनानाथ को अशोक फूटी आंख नहीं सुहाता और वह उसे मिल के प्रबंध से हटा देता है. यहां तक कि अब उस की पत्नी मीना भी उसे नहीं चाहती.

सेठ हीरालाल एक चाल चल कर अशोक को अपनी ओर मिला लेता है और दीनानाथ की मिल में हड़ताल करवा देता है, लेकिन असलियत खुलने पर अशोक दीनानाथ का ही साथ देता है और उन की मिल दोबारा चालू हो जाती है.

फिल्म में निर्देशक भावुकता में बहुत बहा है. जगहजगह भाषणबाजी और लफ्फाजी का प्रयोग किया गया है. दूसरी बात यह कि जब दीनानाथ मजदूर था तो वह प्रबंध में मजदूरों के भागीदार होने का हिमायती था, लेकिन जब खुद मिल का चेयरमैन बन गया तब वह मनमानी करने लग गया और अशोक को मिल से निकाल बाहर कर दिया. अगर कोई गलतफहमी थी तो वह दूर की जा सकती थी. फिल्म को व्यर्थ ही लंबा खींचा गया है. दोतीन गाने तो जबरदस्ती ठूंसे गए प्रतीत होते हैं.

दिलीपकुमार मजदूर व मालिक दोनों ही भूमिकाओं में प्रभावित करता है. रति अग्निहोत्री ने भी बहुत अच्छा अभिनय किया है. पद्मिनी कोल्हापुरे तथा राज बब्बर साधारण रहे हैं. अन्य कलाकार भी साधारण हैं. फिल्म का छायांकन साफसुथरा है तथा आकर्षित करता है. गीतसंगीत भी [illegible] है. •

पिछले बारह महीनों में

★★★★ निकाह, गांधी.

★★★ मासूम, मुझे इनसाफ चाहिए.

★★ बाल शिवाजी, शक्ति, कामचोर, विजेता, अर्पण, रंगबिरंगी, दर्द का रिश्ता, बेताब, कथा, नदिया के पार, बेआबरू.

★ भीगी पलकें, जियो और जीने दो, चोरनी, गंगा मेरी मां, जानी, आई लव यू, पत्थर की लकीर, ताकत, अनोखा बंधन, पार्टनर, लक्ष्मी, तकदीर, जरा सी जिंदगी, साथसाथ, डिस्को डांसर, पशु संग्राम, अंधा कानून, पेंटर बाबू, अवतार, महान, लवर्स, रिश्ता कागज का, सौतन, एक बार चले आओ, अर्थ, घुंघरू, वो सात दिन, बेजुबान, बंधन कच्चे धागों का, रजिया सुलतान.

○ वक्त के शहजादे, दहशत, गंगा मांग रही बलिदान, टैक्सी चोर, कसम दुर्गा की, यह कैसा नशा है, खुशनसीब, स्वामी दादा, विधाता, सम्राट, जीने की आरजू, यह तो कमाल हो गया, मंगल पांडे, प्यासे दिल, हिम्मत वाला, चलती का नाम जिंदगी, मेंहदी, रुस्तम, यह इश्क नहीं आसां, होटल, एक और संग्राम, निशान, नास्तिक, साहब बहादुर, करवा चौथ, जानी दोस्त, हम से न जीता कोई, दूल्हा बिकता है, चोर पुलिस, वोह जो हसीना, आओ प्यार करें, जस्टिस चौधरी, दो दिशाएं, नौकर बीवी का, जीत हमारी, प्राइवेट लाइफ, कालका, एक जान हैं हम, बेकरार.



दीवाली की भेंट

कहानी • डा.प्रभात त्यागी

पुष्कर के ब्रह्मा मंदिर की सीढ़ियों पर दोनों लंबतड़ंग प्रतिहारी मूर्ति बने खड़े थे. देवालय के प्राकार व सोपान में प्रत्येक व्यक्ति पर उन की गिद्ध दृष्टियां घूम रही थीं.

"तनिक उधर नजर डालो, पूजास्थल के बाईं ओर."

"रक्तिम वस्त्रों में सजीसंवरी वह [illegible]?"

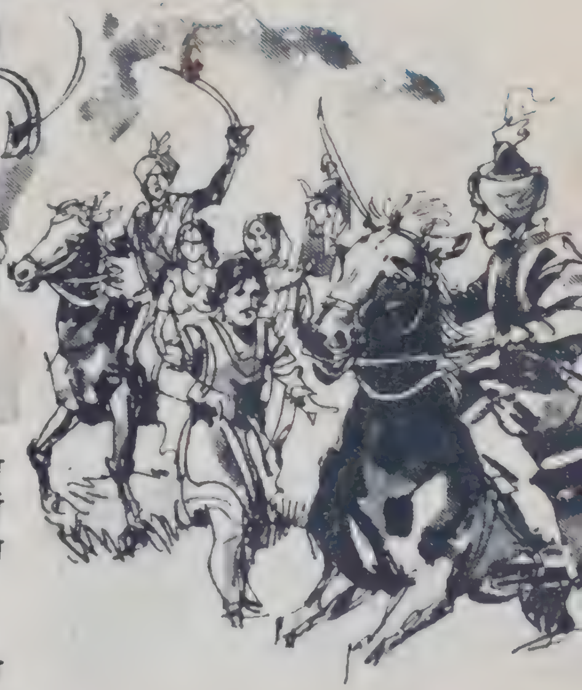
"हां, और उस के पास खड़ा वह [illegible] दृष्टिगोचर होने वाली यह प्रौढ़ा. क्या वे तुम्हें कुछ संदेहास्पद नहीं प्रतीत होते? मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि वे हमारे इस मरू प्रदेश के निवासी तो नहीं हैं."

"तुम्हारी बात तो सही है," कुछ सोच कर दूसरा प्रतिहारी बोला, "तुम उन पर अपनी दृष्टि रखो, पर प्रदर्शित ऐसा करो जैसे वे तुम्हारी आंखों की परिधि के बाहर हों. यहां सीढ़ियों पर आते ही हम उन्हें धर दबोचेंगे."

"अरे," कुछ पलों के पश्चात अपने साथी के मुख पर फैले आश्चर्य को देख कर दूसरा प्रतिहारी भी चौंक पड़ा, "अपने तीनों



राजकुमार पुलमावी के रूप आकर्षण में बंधी चारुमित्रा ने उस की बहन स्वाति को शकक्षत्रप नहपान के यातनागृह से बचाया तो स्वाति ने उसे दीवाली की ऐसी अद्भुत भेंट दी जिस से वह रोमांचित हो उठी.



'शिकार' तो कहीं देवालय में ही अंतर्धान हो गए. तुम यहीं रहो, मैं भीतर जा कर उन्हें खोजता हूं." पहला प्रतिहारी तेज कदमों से देवालय में प्रविष्ट हो गया.

"क्यों, क्या हुआ?"

"मैं ने चप्पाचप्पा छान मारा. तीनों का कहीं पता नहीं है."

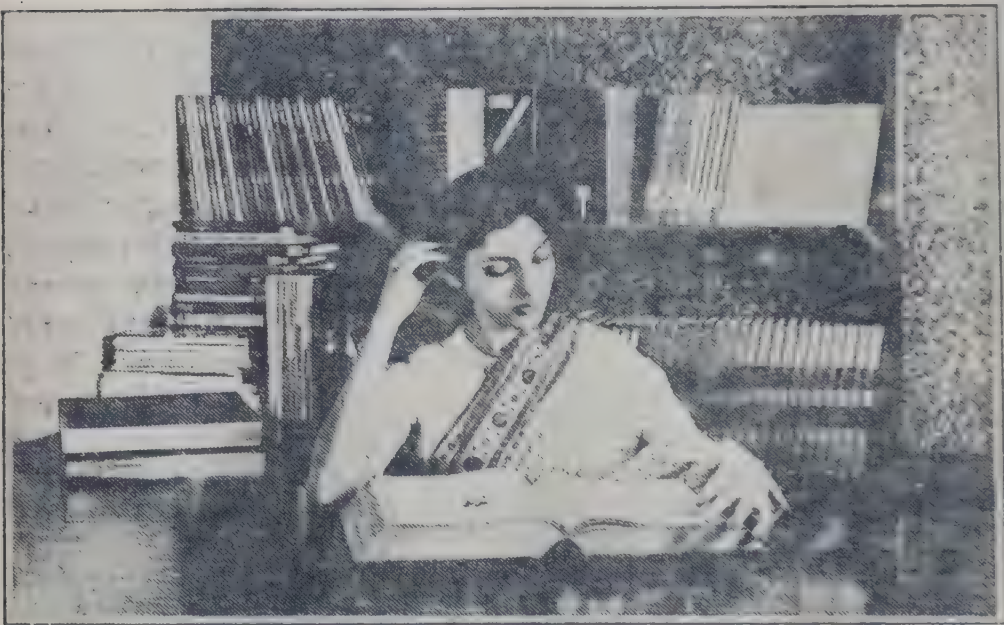
"ओह, जल्दी आओ मेरे साथ." दोनों सीढ़ियां पार कर एक ओर चल दिए.

तब तक ब्रह्मा की प्रतिमा के पीछे परिक्रमा करती भीड़ में छिपतेछिपाते प्रतिहारियों के तीनों 'शिकार' देवालय के पुजारी व पुरोहितों की कोठरियों की ओर बढ़ गए थे. एक कोठरी में केवल बाहर से सांकल लगी देख कर तीनों ने उस में प्रवेश कर भीतर से सांकल लगा ली.

"मां, आप से मैं ने व पिताजी ने कितना मना किया था कि शक क्षत्रपों के शत्रु राज्य में जाने की हठ मत करो. आप बिलकुल नहीं मानीं." स्वाति के मुख पर चिंता की छाया थी, "मैं ने स्पष्ट देखा कि प्रतिहारी हमें घूरघूर कर देख रहे थे. भैया, अब क्या होगा? हम यहां अधिक समय तक तो नहीं रह सकते."

"स्वाति, आज दीपावली है. लक्ष्मीपूजन प्रारंभ होने वाला है, मंदिर में बहुत भीड़ है. थोड़ी देर में ही यह देवालय व नगर जगमग प्रकाश से नहा उठेगा. हम इस कोठरी में अधिक सुरक्षित हैं. वैसे भी कम से कम दोतीन घंटे तक यहां किसी के आने की आशा नहीं है."

अभी कल ही की तो बात है जब औरतों के पास हर बात का जवाब एक ही होता था—'हां'.



आज की नारी का हर मायने में
नया अंदाज़ है, नया दृष्टिकोण है.
विचारों में नयी ताजगी है
तभी तो आज हर चीज़ की तरह
चाय में भी उसका चुनाव निहायत
अपना है — डबल डायमन्ड. क्योंकि
सिर्फ़ डबल डायमन्ड में है उसके
नये व्यक्तित्व से मेल खाती
ताज़गी, स्वाद और तेज़ी.



डबल डायमन्ड—स्वाद में, तेज़ी में, आपके खयालों सी ताज़गी.

Rediffusion/DA/2332aHN

''बेटे पुलमावी, मैं ने ब्रह्मा मंदिर को ने का हठ कर वास्तव में ठीक नहीं किया '' वाशिष्ठी को अत्यधिक पश्चात्ताप था.

''मां, जो बात हो गई उस पर दुखी होने कोई लाभ नहीं है. हमें तो भविष्य के षय में चिंतन करना है. शकों के क्षत्रपों व न सातवाहनों में महाराष्ट्र की भूमि को ले र पहले से ही ठनी हुई है.क्षत्रप नहपान के स राज्य में प्रतिहारियों से बचने के लिए र्वप्रथम हमें अपने वेश में परिवर्तन कर ना चाहिए. स्वाति, क्या तुम्हें पूर्ण विश्वास कि प्रतिहारियों की दृष्टि हम पर गड़ी हुई ै?''

''तुम विश्वास की बात कहते हो, लमावी भैया, मैं निश्चयपूर्वक कहती हूं. मैं उन में से एक को प्रतिमा के पीछे छिपेछिपे वालय के प्राकार का चक्कर लगाते हुए भी खा था.''

''तब तो यह कोठरी हमारे लिए और ी अधिक सुरक्षित है, किंतु लक्ष्मीपूजन के श्चात हमें एक पल भी यहां नहीं रुकना ाहिए.''

तीनों उस समय अलगअलग चिंतन र रहे थे. स्वाति को शीघ्रातिशीघ्र क्षत्रपों राज्य से निकलने की आतुरता थी. ाशिष्ठी मन ही मन अपनी मूर्खता के लिए वयं को जी भर कर कोस रही थी. उसी के रण उस की बेटी और बेटा संकटग्रस्त हो ए थे, जब कि इस स्थिति में भी पुलमावी ी इच्छा नहपान के मरू राज्य से पूर्ण रूप से रिचित होने की थी.

''भैया, मैं ने अपने वस्त्र बदल लिए हैं. ले बालों की जगह मैं ने कस कर जूड़ा बांध या है. स्त्रियों के बीच मैं अपनेआप को रलता से छिपा लूंगी, इसलिए एक बार झे बाहर की टोह ले कर आने दो.''

''स्वाति, तू बाहर तो जा, पर घूंघट काल कर. मां, तुम भी अब यहां घूंघट में रहना. मैं तुम दोनों से दूरदूर ही चलूंगा. बाहर जा कर आधे घंटे में यदि नहीं लौटी हम दोनों भी बाहर निकल आएंगे.''

दस मिनट बाद ही स्वाति कोठरी में लौट आई. उत्सुकता उस के मुख पर बैठी हुई थी, आशा ने तो उस की पलकों को घेर लिया था.

''भैया, यह हमें स्वीकारना होगा कि क्षत्रपों ने भारतीय परंपराओं व त्योहारों को पूरी तरह से अपना लिया है. वे यह जान गए हैं कि विदेश में सुखसुविधाओं से रहने के लिए वहां के जीवन में घुलमिल जाना आवश्यक है. पूरे नगर व देवालय में ऐसी दीवाली मनाई जा रही है कि हम महाराष्ट्र में भी ऐसी नहीं मनाते हैं. दोनों प्रतिहारी सीढ़ियां छोड़ कर कहीं चले गए हैं. सब से अधिक प्रसन्नता की बात यह है कि मैं देवालय के पीछे से बाहर निकलने का मार्ग देख आई हूं.''

''तो फिर देर करने की आवश्यकता नहीं है. अभी तो बाहर भीड़ भी है, निर्जन हो जाने पर देवालय में हमारी उपस्थिति सभी को स्पष्ट हो जाएगी. पहले तुम दोनों कोठरी से बाहर निकलो, पीछेपीछे मैं भी आता हूं.''

थोड़े अंतराल पर तीनों पीछे के गुप्त मार्ग पर जा पहुंचे. पुलमावी व वाशिष्ठी स्वाति के पीछेपीछे बढ़ रहे थे कि अचानक वह तेजी से पीछे मुड़ गई.

''मां, भैया, तुरंत पीछे भागो. वे दोनों प्रतिहारी आगे खड़े हैं,'' स्वाति फुसफुसा कर बोली, ''मैं ने अभीअभी उन की झलक देखी है.''

''तो बिना देवालय में रुके, सीधे मुख्य द्वार से निकल भागो. अपनी चालढाल बिलकुल स्वाभाविक रखो जिस से किसी को संदेह न हो.'' पुलमावी के निर्देश का उन दोनों ने पालन किया.

देवालय से निकल कर, पुष्कर तालाब का गोल चक्कर लगाते हुए दक्षिण पश्चिमी दिशा में ऊंची पर्वत श्रृंखलाओं के बीच के जंगल में उन तीनों ने मुक्ति की सांस ली. वाशिष्ठी थकावट से चूर हो चुकी थी. स्वाति की धड़कनें धौंकनी की तरह उतारचढ़ाव पर थीं. केवल पुलमावी शांत व निर्द्वंद्व था.

ा नेत्रों से जलते हुए कक्ष और
जलाए खड़ी स्वाति की ओर
ए नहपान की घिग्घी बंध गई.



नक घोड़ों की टापों को सुन कर जैसे तीनों भागने को उद्यत थे, चार हियों ने उन्हें घेर लिया. उन में से दो हारी थे.

न तीनों को बंदी बना लो." दोनों यों में से एक ने एक अश्वारोही को दया.

र हमारा अपराध क्या है?" स्वाति की आंखों में सीधे ताकते हुए

पराध है दूसरे राज्य की सीमा में र प्रवेश."

सरा राज्य! आश्चर्य है. अपने न में ही हमें विदेशी बनाया जा रहा ावी बोला.

च्छ्र तो यह आप लोगों का ा है?" पहला प्रतिहारी हंसा, "तो र के तीनचार घाटों के नाम ही ाए."

ह खूब रही." स्वाति व्यंग्य से हंसी, "अपनी नागरिकता सिद्ध करने के लिए अब हमें तालाबों, नदियों व घाटों के नाम भी रटने होंगे?"

"तुम्हें जो कुछ कहना है शक क्षत्रप के सम्मुख चल कर कहना. ले चलो इन्हें." प्रतिहारी के शब्दों को सुन कर पुलमावी जान गया कि उस से अब माथा खपाना व्यर्थ है.

शक क्षत्रप नहपान के निवास में प्रविष्ट होते ही पुलमावी की दृष्टि बाहर की ओर खड़ी एक युवती पर पड़ी. उसे प्रतीत हुआ जैसे वह युवती उन की मुक्तिदात्री ही हो.

"अरे, आप यहां! कितने आश्चर्य की बात है? महाराष्ट्र से आप कब आईं." युवती मुंह बाए उन को ताकती रही.

"महाराष्ट्र? मैं तो यहीं इस मरूभूमि में पैदा हुई हूं."

"यही बात तो हम भी इन्हें समझा रहे हैं, पर ये लोग मानते ही नहीं हैं कि हम इसी

जन्मे, बड़े हुए और फलेफूले..."
पर मैं ने आप को पहचाना नहीं?"
बोली.

'पहचाना नहीं? घोर आश्चर्य की
ः. आप अपने पिताजी के साथ आज से
र्ष पूर्व महाराष्ट्र नहीं गई थीं?" बात
थी, पर झूठ बोलने का ढंग बड़ा ही
रशाली था. युवती ने ध्यान से युवक की
देखा. उस की आयु कठिनाई से 20-21
की थी. उस की छोटीछोटी मूंछें, सुंदर
नक्श और गहरी, ठहरी हुई आंखों में
ुत आकर्षण था.

"अरे, तुम तो करणीदान हो न? मैं भी
पागल हूं कि तुम्हें पहचान ही नहीं
." अब पुलमावी व स्वाति चमत्कृत थे,
क युवती ने तुरंत ही उन्हें अपना
चत घोषित कर दिया था.

"क्या बात है, प्रहरी? इन्हें क्यों बंदी
ा गया है?"

"क्षत्रप कुमारी, ये लोग राज्य विरोधी
विधियों में लिप्त हैं. आप व्यर्थ ही इन
वड़े में मत पड़िए. हम इन्हें क्षत्रपजी के
ख ले जा रहे हैं."

"क्या मूर्खता की बात कर रहे हो?
के साथ मैं खेलीकूदी और पढ़ी, उसे
राष्ट्र विरोधी घोषित कर रहे हो? हम
यदि आज अपना जन्मस्थान छोड़ कर
भारत में आ बसे हैं तो अपनी जन्मभूमि में जा कर क्या हम विदेशी बन जाएंगे? आइए, माताजी, बहनजी और करणीदानजी, मेरे साथ घर चलिए. क्षत्रप नहपान चाचाजी यहां नहीं हैं, इसलिए तुम लोग इन्हें मेरे पास छोड़ कर जाओ. मैं उन से बात कर लूंगी."

पुलमावी, वाशिष्ठी और स्वाति को उस युवती द्वारा किए गए संबोधनों पर अत्यधिक आश्चर्य हुआ. अभारतीय होते हुए भी उस का व्यवहार पूर्णतया भारतीय बन चुका था. असमंजस में खड़े हुए प्रतिहारियों से युवती फिर बोली, "क्या तुम्हें राजकुमारी चारूमित्रा पर भी विश्वास नहीं है? तुरंत इन तीनों को मुक्त करो."

प्रतिहारियों ने उन तीनों के बंधन खोल दिए.

"आइए, आप का क्षत्रप निवास में स्वागत है."

क्षत्रप निवास की बात सुन कर पुलमावी चौंका. सातवाहनों के कट्टर शत्रु के यहां शरण लेना क्या उन के लिए हानिप्रद सिद्ध नहीं होगा? सातवाहनों ने जिन्हें महाराष्ट्र से एक प्रकार से निष्कासित करने के लिए कमर कस ली थी. उन्हीं क्षत्रपों के यहां एक पल भी रुकना भयंकर सिद्ध हो सकता था, पर यह भी सच था कि उन की मुक्ति उस भवन में ठहरने से ही संभव थी. बिना अधिक चिंतन किए पुलमावी ने शेर की मांद में ही प्रविष्ट होने का निर्णय ले लिया.

भीतर पदार्पण करने का एक और भी कारण था जिस से केवल स्वाति परिचित थी. उसे यह देख कर तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ कि उस के भाई पुलमावी ने उस युवती चारूमित्रा को अपने रूपआकर्षण में बांध लिया था. वास्तव में उस का भाई सातवाहनों में सब से अधिक रूपवान माना जाता था. पर उसे आश्चर्य इस बात पर था, कि उस अपरिचित युवती ने उस के भाई को अपनी ओर अत्यधिक आकृष्ट कर लिया

इल्तजा

कहीं वह आ कर
मिटा दें न इंतजार का लुत्फ,
कहीं कबूल न हो जाए
इल्तजा मेरी.

—हसरत



उत्कृष्टता सदा अपना सिक्का जमाती है !



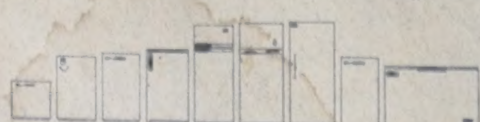
Kelvinator®

रेफ्रिजरेटर्स

140 से अधिक देशों में इसे प्रमाणित कर चुके हैं !

किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता का आधार है, निरन्तर सर्वोत्तम कार्यकुशलता । इसका अनूठा प्रमाण हैं-केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर्स । सचमुच सर्वोत्तम और साथ में यह लाजवाब विशेषताएं :

★ विश्व का सब से कुशल एवं परेशानी रहित कम्प्रेसर ।
★ सब से कम बिजली की खपत ।
★ वोल्टेज के उतार चढ़ाव सहन करने की सब से अधिक क्षमता ।
★ नई पॉलीयुरथेन फ़ोम इन्सूलेशन द्वारा हर जोड़ सील बन्द ।
★ आधुनिकतम ए बी एस डोर लाइनर, अधिक मजबूती के लिए ।



विभिन्न मॉडलों में उपलब्ध—मूल्य इतना उचित कि हर कोई खरीद सके ।

बिक्री एवं सर्विसकर्त्ता:

एक्सपो मशीनरी लिमिटेड

प्रगति टावर, 26 राजेन्द्रा प्लेस, नई दिल्ली-110 00
शाखाएं : अहमदाबाद, बंगलौर, भोपाल, बम्बई, कलकत्ता, चंडीगढ़, कोचिन, गाजियाबाद, हैदराबाद, जयपुर, कानपुर, कुण्डली, मद्रास, नई दिल्ली, पटना तथा विजयवाड़ा ।



140 से अधिक देशों में बिक्री एवं सर्विस सुविधाएं ।